कोतवाल को दी किन्तु राठोड वीर दुर्गादास आदि ने पहिले ही सलाह कर एक दिन पहिले ही मुकुन्ददास खीची को सपेरा (कालबलिया) का स्वांग भरा महाराजा अजीत को मय उनके छोटे भाई दलथंभन के शाही पहरे से निकाल कर मारवाड को तरफ भेज दिया। मार्गमें दल-थंभनजी का तो स्वर्गवास हो गया परन्तु अजीतसिंहजी सुखशांति से सिरोही पहूंचे। मुकुंददास मारवाड में कहीं नहीं ठहर सका क्यों कि जगह २ बादशाही थानाबंदी थी। वह सिरोही पहुंचा और महाराजा जसवंतसिंहजी की विधवा रानी अतिसुखदे की ड्योढी पर पहुंच कर उसने अपना पिटारा खोला और महाराजा को निकाल कर अन्दर भेजा। यहां भी शाही हुक्म महाराजा के पकडने का पहूंच चूका था। इस लिये माजी (राजमाता अतिसुखदेवी) ने महाराजा का सिरोही के कालिन्द्री गांव के रहनेवाले पुष्करना ब्राह्मण पुरोहित जागाजी (जयदेव) की स्त्री की गोद में डाल कर चुपके से कहा कि मारवाड़ का धणी है। तू इसको पाल लेगी तो तेरा दलद्दर दूर हो जावेंगे।" वह महाराजा अजीत को अपने ले गई। महाराजा १२ वर्ष के करीब उसके घर पर रहे खीची भी धूनी लगाये उसके दरवाजे पर बैठा रहा। उधर सरदार मारवाड़ में लूट मार करते, शाही हाकिमों और थानेदारों को तंग करते। सं० १७४४ की वैशाख वदि ५ (=ई० स० १६८७ ता० २ अप्रेल) को महाराजा ने भी स्वय प्रकट हो अपने सरदारों का साथ दिया और शाही हाकिमों के नाक में दम करने लगे।

इस प्रकार महाराजा अजीतसिंहजी को औरंगजेब के कारण ३० वर्ष तक तो पहाडों में रहना पडा परन्तु अन्त में फाल्गुण वदि १४ सं० १७६३ (=ता० २१ फरवरी १७०७ ई०=हि० १११८ ता० २८ जिल्काद) को अहमदनगर (दक्षिण) में औरंगजेब के मर जाने की खबर सुनते ही इन्होंने जोधपुर पर चढाई की और शाही हाकिमों को भगा चैत्र वदि ५ को किले पर कब्जा किया। बादशाह के मरने की खबर सुनते ही महाराजा ने अति हर्ष से यह दोहा कहा था जो अब तक प्रसिद्ध है.—

पाई गयर अचिन्तरी मिट गई तनरी दाह ।
कमीदा इस भाखियो मरगो ओरंगसाह ॥

पश्चात् इन्होंने ३० वर्ष के करीब जोरशोर से राज किया । बाद-
में इन्होंने कभी सुलह और कभी लड़ाई रही । बादशाह फर्रुखसियर
और मुहम्मदशाह के समय में दो बार ये अहमदाबाद की सूबेदारी पर
और गुजरात व काठियावाड़ को मरहटों के धावों से बचाते रहे ।
बादशाह मुहम्मदशाह ने अहमदाबाद की सूबेदारी के साथ अजमेर की
सूबेदारी भी इनको दी थी ।

ये महाराजा ऐसे प्रतापी हुवे कि इन्होंने सय्यद बंधुओं से मिल
बादशाह फर्रुखसियर को दिल्ली के तख्त से हटा ज्येष्ठ सुदि ११
सं० १७७६ (ता० १८-४-१७१९ ई०) को फांसी दे दी और उस
... क्रमशः एक के बाद दूसरा, इसी प्रकार तीन बादशाह दिल्ली
... दिये ।

समयमें वीर दुर्गादास और मुकुंददास खीची (चौहान)
... गये हैं । इन्हीं वीरों की वीरता से औरंगजेब को
... मारवाड़ का राज्य फिर उगलना पड़ा था । किन्तु काल
... कि जिस दुर्गादास राठोड़ (आसकरणोत) के बाहुबल,
... बुद्धिबल से यवनों के त्रास से मारवाड़ राज्य का उद्धार
... वही दुर्गादास महाराजा की नाराजगी से बूढ़ापे में, सं० १७६६
... से बाहर चला गया । जैसा कि किसी कवि ने कहा है:—

दुरगो देशां काढियां गोला गांगाणी ॥

अर्थात् दुर्गादास को देश से बाहर निकाल कर गांगानी गांव
... को दिया ।

१—महाराजा अजीत ने सं० १७६५ में खीची मुकुन्ददास के पुत्र गोकुलदास
... गांव जागीर में दे दिया था । क्यों कि उसके पिता मुकुंददासजी ने उनकी
... सेवा की थी । दुर्गादास राठोड़ के किसी पक्षपाती चारण ने जलन से गोकुल
... (गुलाम-दास) कह दिया है । वर्ना खीची उच्च कुल के चौहान वंशज
... ।

वीरश्रेष्ठ दुर्गादास जोधपुर से उदयपुर (मेवाड) की तरफ चले गये।
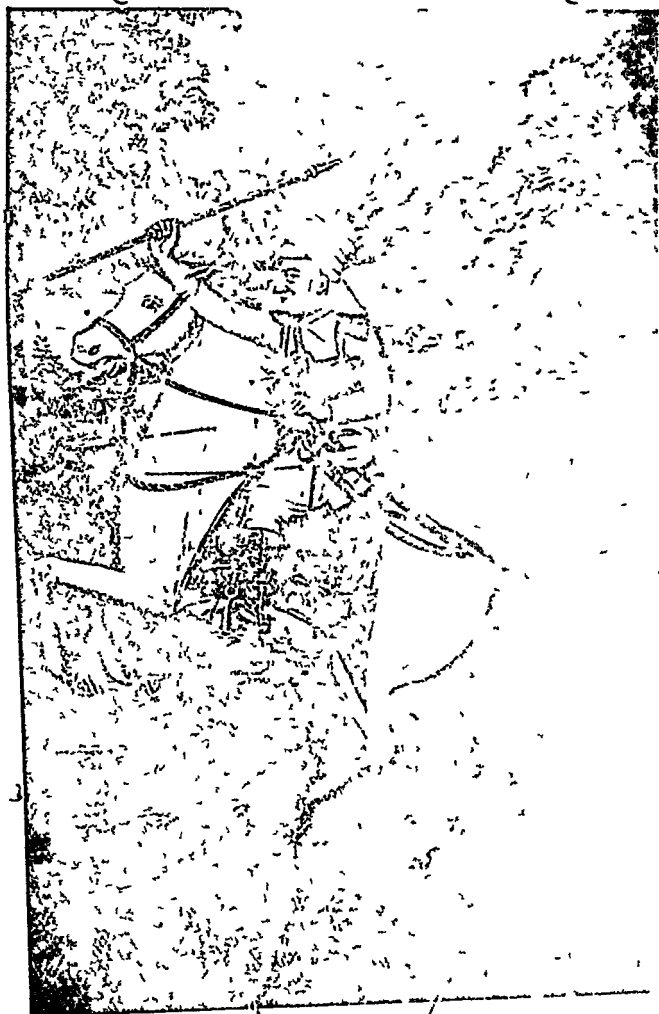
देशगौरव त्यागमूर्ति वीरवर ठा० दुर्गादास राठोड

वहां पर राणा संग्रामसिंह दूसरे ने इनका बड़ा आदर-सत्कार कर इन्हें अपने पास रखा। विजयपुर का परगना व पन्द्रह सौ रुपया महावारी कर दिया। संवत १७७४ में महाराणाने इन्हें फौज दे कर रामपुरा की हिफाजतके लिये भेजा। क्यों कि चन्द्रावत शाखाके गहलोत फसाद करते थे। उस मामले के बाबत रामपुरा से एक अर्जी (मिति कार्तिक वदि ५ सं० १७७४ भोम) दुर्गादासने महाराणा के पास भेजीं। उससे महाराणा बड़ा ही प्रसन्न हुवा। वहां से लौट आने के कुछ समय पश्चात् दुर्गादास उदयपुर से तीर्थयात्रा के लिये उज्जैन पहुंचे। वहां पर उनका सं०१७७८की ज्येष्ठ वदि १२ (ई० १७२१ ता०१३ अप्रल गुरुवार) को देहान्त हो गया। सफरा (क्षिप्रा) नदी के तट पर इनका अग्निसंस्कार किया गया जहां पर यादगार रूप एक छतरी बनाई गई थी, जो अब तक राठोड की छतरी के नाम से प्रसिद्ध है। इस आदर्श वीर दुर्गादास का जन्म संवत १६६५ की द्वितीय श्रावण सुदि १४ सोमवार (ता० १६ जून स० १६३८ ई०) को हुवा था। और जन्म कुण्डली इस प्रकार है:—

उ० घ० ३१-३८ सू ४-११ ल. १०-११
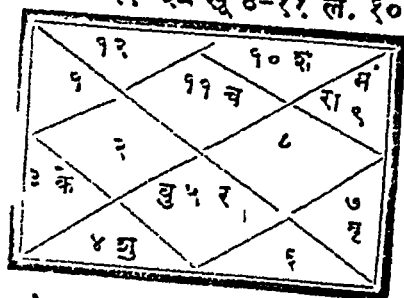
दुर्गादास की औलाद के कई जागीरदार हैं जिनके बड़े २ ठिकाने (जागीरें) मारवाड में हैं। उनमें बाघावास मुख्य है। ठाकुर दुर्गादास जी के नाम के ५ बादशाही फरमान मिले हैं जो बाघावास ठिकाने में हैं। उनमें एक ता० १० रज्जब स० ४२ जलुस=हि० स० ११११ (=पोष

१—उदयपुर मेवाड़ का वृहद इतिहास "वीर विनोद" ११ वां प्रकरण

सुदि १२ सं० १७५५ वि० =ता० ३ जनवरी १६९९ बुधवार) का है।

महाराजा अजीतसिंहजी का देहांत आषाढ सुदि १३ सं० १७८१ (=ता० ३ जौलाई १७२४ई०) को हुवा। इनके स्वर्गवास का कारण इनका ज्येष्ठपुत्र अभयसिंह ही था। कहा जाता है कि महाराजा के दिन दूने व रात चौगुने प्रतापको देख कर बादशाह के साथ ही साथ कृतघ्नतापूर्वक जयपुर के महाराजा जयसिंह भी इनसे कुढने लगे। इन दोनों ने जोधपुर के दीवान रघुनाथ भंडारी को अपनी तरफ मिलाया और तीनों ने मिल कर महाराजकुमार अभयसिंहजी को राज्य छीन लेने का भय और शाही कृपा का लोभ बता कर अपने पिता को मरवा डालने को उकसाया। राजकुमार ने ऐसे अनुचित कार्य से अपने को बचाने का बहुत कुछ उद्योग किया किन्तु अन्तमें अपने श्वसुर जयपुर नरेश जयसिंह के आग्रह से उनको अपने छोटे भाई बखतसिंह के नाम इस कार्य के लिये एक पत्र लिख कर भेजना पड़ा। पत्र पाकर वे भी घबरा उठे परन्तु उचित अनुचित का निर्णय करने में असफल हो उन्होंने वि० सं० १७८१ की आषाढ सुदे १३ (=ता० ३ जौलाई १७२४ ई०) को रनवास में सोते हुवे अपने पिता को मार डाला। इस विषय का यह दोहा प्रसिद्ध है:—

बखता बखत बायरो क्युं मार्यो अजमाल।
हिन्दुवाणीरो सेवरो तुरकाणीरो साल ॥

अर्थात् हे भला बुरा न विचारनेवाले बखतसिंह! तूने अजीतसिंहजी को क्यों मारा? वह तो हिन्दुओं का शिरमौर और मुसलमानों का कट्टर शत्रु था।

महाराजा अजीत के साथ सती होनेवाली स्त्रियों की संख्या अगले पिछले सब राजाओं से बढी हुई थी। ६ रानियां। रानियों की मानसे (दासियां) २० बीस। ९ उडदा बेगणियां (उर्दूबेगमें-पहरा देनेवाली औरतें) २० गायनें और २ हजूर बेगणियां (हजूरी बेगमें). महाराजा की चिता पर चढ कर उनके साथ सती हुई। गंगा नाम की एक उपपत्नी (पडदायत) जो महाराजा के साथ मारी गई थी वह भी

साथ ही जलाई गई। कई बंदर और कई मोर भी अपनी इच्छा से चिता में गिर कर जल गये थे। इस प्रकार कुल ८४ प्राणी महाराजा पर जान कुरबान करके उनके साथ स्वर्ग को गये। वह दिन जोधपुर में बड़े शोक, सन्ताप और हाहाकार का अद्वितीय था।

इन महाराजा के बनवाये स्थान ये हैं:—

१—जोधपुर के किले में फतह पोल नामक दरवाजा और दौलतखाने का बड़ा महल तथा पत्थर और चांदी की कई मूर्तियां। २—जोधपुर शहर का गंगश्यामजी का नया मंदिर। ३—मंडोर में एक दालिया महल। ४—महाराजा जसवतसिंहजी का देवल (बड़ा-छतरी) ५—काला गोरा भैरव और हड़बूजी, पाबूजी, रामदेवजी आदि वीरों की पहाड़ में खुदी हुई बड़ी २ मूर्तियां। चांदपोल दरवाजे के बाहर की राणीजी बावड़ी और गोल में का राणावतजी का मंदिर इनकी रानियों ने बनवाये थे। ख्यातों में लिखा है कि 'मारवाड में पहले पहल इन्होंने ही अपना सिक्का चलाया था।' इनके राजकुमार १५ थे:—

१—अभयसिंह। २—बख्तसिंह। ३—सुलतानसिंह। ४—तेजसिंह। ५—दौलतसिंह। ६—किशोरसिंह। ७—जोधसिंह। ८ आनन्दसिंह (वि० सं० १७६४ की आषाढ बदी ५को जन्मे और सं० १७८५में ईडर के राजा हुवे।) ९-रायसिंह। इनका जन्म वि० सं० १७६८ की सावन बदि २ को हुवा। १०—अखैसिंह। ११—रत्नसिंह। १२ रूपसिंह। १३ मानसिंह। १४—प्रतापसिंह और १५—छत्रसिंह। इनमें से ज्येष्ठकुमार

२५—राजराजेश्वर महाराजाधिराज अभयसिंहजी

दिल्ली में वि० सं० १७८१ की सावन सुदि ८ को मारवाड की गद्दी पर बैठे। इस अवसर पर बादशाह मोहम्मदशाह ने इन्हें राजराजेश्वर की उपाधि और नागौर जागीर में दिया। नागौर उस समय राव अमरसिंह के पौत्र राव इन्द्रसिंह के कब्जे में था अतः उसे महाराजा ने अपने राज्य में से दूसरी जागीर दे नागौर की जागीर और राजाधिराज की पदवी अपने छोटे भाई बख्तसिंह को दी। और सं० १७८६ में इन्होंने गोकुलिये गुसांईजी को चोपासनी गांव दिया।

दिल्ली की सल्तनत को दिन दिन कमजोर होते देख अवध व दक्षिण के सूबेदार सं० १७८७ में स्वतन्त्र हो गये। और इनके देखादेख गुजरात का सूबेदार सरबलंदखां भी बादशाहत से बागी हो स्वतन्त्र हो गया। इस पर बादशाह ने महाराजा अभयसिंह को गुजरात की सूबेदारी दे सरबलंदखां पर चढाई करने को भेजा। इस चढ़ाई में महाराजा के भाई वीर श्रेष्ठ राजाधिराज बख्तसिंहजी नागौरपति भी साथ थे। आसोज सुदि ७ (ता० १७ ओक्टोबर १७३० ई०) को महाराजा और सरबलंद की फौजों का मुकाबला अहमदाबाद के पास मृचेह गांव में हुवा। यहां पर ५ रोज तक युद्ध व गोलनदाजी होकर अन्त में नव्वाब को हरा कर सुदि १२ को अहमदाबाद पर विजय पताका फहरा कर अनेक वस्तुओं के साथ ही शाही तोपखाना और माल असबाव इन्होंने लूट लिया जो अब तक जोधपुर राज्य में सुरक्षित है। मारवाडी अफसरों ने गुजरातियों को बुरी तरह तग करके उनसे रुपया पैंठा। हकूमत क्या थी लूटेरापन था। यदि महाराजा साहब अच्छा प्रबन्ध करते तो शायद निजामुल्मुल्क की तरह गुजरात प्रांत इन्हीं के अधिकार में रह जाता। फिर भी महाराजा ने गुजरात के भीनमाल आदि कुछ कस्बे मारवाड़ में मिला लिये थे।

महाराजा अभयसिंह की सरबलंदखां के साथ जो लड़ाई हुई उसका वृत्तांत मेवाड के सूलवाडा गांव के चारण कवि करणीदान[1] कविया ने "बिरद शृगार" नामक पुस्तक में लिखा है जिस पर महाराय ने प्रसन्न हो उसे लाख पसाव तथा आलास गांव और कविराजा की उपाधि दी। आलास गांव आज भी मारवाड़ के सोजत परगने में उनके वंशजों कब्जे में है। इसके सिवाय हिन्दी कविता के 'सूरज प्रकाश', 'राजरूपक' और संस्कृत के 'अभय विलास' नामक ग्रंथों में

१—कर्नल टाड ने कवि करणीदान को कन्नोज के चारण कवि के वंश से लिखा है जो ठीक नहीं है। क्यों कि चारण कनोज क्या जमना के पार ही न पहले रहते थे न अब ही रहते हैं। करणीदान राजस्थान प्रांत का ही एक विद्वान् व चतुर चारण था।

श्री महाराजा अभयसिंहजी के प्रताप का वर्णन है। 'सूरजप्रकाश' में राठोड़ों की वंशावली आदि नारायण से महाराजा अभयसिंह के गुजरात फतह करने के संवत १७८७ तक कविता में है इसी के सारांश का नाम "विरद सिनगार" है। इन दोनों के रचयिता कविराय करणीदान चारिया थे। ये ग्रंथ भी अभी छपे नहीं हैं। कर्नल टाडने इन्हीं के आधार पर जोधपुर का इतिहास अपनी पुस्तक में लिखा था।

वि० सं० १८०० की आश्विन सुदि १४ (ई० १७४३ ता० ३ ऑक्टोबर) को जयपुर महाराजा जयसिंहजी का देहांत हो जाने पर महाराजा अभयसिंहजी ने मेडता से आलनियावास के ठा० सूरजमल और रूपनगर के शिवसिंह के साथ भंडारी सूरतराम को मय सेना के भेज अजमेर पर अधिकार कर लिया। इस पर महाराजा ईश्वरीसिंह ने अजमेर पर चढ़ाई की परन्तु अन्त में दोनों में मेल हो गया और अजमेर अभयसिंहजी के कब्जे में रहा। सं० १८०४ में बादशाह महमदशाह का देहांत हो गया और नये बादशाह अहमदशाह ने नागौर के राजाधिराज महाराज बख्तसिंह को गुजरात का सूबेदार (वाइसराय) बनाया।

वि० सं० १८०६ की आषाढ सुदि १५ (ता० ३० जून सन १७४९) को महाराजा अभयसिंहजी का अजमेर में देहांत हो गया। अग्निसंस्कार पुष्कर पर किया गया जहां पर इनके साथ दो खवास व ११ पड़दायतें सती हुई और जोधपुर में छः राणी व १४ खवास-पड़दायतें आदि जलीं।

यह महाराजा शांतिप्रिय, चतुर, गुणग्राहक और वीर थे परन्तु अफीम का सेवन बहुत करते थे। युद्धों में इनकी सदा विजय होती थी। मंडोर में वीरों की मूर्तियोंवाला जो दालान है वह इन्हीं के समय पूरा हुआ था। इन महाराजा के एक राजकुमार

२६—महाराजा रामसिंहजी

थे जो सं० १८०६ की सावन सुदि १० (ई० १७४९ ता० १५ जून गुरुवार) को जोधपुर की गद्दी पर बैठे। इनका जन्म वि० सं० १७८७

प्रथम भादों वदि १० (ई० १७३० ता० ७ आगस्ट) को हुवा था। ये सब प्रकार के दुर्व्यसनों मे फंसे हुवे थे। अभयसिंहजी को मृत्युशय्या तक इनकी वडी चिन्ता थी। उनको भय था कि इस मूर्ख से मेरा छोटा भाई बखतसिंह राज छीन लेगा किन्तु रीयां के ठाकुर शेरसिंह मेडतिया ने उन्हें दिलासा दिया कि वे किसी प्रकार रामसिंहजी का साथ नहीं छोड़ेंगे।

महाराजा रामसिंहजी ने गद्दी पर बैठ कर अमीया (अमीचन्द) नामक एक डांगी-ढोली-को और एक दरजी को अपने प्रधानमन्त्री बनाये। पश्चात् रीयां ठाकुर के सेवक बींजा दरोगा को अपना दीवान (मुसाहिब) बनाया। इन लोगों का हंसी, ठठ्ठा और छिछोरपन को छोड़ और कोई काम न था। इससे सब सरदार व नगर के प्रतिष्ठित लोग नाराज होकर नागौर के राजाधिराज महाराज बखतसिंहजी को चढा लाये। इस घटना को किसी कवि ने इस समय इस प्रकार वर्णन की है:—

रामो मन भावे नहीं, उत्तर दीनो देश।
जोधाणो झाला करे, आव धणी बखतेश॥

चांपावत, कूंपावत और करमसोत आदि कई खांपों (कुलों) के सरदार महाराज बखतसिंह के पक्ष में रहे और मेडतिया लोग रामसिंहजी की तरफ रहे क्यों कि उनके टीकाई (मुख्य) सरदार रीयां के ठा० शेरसिंह ने अभयसिंहजी को वचन दिया था कि-रामसिंह का पक्ष मैं कभी नहीं छोड़ूंगा। निदान इस बखेड में रामसिंहजी व बखतसिंहजी के बीच मेडते के पास कार्तिक सुदि ६ सं० १८०७ (ई० स० १७५० नवम्बर ता. ८) को वडा घमशान युद्ध हुवा जिसमें दोनों तरफ के वीर खूब लड़े और दोनों तरफ के कई वीर काम आये। पश्चात् बखतसिंहजी ने दूसरा हमला सं० १८०८ की वैशाख वदि ६ (ई० १७५१ अप्रेल ता० २१) को किया। इसी तरह तीसरी लडाई हुई। अन्त में महाराजा रामसिंहजी तो मेडते में थे और

२७—महाराजा बख्तसिंहजी

ने वि० सं० १८०८ की सावन वदि १२ (ता० २१-७-१७५१ ई०) को जोधपुर पर अधिकार कर लिया। इस पर महाराजा 'रामसिंह' ने आपा सिंधिया से दस बारह हजार फौज मदद में लाकर अजमेर पर कब्जा कर लिया। किन्तु महाराजा बखतसिंह के आगे उनकी दाल न गली। महाराजा बखत दल बल सहित अजमेर पहुँच कर वहाँ जाली कागज मरहठों की सेना में डलवा दिये जैसे कि बादशाह शेरशाह ने राव मालदेव के साथ किया था। मरहठे रामसिंह को साथ ले भाग कर मन्दसौर पहुँचे। इस समय महाराजा बखतसिंह ने मरहठों से मालवा छीनने का विचार किया और जयपुर से महाराजा माधोसिंहजी को भी बुलवाया। सोनोली गांव में दोनों का मिलाप हुआ। सं० १८०९ की भादों सुदि १३ (ई० स० १७५२ की ता० २२ सितम्बर) को यहीं महाराजा बख्तसिंहजी का स्वर्गवास हो गया। ख्यातों में लिखा है कि—'जयपुर महाराजा माधोसिंह ने अपनी रानी को—जो बखतसिंहजी की भतीजी और किशनगढ नरेश की पुत्री थी—जैसे तैसे समझाकर व दबाव डालकर उसके द्वारा एक जहरीली पोशाक व कुछ चीजें उपहार रूप भेजा दी। इस पोशाक के पहनने से महाराजा बखतसिंहजी के शरीर में विष का प्रवेश हो वे स्वर्ग सिधारे।" इनका जन्म सं० १७६३ की भादों वदि ७ सोमवार (ई० १७०६ ता० १६ अगस्त) को हुआ था। जन्मचक्र यों है—

शाके १६२८ उ० घ० ३३ पल ६ सू० ४-१८ लग्न १०-२
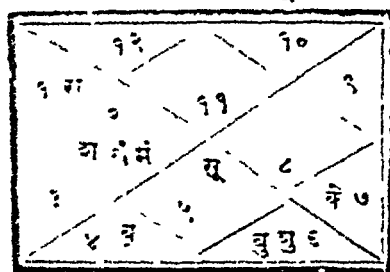
महाराजा बख्तसिंहजी वड़े वीर, दानी, न्यायप्रिय, बुद्धिमान

महाराजा बखतसिंहजी।

और कार्यकुशल (राजनीतिज्ञ) राजा थे। उन्होंने १७ वर्ष तक नागौर का और १ वर्ष तक जोधपुर का राज्य बड़ी उत्तमता से किया था। इनके न्याय की कहानियां सारे राजस्थान में प्रसिद्ध हैं। उनमें से दो तीन उदाहरण यहां दिये जाते हैं:—

(१)

एक बार जयपुर नरेश महाराजा सवाई जयसिंहजी ने महाराजा बखतसिंहजी के न्याय की प्रशंसा सुन कर परीक्षा लेने को अपने दो दूत नागौर भेजे। वे एक हलवाई की दूकान के सामने बैठ कर जितनी बिक्री हुई उसका हिसाब लगाते रहे। शाम को जब हलवाई दिनभर की कमाई गिन कर, थैली में रख कर चलने लगा तो दूतों ने कहा कि-'यह हमारी पूंजी है। क्यों कि इसमें अमुक संख्या के रुपये पैसे हैं।' वे लोग झगड़ते हुये महाराज बखतसिंहजी तक पहुंचे। महाराज ने एक कड़ाई में पानी गर्म करा कर उसमें वह रुपये पैसे डलवा दिये। पानी पर जो चिकनाहट आई उससे जान गये कि ये रुपये पैसे हलवाई के हैं न कि मुसाफिरों के। इस लिये हलवाई को रुपये दिलवा दिये[1]।

(२)

किसी पुरुष की थैली नागौर में गींदाणी तालाब पर गुम हो गई। महाराजा बखतसिंह के पास पुकार पहुंची। उन्होंने थैली का पता लगाने का समय निश्चित किया। जिस दिन शहर से सब लोग तालाब पर जमा हुये और महाराजा साहब ने वहां पहुंच कर कीर्ति-स्तंभ के पास चोबदार के द्वारा कहलवाया कि-'थैली बतला दो।' कुछ देर ठहर कर खुद महाराजा ने पत्थर के कान लगाया और कहा कि-'कीर्तिस्तंभ बतलाता है कि एक चिड़िया आवेगी और जो चोर होगा उसके सिर पर बैठेगी।' चोर वहां मौजूद था। वह घबराया और चिड़िया को अपने शिरपर न बैठने देने के लिये शिरपर हाथ फैलाया। महाराज ने

१—यदि उस समय के नालायक और कानूनी हलकारे होते तो कह देते कि 'रुपये पर चिकनाहट हलवाई के हाथों की उस वक्त लग गई जब उसने हमसे थैली लेकर गिने थे।'
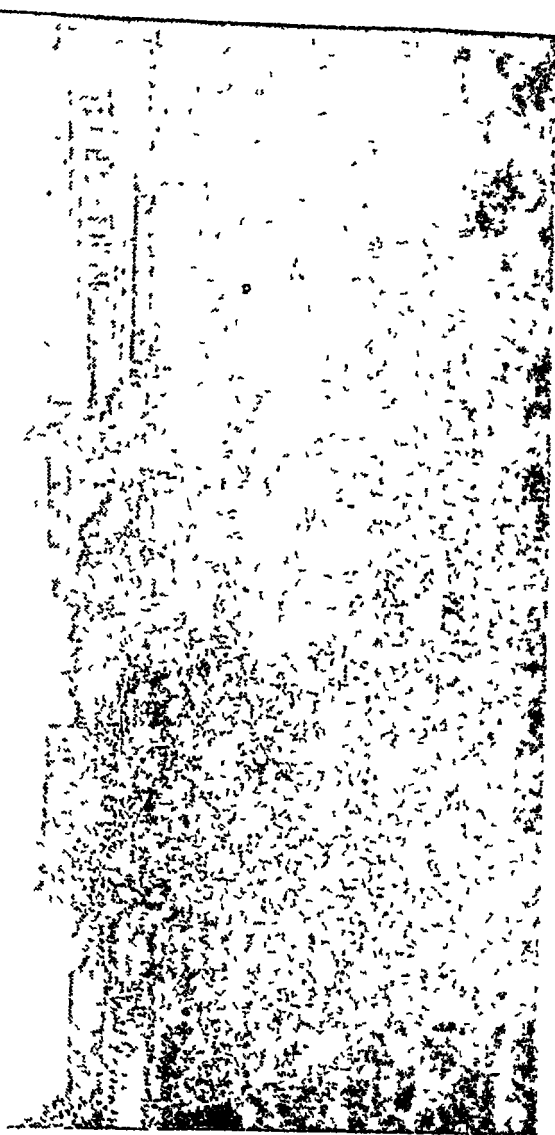
किला नागौर–यह राजस्थान भरमें प्रसिद्ध है।

[illegible] पश्चात [illegible] और थैली उसके मालिक को दिलवा

(२)

किसी नगर के उसके पिता के घर पर पुत्र हुआ और उसी को उसी की भौजाई के लड़की हुई। जिसको दाईने आपस में ब दिया। इसका झगड़ा महाराजा बख्तसिंहजी के पास पहुंचा। म राजा ने दो गाय, दो भैंस, दो बकरी और दो स्त्रियों को बुलाया। में एक बच्चे की और दूसरी बच्ची की माता थी। सब का दूध ले तुलवाया गया तो बच्चे की मां का दूध बच्ची के मां के दूध से भ निकला। झगड़नेवाली ननद भावज का दूध भी तुलवाया गया ननद का दूध भारी निकला और भावज का हल्का उतरा। इस महाराज ने लड़के की मां को लड़का और पुत्री की मां को दिलवा दी।

महाराजा बख्तसिंहजी चारणों से बड़े नाराज रहते थे और के कई गांव जब्त कर लिये थे। इन्होंने नागौर के किले में नये मह बनवाये थे और जोधपुर के किले की बहुत कुछ उन्नति की और महाराज ने राजधानी के चारों तरफ जो परकोटा बनवाना शुरू कि था, वह उस समय तक अधूरा पड़ा था; उसको इन्होंने ६ मा समाप्त करवा दिया। नागौर में मुसलमानी काल में जो अत्याचार थे उनका इन्होंने बदला लेकर मसजीदों को गिरवा कर पुरानी इमा को वापस बनवाया। कर्नल टाड साहबने लिखा है कि-"इन्होंने राज्य भर में मुसलमानों को नमाज की बांग (अजां) देने की म मनाई कर दी और इसके लिये मृत्युदण्ड रखा।" इनके पुत्र केवल

२९—महाराजा विजयसिंहजी

थे जो उनके पश्चात् राज्य के अधिकारी हुये। पिता की मृत् समय ये मारोठ (मारवाड़) में थे। अतः वहीं पर सं० १८०९ के में गद्दी पर बैठे और बादशाह अहमदशाह ने खलीता भेजा। इ जन्म वि० सं० १७८६ की मिगसर बदि ११ गुरुवार (ई० स० १ नवम्बर ता० [illegible]) को हुआ था। जन्मपत्री इनकी इस प्रकार है:—

श्री इष्ट घटी ३२ पल ३३ । २७-४.
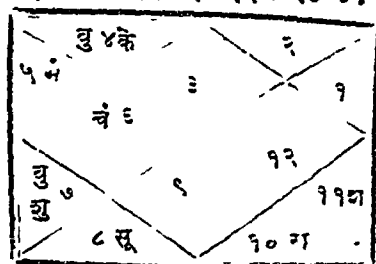
सं० १८११ में महाराजा रामसिंहजी, जय आपा सेंधिया को ६० हजार सेना सहित मारवाड पर चढा लाये। महाराजा विजयसिंहजी भी अपनी ४० हजार फौंज से मुकाविले में चले। किसनगढ के … बहादुरसिंह और बीकानेर के राजा गजसिंह, विजयसिंहजी की मदद … थे। मेड़ते के पास गांव गागराणा में वि० सं० १८११ आसोज वदि १३ (ई० १७५४ ता० १५ सितम्बर) को घमशान युद्ध हुवा। अन्त में महाराजा विजयसिंहजी को रणक्षेत्र छोडना पडा। वे वहां से नागौर को चल दिये परन्तु मरहठा सेना ने वहां भी उनका पीछा कर नागौर को जा घेरा। इस प्रकार कई दिनों तक वहां युद्ध होता रहा। निदान विजयसिंहजी ने चौहान सांईदास की जमईयत के खोखर शाखा के राठोड़ केसरीसिंह और एक गहलोत नवयुवक, दोनों क्षत्रिय वीरों, को वनिये (महाजन) के भेष में मराठी फौज में भेजा। उन्होंने वहां जा कर वनिये की दूकान की। एक दिन यह दोनों वनावटी वनिये आपस में ऐसे लड़े कि देखनेवालों के पेट में वल पडने लगे। ये दोनों लडते झगडते जय आप्पा सेंधिया के डेरे पर पहूंचे। उन्होंने भी इनकी लड़ाई का हाल सुनकर इन्साफ के वास्ते भीतर वुलवाया। ये दोनों लड़ते २ अप्पाजी पर जा गिरे और मौका पाकर पेश कब्जों व कटारी छूरों से जय अप्पा को स्वर्ग पहूंचा कर खुद भी काम आये। इस घटना के विषय में यह कहावत प्रसिद्ध है—

१—जय आपा सेंधिया पर जो छतरी बनी थी वह अब तक नागौर शहर से करीव २ मील के फासले पर गांव ताउसर में मौजूद है।

' गोगार बडो खुटकी माथो आपा सरीखो डाकी !"

इस पर भी मरहटों ने युद्ध जारी रखा । महाराजा विजयसिंहजी और बीकानेर चले गये पीछे से जय अप्पा के पुत्र जनकू से इस शर्त पर सुलह करली कि-' अजमेर और इक्यावन लाख रुपया फौज खर्च का उन को दिया जाय, जोधपुर महाराजा विजयसिंह के और मेडता महाराजा रामसिंह के कब्जे में रहे । बाकी आधा २ राज्य बांट लिया जाय ।' इस समझौते अनुसार मारोठ, मेड़ता, सोजत, परवतसर, सांभर आदि परगने रामसिंहजी को मिले । इस प्रकार वि० सं० १८१२ कार्तिक सुदि १५ (ई० १७५५ ता० १९ नवम्बर) को यह झमेला समाप्त हुआ ।

वि० सं० १८१३ में महाराजा रामसिंह विवाह करने को जयपुर गये । पीछे से मेडता, सोजत और जालोर आदि किलों पर महाराजा विजयसिंहजी ने कब्जा कर लिया । इस पर रामसिंहजी मराठी फौजों को फिर चढ़ा लाये । जिन्होंने मारवाड़ में ऐसी लूट-खसोट मचाई कि विजयसिंहजी को डेढ़ लाख रुपये सालाना देने का वादा और अजमेर देकर अप्पाजी सेंधिया के भाई रानोजी से सुलह करनी पड़ी । रामसिंहजी को भी उनके परगने वापिस देने पड़े । पश्चात् रानोजी अजमेर का प्रबन्ध गोविंदराव को सौंप कर दक्षिण की तरफ चले गये । इस प्रकार महाराजा विजयसिंहजी का मरहठों से पीछा छूटा और मेड़ते पर रामसिंहजी का पुनः अधिकार हो गया ।

रामसिंहजी और विजयसिंहजी के आपस में, काका-भतीजे का, झगड़ा देख कर सरदार लोग भी शक्तिशाली बनने और विजयसिंहजी के विरुद्ध सिर उठाने लगे । घरेलु फूट से मारवाड की परिस्थिति बहुत बिगड़ने लगी । इसे देख कर विजयसिंहजी को बाहर से सैनिक बल बुला कर रखने की नौबत आई । अतः उन्होंने मेवाड से गुसांइयों (महापुरुषों) के बेड़े (जमइय्यत) बुला कर उनकी भी एक सेना बनाई । यह लोग अपनी वीरता और स्वामिभक्ति के लिये प्रसिद्ध थे और खास कर "बाण" नाम के अद्भुत शस्त्र चलाने में तो बड़े ही दक्ष थे । इन बेड़ों से महाराजा विजयसिंहजी को बहुत मदद मिली ।

यद्यपि जागीरदार लोग इन परदेशी लोगों की सेना रखने से और भी बिगड गये और वे महाराजा विजयसिंहजी से लड़ाई करने को सं० १८१५ में जोधपुर से १८ मील पूर्व को गांव बीसलपुर में इकट्ठे हुवे। इन्होंने रामसिंहजी को अपनी ओर झुकाने का भी प्रयत्न किया। इतने में विजयसिंहजी घबरा कर अकेले ही जागीरदारों के पास पहुंचे और जैसे तैसे उन्हें मना लाये। किन्तु महाराजा के मन में और ही बात रम रही थी कि कब मौका आय और कब इन सरदारों से बदला लूं। इसी अर्से में फाल्गुण बदि १ सं० १८१६ वि० (सं० ता० ३ फरवरी १७६० ई०) को महाराजा के गुरु आत्मारामजी का किले पर स्वर्गवास हो गया। अतएव महाराजा ने बड़े २ सरदारों (उमरावों) को साधुजी को मिट्टी देने के लिये बुलवा कर धोखे से कैद कर लिया। इन उमरावों के नाम ये हैं:—

१—रास के ठा० केसरीसिंह। २—पोकरन के ठा० देवीसिंह। ३—आसोप के ठा० छत्रसिंह। ४—नीमाज के ठा० दौलतसिंह। इनमें से देवीसिंह छः दिन बाद, छत्रसिंह एक मास बाद कैद ही में मर गये और चौथे दौलतसिंह को बच्चा जान महाराजा ने छोड दिया। यह केसरीसिंह का बेटा था और नीमाज गोद गया था। इन लोगों की गिरफतारी के समय किसी कवि ने मारवाड़ी भाषा में यह दोहा कहा था:—

दो०

केहर देवो छत्रशाल दौलो राजकुँवार।
मरते मोंड[1] मारिया चोटीवाळा चार॥

इस घटना से जागीरदारों में बड़ी सनसनी फैल गई और देवीसिंह के पुत्र सबलसिंह आदि चांपावतों ने मारवाड में लूट मार मचा दी। विजयसिंहजी की सेना ने मेड़ते पर कब्जा किया और रामसिंहजी ने राठोड सरदारों सहित मेडता को घेर लिया। किन्तु सेना सहित जग्गु धायभाई के आ जाने से रामसिंह नौ दो ग्यारह हो अपने

१—मोंडे से तात्पर्य स्वामी आत्माराम संन्यासी से है।

[illegible] जयपुर चले गये। जहां सं० १८२६ में उनका देहांत हो गया।

सं० १८१६ में महाराजा विजयसिंहजी ने अजमेर को जा घेरा परन्तु इतने में माधवराव सेंधिया सेना लेकर आ पहूँचा। इस लिये महाराजा को लेने के देने पड़ गये और सेना भाग कर वापस आई। और महाराजा को सेंधिया को ६ लाख रुपये (सं० १८१८ वि० में) देने पड़े।

वि० सं० १८२१ श्रावण (अगस्ट सन १७६४ ई०) में जग्गू धाय-भाई इस संसार से चल बसा और सं० १८२२ में माधवराव सेंधिया के आने की सूचना मिली। तब महाराजा ने उसे ३ लाख रुपये देकर मन्दसौर से आगे नहीं बढ़ने दिया। इन्हीं दिनों से महाराजा विजयसिंहजी नाथद्वार (मेवाड़) के गोकुलिये गुसांई को मानने लगे और अपने राज्य भर में कसाई (मांस) और कलाल (शराब) का धन्धा ही उठा दिया। कसाइयों को बोझा ढोने व मकानों पर छीणें (छत की पट्टियें) चढ़ाने के काम में लगा दिया था जो काम वे आज तक करते हैं और "चंवालिया" कहलाते हैं। और जो कसाई हैं, वे महाराजा विजय के पश्चात् बाहर से आये हुवे हैं। यह महाराजा कट्टर वैष्णव थे। इनकी कट्टरता का परिचय इसी से मिल सकता है कि इनके प्रथम उमराव आउवा के ठाकुर जैतसिंह ने पशुवध बंद नहीं किया और यह सोचा कि उसके पिता ठा० कुशलसिंहजी ने महाराजा विजयसिंहजी को जोधपुर का राज्य दिलाने में अपने प्राण दिये, इस लिये पशुवध किया जायगा तो भी महाराजा साहब रियायत कर देंगे। कई बार कहने पर भी ठाकुर ने नहीं माना तो सं० १८३१ में महाराजा ने उन्हें किले में बुलवा कर कतल करवा दिया।

ऐसे ही महाराजा विजयसिंहजी की गोभक्तिका परिचय इस उदाहरण से पाया जाता है कि एक दिन फौज के एक मुसलमान सिपाही ने बैल के तलवार मार दी। कोटवाल उसको पकड़ने गया तो उसके साथियों ने उसे पकड़ने नहीं दिया बल्कि लड़ने को तैयार हो गये। तब

महाराजा से अर्ज हुई। महाराजा ने उस फौजी बेंड के जमादार को हुक्म भेजा कि उस सिपाही को लेकर ड्योढी पर अभी हाजिर हो जावे। उसने भी हुक्म नहीं माना और परदेशी मुसलमानों का सारा बेडा बदल गया। तब महाराजा ने किलेदार को हुक्म दिया कि बेंड के डेरे पर तोपें फेर दो और इन कृतघ्नों को गोलों से उड़ा दो। यह सुन कर प्रधानमंत्री (दीवान) गोरधन खीची ने अर्ज की कि "हजूर! यह क्या गजब करते हैं! आज सब जागीरदार बदले हुवे हैं। राज्य का हुक्म इन्हीं परदेशी सिपाहियोंके बल से चलता है।' महाराजा ने चीड़ कर कहा "मत चलो, हम को गाय और बैल मरवा कर राज करना और हुक्म चलाना मंजूर नहीं है।"

ठाकुर गोरधनजी खीची ने जब महाराजा को आर्य धर्म में इतना पक्का देखा तो फौजी बेंडे में जाकर जमादार से कहा कि क्यों अपनी जान और ५ हजार परदेशियों की रोटी गुमाते हो। हजूर तुम्हारे फितूर से राज छोड देंगे परन्तु उस सिपाही को नहीं छोडेंगे जिसने बैल के तलवार मारी है। तुम हिन्दु राज्य की रोटी भी खावोगे और गाय बैल की हत्या करके जबाब देने को बुलाने पर हाजिर भी नहीं होगे और उल्टा सामना करके लड़ने को तैयार हो जावोगे। ऐसा कभी नहीं होगा। हजूर ने तोपखाने को हुक्म दे दिया है। अभी तोपों पर बत्ती पड़ेगी। तुम यहीं भून दिये जावोगे। और भागोगे तो भी जीते नहीं बचोगे। क्यों कि सब जागीरदार-सरदार तुम से जले भूने बैठे हैं।" यह सुन कर उनके होशहवास ठिकाने आ गये और उस सि-पाहीको सौंप दिया। और ड्योढी पर हथियार रख कर क्षमा मांग ली।

वि० सं० १८२७ में मेवाड के निर्बल राणा अड़सी (अरिसिंह) जी ने अपने राज्य का गोडवाड परगना इस शर्त पर महाराजा विजयसिंह-जी को अपने खास दस्तखतसे लिखे वैशाख वदि ११ के खलीता-रुक्का द्वारा दिया कि मेवाड के बागी जागीरदारों को दबाने और कुम्भल-गढ़ पर रतनसिंह जो महाराणा बन बैठा था उसे निकालने के लिये ३ हजार सवार और पैदलों की सेना नाथद्वारे में महाराणा के अधि-

काम में महाराजा विजयसिंहजी रहे। मारवाड़ की सेना ने वहां डेढ वर्ष तक रह कर मेवाड़ के उपद्रवों को शान्त कर दिया। और गोडवाड़ (गोड़वार) का परगना सदा के लिये जोधपुर के नीचे रह गया। यह एक बड़ा परगना (जिला) मारवाड़की दक्षिणी सीमा पर है और खूब उपजाऊ—सजल तथा आड़ेवाले पहाड़ के नीचे मेवाड़से मिला हुवा है।

इसी वर्ष में उमरकोट के सराई जाति के लोगों ने इधर उधर लूट खसोट मचा दी। अतः महाराजा ने उन्हें दबाने को सेना भेजी। उस समय सोढा राजपूतों से उमरकोट छीन कर टालपुरा वंश के मुसलमान वहां के मालिक बन गये थे। राठोड़ों ने टालपुरों के मुखिया मीर बीजड़ को हरा कर उमरकोट पर कब्जा किया।

सं० १८४४ में मरहटों ने जयपुर पर हल्ला बोल दिया और वहां के महाराजा सवाई प्रतापसिंहजी ने सहायता के लिये जोधपुर कहलाया। जिस पर महाराजा विजयसिंहजी अपनी राठोड़ सेना ले वहां पहुंचे। जयपुर राज्य के तुंगा स्थान पर घमशान युद्ध हुआ। मराठी सेना का सेनापति डीबोयने था जिसने मराठों को योरोप की रीति पर युद्धविद्या भलीभांति सिखाई थी। इतिहास में यह पहला अवसर था कि वीर राजपूत किसी कवायदसुदा फौजके सामने आये हों। परन्तु राजपूतों ने लड़ाई होते ही डीबोयने का तोपखाना छीन लिया। अन्त में मरहटों की हार हुई। इस विजय का श्रेय बहुत कुछ राठोड़सेना को मिला। और रणक्षेत्रसे लौटते समय राठोडोंने सिंधिया के सूबेदार अनवर बेग से अजमेर छीन कर उस पर अपना कब्जा किया।

सं० १८४७ में अपनी पिछली हार का बदला लेने के लिये माधवजी सेंधिया ने फिर चढ़ाई की तब जयपुर राज्य में पाटण तंवरावाटी के युद्ध में २० जून १७९० ई० को कछवाहों ने द्वेषवश राठोड़ों को धोखा दिया। अकेले राठोड़ क्या कर सकते थे। परास्त होकर मारवाड़ को भाग आये। अतः मरहटों ने वहां से चल कर मारवाड़ पर चढ़ाई कर दी। महाराजा विजयसिंहजी ने मारवाड़ के हर एक तन्दु

रुस्त १४ से ६० वर्ष की उम्रवाले मनुष्य को अपनी सेना में भरती किया। जब [1] राठोंकी सेना फ्रेञ्च जनरल डीवोयने की मातहती में लूनी नदीके पास १० सितम्बर १७९० ई० को पहुंची तो उसका तोपखाना वहां के कीचड़ में धँस गया। उस समय उन पर हमला करने का अच्छा मौका था, पर राठोड़ोंने अपने घरेलू वादविवादमें लगे रह कर "मारवाड़ मनसूबे डूबी" की कहावत को चरितार्थ किया। मेडतेके पास डांगावास गांव में भादों सुदि ३ सं० १८४७ वि० (ता० ११ सितम्बर १७९० ई०) शनिवार को पौ फटते ही सोये हुवे राठोडोंकी सेना पर उनोंने धावा कर दिया! जब वे जगे तब उन पर गोलियोंकी बौछार पड़ने लगी। इस लिये घबराये हुवे व उठे। पैदल तो तितर बितर हो ही चुके थे कि इतने में फ्रांसीसी आफिसर कर्नल रोहन की मातहती में तीन पलटनों ने यकायक आकर मारवाडी सेना को तेस मेस कर दिया। इस विकट युद्ध की यह दुर्दशा देख कर राजपूतों ने जौहर के केसरिया कपड़े पहिन कर "हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा मोक्ष्य से महीम्" वाला श्रीकृष्ण का वचन जी में ठान लिया और शत्रुओं पर टूट पड़े। और मरते दम तक शत्रुओं पर वार करते रहे। और आखिरकार इस तौर से भयानक बलिदान हुवा कि सिर्फ १५ ही वीर जिन्दा बचे जो अन्त तक पांव जमाये रहे। यह आखरी थे जिन्होंने लडाई के मैदानमें अपनी जानें यों निछावर कर दीं। डीवायने की फौज का एक अफसर यों लिखता है कि-"यह वर्णन करने की मेरी लेखिनी में शक्ति नहीं है कि केसरियां (जर्द) कपड़ेवालों ने अपनी जान हथेली पर लेकर क्या २ बहादुरी दिखाई। मैंने देखा जिस वक्त लैन टूट चुकी थी, पन्द्रह या बीस आदमी हजारों पैदलों पर हमला करने के लिये दौड़े थे और जिस समय दस पन्द्रह कदम के फासले पर ही रह गये थे कि सब तोपों से उडा दिये गये।"

१—सं० १८६० में जब अंग्रेजों और सिन्धिया के बीच युद्ध छिड़ा तब यहां राजा मानने मौका पाकर अजमेर जिले में अपने थाने कायम कर दिये और इस तरह ३ वर्ष तक उसे अपने कब्जे में रखा। पश्चात् सन १८१८ ई० की २८ [illegible] को

मेड़ता की इस लड़ाई में जोधपुर का सैन्यबल टूट गया और महाराजा विजयसिंह ने ६० लाख रुपया (गहना व नकद) और अजमेर देकर मरहठों से सदा के लिये सुलह कर ली। और अजमेर ज़िला सिंधिया को सौंप देने के लिये महाराजा ने अपने अफसर गर्वा (अजमेर) के ठाकुर सूर्यमल को फाल्गुण बदि १ सं० १८४७ (ता० १६-२-१७९१ ई०) को पत्र लिखा। जो खिराज दिल्ली के मुगल-बादशाहों को दिया जाता था उसके स्थान में सिन्धिया को वार्षिक खिराज देना स्वीकार किया।

महाराजा विजयसिंहजी ने जाट जाति की एक स्त्री गुलाबराय को अपनी पासवान (उपपत्नी) सं० १८२३ विक्रमी में बनाया था।

---

१ सन् १८१८ में अजमेर अंग्रेजों के हाथ लगा। और जनरल ऑक्टरलोनी ने अपनी मुसल्मानी उपाधि "नवाब नासिरुद्दौला" के नाम पर अजमेर के पास २० नवम्बर १८१८ ई० को 'नसीराबाद" गांव बसा कर अंग्रेज छावनी कायम की।

२—Rajputana Gazetteer (1907 A. D.) Vol 1 Chap II By. Capt C. E. Luard M. A. (Oxon). I. A.

३—जोधपुर के राजाओं और उनके कुटुम्बियों में यह चाल ठेठ से चली आती है कि यदि किसी जाति की स्त्री को पांव में सोने का गहना पहिना कर उसे जब वे पर्दे में रख लेते हैं, तब वह उपपत्नी "पड़दायत" नाम से कहलाती है। और उसके असली नाम के साथ आदर सूचक "रायजी" शब्द जोड़ दिया जाता है। जिस पड़दायत पर उसके पति का विशेष प्यार होता है वह "पासवान" कहलाती है। रानियों में जिस प्रकार "महारानी" का उच्च पद होता है वैसे ही पड़दायतों में पासवान का होता है। इन पड़दायत व पासवानों से जो पुत्र होते हैं वे अपने पिता के स्वर्गवास के बाद "बाबा" कहलाते थे। किन्तु जब सं० १९१९ वि० में महाराजा तख्तसिंहजी अपना विवाह करने को जैसलमेर गये तब वहां भादो सुदि १० (ई० १८६३ ता० २२ सितम्बर) को उन्होंने अपने स्वर्गीय पिता महाराजा मानसिंहजी के बाबा [illegible], [illegible] और [illegible] आदि पर प्रसन्न होकर बाबा के स्थान में "महाराज" का खिताब दिया। तब से बाबा लोग महाराज कहलाने लगे हैं।

महाराजा की इस पर बड़ी कृपा थी जिससे राज्य में इसका प्रभाव बादशाह जहांगीर की बेगम नूरजहां की तरह प्रबल था।

वल्लभ सम्प्रदाय के चतुर गुसांइयों ने गुलाबराय को भी अपनी चेली बना उसके द्रव्य में अपना भी साझा लगा लिया था। पासवान भी गोकुलिये गुसांइयों की परम वैष्णव भक्त हो गई। इसने जोधपुर शहर के बीच कुंजबिहारीजी का विशाल देखने योग्य मंदिर बनवाया जो सं० १८३५ की फागुन सुदि ८ बुधवार (ता० २४-२-१७७९ ई०) को बन कर तैयार हुवा। इसके सिवाय इसने जोधपुर में नीचे लिखे तालाब, मकान आदि बनवाये थेः—

१—गुलाबसागर तालाब जो आषाढ वदि ४ सं० १८३७ (ता० २१ जून १७८० ई० बुध) से भादों सुदि ५ सं० १८४४ वि० गुरुवार तक बन कर ७ वर्षों में तयार हुवा।

२—गुलाबसागर तालाब पर "मायला बाग" और उसमें महल तथा झालरा (चौमुखी घाटवाली बावडी) जिनकी प्रतिष्ठा सं० १८३७ की पोष वदि ६ रविवार (ता० १७ डिसेम्बर १७८० ई०) को हुई। (मायला बाग में ही विंयूलन जनरल अस्पताल है।)

३—उपर्युक्त तालाब के पास ही विशाल "गिरदीकोट" मंडी मय पक्की शालाओं के जो बाद में महाराजा सरदारसिंहजी के समय में सन १९११ ई० में नये ढंग से बनाया गया और जिसको अब "सरदार मारकेट" व "घंटाघर" कहते हैं।

४—सोजत शहर का परकोटा।

इसी पासवान के वशीभूत होकर महाराजा ने फिर सब सरदारों को अप्रसन्न कर दिया। और अपने पुत्रों में भी राजसिंहासन का बखेड़ा मचा दिया। महाराजा के ज्येष्ठ पुत्र फतहसिंहजी का कंवरपदे में ही स्वर्गवास हो गया और उनके पुत्र भीमसिंहजी गद्दी के अधिकारी रहे। सरदार लोग भी उन्हीं को चाहते थे किन्तु पासवान की इच्छा से महाराजा अपने छोटे पुत्र गुमानसिंह के पुत्र मानसिंह को उत्तराधिकारी रखना चाहते थे। पासवान की ऐसी ही और हरकतों

के सरदार इससे बड़े नाराज थे। अतः पोकरन के ठाकुर सवाई-सिंह चांपावत की अध्यक्षता में एक षड्यंत्र रचा गया और वि० सं० १८४९ की वैशाख बदि १० सोमवार (ता० १७ अप्रेल १७९२ ई०) को ओटा पाकर सरदारों ने पासवान को मार डाला। महाराजा को पासवान के मारे जाने से बड़ा रंज हुवा। और आषाढ बदि १४ सं० १८५० वि० (ता० ८ जौलाई सन १७९३ रविवार) की आधी रात के बाद उनका देवलोकवास हो गया।

यह महाराजा कट्टर धर्मपरायण और दयालु थे। इससे इनका राज्यकाल "विजय बाग" नाम से आज तक प्रसिद्ध है। इनके समय में रामावत और निम्बार्क सम्प्रदाय के गृहस्थ साधुओं की कन्याएं वैष्णव मंदिरों में गाना बजाना किया करती थीं। जिनकी आगे चल कर "भगत" जाति बन गई और पेशा बदल गया। महाराजा विजयसिंहजी की आज्ञा से सो जागीरदार आदि मारे गये। उनके मारने के लिये इन्होंने दिल से हुक्म नहीं दिया था। परन्तु जग्गू धायभाई आदि इनके शुभचिन्तक जालिम और सख्त थे। उन्होंने आधे हुक्म की पूरी तामील कर बताई। यह महाराजा वीरता और दातारी में अपने पूर्वजों से कम नहीं थे। सिन्धका मीर (नव्वाब) जब भाग कर आया तो इन्होंने उसे अपने यहां पनाह देकर जागीर व ताजीम दी थी, जो अब तक

१—महाराजा विजयसिंहजी प्रायः बालकिशनजी के मंदिर में देवदर्शनार्थ जाया करते थे। वहां सं० १८२३ में गुलाब जाटनी हुजूर के चित चढ गई। इस लिये उन्होंने उसे किले पर चढा लिया अर्थात् उसे पड़दायत बना लिया। पहले तो उसे पातरों में रखा फिर खवास का खिताब दिया। पीछे अधिक कृपा हुई तब सं० १८३१ में "पासवान" पदवी दी। इसके सन्तान में केवल एक पुत्र बाबा तेजसिंह था जो द्वितीय श्रावण सुदि ७ सं० १८२५ को जन्मा। इसका विवाह जयपुर में महाराजा सवाई पृथ्वीसिंह के खवास की बेटी से हुवा था। महाराजा विजयसिंह ने इसे सोजत का परगना जागीर में दिया था। किन्तु कुछ समय में ये चेचक से निःसन्तान मर गया।

२—देखो, 'मर्दों का बालदान' (मुंशी पु० प्र० गौड़ लिखित) सं० १९८१ वि० पृ० ७।

उसके खानदान में चली आती है और वे "सिन्धी शाहज़ादा" के लकब से कहलाते हैं। इन महाराजा के राज्य काल में रामसिंह के झगड़े और जागीरदारों की फूट से राज्य की बड़ी बरबादी होती रही थी। यह सब वृत्तांत इनके समय के लिखे हुवे "विजय विलास" नामक काव्य ग्रंथमें विस्तृत वर्णित है। इन्होंने गोल की घाटीका रास्ता जो किले के "जयपोल" दरवाजा से शहर में मोहल्ले गोल में सीधा उतरता है उसे पत्थरों से पटा कर पक्का बंधवा दिया। जिससे इनको मायला बाग से किले आने जाने में सुभेता हो गया था। इनके शेखावतजी, रानावतजी, देवड़ीजी, वीरपुरीजी (लुनावाडा-गुजरात), तँवरजी, इन्द्रभानोतजी और हाडीजी नामक ७ रानियां थी और उपपत्नी केवल एकही पासवान गुलाबरायजी थी। ४ रानियों से इनके सात पुत्र हुवेः—

१—महाराजकुमार फतहसिंह जन्म वि० सं० १८०४ सावण वदि ४ (हि० ११६० ता० १८ रजब=ई० १७४७ ता० २७ जून) को हुवा था जो सं० १८३४ कार्तिक सुदि ८ (ई० १७७७ ता० ८ नवम्बर) को निःसन्तान चल बसे। इन्ही के शुभ नाम पर महाराजा भीमसिंहने राजधानी में "फतह सागर" नामक विशाल तालाव बनवाया।

२-दूसरे पुत्र भोमसिंह (जन्म वि० १८०६ द्वितीय भादों सुदि १०=ई० १७४९ ता० २३ सितम्बर और मृत्यु सीतला-चेचक से वैशाख वदि १३ सं० १८२६ में)। इनके पुत्र भीमसिंह जो अपने दादाके बाद गद्दी बैठे। ३—कुँवर शेरसिंह वि० सं० १८०६ की आसोज सुदि ९ को जन्मे और सं० १८५१ में महाराजा भीमसिंहजी द्वारा मारे गये। ४—पुत्र जालिमसिंह वि० १८०७ आषाढ सुदि ६ को जन्मे और १८५५ वि० आषाढ वदि ५ काछबली गांव में इनका देहांत हुवा ५—सरदारसिंह जन्म वि० सं० १८०९ ज्येष्ठ सुदि १२ और मृत्यु चेचक से वि० सं० १८२६ वैशाख वदि ७ को। ६—गुमानसिंह जन्म वि० १८१८ कार्तिक सुदि ८ और वि० १८४८ आश्विन वदि १२ को स्वर्गवास। इनके पुत्र मानसिंह। ७—सामन्तसिंह जन्म वि० १८२५ फाल्गुण सुदि ८। इनका

भीमसिंह ने गद्दी पर बैठ के वि० सं० १८५१ में मरवा डाला। इनके पुत्र शेरसिंह का जन्म १८४९ कार्तिक सुदि ३ को हुआ। वि० सं० १८५१ में भीमसिंहजी ने इन्हें भी यमपुर पहुंचा दिया।

महाराजा विजयसिंहजी के स्वर्गवास हो जाने पर गद्दी के सच्चे अधिकारी उनके पोते

२८—महाराजा भीमसिंहजी

वि० सं० १८५० की आषाढ़ सुदि १२ (ई० स० १७९३ जौलाई ता० २१) को राज्य के मालिक हुवे। इनका जन्म वि० सं० १८२३ की आषाढ़ सुदि १२ (ई० स० १७६६ की ता० १९ जून) को हुआ था। जन्म-पत्री इस प्रकार है:—

घटि ६ पल ५५ सूर्य ३—५ समये ५८।३०
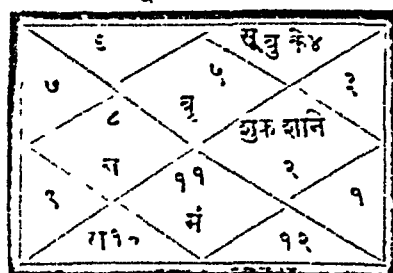
राज्य की बागडोर हाथ में लेने के बाद इन्होंने अपने सब भाई भतीजों को मरवा डाला। केवल गुमानसिंहजी के पुत्र मानसिंहजी ने अपनी जागीर के जालोर किले का आश्रय ले अपने प्राण बचाये। १० वर्ष तक भीमसिंहजी की सेना ने जालोर को घेर रक्खा। वि० सं० १८५९ के मिगसर मास में जालोर नगर पर भीमसिंहजी की सेना का अधिकार हो गया। सिर्फ किला मानसिंहजी के अधिकार में रहा। बाहर का सम्बन्ध न रहने से खाने पीने की वस्तुएं किले में न पहोंचती, अतः मानसिंहजीने किला छोड़ने का विचार किया; किन्तु स्वामी देवनाथ योगी ने उन्हें कुछ दिन धैर्य्य से और रहने का उपदेश दिया। और इसी समय चारण कवि बांकोजीने भी यह दोहा कह कर साहस बढ़ाया:—

आम फटे धर ऊलटे, कटे बगतरां कोर।
तूटे सिर धड़ तड़फड़े, जद छूटे जालोर॥

ईश्वर इच्छा से इसके ४-५ रोज बाद ही भीमसिंहजी की सेना के सेनापति सिंघी इन्द्रराज के पास महाराजा भीमसिंहजी के वि० सं० १८६० की कार्तिक सुदि ४ (ता० २०-१०-१८०३ ई०) को स्वर्गवासी होने का समाचार इस भावका आया कि तुम माफिक दस्तुर घेरा रखना। क्यों कि भीमसिंहजी की रानी के गर्भ है और ठाकुर सवाईसिंहजी के पोकरन से आने पर निश्चय पूर्वक लिखेंगे।

उस समय सैनिकशक्ति सब बख्शी इन्द्रराज सिंघवी (ओसवाल) के हाथ में थी। उसने सोचा कि जो कोई दूसरा गद्दी पर बिठाया जायगा तो ठा० सवाईसिंह और धायभाई शम्भुदान दरोगा आदि शुभचिन्तक बनेंगे। इससे तथा गर्भ की अफवाह को सफेद झूठ समझ कर व

२९—महाराजा मानसिंहजी

को गद्दी का हकदार मान कर उन्हें बड़ी धूमधाम से जोधपुर ले आया। और वि० १८६० मिगसर वदि ७ (सन १८०३ नवम्बर ता० ७) को महाराजा मान किले पर चढ जहां सब ने नजरें भेंट कीं। इसी समय पोकरन के ठाकुर सवाईसिंह ने एक नई चाल चली और कई सरदारों को अपनी तरफ मिला कर अफवाह फिर फैला दी कि-'महाराजा भीम की विधवा रानी देरावरजी (भटियाणीजी) सगर्भा हैं। अतः जब तक राणीके सन्तान उत्पन्न न हो जाय तब तक कोई गद्दी पर न बैठने पावे।' महाराजा ने कहा कि-'राजसिंहासन खाली नहीं रह सकता। यदि महाराजा भीम के महाराज कुमार होगा तो हम उनको राज देकर जालोर लौट जायंगे और यदि बाईजी लाल (राजकुमारी) होगी तो

१—इन महाराजा के ११ रानियां और ४ पड़दायतें थीं। जिनमें से [illegible] सती नहीं हुई बाकी सब मय पड़दायतों और ७ गायनियां व [illegible] दासियों (डावड़ियों) के सती हुई। सोहड़ चन्ना नामक नागोरका एक राजपूत भी [illegible] कार्तिक सुदि १२ को जल मरा। यह अपनी तनखा लेनेको जोधपुर आया था। इस प्रकार २९ प्राणियोंने महाराजा के पीछे सत किया।

उनका विवाह जयपुर के महाराजा या उदयपुर महाराणा से कर देंगे। परन्तु यह काम मैं उसी दशा में करूंगा जब कि सगर्भा रानी के महल का प्रबन्ध मेरे हाथ में रहे।' सवाईसिंह ने इस इकरार का रुक्का चोपासनी के गुसांई के नाम लिखा लिया क्यों कि महाराजा मान के आने से पहले सवाईसिंह ने रानियों को गांव चोपासनी (जोधपुर) में भेज दिया था। जहां इन राजाओं के इष्टदेव का मंदिर होने से खूनी लोग भी शरन रहते थे। इकरार लिखे जाने बाद सवाईसिंह ने रानियों को और कहला दिया जिससे वे किले में तो नहीं गईं और मार्ग में शहर के नगरसेठों के महलों में उतर पड़ीं। महाराजाने लाचार होकर वहां अपने विश्वास के नाजिर[1] (हिन्दु खोजा-नपुंसक) और दासी-बांदियां (डावडियों) को रख कर पूरा पूरा प्रबन्ध चौकी पहरे का कर दिया। इस झमेले से महाराजा मान का विधिपूर्वक राजतिलक होने में भी देर हो गई। दो मास यों ही गड़बड़ में चले गये। निदान माघ सुदि ५ सं० १८६० वि० को राज्याभिषेक हुवा। राज्याभिषेक के रोज गांव मुंडियाड़ के बारहट चारण जो राठोड़ों के पोलपात—अर्थात वंशपरम्परागत राजकवि हैं—राजतिलक की घोषणा में राजा की पीढ़ियां पढ़ा करते हैं। और हर एक के नाम के साथ उसके पिता का नाम भी लेते हैं और जो कोई राजा अउत (विना पुत्र) देवलोक जाता है तो उसके जो पुत्र गोद आता है वह पीढ़ियों में उसका बेटा गिना जाता है। इस नियम से महाराजा मानसिंह भी महाराजा भीम के बेटे कहलाये जाते और यह बात महाराजा भीमसिंहजी के शुभचिन्तकों से भी तय हो चुकी थी। परन्तु अब उसके विरुद्ध मूंडियाड के बारहट को मानसिंह गुमानसिंहोत कहने का हुक्म हुवा पर उसने उसी पुराने नियम का ध्यान रख कर "मानसिंह भीमसिंहोत" कहा। इस पर महाराजा ने नाराज हो कर अपने कृपापात्र चारण जुगता वणसुर को बुलाया और उससे "मानसिंह गुमानसिंहोत" कहलाया।

1—उदयपुर, बूंदी आदि राज्यों में नाजिर को जनाने में नहीं आने देते। वे कहते हैं कि ये मर्द न सही, पर मूल तो मर्दों जैसी है!

इस बात से महाराजा भीमसिंहजी के सरदारों और शुभचिन्तकों का माथा ठनका और ठा० सवाईसिंह ने जो उनका मुखिया था सब को बुला कर कहा कि 'जब ये महाराजा भीमसिंह का नाम मिटाया चाहते हैं, तो फिर हम लोगों का क्या भला करेंगे।' यों सरदारों को भड़का कर सवाईसिंहजी ने अपनी टोली का अच्छा संगठन कर लिया।

इधर महाराजा मानने राजसिंहासन पर बैठते ही अपने विरोधियों से बदला लेना शुरू किया और उन शुभचिन्तकों को जिन्होंने संकटमें सहायता की थी उनको, जागीरें आदि दी। जिस स्वामी महापुरूष देवनाथ योगी ने महाराजाको कुछ रोज तक धैर्य से जालोर किले में बैठे रहने की जो करामाती बात कही थी उन्हें महाराजाने बुला कर अपना गुरु बनाया। और उनकी सम्मति से नागोरी दरवाजे से ४०० कदम के फासले पर अपने इष्टदेव जालंधरनाथजी का विशाल मंदिर "महामंदिर" नामसे मय तालाव, झालरा, महल व बागबगीचेके तयार कराया। जिसकी प्रतिष्ठा सं० १८६१ की माघ वदि ५ को बड़े समारोहसे की। और परिहार लखा[1] को अपना झारावरदार (जल अध्यक्ष) बनाया। क्यों कि विखे (विपत्ति) के दिनों में जल आदि के प्रबन्ध का काम उसने विश्वास पूर्वक किया था, जब कि ऐसे समय विष आदि के प्रयोगका बहुत ही सन्देह रहता है। वणसूर जुगताको लाख पसाव, ताजीम और पारलाऊ गांव दस हजार रुपये की आमदनी का दिया। जिसको देखकर सवाईसिंहने अपनी पार्टी के विरोधको एक षड्यंत्रद्वारा प्रबल किया और एक रात कुछ घोड़े अपने साथी सरदारों के शहर में इधर उधर दौड़ा कर तड़के ही यह बात फैलादी कि 'रात को महाराज कुमार जन्मे और उनको उनके माभा छत्रसिंहजी भाटी के साथ पालनपोषण और रक्षा के लिये खेतड़ी (जयपुर) पहुंच दिया गया ता कि वहां वे सुरक्षित रहें।'

महाराजा मानने इस खबर की जनानी ड्योढी के नाजरों व दासियों द्वारा तसदीक कराई तो बिलकुल झूंठी निकली। तब इन्होंने इस-

1—इनके वंश मे अब झारावरदार तुलसीराम और काशीराम परिहार है।

को विग्रह अर्थात् निरर्थक झमेला कहा। सवाईसिंह ने इस बनावटी राजकुमार का नाम धोकलसिंह रक्खा था जिसका अर्थ मारवाड़ी भाषा में विग्रह या झमेला होता है।

महाराजा भीमसिंह की विधवा रानी ने धोकलसिंह नामक फर्जी उत्तराधिकारी को आगे रख कर खेतड़ी, झुंझनु, नवलगढ और सीकर के शेखावत सरदारों की सहायता से डीडवाने पर अधिकार कर लिया। किन्तु महाराजा मानने सेना भेज वहां से उनको हटा दिया। और ठा० सवाईसिंह ने इस समय जपुयर और जोधपुर में अनबन का कारण उपस्थित किया। उसने अपनी पोती की सगाई जयपुर नरेश महाराजा जगतसिंह से करके उसका डोला विवाह के लिये जयपुर भेजना चाहा। इससे महाराजा मानने एतराज किया कि—"हमारे भाईयों को जयपुर डोला भेजना लज्जा की बात है। अतः पोकरन में बरात बुला कर विवाह करो।" इस पर सवाईसिंह ने उत्तर में कहलाया कि—"यह ठीक है; परन्तु खानेजाद का सम्बन्ध जयपुर से भी है और मेरा भाई उम्मेदसिंह जयपुर में रहता है और गीजगढ उसकी जागीर में है। इस लिये हम अपने घर में लडकी की शादी करते हैं। अतः लज्जा की कोई बात नहीं है। बल्कि लज्जा जोधपुर राज्य को है क्यों कि उदयपुर की राजकुमारी कृष्णकुमारी का सम्बन्ध जयपुर में होने को है जिसकी सगाई पहले बडे महाराजा भीमसिंहजी के साथ हो चुकी है।"

महाराजा मान ने इस पर उदयपुर की सगाई के बारे में पूछताछ करवाई। उदयपुर के महाराजा भीमसिंहजी सीसोदिया ने भी मानसिंहजी की बात पर कोई ध्यान न दे जयपुर टीका भेज दिया। इस टीके को रोकने के लिये मानसिंह ने २० हजार सेना को भेजा। जिसने शाहपुरा-मेवाड के धनोप गांव में मुकाबला कर टीकेवालों को उदयपुर लौटा दिया। इस समाचार को सुन कर जगतसिंह ने लड़ाई की तैयारी की। इधर मानसिंहजी ने भी सेना बढ़ाई व जसवन्तराव होलकर को बुलाया। परन्तु जयपुर के दीवान रायचन्द की सलाह से जयपुर और

जोधपुर में मुठभेड होते २ बच गई। और पुष्कर में सं१८६३ के आश्विन मास में दोनों राज्यों में सुलह हो गई कि दोनों राजा उदयपुर विवाह न करेंगे और महाराजा जगतसिंह की बहिन से महाराजा मान का विवाह होगा और महाराजा मानसिंह की बेटी सिरेकुंवरी बाई से महाराजा जगतसिंह की शादी की जायगी।

इधर जोधपुर में अन्दरुनी आग वैसे ही भडकती रही। दीवान ज्ञानमल मुहणोत ने बख्शी इन्द्राज सिन्धी व गंगाराम भंडारी आदि अहलकारों को महाराजा मानसिंह से कैद करवा दिया। सं० १८६२ में वर्षा न होने से पैदावार कम हुई और स० १८६३ भी जब वैसा ही हुवा तो महाराजा मानने नया कर लगा दिया जिससे प्रजा में अशांति रही। यह रंग ढंग देख कर सवाईसिंह ने महाराजा जगतसिंह को कृष्णकुमारी के विवाह के विषय में उकसाया। जयपुर नरेश ने धोकलसिंह की सहायता के बहाने मारवाड पर चढाई कर दी। इसमें बीकानेर के महाराजा सूरतसिंह और मारवाड के कई सरदार शरीक थे। इधर मानसिंहजी मेडते पहूंचे और महाराजा होलकर को भी बुलवाया। परन्तु जयपुरवालों ने होलकर को ३ लाख रुपये देकर विदा कर दिया। होलकर की सेना में पीण्डारी लुटेरा अमीरखां (पश्चात् नव्वाब टोंक) अपने २० हजार सैनिकों सहित था उसे जैसे तैसे जयपुरवालों ने अपने पक्ष में करके रख लिया। पश्चात् जयपुरवालों ने १ लाख सम्मिलित सेना से मारवाड़ पर चढाई की। और पुष्कर के पास मारवाड़ राज्य के गींगोली गांव में जयपुर और जोधपुर की दोनों-सेनाओं में मुठभेड़ हुई। इस युद्ध में कई राठोड़ सरदार जो सवाईसिंह से मिले हुवे थे, जयपुर की सेनामें चले गये और महाराजा मान के पास आसोप, आउवा, नींमाज, लांबिया, कुचामण और खेजडला के सरदार रह गये। अतः विजय से निराश हो मानसिंहजी को जोधपुर लौटना पड़ा। ऐसे विकट समय में कुचामण, आसोप, आउवा आदि के उमरावों और महन्त मोतीपुरी व रामभारती आदि महापुरुषों के डेरों ने बड़ी वीरता से शत्रु का सामना कर उन्हें अपने महाराजा का पीछा

[illegible] में गेरा। और महाराजा साहब के पूजा पाठ के सामान का माल स्वामी मदन भारतीपुरी ने बड़ी चतुराई से रणक्षेत्र में से निकाल कर आगाड़ स्वार पड़िहार लखा[1] के साथ सुरक्षित महाराजा की सेवा में जालोर पहुँचाया। इस पर धर्मपरायण महाराजा अत्यन्त हर्षित हुवे और इस प्रकार बोले " यह पूजा का सामान क्या आया है मानो लड़ाई का नाक आ गया है। नाथजी सब अच्छा करेंगे।" उधर जयपुर-वालों ने मेड़ता, परबतसर, नागौर, पाली, सोजत आदि स्थानों पर कब्जा कर लिया और चैत्र बदि ७ सं० १८६३ (= ता० ३० मार्च १८०७) सोमवार की सीतला सप्तमी को त्योंहार के दिन जोधपुर शहर घेर लिया। केवल किले में ही महाराजा मान का अधिकार रह गया। मानसिंहजी ने इन्द्रराज सिंघी और गंगाराम भंडारी को कैद से छोड़ा। और इन्द्रराज ने सवाईसिंहजी के ताने की कुछ परवाह नहीं की जिस ने यह कहा था कि-"तुम बनियों का बनाया हुवा राजा राज नहीं कर सकता। हम धोकलसिंह को राजा बनायेंगे।" और (इन्द्रराज ने) गांव दासरा में पंच सेना इकट्ठी की और अमीरखां को १ लाख ३० हजार रु० देकर मिला लिया। इसके बाद कुचामण के ठा० शिवनाथसिंह, इन्द्रराज सिंघी और अमीरखां ने जयपुर पर चढ़ाई की। महाराजा जगतसिंह ने यह जान कर अपने बख्शी शिवलाल को जोधपुर की सेना के पीछे जयपुर भेजा। परन्तु जयपुर की सेना हार कर भाग गई। जोधपुर सेना ने जयपुर को लूट खसोट कर बरबाद कर दिया। यह खबर सुन महाराजा सवाई जगतसिंह को लाचार हो भादों सुदि १३ सं० १८६४ (ता० १४-९-१८०७ ई०) को जोधपुर का घेरा छोड़ जयपुर लौटना पड़ा। बीकानेर महाराजा भी चले गये। इन्द्रराज व अमीरखां ने जगतसिंहजी का पीछा किया परन्तु जयपुर दीवान रायचन्द ने १ लाख रुपया देकर पीछा छुड़वाया। इस युद्ध में दोनों राज्यों की प्रजा पर बड़ा अत्याचार हुवा। जयपुरवालों ने मारवाड़ की स्त्रियों को ढो

---

[1] — [illegible] ([illegible] अंक) भाग १ संख्या ३-४ पृष्ठ २६३
[illegible]

२ पैसे में बेचा और जोधपुर की सेना ने जयपुर की महिलाओं को एक एक पैसे में बेचा।

अमीरखांको महाराजा मानने ३ लाख रु० देकर उसका बड़ा आदर सत्कार किया। पश्चात् नागौर पर से धोकलसिंह का अधिकार उठा देने व सवाईसिंह को मारने का षड्यंत्र रचा गया। महाराजा मान और अमीरखां के बीच में अनबन जान कर ठा० सवाईसिंह जब अमीरखां से मुलाकात करने नागौर में आया तो अमीरखां की सेना ने गाफिल राठोड़ों पर शामियाना गिरा कर उन्हें सं० १८६५ चैत्र सुदि ३ बुधवार (ता० ३० मार्च १८०८ ई०) को मार डाला। किसी कवि ने इस विश्वासघात को इस प्रकार कहा है:—

मिंया जो दीधी मीरखां कमधां बीच कुरान।
रहा भरोसे रामरे पहती खबर पठान॥

मिंया अमीरखां ने राठोड़ों के बीच में कुरान दिया, इससे वे ईश्वर के भरोसे रह गये, सचेत व सशस्त्र नहीं थे, नहीं तो पठानको खबर पड़ जाती। इसमें पोकरन के ठा० सवाईसिंह, पाली के ठा० ज्ञानसिंह, चंडावल के ठा० बख्शीराम और बगड़ी के ठा० केसरीसिंह मारे गये। और उनके शिर महाराजा मानसिंहजी के पास भेज दिये गये। नागौर पर महाराजा मान का कब्जा हो गया। धोकलसिंह और ठा० सवाईसिंह के पुत्र सबलसिंह ने बीकानेर का रास्ता लिया। जोधपुर की सेना जो बीकानेर पर चढ़ी थी वह फतह पाकर वापस आई। इस प्रकार सब खटके मिट गये तो महाराजा मानने अमीरखां के द्वारा उदयपुर कहलवाया कि-"कृष्णकुमारी" का विवाह मेरे साथ करो या उसे मार डालो।" इस पर कृष्णकुमारी ने पिता पर संकट देख कर स्वयं विष पान कर लिया और सावन वदि ५ सं० १८६७ (ता० २१ जोलाई सन १८१० ई० शनिवार) को १६ वर्ष की आयु में अपनी जीवन लीला समाप्त की। जयपुर और जोधपुर में फिर सुलह हो गई। जगतसिंहजी की बहिन का विवाह मानसिंहजी से और मानसिंहजी की पुत्री सिरेकुंवरि का विवाह जगतसिंहजी के साथ वि० सं० १८७० की भादों सुदि

८ य ६ श्री पुष्कर के पास गांव रूपनगर और मारवाड़ राज्य के मरवा गांव में हुये। इस समय जयपुर महाराजा के साथ सुप्रसिद्ध कविश्वर पद्माकर थे। उनसे शास्त्रार्थ करने को डिंगल भाषा के महाकवि बांकीदासजी आसिया चारण जोधपुरसे डाक द्वारा बुलवाये गये। वहां पद्माकर कवि के साथ बांकीदासजी का साहित्य विषय पर शास्त्रार्थ हुवा जिसमें बांकीदासजी विजयी हुवे। अतः महाराजा मानसिंहजी ने प्रसन्न हो उन्हें कविराजा पदवी, ताजीम, जागीर और लाखपसाव[1] में गांव चगां (तुना जकमन) और डाहली दिया। महाराजा मान ने बाद में इन्हें एक और भी लाखपसाव दिया था। ये बड़े निर्भीक, स्वतन्त्र और सच्चे कवि थे। महाराजा साहब को आम दरबारमें अपमान सूचक गीत[2] (काव्यमें) सुनाने के कारण इन्हें तीन बार "देश निकाला" हुवा। किन्तु महाराजा मानकी फिर भी इन पर बड़ी कृपा थी और वे इनका बड़ा आदर करते थे। कविराजाजी के रचे हुवे मरुभाषा में गंगालहरी, नीति, विदुर बतीसी आदि २४ ग्रंथ हैं।

इसी वर्ष सिन्ध के टालपुरा वंश के मुसलमान मीरोंने उमरकोट के किले व जिले को जोधपुर से वापस छीन लिया।

वि० सं० १८७१ में महाराजा मानसिंहजी ने ३ लाख रु० और देकर अमीरखां की फौज को जोधपुर से विदा कर दिया। परन्तु वि० सं० १८७२ में खुद अमीरखां फौज लेकर जोधपुर आया। महता अखैचन्द और आसोप-आउवा आदि के सरदारों ने मिल कर दीवान इन्द्रराज सिंघवी व आयस देवनाथजी को किले में खावका (ख्वाबगाह)

१—लाखपसाव का अर्थ एक लाख रुपये के इनाम से है जो भाट चारणों को राजा लोग देते हैं। यह पुरस्कार नकद रुपये में नहीं दिया जाता है किन्तु हाथी, घोड़े, ऊंट, रथ, रत्न, अलंकार व भाव आदि के रूप में दिया जाता है। इन सब का मूल्य भी लगभग ३० हजार रुपये के होता है। लेकिन फिर भी यह "लाखपसाव" ही कहलाता है।

२—Preliminary Report on the operation in search of Mss of Bardic Chronicles (1913) page 16, Bengal Asiatic Society Calcutta

के महल में अमीरखां के सैनिकों द्वारा चैत्र सुदि ८ सं० १८७३ वि० ता० ५ अप्रेल १८६३) को मरवा डाला। इस घटना से महाराजा को बहुत रंज हुआ और उन्होंने राजप्रबन्ध छोड एकान्तवास कर लिया। दीवान अखैचन्द, आसा ठा० केसरीसिंह, आउवा ठा० विष्णुसिंह आदि ने मिल कर जबरदस्ती महाराजा के हाथ से महाराज कुमार छत्रसिंहजी को वैशाख सुदि ३ सं० १८७४ (ता० १९ अप्रेल १८१७ ई०) को "युवराज" बनाया। छत्रसिंह का जन्म वि० सं० १८५९ फाल्गुन सुदि ९ बुधवार (ता० २ मार्च सन १८०३ ई०) को हुआ था। महाराजा सब की एक राय देख पागल बन गये। राजकाज का सब काम अखैचन्द महता के जिम्मे रहा। पोकरन के ठा० सालिमसिंह प्रधान बनाये गये। चोपासनी के गुसांईयों से छत्रसिंह को गुरुमंत्र सुनवाया गया, जिससे आयस भीमनाथ आदि की प्रतिष्ठा में फर्क आया। सं० १८६० को पोष सुदि ९ को अंग्रेज सरकार और जोधपुर के बीच मित्रता का अहदनामा हुआ। इसके अनुसार इस्ट इण्डिया कम्पनी ने राज्य की रक्षा करने का भार अपने ऊपर लिया।

नमकहराम सरदारों और कर्मचारियों ने नवयुवक युवराज छत्रसिंहजीको राजका लोभ दिखा कर यह पट्टी पढ़ाई कि जब तक महाराजा मानसिंहजी जीते हैं, आप मन चाहा राज नहीं कर सकेंगे। महाराजकुमार नादान ही थे. उनके कहने में आकर महाराजा के बिछोनों में सर्प, बिच्छु भी छोड़े और तलवार से मार डालने का उपाय भी किया परन्तु महाराजा की तपस्या प्रबल थी। इस लिये वे सब आफतों से बच गये।

कई महिनों पीछे छत्रसिंहजी जिनको. सावधान और साहसी होने से निमकहराम चाकरशाही ने, अपने ढंग का न देख कर भोग विलास में लगा दिया। फलस्वरूप वि० सं० १८७४ को चैत्र बदि ४ (ता० २६ मार्च स० १८१८ ई०) को गर्मी की बीमारी से उनका देहांत हो गया। मुसाहिबों ने एक दिन तो यह बात छिपा रखी और चाहा कि उसी सूरत शक्ल का कोई आदमी हो तो उसे छत्रसिंहजी बना लेवें। परन्तु यह सलाह नहीं चली। तब दूसरे दिन यह बात प्रकट की गई। किन्तु

राजपूताने की प्राचीन राजरीति के अनुसार महाराजा के हुक्म बिना दाह नहीं हो सकती थी। अतः उन लोगों ने अर्ज कराई कि "कोटवाली में हुक्म पहुंच जावे ताकि महाराज कुमार की अंतिम क्रियाका प्रबन्ध हो।"

महाराजा मानने आवश्यक समझ कर "हां" तो कर दिया परंतु अपने इस अशुभ समाचारके सुनने से ऐसा दुःख हुआ कि आप एक दम से उठ कर खड़े हो गये और झरोके में से गिरने लगे परन्तु सेवकों ने पकड़ लिया और एक कृपापात्र ने कहा कि-" हजूर को महाराज कुमार ने इतना दुःख दिया था और यदि जीते रहते तो प्राण लिये बिना नहीं छोड़ते। फिर इतना शोक सन्ताप क्यों ?" महाराजा ने चुपके से कहा कि "जब बेटा मरता है तब खबर पड़ती है।" इतना कह कर फिर बावली २ बातें करने लगे क्यों कि बावले तो बने हुवे ही थे। सच है कि चाहे पुत्र कितना ही कुपात्र क्यों न हो पिताके हृदय में उसके प्रति वही प्रेम भाव रहता है। मारवाड़ी ओखाणा (कहावत) है कि-"छोरू कुछोरू हो जाय पिण मायत कुमायत नहीं होवे" अर्थात् बेटा भले ही कपूत हो जावे परन्तु मां-बाप कभी अपना प्रेम नहीं छोड़ते हैं।

छत्रसिंहजी की मृत्यु के बाद भी महाराजा साहब वैसे ही विरक्त बने रहे। राजकाज सरदार व राजकर्मचारी चलाने लगे। अंग्रेज सरकार ने मुंशी बरकतअली और कप्तान विल्डर्स को महाराजा मान का हाल जानने को भेजा। जिन्होंने रिपोर्ट की कि-"मानसिंहजी वास्तव में राज-काज करने योग्य हैं।" इस पर सरकारने मानसिंहजीको तसल्लीका ख-रीता भेजा। और उन्होंने सं० १८७५ की कार्तिक सुदि ५ (ई. स. १८१८ ता० ४ नवम्बर) मंगलवार से २ वर्ष ७ मास बाद फिर राज काज करना शुरू किया। महाराजाने ऐसी शांतिसे कार्य किया कि शत्रुओंके दिलसे भी इनकी तरफ की आशंका दूर हो गई। परन्तु सं० १८७७ की वैशाख सुदि १४ (ता० २७-४-१८२० ई०) को मौका पाकर दीवान अखैचन्द मुहता को और उसके बेटे लक्ष्मीचन्द उसका मुकुंदचंद और अखैचन्दके कामदार रामचन्द्र, किलेदार नथकरण, व्यास विनोदीराम व उसका बेटा गुमानीराम, धांधल नुला, दाना, जीवा, जोशी विट्ठलदास दामोदर, शिवकरण और चेला दर्जा आदि ८४ मनुष्यों सहित किले पर कैद

किया। खीची बिहारीदास वहां से तो दो ग्यारह हो शहर में खेजड़ले की हवेली में चला गया। महाराजा ने वहां फौज भेज दी जिसके साथ बिहारीदास लड़ कर काम आया और खेजड़ला ठाकुर भी जख्मी हुआ।

इसी संवत् के प्रथम जेठ सुदि १४ (ता० १६ मई) को महाराजा ने किलेदार नथकरण, महता अखैचन्द, व्यास विनोदीराम, पचोली (कायस्थ) जीतमल, जोशी फतहचन्द और धांधल दाना, नृला और जीवा को कष्ट दे दे कर मरवाया। इसके बाद द्वितीय ज्येष्ठ सुदि १३ शनिवार (ता० २४ जून) को जोशी श्रीकृष्ण, महता सूरजमल, भाई बेटों व भतीजों सहित, व्यास शिवदास और पचोली गोपालदास कैद किये गये। नींमाज के ठा० सुलतानसिंह की हवेली पर फौज भेजी गई। जो अपने भाई सूरसिंह सहित सं० १८७७ की आषाढ़ बदि १ को वीरता से लड़ कर काम आया। जिसके लिये किसी कवि ने कहा है:—

> कोई पहरे अकतर बकतर कोई बांधे गाती।
> सूरसिंह सूरतानसिंह दो लड़े उघाडी छाती॥

पोकरन के ठा० सालमसिंह पोकरन को चले गये। जो जीतेजी जोधपुर नहीं आये। आसोप के ठा० केसरीसिंह आसोप गये जहां से वह बीकानेर के देशनोक ग्राम में करणी माताके शरण जा बैठे और वहीं उनका देहांत हुवा। केसरीसिंह के मरने पर आसोप पर खालसे का कब्जा हो गया। चंडावल, रोहट, खेजडला, सायीण और नींमाज आदि ठिकाने भी खालसे कर लिये गये। ठाकुर लोग भाग कर उदय-पुर-मेवाड़ चले गये।

इसी वर्ष की भादों सुदि ४ (ता० ११ सितम्बर) सोमवार को जोशी श्रीकृष्ण व महता सूरजमल को जहर देकर मरवा डाला और म० कु० छत्रसिंह की मां महाराणी चावड़ी को एक तंग मकान में बन्द कर दिया जो अन्नजल बिना स्वर्ग सिधार गई। नाजिर वृंदावन और छत्रसिंहजी के वैद्य जैन जती हरखचन्द, इनकी नाकें कटवा दी। बाकी बहुतों से दंड ले छोड़ दिया। और कईयों को सजा दी।

✓आयस देवनाथ के भाई भीमनाथ और देवनाथ के बेटे लाडूनाथ,

मेड़तिया दरवाजा-जोधपुर

दोनों में मनमुटाव हो गया, तो महाराजा ने लाडूनाथ को महामंदिर का मुख्तार करके भीमनाथ के लिये मेड़तिया दरवाजा के पास "उदय-मंदिर" तैयार करवा दिया। किन्तु इन दोनों—चाचा भतिजों-का झगड़ा वैसे ही बना रहा।

सं० १८८० में अंग्रेजों की राय से महाराजा ने राजविद्रोही सरदारों को उनकी जागीरें लौटा दी।

सं० १८८१ में भवानीराम भंडारी ने बाघा जालोरी से फतहराज सींघी के नाम की उसी के अक्षरों जैसी एक अर्जी धोकलसिंह के नाम लिखाई और महाराजा मानसिंह के सामने पेश की। जिससे महाराजा ने नाराज होकर फतहराज, मेघराज, कुशलराज व उम्मेदराज सिंघी को वि० सं० १८८२ की चैत्र सुदि १४ को कैद किया। अन्त में यह भेद खुल गया जिससे बाघा जालोरी के हाथ कटवाये और भवानीराम को कैद हुई।

सं० १८८५ में आयस लाडूनाथ गिरनार की यात्रा को गये थे। लौटते हुवे वे बमणवाडा गांव में मर गये। इनका बेटा भैरवनाथ ३ वर्ष की आयु में महामंदिर की गद्दी पर बैठा लेकिन ६ मास बाद वह भी स्वर्ग सिधार गया। तब भीमनाथ का बेटा लक्ष्मीनाथ गद्दी पर बैठा। तब भीमनाथ ने सं० १८८६ से बडा दखल जमा लिया। राज्य की आमदनी मनमानी हजम होने लगी। अंग्रेजों का खिराज और नौकरों की तनखाहें चढने लगी। कनफटे नाथों का राज्य में बड़ा उपद्रव और अत्याचार होने लगा। और लोगों की बहु-बहिन-बेटी सुरक्षित रहनी कठिन हो गई। महाराजा, आयस भीमनाथ के कहने को ईश्वर का हुक्म समझते थे। पर कर्नल सदरलैंड साहिब एजेन्ट गवर्नर जेनरल राजपूताना जोधपुर आये किन्तु नाथों का कुछ प्रबन्ध नहीं हुआ। इस लिये सदरलैंड साहिब ने अजमेर पहूंच कर एक इश्तिहार अंग्रेज सरकार की तरफ से फौजकशी के लिये श्रावण सुदि १५ शनिवार (ता० २४ आगस्ट) को जारी किया। जो इस प्रकार है:—

इश्तिहार

लॉर्ड गवर्नर जेनरल साहिब बहादुर, मालिक मुल्क हिन्दुस्तान

की तरफ से मारिफत कर्नल जान सदरलैंड साहिब बहादुर, जो कि लॉर्ड साहिब बहादुर की तरफ से रजवाड़ों के बंदोबस्त के वास्ते मुकर्रर हैं, वास्ते खबर होने सारे रईसान और रय्यत मारवाड के लिखा हुवा (ता० १७ आगस्ट सन १८३९ ई०) मुकाम नसीराबाद का—

"कि महाराजा मानसिंह ने करीब पांच वर्ष के अर्से से अपने वे अहद इकरार जो सरकार अंग्रेजी के साथ रखते थे, अपनी समझ से एक राह मुकर्रर करके, तोड दिये: और जोधपुर के सवाल जवाब का तदारुक और बदला (जिसके मांगने में सरकार ने वक्त पर गफलत नहीं की) उन्होंने नहीं दिया। और सरकार का कहा न माना।

अव्वल अहदनामा की लिखावट मुजिब सर्कार के हक के रुपये दो लाख तेईस हजार बसोंटी के मुकर्रर हैं, जिसके कुल आज तक दस लाख उन्नीस हजार, एक सौ, छयालीस रुपये, दो आने हुवे जो आज तक वसूल नहीं हुये।

दूसरे गैर इलाकों के रहनेवालों का नुकसान मारवाड़ के मुल्क में बद इन्तिजामी के वक्त हुआ। और उसकी तादाद लाखों रु०पर पहूंची। उस नुकसान का एवज वसूल नहीं हुवा।

तीसरे उस बंदोबस्त का मुकर्रर करना कि जो रय्यत को पसन्द हो और जिससे मुल्क मारवाड़ में सुख चैन हो और इलाकों के व ब्योपारियों के माल का, नुकसान और मुसाफिरों पर जुलम और जियादती बंदोबस्त करनेवालोंकी नालायकी से होती है उसमें बचाव हो सो नहीं हुवा।

इस सूरत में लॉर्ड गवर्नर जेनरल साहिब बहादुर हिन्द को यह वाजिब हुवा कि इस मारवाड़ से हक और दावा जोर से ले लेने का हुक्म देवें।

इस वास्ते सरकार अंग्रेजी की फौज तीन तरफ से मारवाड़ के मुल्क में दाखिल हो कर जोधपुर जावेगी। और झगड़ा सर्कार अंग्रेजी का महाराजा श्रीमानसिंहजी और उनके कामदारों से है। मारवाड़ की रअय्यत से नहीं। इस वास्ते मुलक मारवाड़ की रअय्यत दिल जमई रखे और जब तक रअय्यत मजकूर सर्कार की फौज से दुश्मनी नहीं

करेगी, तब तक सर्कार उस रअय्यत के माल जान को अपनी रअय्यत की तरह रखेगी। और हर एक कम्पू में बंदोबस्त सर्कार का ऐसी खूबी के साथ होगा कि रअय्यत के लोग अपने २ घरों में और अपने २ कामों में ऐसी खूबी के साथ रहेंगे जैसा कि फौज न आने के वक्त में खुशी रहते हैं। फकत।"

महाराजा मानसिंहजी को जब कर्नल सदरलेंड के इस प्रकार सेना चढा आने का पता लगा तो वे अपनी मित्रता सिद्ध करने को जोधपुर से ८ मील पूर्व में गांव बनाड़ तक उसके सामने गये और किले की कुञ्जियां साहब को सौंप दी। आसोज बदि ६ रविवार (ता. २६-९-१८३९ ई०) से ५ मास तक अंग्रेजी सेना किले में रही। वह ऐसा मौका था कि सर्व प्रकार से अंग्रेजी अफसरों की खुशामद करनी चाहिये थी, परन्तु मानी महाराजा मानसिंह ने प्राचीन मान मर्यादा और धर्म का आश्रय लेकर वैसी चापलूसी नहीं की और जिस दिन अंग्रेजी सेना ने किले में प्रवेश किया तो १ गोरे कप्तान ने एक कबूतर पर बंदुक छोड़ी। उसी दम एक राजपूत वीर ने उसको तलवार से घायल कर दिया। अतः कर्नल सदरलेंड ने महाराजा से शिकायत की तो हजूर ने फरमाया कि-" परम्परा से हमारे यहां मोर कबूतर के मारने का हुक्म नहीं है। उसने क्यों कबूतर पर गोली चलाई? हमने किला आप लोगों को इस वास्ते सौंपा है कि अंग्रेज सर्कार को हमारी मित्रता का भरोसा हो जावे। अपनी हतक कराने और पुरानी मर्यादा लोपने के वास्ते नहीं सोंपा है। तुम अपने अफसरों को कह दो कि यदि ऐसा करोगे तो सारा मुल्क बदल जायगा और फिर उसका प्रबन्ध हम से भी नहीं हो सकेगा और यदि कभी गाय मारी तो गजब ही हो जायगा।" पांच मास बाद फाल्गुन सुदि १२ सोमवार (ई० १८४० ता० १६ मार्च) को मानसिंहजी को गढ़ वापस सोंपा गया। सदरलेंड वापस अजमेर गया और जोधपुर में एक पोलिटीकल एजेन्ट सदा के लिये सं० १८९६ वि० की आश्विनकृष्ण ५ शनिवार (ता. २८-९ १८३९ ई०) से नियत हुवा। और ब्रिटिश राजदूत कप्तान जान लडलू सूरसागर में अपने दफ्तर सहित रहने लगा। नाथों के जुल्मों का वैसा ही दौरदौरा

रहने से महामंदिर और उदयमंदिर आदि नाथों की जागीर के गांव जब्त किये गये। फिर भी वही ढोंगढांग बना रहा। अन्त में सं० १९०० में लडलो साहब ने नाथों के मुखियों में से श्रवणनाथ को देश से निकाल दिया। आयस लक्ष्मीनाथजी स्वयं बीकानेर चले गये और अन्य नाथ भी इधर उधर तितर बितर हो गये। इस घटना से महाराजा मानसिंह को अत्यन्त खेद हुआ। महाराजा वैशाख वदि ९ सं० १९०० (ता० २३ अप्रेल १८४३ ई०) को शरीर पर भस्म रमा विरक्त हो गये। और जोधपुर छोड़ सावण सुदि ३ (ता० २९ जौलाई) को मंडोर में जा रहे जहां उनका भादों सुदि ११ सं० १९०० वि० (ता० ४ सितम्बर १८४३ ई०) को स्वर्गवास हुआ। इनका जन्म वि० सं० १८३९ की माघ सुदि ११ (ई० स० १७८३ फरवरी ता० १३) को हुआ था। जन्मपत्री नीचे दी जाती है:-

घटि ४० पल १ सूर्य १०।४ समये ३९।४१
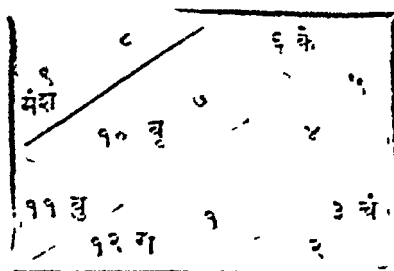
महाराजा मानसिंहजी बहुत बुद्धिमान, शूरवीर, उदार गुणी और विद्वान राजा थे। इससे ये विद्या, ज्ञान और कलाकौशल की वृद्धि में सदा दत्त चित्त रहते थे। जिन्होंने इनका एकत्रित किया हुआ संस्कृत और भाषा की हस्तलिखित पुस्तकों का तथा प्राचीन चित्रों का संग्रह देखा है उन्हें जरा भी इसमें सन्देह न होगा। पुस्तकों की तरह चित्रों का संग्रह भी इनका अद्वितीय है। इसमें रामायण और भागवत आदि के अनेक ग्रंथ बड़े २ चित्रों में अंकित किये हुवे मौजूद हैं। यह संग्रह आजकल राज्य के अजायबघर में रक्खा हुवा है। इसके सिवाय ये स्वयं कवि थे और इनको गान विद्या और योग का भी शौक था। इन के विषय में यह दोहा प्रसिद्ध है:—

जोध बसाई जोधपुर ब्रज कीनी विजपाल ।
लखनेऊ काशी दिल्ली मान करी नेपाल ॥

अर्थात् राव जोधाजी ने तो जोधपुर नगर बसाया और महाराजा विजयसिंहजी ने यहां पर वैष्णव सम्प्रदाय के मंदिर बनवा कर इसे ब्रज-भूमि बना दी; परन्तु महाराजा मान ने तो गवैयों, पंडितों और योगियों को बुला कर उसे लखनऊ, काशी, दिल्ली और नैपाल ही कर दिया ।

यद्यपि कर्नल टाड ने महाराजा मान को हठी और निर्दयी नरेश लिखा है तब भी इसमें कोई सन्देह नहीं कि वे राजनीति के असाधारण पंडित थे । यही कारण था कि इन्होंने अपने शत्रुओं की सेना को बड़ी चतुराई से तितर बितर किया और अमीरखां द्वारा बागी सरदारों को मरवा कर " कांटा से कांटा " निकालने की कहावत को सच कर बताया । अन्त में पीण्डारी लुटेरा अमीरखां को भी बिना कुछ पुरस्कार के टरकाया । यह महाराजा शरणागत आये की बड़ी रक्षा करते थे । सं० १८८४ मे नागपुर का राजा मधुराजदेव भौंसला अंग्रेजों से हार कर जोधपुर आया तो इन्होंने उसे अपने यहां सुरक्षित रखा और अंग्रेजों के मांगने पर भी उसे नहीं दिया । परन्तु कुछ समय पश्चात् वह राजा महा-मंदिर में मर गया ।

मानसिंहजी प्रजापालक नरेश थे और राजकर्मचारियों पर पूरी निगरानी रखते थे । यद्यपि नाथों के द्वारा प्रजा का बहुत अहित हुआ किन्तु यह उनकी अन्ध-भक्ति का परिणाम था । इनकी न्यायपरायणता का एक उदाहरण नीचे देते हैं:—

एक समय नागौर के हलकारों ने यह खबर लिख कर महाराजा मान की सेवा में भेजी कि-"कई दिन से कोटवाली में दीपक नहीं लगता है और यह बड़े अपशकुन की बात है कि राज्य की कचहरी में यों अन्धेरा रहे ।"

महाराजा ने इसका जवाब कोटवाल करणजी परिहार से पूछा तो उसने लिखा कि-"इन दिनों में आमदनी न होने से तेली के चढ़े हुवे दाम नहीं चुके हैं । जिससे तेलीने तेल देना बंद कर दिया है परन्तु प्रजा के ५

दूसरा रास्तों में अन्धेरा करने की मर्जी हो तो मैं कल से ही कचहरी के कोने में दीपमालिका जैसी जगाजोत लगा दिया करूंगा।"

महाराजा ने मज्जन कोटवाल का उत्तर सुन कर कह दिया कि "प्रजा के घर हमारे घर हैं। उनमें अन्धेरा करके कोटवाली में उजाला करना हम को मंजूर नहीं है। जब सरकारी रुपया आवे तो तेली के दाम चुका कर उससे कोटवाली के वास्ते तेल लेना और तब तक तेल वास्ते किसी को मत सताना।"

महाराजा साहब के विवाहित रानियों से छत्रसिंह, सिद्धानसिंह और पृथ्वीसिंह नामक तीन राजकुमार थे जो इनके जीवित काल में ही स्वर्ग सिधार गये। पुत्रियां दो थी जिनमें से द्वितीय कुमारी स्वरूपकुंवरबाई का विवाह बूंदीनरेश रावराजा रामसिंहजी के साथ सं० १८८१ वि० में हुवा। महाराजा मान के रानियां १३, पडदायतें १२ और गायणियां भी १२ थीं। पडदायतों के पुत्र ६ इस प्रकार थे:—

१—पडदायत श्रीमती रंगरूपरायजी के पुत्र बाबा स्वरूपसिंह। २—हस्तुराय के बाबा शिवनाथसिंह। ३—तुलसीराय के लालसिंह। ४—कनकराय के भिभूतसिंह। ५—उदयराय के सोहनसिंह और। ६—सुन्दरराय के बाबा सज्जनसिंह।

इस प्रकार महाराजा मानसिंहजी के बिना औरस पुत्र के देवलोक होने पर जब महाराजा अजीतसिंहजी को मारनेवाले महाराजा बखतसिंह का वंश जब समाप्त हुवा, तब मानसिंहजी की अन्तिम इच्छा और

१—देखिये, अगले राजाओं को कहां तक अपनी प्रजा का ध्यान था और वह कोटवाल भी कैसा था कि जिसने प्रजा के हित के वास्ते जो कुछ कहना था वह सब एक तेल के मामले में ही अपने राजा से कह कर उनकी मंशा मालूम कर ली। ऐसी ही सज्जनता की बातों से नागोर के लोग अब तक उनको नहीं भूले हैं और उसके सुखद समय को "करन वारे" के नाम से याद ही नहीं करते हैं किन्तु जब कोई अच्छा हाकिम या सरदार आता है और प्रजा को सुख देता है तो उसके समय को "करन वारे" का जिक्र करते हैं। मारवाड़ में या तो महाराजा विजयसिंहजी का समय "विजय वारा" कहलाता है और यह "करन वारा"।

रानियों एवं सरदारों की सम्मति से महाराजा अजीतसिंहजी के ८ वें पुत्र महाराजा आनन्दसिंहजी (ईडर नरेश) के पोते अहमदनगर के

३०—महाराजा तख्तसिंहजी जी० सी० एस० आई०

को जोधपुर के राजसिंहासन पर बैठाना अंग्रेज सरकार ने स्वीकार किया। यद्यपि इस समय भी विरोधियों ने धोकलसिंह को गद्दी पर बैठाने की कोशीस की थी। किन्तु अंग्रेज राजदूत लडलो साहब ने सब को हुक्म सुना दिया कि-'कोई धोकलसिंह को राजसिंहासन पर बिठाने का इरादा करेगा तो उसे सजा दी जायगी।'

इधर महाराजा तख्तसिंहजी को दो हजार मनुष्यों सहित धूमधाम से अहमदनगर (इलाके ईडर राज्य) से ले आने के लिये जोधपुर से राजकर्मचारी भेजे गये। उनके साथ कप्तान लडलो साहब ने महाराजा तख्तसिंहजी के नाम एक खरीता लिख कर भेजा जिसकी नकल नीचे दी जाती है:—

एजेन्ट साहिब के खरीतह की नकल

॥ श्रीहरि ॥

सिद्धिश्री सरब ओपमा विराजमान सकल गुण निधान राजराजेश्वर महाराजाधिराज महाराजा श्री तख्तसींघजी बहादुर जोग्य कप्तान जान लडलु साहब बहादुर लिखावतां सलाम बांचसी। अठा का समाचार भला है। आप का सदा भला चाहिजे। अप्रंच आज तारीख १४ अक्तूबर सन १८४३ ईस्वी मुताबिक मिति का० बदि ६ सं० १६०० के रोज सिरकार मारवाड़ के सिरदार, मुत्सद्दी, खवास, पासवान और जनानां कामेती सब हमारे पास आये और जो इन सब लोकांर्या तरफ से भला आदमी अहमदनगर गये हैं। उन सबां का कागज आया सो बिजनस हमकूं दिखलायासूं अब माजी साहबां की तरफ का खास रूका और सिरदार मुत्सद्दी सबां की अरजी आप को श्री महाराज साहब के गोद लेणे के मुकदम में है। सु इस खरीते साथ पहोंचेगा जिनसे हकीकत मालूम होगी। सबां की सलाह आप के ऊपर ठेरी है। इस वास्ते हम आप को लिखते है कि आप वहां के साहब बहादुर को

[illegible] है कि [illegible] सलाह मुजब जोधपुर पधारियें और वहां जो हुवा [illegible] कागज़ बीच खिदमत साहब आलीसान अजेंट गवर्नर जनरल [illegible] के भेज जायगें। इस मुराद पर कि साहब मोसूफ बीच [illegible] नवाब मुअला अलकाब लार्ड गवर्नर जनरल साहब बहादुर [illegible] के श्री महाराजा मानसिंहजी की गोद आपकु होणे की [illegible] भगावें और आप के मिजाज की खुशी लिखेंगे। तारीख १४ [illegible] सन १८४३ ई०=सं० १९०० रा कार्तिक वदि ६। श्रीरस्तु।

J. ludlow
Political Agent
JODHPOOR.

सब माजी महारानी साहिबों की तरफ से जो महाराजा तख्तसिंहजी के नाम रुक्का लिखा गया उसकी नकल—

श्री जलधरनाथजी।

लालजी छोरू श्री तख्तसिंघजी मोती जसवंतसिंघ सु मांरा उवारणा वंचावसी। ने तथा श्रीजी साहबां रो फुरमावणों हुवो थो, थने खोले लेणरो ने मांरे ही मन में आहीज थी ने साहेब बादर रे ही फुरमावणों हुवो सो सारां ही मंजूर करो। सो लालजी तखतसींघजी थंने खोले लिया है सो थे ने मोती जसवंतसींघ ने साथे लेने सताब अठे आईजो ने साहेब बादररो खलीतो ने उमरावां मुत्सद्दीरी अरजी मेली है सो पोनसी। हमे आवण री जेज करसो नहीं। काती वद ७ सातम स० १९००

(कलमी दस्तखत)

माजी तुंवरजीरा वारणा वंचावसी।
माजी देवड़ीजीरा वारणा वंचावसी।
माजी तीजा भटीयाणीजीरा वारणा वंचावसी।
माजी चोथा भटीयाणीजीरा उवारणा वंचावसी।
माजी पांचवा भटीयाणीजीरा वारणा वंचावसी।

सरदार और अहलकारों ने महाराजा तख्तसिंहजी के नाम जो अर्जी लिखी उसकी नकल:—

स्वति श्री अनेक सकल शुभ ओपमा विराजमान श्री राजराजेश्वर महाराजाधिराज महाराजा जी श्री श्री १०८ श्री तख्तसिंहजी, महाराज कुमार श्री जसवंतसिंहजी री हजूर में समस्त सरदारां मुत्सद्दियां खासां री अर्ज मालम होवे तथा खास रुक्का श्री माजी साहबांरी लिखावट मूजब सारा जणांरे आपने खोले लेणां ठहराया है सो वेगा पधारसी।

(इस अर्जी के नीचे सब सरदारों व मुत्सद्दियों के दस्तखत हुए)

जोधपुर से खास रुक्के व प्रतिनिधियोंके अहमदनगर (ईडर राज्य) मे पहूंचने पर महाराजा तख्तसिंह अपने ज्येष्ठ कुमार जसवंतसिंहजी के सहित रवाने हो सं० १९०० की कार्तिक सुदि ७ (ई० स० १८४३ ता० २९ अक्तूबर) रविवार को जोधपुर के किले में दाखिल हुये। और मिगसर सुदि १० (ता० १ दिसम्बर) को विधिपूर्वक गद्दी पर बैठे। इन्होंने चाहा कि अहमदनगर जागीर भी मेरे अधीन रहे परन्तु क्यों कि उनके ज्येष्ठ पुत्र जसवंतसिंहजी जोधपुर में चले आये, अतः अंग्रेज सरकार ने वह जागीर सं० १९०५ वि० में ईडर राज्य में मिला दी।

महाराजा तख्तसिंहजी ने राज्य की बागडोर हाथ में लेते ही सब प्रकार के भीतरी बखेड़ों का अन्त किया और उपद्रवी नायों की कई लाख की जागीरें जब्त कर ली। इससे राज्य भर में फिर एक बार सुखशांति हो गई। हां! कहीं कहीं आसपास कुछ लूट खसोट होती थी जिसका दमन यथावत कर दिया जाता था। जैसा कि डूंगजी और जवाहरजी नामक डाकूओं के उपद्रवों की कथा अब तक राजपूतानामें प्रसिद्ध है।

ये डूंगरजी और जवाहरजी शेखावाटी के (जयपुर राज्य में) रहनेवाले थे और बड़े २ डाके डाला करते थे। ये दोनों सहोदर (सगे) भाई थे। इनकी धाक से उस समय राजपूतानाके लोग थर्राते थे। नामी डाकू होने पर भी इन्होंने ब्राह्मण और स्त्री को लूटने की कोशिस नहीं

यों और गरीबों की सदा परवरिश की[1]। कम्पनी सरकार ने मौका पा कर डूंगजी को आगरा की जेल में कैद कर दिया तब जवाहरजी ने अपने बहादुर करनीया मीना और लोटिया जाट की सहायता से अपने बड़े भाई डूंगजी को आगरा की जेल से छुड़ाया था। इसके बाद ये दोनों वीर फिर पकड़े जाकर कैद हुवे किन्तु मारवाड़ के उनके सम्बन्धी कई ठाकुर लोग दल बांध आगरे पहुंच ठीक ताजिया की कतल की रात को किले पर हमला करके डूंगजी-जवाहरजी को मय उनके साथियों के छुड़ा लाये। अन्त में ये नसीराबाद (अजमेर) छावनी के अंग्रेजी खजाने को दिनदहाड़े लूट कर ५२,०००) रु० ले भागे। जवाहरजी तो बीकानेर महाराजा रतनसिंहजी की शरण में चला गया जहां वह वि० सं० १८७८ तक रहा और डूंगजी को महाराजा तख्तसिंहजी ने सं० १९०४ की कार्तिक सुदि ५ (ई० स० १८४७ ता० १३ नवम्बर) शनिवार को अंग्रेजों के सुपुर्द कर दिया।

सं० १९१४ की ज्येष्ठ वदि १० रविवार (ता० १० मई १८५७ ई०) को अंग्रेज सरकार की मेरठ छावनी के भारतीय सैनिकों ने यकायक गदर मचा दिया। इसके कई कारण थे परन्तु मुख्य ये थे कि अंग्रेज सरकार (ईस्ट इण्डिया कम्पनी) की नीति उस समय यह चल पड़ी थी कि भारत के देशी नरेश यदि अपुत्र मर जायें तो उनके कोई भी गोद न आ सके और उनकी रियासत सरकार में जब्त की जाय। लार्ड डलहौजी की इस अदूरदर्शी नीति के कारण सतारा, झांसी, नागपुर, तंजोर, पूना अवध आदि कई देशी राज्य जब्त हो गये थे। इससे देश भर में बड़ा असन्तोष फैल गया। इसी कूटनीति के अनुसार अंग्रेजों ने पेशवा नाना धोन्धुपन्त की गोद को नाजायज करार देते हुवे उसके पिता की पेन्शन को बन्द कर दी। इससे उसने विख्यातनामा [illegible] सरदार तांतीया टोपी से मिल कर अंग्रेजों के विरुद्ध षड्यन्त्र रचा था। इसी समय में एक नई किस्म की बंदूक भारतीय सेना में प्रचलित की गई थी जिस के कांटे को मुंह से दबा कर कारतूस (गोली) भरनी पड़ती थी। इस विषय में यह अफवाह फैल गई कि इन कारतूसों में गाय और सूअर की

१—[illegible] पृष्ठ १२८.

चर्बी लगी रहती है और मुंह लगाने से हिन्दु व मुसलमानोंका धर्म भ्रष्ट होता है। इस बातसे देशी सिपाही उभड गये थे । साथ ही में आखरी मुगल बादशाह बहादुरशाह (दूसरा) को पुनः दिल्लीके तख्त पर बैठा कर मुगलशाही जमाना लाने का सुखस्वप्न मुसलमान देख रहे थे और अंग्रेजों को भारत से वापस सात समुद्र व तेरह नदी पार खदेड देना चाहते थे। बस ! ऐसे ही अन्य छोटे बडे कारणों से सब जगह बलवा हो गया।

इधर मारवाड़ की सरहद पर एरनपुरा में अंग्रेज सरकार की छावनी थी जो "जोधपुर लीजियन" कहलाती थी। क्यों कि इनका सब खर्च जोधपुर राज्य से दिया जाता था। भादों वदि १२ रविवार (ता० १६ आगस्ट) को इस रिसाले ने भी फिरंगियों (अंग्रेजों) से बागी हो कर दिल्ली को जाते हुवे मारवाड राज्य के आउवे गांव में डेरा किया और वहां के बागी जागीरदार ठा० कुशलसिंह चांपावत से मिल कर आउवे के किले पर अपना अधिकार कर लिया। इस घटना की सूचना जब जोधपुर पहूंची तो महाराजा तख्तसिंहजी ने एक सेना किलेदार औनाड़सिंह पंवार की मातहती में लोढा राव राजमल और महता विजयमल के साथ रवाने की। आसोज वदि ५ (ता० ८ सितम्बर) को आउवा के ठाकुर और गदर के सिपाहियों ने जोधपुर राज्य की सेना से मुठभेड की जिसमें राव राजमल लोढा (ओसवाल) और किलेदार औनाडसिंह मारे गये और सेना भाग कर सोजत पहुंची। इस युद्ध में आहोर के ठाकुर ने महाराजा के तोपखाने को बचा कर बड़ा ही प्रशंसनीय वीरता का कार्य किया जिससे महाराजा उससे बडे प्रसन्न हुवे।

इसी समय सूचना मिली कि एजेन्ट गवर्नर जेनरल राजपूताना, अजमेर से रवाने हो आउवे पर चढाई करेंगे। अतः जोधपुर के पोलिटीकल एजेन्ट (राजदूत) मेजर मेसन साहब, बडे साहब (ए० जी० जी०) की सेना में सम्मिलित होने को जोधपुर से अजमेर को रवाने हुवे। परन्तु मार्ग में भाग्यवश अपनी सेना के धोखे से वे बागियों के रिसाले में आउवे पहूंच गये। बागियों ने उन्हें पहिचान कर साहब बहादुर को

मार डाला और उनका सिर काट कर वहां के गढ़ पर लटका दिया। इस पर अजमेर से आते हुये एजेन्ट साहब भी अपने पास कम सेना देख कर वापस अजमेर लौट गये। परन्तु बागी रिसाला आउवे से चल कर मारवाड़ में लूट मार करता हुआ नारनोल की तरफ रवाने हुआ। इस समय बागियों का पीछा करने को महाराजा साहब ने कुचामण के ठाकुर राव बहादुर केसरीसिंह की मातहती में कप्तान नाहरसिंह तंवर और [illegible] मिर्जा आदि के साथ ५-६ हजार सेना नारनोल तक भेजी पर मुठभेड़ नहीं हुई।

इस गदर के भयानक समय में महाराजा तख्तसिंहजी ने अजमेर आदि के पचासों अंग्रेजों को मय बालबच्चों के अपने यहां सुरक्षित रखा। गदर के बाद वाईसराय लार्ड कैनिंग ने महाराजा की इस अमूल्य सहायता के उपलक्ष में उन्हें जी० सी० एस० आई० की उच्च उपाधि से सुशोभित किया। और ११ मार्च सन १८६२ (फागुण सुदि १० सं० १९१८ वि० मंगलवार) को सरकार ने इस राजवंश को गोद लेने की सनद दी।

सं० १९१४ की भादों वदि ५ (ई० स० १८५७ ता० ९ आगस्ट) सोमवार को जोधपुर के किले में बारुद के गोदाम पर बिजली गिर गई। इससे किले की दीवाल और चामुंडा माता का मंदिर उड कर शहर में आ पड़ा। उनके पत्थरों से दो सौ मनुष्य अपने २ घरों में दब कर मर गये। महाराजा ने दीवाल और मंदिर नये ढंग से फिर बनवाये।

सं० १९२७ की कार्तिक वदि १३ शनिवार (ता० २२ ओक्टोबर १८७० ई०) को जब लार्ड मेयो ने अजमेर में एक दरबार किया जिसमें राजपूताने के सब नरेश सम्मिलित हुये थे। महाराजा तख्तसिंह भी अजमेर गये परन्तु दरबार में नरेशों की अलग २ कुर्सियां यथा सन्मान नहीं रखी हुई थी। महाराणा उदयपुर की कुर्सी आगे होने से तख्तसिंहजी दरबारमें सम्मिलित नहीं हुवे। पोलिटिकल एजेन्ट व उनके ज्येष्ठ महाराजकुमार जसवंतसिंहजी ने उन्हें बहुत समझाया परन्तु वे न माने। बाद में एक घण्टा ठहर कर वाईसराय मेयो ने बिना तख्तसिंहजी की उपस्थिति के दरबार किया। इधर महाराजा तख्त वाईसराय को बिना मुलाकात किये ही राजधानी चले आये। इस पर लार्ड मेयो ने अंग्रेज सर-

कार की हतक समझी और ब्रिटिश सरकार ने इनके सलामी की तोपें १७ से १५ कर दी। इसी दरबार में राजकुमारों के लिये अजमेर में कालेज स्थापित करना तय हुआ और लगभग ७ लाख रु० का चन्दा हुवा। महाराजा तख्तसिंहजी ने भी १ लाख रुपये कालेज के चन्दे में दिये।

सं० १९२८ में अपनी वृद्धावस्था और बीमारी के कारण महाराजा ने अंग्रेज सरकार की सम्मति से अपने ज्येष्ठ पुत्र महाराजकुमार जसवन्तसिंहजी को "युवराज" करके राजकाज उनको सौंप दिया। इस पर द्वितीय कुमार जोरावरसिंहजी ने जीवन माता के दर्शन करने का बहाना करके नागौर के किले पर कब्जा कर लिया और कहा कि गद्दी पर मेरा हक माना जावे क्यों कि जसवंतसिंहजी का जन्म अहमदनगर में हुवा है और मेरा (जोरावरसिंह का) महाराजा साहब के जोधपुर आने बाद हुवा। परन्तु पोलिटिकल एजेन्ट मेजर इम्पी सेना सहित नागौर जाकर जोरावरसिंह को समझा बूझा कर श्रावण सुदि १५ (ता० १५ आगस्ट) को जोधपुर ले आये। और कुछ समय तक वे अजमेर में रखे गये। पश्चात् वे जोधपुर आ गये जहां सं० १९३० में उन्होंने रावटी बाग को अपना निवासस्थान नियत किया और उनके वंशज अब तक वहीं रहते हैं।

वि० सं० १९२९ की माघ सुदि १५ (ई० स० १८७३ ता० १३ फरवरी) बुधवार को राजयक्ष्मा (तपेदिक) के रोग से महाराजा तख्तसिंहजी का स्वर्गवास हो गया। इनका जन्म वि० सं० १८७६ की ज्येष्ठ सुदि १३ (ई० स० १८१९ ता० ५ जून) को हुआ था। जन्मपत्री इस प्रकार है:— इ० घ० १३।१० सूर्य १।२३ समय ३७।५२

महाराजा तख्तसिंहजी जी. सी. एस्. आई.
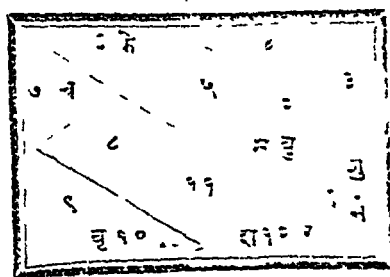
महाराजा तख्तसिंहजी छोटा कद, गोरा रंग, बड़ी आंखें, चौड़ी पेशानी, आदत में हँसमुख और मिलनसार थे। इन्होंने अपने ३० वर्ष के राजत्वकाल में २२ दीवान बदले और राजकाज में बहुत कुछ अव्यवस्था रही थी। फिर भी ये अंग्रेज सरकार के परम मित्र बने रहे।

ये महाराजा पुराने ढंग के राजपूत थे। इनमें प्राचीनकाल के राजपूतों की सी सरलता, शूरवीरता, निर्भिकता, धीरता और गंभीरता थी; किन्तु शृंगार में अधिक रुचि थी और उसके तैयार करने में बड़ा खर्च करते थे। इन्हें शिकार खेलना बड़ा प्रिय था। प्रायः ये अपनी रानियों

को भी शिकार में साथ ले जाया करते थे और उनमें से कतिपय तो सवारी तथा बन्दूक लगाने में प्रवीण थी। ऐसे अवसरों पर ये अपने राजकुमारों को भी साथ रखते थे। ये अधिकतर रनवास में रहा करते थे। इस कारण राज्य का सारा भार मंत्रियों के हाथ में था जिन्हें मनमानी करने का अवसर भी मिल जाता था। ऐसे ही महारानियों और पड़दायतों (खवास-पासवानों) की हिमायत से डावड़ियों (दासियों) का भी दौरदौरा था। वे भी प्रायः राजप्रबन्ध में हस्तक्षेप कर बैठती थीं। इनके राज्यकाल में प्रभावशाली व्यक्तियों के नाम किसी कवि ने इस प्रकार गिनाये हैं:—

नारां बाघा ढलड़ी, हंसा मेना नाम।
महाराजा तखतेसरे, करे जिनावर काम॥

अर्थात् महाराजा तख्तसिंहजी के राज्यकाल में राघणा नाहरजी पंवार, भाट बाघजी, डावड़ी ढलडी और नदारन (दरोगन) मेना और पुष्करणा ब्राह्मण हसराज जोशी ये राज्य कार्य चलाते हैं। ये ही नाम पशुपक्षियों के होने से कवि की कल्पना से जानवर भी काम करते हैं।

महाराजा ने प्रजा की भलाई के लिये कई चिरस्थायी काम किये। उस समय राजपूतोंमें यह रिवाज था कि उनकी लड़कियोंके विवाह के समय चारण, ढोली और भाट लोग उन्हें अपने नेग (त्याग=इनाम) के लिये बहुत तंग करते थे। इस लिये श्रीमान् ने जागीर की सालाना आमदनी के हिसाब से कुछ रकम "त्याग" की नियत कर दी। राजपूतों में प्रायः कन्याओं को जन्मते ही मार दिया जाता था क्यों कि उन के योग्य वर ढूंढने में बड़ी कठिनता होती थी। आपने इस प्रथा को भी मिटा दिया और इसकी रोक के लिये शिलालेख खुदवाये गये जो अब तक राज्य के मुख्य २ शहरों व किलों के दरवाजों पर लगे एवं पाये जाते हैं। इन्होंने सती होने और जीते जी समाधी लेकर किसी साधु के मरने की प्रथा भी हटा दी।

१—कहते हैं यह उदार महिला थी। इसके भाई मूलजी और [illegible] भी राज्य में अच्छे ओहदों पर थे।

इनके न्याय में दया का भाव भी पाया जाता था। एक समय किसी परदेशी घड़ीसाज़ ने राज्य के तोशाखाने में चोरी की जिस पर उसके हाथ कटवाने की मुसाहिबों ने तजवीज़ की। परन्तु महाराजा ने कहा कि "यदि चोरी के हाथ काट दिये जांय तो फिर दया आने से उस के हाथ फिर जुड़ सकते हैं या नहीं?" मुसाहिबों ने कहा कि-"यह ईश्वर के ही हाथ की बात है।" इस पर महाराजा साहब ने कहा कि-"इसने चोरी ज़रूर की है पर अपना कुछ माल नहीं गया, जहां का तहां रहा। फिर भी चोरी की सज़ा तो इसे होनी ही चाहिये। इस लिये इसको मारवाड़ से निकाल दो और बकाया तनख्वा दे दो। क्यों कि नौकर को रोज़गार छीनने से बढ़ कर और कोई सज़ा नहीं हो सकती। मुर्दे को तो बैठ कर रोते हैं और रोज़गार को रोज़ २ रोते हैं।" इतना कह कर घड़ीसाज़ का कसूर माफ किया और खज़ाने से उसकी तनख्वा दिला कर विदा किया।

ये महाराजा कवि और विद्वानों का सन्मान भी किया करते थे। इन्होंने बारजी भाट (अहमदनगरी) को लाखपसाव दिया था। और कश्मीरी ब्राह्मण पंडित शिवनारायणजी कक-जो कि मारवाड़ के मालानी परगने में अंग्रेज सरकार की अदालत में तीस रुपये पर मुंशी थे-उन्हें सन १८४२ ई० में महाराजकुमार साहब को पढ़ाने के लिये, उनकी योग्यता देख कर सौ रुपये मासिक पर नियुक्त किया और ये ही सज्जन पंडितजी आप के प्राईवेट सेक्रेटरी बन कर अंग्रेजी पत्रव्यवहार का कार्य करने लगे। और सं० १९२८ वि० में कश्मीरी पंडित माधोप्रसादजी गुर्टू महाराजा साहब को अखबार सुनाने पर नियुक्त हुये। वास्तव में महाराजा तख्तसिंहजी के गुणग्राही समय में ही कश्मीरी विद्वानों का यहां आगमन व प्रसार हुआ।

जब राजपूताना मालवा रेल्वे की रेल मारवाड़ राज्य में होकर निकली तो आपने उस कम्पनी को सड़क और स्टेशनों के लिये करीब दो सौ फीट के रकबे में ज़मीन ११४ मील तक मुफ्त दी। पहले जो वस्तुएं दूसरे स्थानों से मारवाड़ में होकर निकलती थी उन पर भी चुंगी ली जाती थी किन्तु महाराजा तख्तसिंहजी ने यह हुक्म जारी किया कि 'इस

रेल्वे द्वारा जो चीजें (असबाब) बिना खुली हुई मारवाड में होकर निकलेंगी उन पर चुंगी नहीं ली जायगी[1]।'

मारवाड में सब से पहले अंग्रेजी स्कूल व छापाखाना इन्हीं महाराजा के राज्यकाल में सं० १९२३ की चैत्र वदि १२ (ई० स० १८६७ ता० १ अप्रेल) को खुले थे। ये दोनों संस्थाएं प्रजा ने मुंशी हनवन्तलाल मनिहार (माहेश्वरी) की अध्यक्षता में और रावराजा मोतीसिंहजी की संरक्षता व सहायता से चलाई थीं। इनको सं० १९२६ को आषाढ सुदि १ (ई० स० १८६९ ता० १० जौलाई) से महाराजा साहब ने राज्य के खर्च से चलाना स्वीकार किया और इनके नाम क्रमशः "दरबार स्कूल" और "मारवाड स्टेट प्रेस" रखे थे। और "मुरधर मित्र" नामक साप्ताहिक पत्र जो पबलिक की ओर से सं० १९२४ की वैशाख सुदि २-३ सोमवार (ई० स० १८६७ ता० ६ मई) से प्रकाशित होने लगा था वह भी इस समय सरकारी बनाया जाकर उसका नाम "मारवाड गजट" रखा गया। इन्हीं महाराजा साहब के समय पहले पहल अंग्रेजी इलाज का अस्पताल वि० सं० १९१० (ई० १८५३) में खोला गया और नमक की झीलों का ठेका अंग्रेज सरकार को दिया गया।

इन महाराजा के ३० रानियां, १० पड़दायतें (उपपत्नियां) और ११ तालीम की डावडियां थीं।

इनके राजकुमारों और पड़दायतों के पुत्रों के नाम नीचे दिये जाते हैं:—

१—अहदनामा नं० ४५, ता० २९ जूलाई सन १८६६ ई०,

महाराजा तख्तसिंहजी के पश्चात् उनके ज्येष्ठ पुत्र

३२—महाराजा सर जसवंतसिंहजी (द्वितीय)

वि० सं० १९२९ की फाल्गुन सुदि ३ (ई० १८७३ ता० १ मार्च) को गद्दी पर विराजे। इनका जन्म वि० सं० १८९४ की आसोज सुदि ८ (ता० ७ अक्टोबर १८३७ ई०) को अहमदनगर (महीकांठा गुजरात) में हुआ था। जन्मकुण्डली इस प्रकार है:—

उ० घ० ५६।५२ रवि ५।२२ समये ४३।१६

इन्होंने राज्य की बागडोर हाथ में लेते ही सं० १९३० में महकमा खास, दीवानी, फौजदारी और अपील की अदालतें राजधानी में स्थापित कीं। और फैजुल्लाखां को अपना दीवान बनाया। ऐसे ही अन्य मुसलमानों को भी राज्य में बड़े २ पद दिये। इससे अप्रसन्न हो महाराजा के तीसरे भाई महाराज[1] प्रतापसिंहजी जयपुर अपने बहनोई महाराजा रामसिंहजी के पास चले गये। परन्तु जब जोधपुर पर ४०-५० लाख रुपये का कर्जा हो गया और अलावा इसके कई प्रकार की बुराइयां फैलीं तो महाराजा सवाई सर रामसिंहजी की सम्मति से महाराजा जसवंतसिंहजी ने प्रतापसिंह को जयपुर से बुला कर सं० १९३५ की

१—शासक महाराजा के छोटे भाई व पुत्र तीन पीढ़ी तक "महाराज" कहलाते हैं। यह प्रथा महाराजा अजितसिंहजी के समय से चली आती है। महाराजा [illegible] और उनके पुत्र महाराजा रामसिंहजी के जन्म क्रमशः सं० १८९१ मिगसर वदि [illegible] (ई० स० १८३४ ता० १८ नवम्बर) और सं० १९०० की प्रथम भादों वदि १० (ई० [illegible] अगस्त) को हुए थे।

फागुण बदि १ (ता० ७ फरवरी १८७३ शुक्रवार) को अपना प्राईम मिनिस्टर (मुसाहिबआला) बनाया और महकमे का नाम महकमे आला श्री प्राईम मिनिस्टर रखा गया। साथ ही महाराजा साहब ने अपने छोटे भाई महाराज जालिमसिंह को पासिस्टेन्ट प्राईम मिनिस्टर और पंजाब के राव बहादुर मुंशी हरदयालसिंह को मुसाहिब आला के सेक्रेटरी नियत किये। इन्होंने ही पहले पहल लिखित कानून आदि का प्रचार कर मारवाड के राज्यप्रबन्ध में बड़ी उन्नति की।

स० १९३२ में जब वाईसराय लार्ड नार्थब्रुक साहब बहादुर राजपूताना में दौरा करते जोधपुर आये तब महाराजा जसवंतसिंहजी ने अपने सब सरदारों को दलबल सहित सुसज्जित राजधानी में बुलाया और उनका धूमधाम से स्वागत किया। इन सब जागीरदार और सशस्त्र सेना की, कतार ४ मील तक फैली हुई थी। इस समय बड़े २ जल्से और दीपावली की जिसमें लाखों रुपये खर्च हुये। वह अपूर्व दीपावली अब तक मारवाड मे "लाट दिवाली" के नाम से प्रसिद्ध है। पश्चात् महाराजा साहब ने कलकत्ते जाकर प्रिन्स आफ वेल्स (इंग्लैंड के युवराज एडवर्ड सप्तम) से स० १९३२ की पोष बदि ११ गुरुवार (ई० स० १८७५ ता० २३ डिसम्बर) को भेंट की जहां युवराज ने महारानी विक्टोरिया की तरफ से महाराजा को जी सी एस. आई. की उपाधि से सुशोभित किया। इसके दूसरे वर्ष अर्थात् सं० १९३३ को माघ बदि २ (ई० १८७७ ता० १ जनवरी को) महाराजा दिल्ली के प्रसिद्ध दरबार में सम्मिलित हुवे। जो महारानी विक्टोरिया के भारत की राजराजेश्वरी की पदवी धारण करने के उपलक्ष में लार्ड लिटन ने किया था। इस दरबार में समस्त भारत के राजा, महाराजा और सरदार लोग उपस्थित थे। पांच छै दिन तक वहां महाराजा रहे तब वे उदयपुर के महाराणा सर सज्जनसिंहजी से उनके डेरे पर जाकर मिले। फल यह हुवा कि उदयपुर (मेवाड) से जो १५० वर्ष से अनबन हो रही थी वह मिट गई और नये सिरे से फिर मित्रता हो गई। महाराणा सज्जनसिंहजी जी. सी एस आई. भी बहुत बुद्धिमान् थे वे भी सं० १९३२

को फाल्गुन सुदि १० (ई० स० १८८० ता० २१ मार्च) रविवार को जोधपुर आये।

महाराजा जसवन्तसिंहजी (द्वितीय) जी. सी. एस. आई.

दिल्ली के कैसरहिन्द दरबार में महाराजा जसवंत की सलामी की तोपें बढ कर १७ से १६ कर दी गई और स० १६३५ वि० में ये ही बढ कर २१ हो गई।

वि०१६३७के कार्तिक मास में महाराजा साहब ने राज्य में अपने खर्च से रेल बनवाने का विचार किया और उसे तैयार करने के लिये अंग्रेज सरकार से एक एंजिनीयर मांगा। सरकार ने रायल एंजिनीयर मिस्टर जूसलेन और उनके एसिस्टेन्ट स्मीथ साहब को नियत किया। जिन्होंने माघ बदि १ सं० १६३७ (ई० १८८१ ता० १६ फरवरी) को राज्य की रेल का कार्य (पैमायश आदि) शुरू कर चैत्र सुदि १२ स० १६३६ (ई० स० १८८२ ता० ३१ मार्च) का समाप्त कर दिया। अप्रेल में जूसलेन साहब छुट्टी ले विलायत गये और उनकी जगह मिस्टर इ०ल० होम नामक अंग्रेज एंजिनीयर वैशाख बदि ३० स० १६३६ (ई० स० १८८२ ता० १७ अप्रेल) को नियत हुवा। इसने पुरानी रेल की पटरियां सस्ते भाव को मगा कर बिछा दी। और भी सामान कुछ आया कुछ न आया झट राजपूताना मालवा रेल्वे के मारवाड जंकसन (खारची) से पाली तक रेल ता० २० जून सन १८८२ ई० (आषाढ सुदि ५ सं० १६३६ वि०) को चालू कर दी जो बाद में समय समय पर राज्य में और भी बढाई गई। मैनेजर होम साहब ने सं० १६६३ की कार्तिक बदि १ (ई० स० १९०६ ता० ४ अक्टोबर) तक राज्य की बडी प्रशंसनीय सेवाएं की जो अब तक प्रसिद्ध है। जोधपुर शहर में जल कल का बडा अभाव था। इसके लिये इसने पत्थर की पक्की नहरें, पहाडों की जड में होकर बनाई जिनके द्वारा ८।१० मील के घेरे में पहाडों पर थोडा बहुत पानी भी बर्षा हुवा शहर के तालावों में चला आता है। ऐसी आबपाशी का प्रबन्ध देशी राज्यों में बहुत ही कम पाया जाता है। कन्सरवेन्सी ट्रामवे सं० १६५२ में इन्हीं के प्रयत्न से खुली जो उस समय उत्तर भारत में अपने ढंग की पहली ही थी। इसमें शहर का कूडा करकट आदि डिब्बों में भरा जाकर छोटे से स्टीम एंजिन द्वारा शहर से ८-६ मील दूर गाड्डों में गाडा जाता है जिसका प्रायः खाद बन जाता है। रेल्वे वर्कशाप कचहरियों की विशाल इमारतें, दरबार बंगले (पैलेस), बालसमंद और

का [illegible] और [illegible] आदि के काम इस चतुर गोरे एंजिनीयर की देखरेख में [illegible]। पी० डब्ल्यू० डी० का महकमा भी इसकी मातहती में स्थापित और उन्नतशील हुआ था।

सं० १९४० में भीनमाल परगना के गांव लोटियाने के जागीरदार [illegible] रावत (पांडावरिया) के बागी हो जाने व राज्य में लूट मार करने से महाराजा ने लोटियाना छीन कर उसके स्थान पर अपने नाम पर 'जसवंतपुरा' नामक गांव कार्तिक मास में बसाया। संवत १९४१ में आपने जागीरदारों की जुडीशल पावर (न्याय करने के अधिकार) के नियम तय किये। और गांवों की सरहद के झगड़ों को मिटाने के लिये कप्तेन लाक नामक एक अंग्रेज अफसर को सरकार से मांग कर बुलवाया। जिसने मारवाड़ की सर्वे (नाप) करके भाज के रूप में लिये जानेवाले लगान को सिक्के के रूप में निश्चित किया। जिसे यहां "बीगोड़ी" कहते हैं।

बड़े २ सरदारों को अपनी जागीरों में दीवानी और फौजदारी के इख्तियारात दिये गये। जंगलात, पब्लिक वर्कस (सड़कें, मकान आदि बनवाने) के महकमे कायम हुये। शराब, अफीम, भांग, चरस आदि नशीली चीजों के बेचने को लाईसेंस (परवाने) का तरीका जारी हुवा। नगर निवासियों की तंदुरुस्ती के लिये म्युनिसीपालिटी कायम की गई। नाबालिग जागीरदारों के लिये एक अलग महकमा स्थापित किया गया। युद्ध आदि के समय अंग्रेज सरकार की सहायता के लिये इम्पीरियल-सर्विस लेसर्स (सरदार रिसाला) के नाम से दो रिसाले तैयार किये गये। राजकीय छापाखाना व अखबार "मारवाड़ गजट" की उन्नति की गई। और नाना प्रकार के कलाकौशल, रेल, तार, डाक और विद्या का प्रचार प्रारंभ हुवा। यही नहीं जो मरुस्थान पुराणों में निर्जल, कष्ट-दायक स्थान वर्णित है उस देश में इन महाराजा जसवंतसिंह की कृपा और दयालुता से अनेक बांध, कुंए आदि के तैयार करा देने से जल का अभाव मिट गया और निर्जल भूमि में भी अनेक बाग-बगीचे और जल से पूर्ण जलाशय नजर आने लगे। जैसा कि इस कविता से ज्ञात होता है कि:—

फतहसागर तालाब-जोधपुर
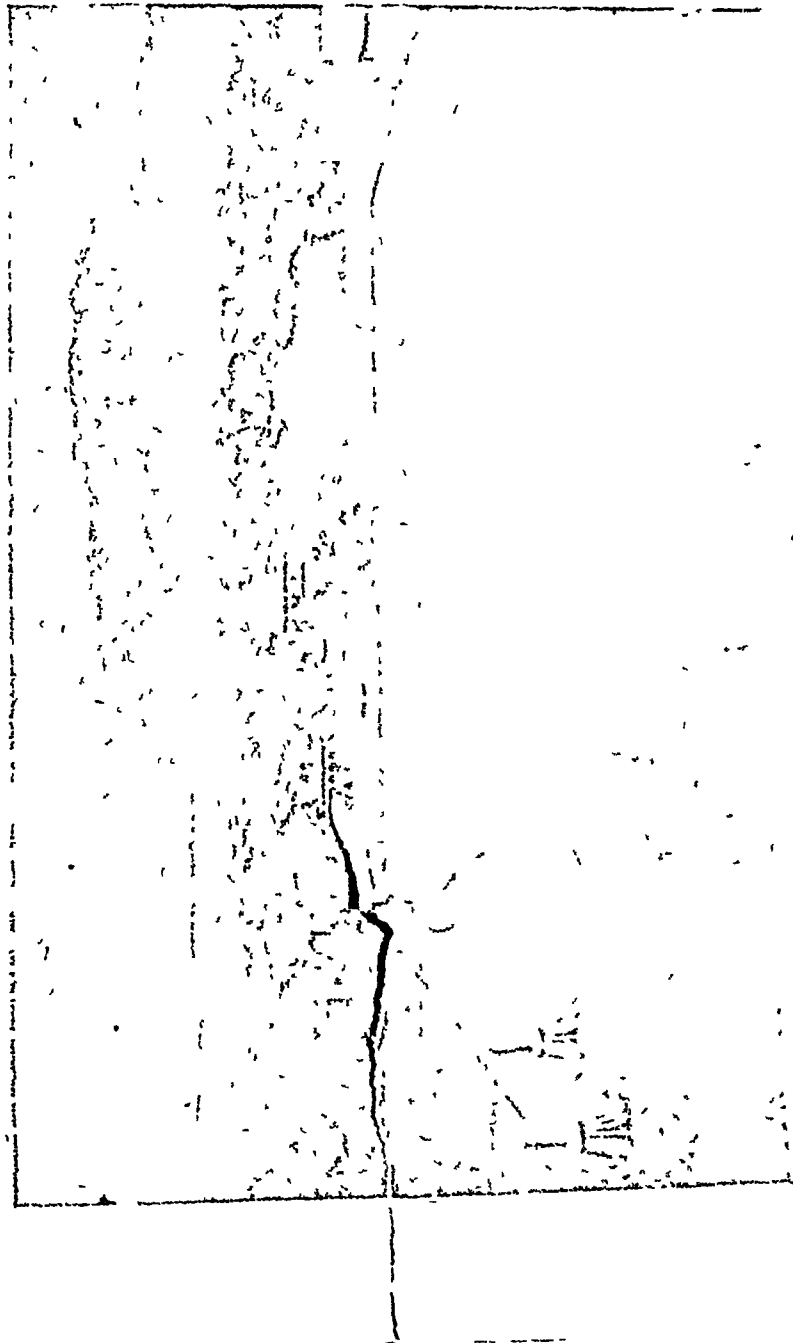
थान है थिरयान जहां जल बिन जान मर ।
याही काज भयो मरुभूमि नाम पुर को ॥
पनै पर दुर्ग बनाये बेरी बेर फेर ।
ज्यों हुए वचन सुरगिनाथ गुरु को ॥
किन्हें है भवन तिन जतन प्रजा के हित ।
आजलों न गयो सोच काहू नृप उर को ॥
आप को भयो है जसवन्त जस ।
जाप जग में सो है कुमार को प्रताप जोधपुर को ॥

अधिक क्या? जसवन्त जैसे सुयोग्य राजा और प्रताप जैसे प्रतापी मंत्री के सुप्रबन्ध से कुछ ही समय में मारवाड़ और की और हो गई। परन्तु खेद है कि ऐसे प्रजाप्रिय महाराजा जसवन्त का ४३ वर्ष की आयु में–२३ वर्ष राज करने पर–वि० सं० १९५२ की कार्तिक बदि ८ (ई० १८९५ ता० ११ अक्टोबर) को शाम के ४ बज कर ३५ मिनट पर 'राई का बाग' महल में स्वर्गवास हो गया। दूसरे दिन सुबह ६ बजे किले के उत्तर में डेढ फर्लांग के फासले पर पहाड़ में स्थित "देवकुण्ड" नामक रमणीक तालाब पर इनकी अन्त्येष्टि क्रिया हुई। इस देवकुण्ड तालाब को महाराजा अभयसिंहजी ने बनवाया था और एक संगीन इमारत भी तैयार कराई थी जो अधुरी रह गई। इतने वर्ष बाद इस स्थान का सौभाग्य उदय हुआ। महाराजा जसवंतसिंहजी ने अपने जीवन काल में ही फरमा दिया था कि–'भविष्य में मंडोर के बजाय यह स्थान राजशाही श्मशान भूमि हो' और ऐसा ही हुआ। इसी कारण से महाराजा ने अपनी महारानी चौहानजी का अन्तिम संस्कार भी सं० १९४१ में यहीं पर किया था।

यह महाराजा बड़े दूरदर्शी, उदारचित्त, मिलनसार और बुद्धिमान थे। इनको कसरत का बड़ा शौक था। इसी से आपने भारत के प्रसिद्ध रुस्तम हिन्द बूटा, अलीया, सरदार कीकरसिंह आदि २००–३०० बड़े २ पहलवानों को अपने यहां रक्खे थे। आप की मिलनसारी व सहृदयता अनुपम थी और इनके समय अनेक राजा महाराजा आदि इन से मिलने व जोधपुर देखने आये थे। उन सब का योग्य अतिथी सत्कार

ज्युबिली-कोर्ट्स-जोधपुर

इन्होंने किया। आपने अपने कनिष्ठ भ्राता व राज्य के प्रधानमंत्री कर्नल महाराज सर प्रतापसिंह की सम्मति से संवत १९४० में स्वहस्त लिखित पत्र, मान पत्र भेज कर स्वामी दयानन्द सरस्वती को मेवाड़ से जोधपुर बुलवाया और उस आदर्श बालब्रह्मचारी निर्भिक संन्यासी से स्वधर्म रक्षा और स्वजातीय शिक्षा का पाठ पढ़ कर जोधपुर में वैदिक-धर्म का प्रचार कराया। वैसे तो उस समय के राज कर्मचारियों और स्वयं महाराजा पर भी स्वामीजी के सत्संगका बहुत कुछ प्रभाव पड़ा था, परन्तु नवयुवक और होनहार मुसाहिब आला सर प्रताप पर तो ऐसा असर जमा कि वे आजन्म स्वामीजी के अनन्यभक्त बने रहे। स्वामीजी के उपदेश द्वारा महाराजा साहब और सर प्रताप का ध्यान देश की वास्तविक उन्नति और समाज सुधार आदि की ओर गया। सर प्रतापने प्रधानमंत्री की हैसियत से मारवाड़ में शिक्षा का प्रचार किया और राज्य की अदालतों में उर्दू की जगह हिन्दी को दिलायी। राजकी आज्ञा द्वारा मारवाड़ के लोगों को ओसर मोसर याने मुक्ता कारज (Funeral feasts) के व्यर्थ खर्च से बचाया। शराब, गांजा, चरस आदि नशीली चीजों को लाईसेंस से बेचने का ठेका कर दिया और एक आम हुक्म सं० १९४२ में निकाला कि—'राज्य के तमाम अधिकारी व राजकर्मचारी स्वदेशी गाढा (रेजा) के कपड़े पहिन कर कचहरी आदि में आवें।'

जब राजराजेश्वरी महारानी विक्टोरिया को ५० वर्ष राज्य करते हो गये तब उनकी गोल्डन जुबिली महोत्सव सन १८८७ की ता० २१ को लन्दन में मनाना तय हुआ। इस अवसर पर महाराजा जसवंतसिंहजी ने महाराज सर प्रताप को "महाराजाधिराज" की उपाधि देकर और उन्हें अपना प्रतिनिधि बना कर महोत्सव में सम्मिलित होने को लन्दन भेजा। ये राजपूत राजाओं में सब से पहले थे जिन्होंने सं० १९४४ की चैत सुदि ८ (ई० १८८७ ता० १ अप्रेल) को बंबई से जहाज में बैठ योरप यात्रा की। सर प्रताप गुणग्राहक थे। इन्होंने कवियों को सांसों से रईस तक बना दिया और इनके द्वारा राजपूतों की जो उन्नति
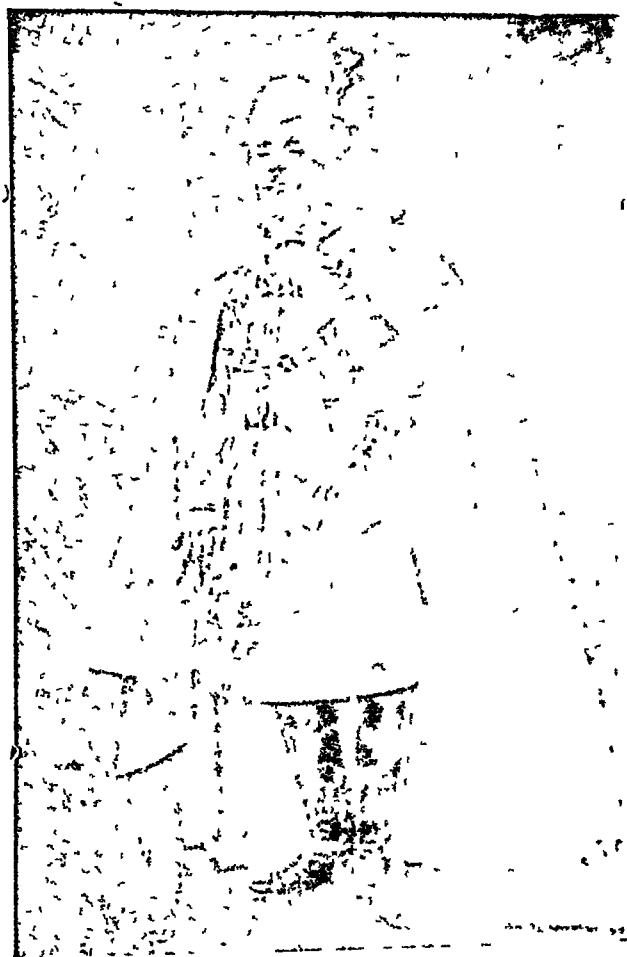
महाराजा सर प्रताप

हुई है उसका दिग्दर्शन कवि जुगतीदान देथा (चारण) ने इस प्रकार किया है:—

> वखता जसा अंजा विजा मान गुमन मां ताप ।
> तारस कुल तखतेसरे, पारस तू परताप ॥

इता आगम देखिया, एक सुधारस आप ।
दरसण वारण जनमियाँ, पारस तूं परताप ॥
उरवर चरावे ऊगियाँ, थान न रावे थाप ।
मोगरा वरण मिल, पातलरो परताप ॥
धी दास परधारना, करजा में कल काप ।
देखो हूंतां ठीक हुई, पातलरो परताप ॥ ४ ॥

महाराजा जसवन्तसिंहजी के विद्यानुराग व गुणग्राहकता से अनेक विद्वानों का सन्मान हुआ । जोधपुर राज्य सभा (स्टेट कौंसिल) के सभासद कविराज मुरारदानजी आसिया को भी "कविराजा" उपाधि और "लाखपसाव" पुरस्कार से सम्मानित किया; जिन्होंने १५ वर्ष के परिश्रम से अलंकारों के नाम ही में लक्षण का समावेश करके "यशवंत यशोभूषण" नामक ग्रंथ रचा और सं० १९५० के फाल्गुन सुदि १४ (ई० स० १८९४ ता० २० मार्च) मंगलवार को महाराजा साहब को सब साहित्यवेत्ता विद्वानों के मंडल में सुनाया । यह अपूर्व ग्रंथ सं० १९५४ में छप कर प्रकाशित हुवा तब आप के उत्तराधिकारी महाराजा सरदारसिंहजी ने कविराजा को फिर दो गांव प्रदान किये ।

महाराजा साहब के ६ रानियां और १२ पड़दायतें थीं । इनके सिवाय आपके "नन्ही भगतन" (नन्हीजी) नामक एक गणिका भी थी जो पर्दे में नहीं रहती थी[2] । महारानी श्रीमती पंवारजी (नरसिंहगढ़ वालों) से महाराजकुमार सरदारसिंहजी और पड़दायतों से रावराजा दो—सवाईसिंह और तेजसिंह नामक—उत्पन्न हुवे ।

महाराजा जसवंतसिंहजी के उत्तराधिकारी—

३३—महाराजा सर सरदारसिंहजी जी० सी० एस० आई०

वि० सं० १९५२ की कार्तिक सुदि ७ (ई० स० १८९५ ता० २४

१—इनके पौत्र कविराजा मरुदान भी हिन्दी साहित्य के एक प्रेमी सज्जन हैं ।

२—सन् १९०३ ई० की २४ जौलाई को जब इसका देहान्त ६०-६१ वर्ष की आयु में हुआ तब उनकी [illegible] राज्य में [illegible] की गई ।

आक्टोबर) को राजसिंहासन पर विराजे । इनका जन्म वि० सं० १९३६ की माघ सुदि १ (ई० स० १८८० ता० ११ फरवरी) को जोधपुर के राई का बाग महल में हुआ था । जन्मकुंडली आपकी नीचे दी जाती है:—

घटि ३२ पल १० सूर्य १०।० समये २३।१
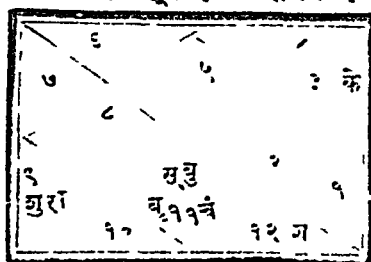
राज्य प्राप्ति के समय इनकी आयु केवल १६ वर्ष की थी। इस कारण अंग्रेज सरकार ने महाराज सर प्रतापसिंह की अध्यक्षता में सं० १९५३ की फाल्गुण वदि १४ बुधवार (ई० स० १८९६ ता० १२ फरवरी) को जोधपुर में पहले पहल रीजेन्सी कौंसिल स्थापित की । दो वर्ष बाद १८ वर्ष की अवस्था हो जाने पर सं० १९५४ की फाल्गुन वदि १३ (ई० स० १८९८ ता० १८ फरवरी) को राज्य के अधिकार महाराजा को सौंप दिये गये ।

सं० १९५३ में जब लार्ड एलगिन जोधपुर आये तब महाराजा साहब ने स्त्रियों की डाक्टरी ढंग की चिकित्सा के लिये अपने स्वर्गीय पिता के शुभ नाम पर सं० १९५३ मिगसर वदि ४ (ई० १८९६ ता० २४ नवम्बर) को "जसवन्त फिमेल अस्पताल" और राजपूत बालकों की शिक्षा के लिये सं० १९५३ की मिगसर वदि ६ (ई० १८९६ ता० २६ नवम्बर) को मंडोर में "एलगिन राजपूत स्कूल" की स्थापना की । यही स्कूल इस समय "राजपूत हाईस्कूल" कहलाता है और राजधानी के पास चोपासनी नामक स्थान में है ।

महाराजा सरदारसिंहजी राज कार्य को बडी योग्यता से सम्पादन करते थे और अपने पिता और चाचा महाराज सर प्रताप के समान अंग्रेज सरकार के शुभचिंतक थे । वि० सं० १९५४ में जब काबुल की

महाराजा सर सरदारसिंहजी जी. सी. एस आई.

सरहद पर तीराह की लड़ाई हुई उस समय इन्होंने अपना सरदार
रिसाला सर प्रताप की अध्यक्षता में गवर्नमेंट की सहायता के लिये

भेजा। इसने भारत की उत्तर पश्चिमी सीमा पर बड़ी प्रशंसनीय सेवाएं की थीं। इस युद्ध में घायल होने पर भी सर प्रताप ने किसी को मालूम न होने दिया। परन्तु कुछ दिनों बाद जनरल सर विलियम लोकहार्ट को किसी तरह मालूम हो गया। इस सेवा से प्रसन्न होकर राजराजेश्वरी महारानी विक्टोरिया ने सं० १९५४ की मिगसर वदि ११ को सर प्रतापसिंहजी को "आर्डर आफ बाथ" का पदक प्रदान कर सेना में "कर्नल" का आनरेरी ओहदा दिया। सं० १९५६ वि० में दक्षिण अफ्रिका के युद्ध के समय यह रिसाला मथुरा भेजा गया। इसी के बाद जब सं० १९५७ में चीन-युद्ध छिड़ा तब वहां से यह रिसाला सीधा चीन पहुंचा। वहां पर भी महाराजाधिराज महाराज सर प्रताप के सेनापतित्व में इसने बड़ी वीरता के कार्य किये और युद्ध समाप्त होने पर ४ तोपें महाराजा सरदारसिंहजी को अंग्रेज गवर्नमेंट ने भेंट कीं। इसी चीन-युद्ध में महाराज प्रतापसिंहजी को एक गोरे फौजी अफसर से ज्ञात हुआ कि भारतवर्ष के एक अखबार में छपा है कि-'राजपूताने का एक राजा अपुत्र मर गया है।' नाम पूछने पर उस समय अफसर ने उसने राज बताया कि वह ईडर का राजा था। इस पर सर प्रताप ने कहा कि-"ईडर राजपूताने में नहीं है पर गुजरात प्रांत में है और वह राजा मेरे ही कुल का सपोत्री था और अब मैं उस राज्य का अधिकारी हूं।" उस अंग्रेज अफसर ने प्रसन्न होकर कहा कि "यदि ऐसा है तो आप को दावा करना चाहिये।" यह सुन कर सर प्रताप ने उसी वक्त लार्ड कर्जन को तार भेजा और अपना अधिकार जताया। सरकार से तहकीकात होकर पूर्व युद्ध सेवाओं के पुरस्कार में सर प्रताप को ईडर का राज्य मिल गया। जिसकी सूचना सरकार ने सं० १९५८ की पौष वदि १३ (ई० १९०२ ता० ७ जनवरी) को तार द्वारा दी। इस पर जोधपुर राज्य से ये ईडर चले गये जहां माघ सुदि ५ सं० १९५८ (ता० १३-२-१९०२ ई०) को ५६ वर्ष की आयु में वहां के राजसिंहासन पर बैठे। ईडर राज्य पर सर प्रताप का हक कितना समीप व प्रबल था वह नीचे के वंशवृत्त से साफ ज्ञात होगा:—

महाराजा अजीतसिंहजी

- अभयसिंह
  - रामसिंह (जोधपुर का राज्य इनसे बखतसिंहने छीना)
- बखतसिंह
  - विजयसिंह
    - गुमानसिंह (कुमार)
      - मानसिंह (इनके देहांत पर नरतसिंह अहमदनगर-ईडर-से गोद आये)
        - तखतसिंह
          - जसवंतसिंह (द्वितीय)
          - प्रतापसिंह
- आनंदसिंह
  - भवानीसिंह
    - शिवसिंह
      - गंभीरसिंह
        - जवानसिंह
          - सर केसरीसिंह
            - सर प्रतापसिंह (गोद आये)
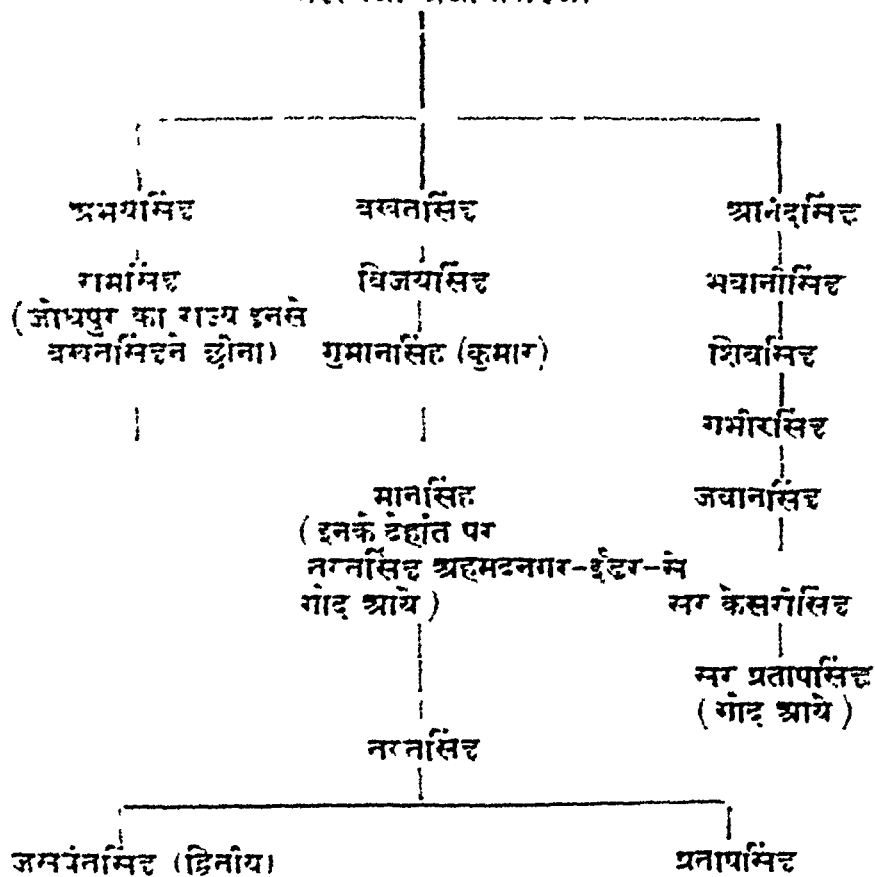
सं० १९५६ में मारवाड़ में भयंकर अकाल पड़ा था। मारवाड़ की प्रजा इस दुष्काल की भीषणता को कभी भूल नहीं सकती। वह अब तक ५६ के सालके अकालके गीत गा गा कर उसकी भयंकरताका परिचय देती है राजस्थान के महाकवि उमरदान लालस भी उसकी भीषणता का वर्णन इन पद्यों में करते हैं:—

मांणस मुरधरिया मांणक सम मूंगा ।
कोड़ी २ रा करिया श्रम मूंगा ॥

डाढी मूछाळा डलिया में झुलिया ।
 रुलिया जायोड़ा गालियां में रुलिया ॥
आफत मोटी ने खोटी पुळ आई ।
 रोटी रोटी नं रैय्यत रोवाई ॥

सर प्रताप (घुड-स्वार)

अर्थात् मरुधर के मनुष्य (वह मारवाडी कि जिनकी धाक धन ौर व्यापार में सर्वत्र प्रसिद्ध है) जो माणिक और मूंगा आदि रत्नों के ःमान मँहगे थे वे एक २ कौडी का सस्ता परिश्रम करते दिखाई दिये।

गर्व भरी डाढी मूछोंवाले डलियां (टोकरे) उठाते थे। गलियों महलों) में पैदा हुवे गलियों में भटक रहे थे। यह छप्पन की पल भारी ापत्ति के साथ आई थी। रैयत (प्रजा) रोटी २ को रोती थी।

नन्हें २ कुसुम से भी कोमल बालकों की अवस्था का दिग्दर्शन कवि इन पंक्तियों में कराता है:—

आड़ा अँखाळियां खायोड़ा आड़ा ।
खाड़ां कोड़ां पे जायोड़ा लाड़ा ॥

ऐसी दैवी विपद के समय महाराजा सरदारसिंहजी ने प्रजा की प्राणरक्षा के लिये जो कुछ प्रयत्न किया उसकी सराहना जितनी की जाय, थोड़ी है। आपने जगह २ प्रजा के सहायतार्थ मजदूरी के काम जारी कर दिये, लाखों रुपयों का अन्न बाहर से मंगवाया। प्रजा की रक्षा में खजाना खाली कर दिया और ३० लाख रुपये अंग्रेज सरकार से ऋण लेकर करीब ३६ लाख रुपये अपनी प्रजा के रक्षण में खर्च किये। सालभर का भूमि कर भी सब पर माफ कर दिया। इस प्रकार लाखों रुपये व्यय किये तब मारवाड़ की प्रजा को मृत्यु के मुख से बचा सके।

ता० २४ अप्रेल सन १९०१ ई० को आप लंका होते हुवे योरप की यात्रा करने को बंबई से रवाने हुवे। साथ में आप के एक पोलिटिकल अफसर बेनरमेन और ३ सरदार, रीयां ठा० विजयसिंहजी, गोराउ ठा० धोकलजी और कुं० उगमसिंहजी (अब चांदेलाव ठाकुर), थे। लंका, इंग्लैंड, फ्रांस, स्विट्ज़रलैंड और आष्ट्रिया तक की सैर कर १८ अक्टोबर सन १९०१ ई० को आप वापिस बम्बई उतरे और आबू पहाड़ पर ठहरते हुवे ता० ३० अक्टोबर को राजधानी में पधारे। प्रजा ने बड़ी धूमधाम से आप का स्वागत किया। राजपूताने के राजाओं में आप पहले ही राजा थे जिन्होंने लन्दन में सम्राट् सप्तम एडवर्ड से मुलाकात की और भारत के नरेशों में आपने पहले पहल आष्ट्रिया के सम्राट् से उनकी राजधानी वायना में मिल कर यथोचित सम्मान पाया। योरप से लौटने पश्चात् आप देहरादून चले गये जहां आपने जनवरी सन १९०२ ई० से आगस्ट सन १९०३ ई० तक सैनिक शिक्षा प्राप्त की। सन १९०२ के नवम्बर मास में लार्ड कर्जन जोधपुर आये तब इन्होंने उनका अच्छा स्वागत किया। इसके बाद राजकीय कारणों से आप को ता० १० आगस्ट १९०३ को पचमढ़ी (सी० पी०) जाकर निवास करना पड़ा। इस कारण राज्य की देखभाल का भार रेजीडेन्ट जैनिंग पर था और

परमनीतिज्ञ रावबहादुर पंडित सुखदेवप्रसादजी काक बी. ए., सी. आई. ई. मंत्री का कार्य करते रहे। वहां से सन १९०५ ई० को २० मई को वापस लौटने पर फिर एक वार महाराजा साहब ने राज्य कार्य को अपने हाथ में लिया।

सं. १९३९ की जेठ सुदि ९ (ई० १८८२ ता० २० फरवरी) को आप का प्रथम विवाह बूंदी नरेश हाडाकुल तिलक हिजहाईनेस रावराजा रामसिंहजी की राजकुमारी श्रीमती लछमन कंवर के साथ बूंदी में हुवा था। और दूसरा विवाह उदयपुर के महाराणा सर फतेहसिंहजी जी. सी. एस. आई की द्वितीय राजकुमारी श्री० केसरकुंवर बाई से सं० १९६५ की वैशाख वदि १ शुक्रवार (ई० स० १९०८ ता० १७ अप्रेल) को उदयपुर में हुवा था। और आषाढ वदि १३ शुक्रवार (ई० स० १९०८ ता० २६ जून) को सम्राट् की वर्षगांठ के उपलक्ष में आप को के० सी० एस० आई० की उपाधि मिली। इस वर्ष सितम्बर मास में मारवाड़ में बहुत वर्षा हुई। कई बंधे व रेल लाईन बह गई। स० १९६५ की माघ सुदि १ (ई० स० १९०९ ता० २२ जनवरी) को आपने अपनी वर्षगांठ के शुभावसर पर महकमे खास के सीनियर मेम्बर रावबहादुर प० सुखदेवप्रशाद काक बी. ए; सी आई ई को जसनगर (केकिन), सरदारगढ (रानी) और गोल नामक तीन गांव जागीर में इनायत किये और हाथ का कुर्ब व दोवड़ी ताजीम दरबार में दी। इसके साथ ही अव्वलदर्जे के अदालती अखतयारात भी प्रदान किये। सं० १९६६ वैशाख सुदि ३ गुरूवार (ई० स० १९०९ ता० २२ अप्रेल) को जंगी लाट किचनर जोधपुर आया। महाराजा ने बड़ी धूमधाम से उसका स्वागत किया। इन्हीं दिनों में जोधपुर मे अद्भुत वस्तुओं के संग्रह के लिये अजायबघर स्थापित हुवा। सं० १९६६ की पोष वदि ४ (ई० स० १९०९ ता० ३० दिसम्बर) गुरुवार को आपने रावबहादुर पं० सुखदेवजी को १५०० रु० मासिक पर अपना प्राईम मिनिस्टर (प्रधानमंत्री-दीवान) नियत

१—बूंदी के नरेशों की पहले से "रावराजा" की उपाधि है। ऐसे ही जयपुर राज्य के सीकर ठिकाने के जागीरदार भी "रावराजा" कहलाते हैं, जो उस राज्य के फर्स्ट क्लास मातहत सरदार हैं।

लिया । सं० १९६६ की पौष वदि ६ शनिवार (ता० १ जनवरी सन १९१० ई०) को आप को जी. सी. एस. आई. की उपाधि मिली और राज्य का सारा भार आपने अपनी देखभाल में ले लिया । परन्तु खेद

ब्रह्मनिष्ठ महात्मा ईश्वरदानजी संन्यासी

है कि सं० १९६७ की चैत्र वदि ५ (ई० स० १९११ ता० २० मार्च) सोमवार को ३१ वर्ष की आयु मे ही आप का स्वर्गवास हो गया।

ये महाराजा बड़े ही सदय हृदय, सरल स्वभाव के, मधुरभाषी और उदार विचार के थे। धर्म पर इनकी दृढ श्रद्धा थी। जोधपुर के सुप्रसिद्ध योगी ज्ञानी ब्रह्मनिष्ठ और आयुर्वेद विशारद महात्मा देवीदान संन्यासी के ये पूरे भक्त थे। अतएव संन्यासीजी[1] के दर्शनों को उनके पहाड़ी आश्रम (देवीदान-देवस्थान) पर बहुत जाते थे और घण्टों उपदेश श्रवण करते थे। जैसा आप को धर्म विषय मे प्रेम था वैसा ही आप को प्रजा मे भी सच्चा प्रेम था। आप अपनी प्रजा के हित का बड़ा ध्यान रखते थे और प्रजा का भी आप पर बड़ा प्रेम था।

इन महाराजा के समय की दो एक घटनाएं उल्लेखनीय हैं। पहली तो मुसलमानों व हिन्दुओं के बीच में झगड़ा, जो कि मसजीद और महादेवजी के मंदिर (खांडापलसा बाजार) के विषय मे था। और मुसलमानों ने ताजीये के रोज सं० १९५६ की वैशाख सुदि ११ (ई० स० १८९९ ता० २१ मई) को मौका पाकर उद्दण्डता मे मंदिर के पीपल वृक्ष को काटना शुरू कर दिया जिससे पुष्करणे ब्राह्मण और दूसरे हिन्दुओं ने उनको रोका। यह दंगा पलटन व पुलिस के आने पर शांत हो गया। पर दोनों ओर के पचासों मनुष्य जख्मी हुवे और मंदिर के सामने की विशाल "एक मिनार' की मसजीद को व यवनों को बड़ी हानि पहुंची। ऐसे ही सं० १९५८ की वैशाख सुदि १२ मंगलवार (ता० ३०-४-१९०१ ई०=हिज्री सन १३१८ ता० १० मोहर्रम) को मुसलमानों ने राज्य की हुक्म उदूली की जिस पर पुलिस, पलटन व रिसाले ने बहयोंक ताजिये का तसमेस कर दिया। सौ से अधिक मुसलमान गिरफ्तार हुवे और ताजिये उस वर्ष नहीं निकले। दूसरी घटना सं० १९६१ की फाल्गुण सुदि ८ मंगलवार की है जिसका कारण मच्छुखां नामक एक स्थानिक व्यक्ति को राज्य से बाहर निकालने बावत हुई। यह मच्छुखां राज्य की सेना में

१—संन्यासीजी का शुभ जन्म सं० १९१३ वि० की भादों वदि ८ को [illegible] में हुवा और सन्यास माघ वदि ? सं० १९४२ वि० मे लिया। [illegible] पत्र वर्ष ३ अंक १ पृष्ठ ३४ सन १९२० ई०

पहले सवार था और महाराजा साहब के चचेरे भाई महाराज अर्जुन-सिंहजी रिसालदार इन लोगों का बड़ा कृपापात्र था। किसी कारण से राज्य से इसे निकालने का हुक्म हुआ परन्तु नाम मात्र को उस हुक्म को मान कर मस्तूखां मय महाराज अर्जुनसिंह के ता० १६ जुलाई सन १९०३ ई० को राज्य से बाहर निकल गया। किन्तु थोड़े अर्से बाद ६ दिसम्बर को यह वापस चला आया। जिस पर हुक्म उदूली का दोष लगाया गया और उसे गिरफ्तार करने के लिये वारंट निकाला गया। किन्तु महाराज अर्जुनसिंहजी ने उसे अपनी कोठी (किशोर बाग पेलेस-मंडोर) में आश्रय दिया। इस पर राज्य ने एक नोटिस अंग्रेजी, उर्दू और हिन्दी में छपा कर जोधपुर में ६ मार्च सन १९०४ ई० को जारी किया जिसमें घोषणा की कि "यदि कोई गिरफ्तारी में बाधा डालेगा तो जबरदस्ती तामील कराई जायगी, साथ ही महाराज अर्जुनसिंहजी की जागीर के गांवों पर अधिकार जमाने और मस्तू को पकड़ने के लिये सेना के रिसाले से काम लिया जायगा। जो कोई इस काम में रुकावट उत्पन्न करेगा उसे दस साल जेल होगी। यदि कोई गोली चलावेगा और दरबार का कोई आदमी मारा जावेगा तो मारनेवाला हत्या के अभियोग में पकड़ा जावेगा।" आज्ञा के अन्त में लिखा था कि-"इस आज्ञा से यह मतलब भी है कि आगे को कोई ऐसा व्यर्थ और मूर्खता से भरा हुआ मुकाबला दरबार की आज्ञाओं के साथ न करे।" इसके साथ ही अर्जुनसिंहजी के गांव बीजवा और बगड़ और सेनापति का पद छीन लिये गये। इस पर भी महाराज अर्जुनसिंह ने अपने कामदार मस्तू-खां को राज्य के हवाले नहीं किया। इस पर उनकी कोठी के चारों ओर सेना का घेरा ६ दिन तक रहा। अन्त में भीतर खाने पीने की सामग्री समाप्त हो जाने से ता० १४ मार्च दिन के तीन बजे जनानों की बग्घी में बिठा कर कोचवान की जगह महाराज अर्जुनसिंहजी और पास मस्तू-खां बैठ कर कोठी से निकले। अर्दली में तीन चार सवार थे। फौजने बग्घी को रोका। जब बग्घी न रुकी तो घोड़ों को गोली से मारा। मस्तूखां के भी वहीं लगी थी। मस्तूखां ने गाडी से उतर कर तमंचे से फैर किये। बेटे ठाकुर के भाई किशोरसिंहजी (स्क्वाड्रन कमांडर) के ४ गोलियां मस्तूखां की लगीं जिससे वे बहुत जख्मी हुये और मस्तू-

खां के भी गोलियां लगीं। अर्जुनसिंहजी की ओर के महातिया रणजीतसिंह, जोधा देवसिंह, रोशनखां अफगानी और मच्छुखां मरे। अर्जुनसिंहजी व जनानों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दिया गया और शांति हो गई।

महाराजा सरदारसिंहजी के राज्यकाल में जोधपुर बीकानेर रेल्वे का विस्तार पश्चिम में हैदराबाद सिन्ध तक, उत्तर में भटींडा और पूर्व-पश्चिम में हिसार (हांसी) तक हो गया था। आपने जोधपुर में गिरदीकोट नामक स्थान में एक घण्टाघर बनवाया और उसके चारों तरफ दुकानें बनवा कर उसका नाम "सरदार मारकेट" रखा। राजधानी में पत्थर की सड़कें बन्धवाईं, रजिस्ट्री का महकमा खोला और अपने पिता के अन्त्येष्टि स्थान पर एक सुन्दर संगमरमर का थड़ा बनवाया।

महारानी श्री० हाडीजी साहिबां से इनको ये सन्तान हुईं:—

१—महाराज कुमार युवराज सुमेरसिंहजी साहब बहादुर

२—राजकुमारी श्री मरुधर कुंवर बाई। जन्म सं० १९५६ की मिगसर सुदि ५ गुरुवार (ई० १८९९ ता० ७ डिसेम्बर)

३—राजकुमारी श्री सूरज कुंवर बाई। जन्म सं० १९५७ की फाल्गुन वदि ११ (ई० १९०२ ता० १५ फरवरी)

४—महाराजकुमार श्री उम्मेदसिंहजी जन्म सं० १९६० की आषाढ़ सुदि १४ बुधवार (ई० स० १९०३ ता० ८ जुलाई)

५—महाराजकुमार अजीतसिंहजी जन्म-सं० १९६४ वैशाख वदि ४ बुधवार (ई० स० १९०७ ता० १ मई)

महारानी श्रीमती सीसोदियनीजी साहिबां से कोई सन्तान न हुई।

महाराजा श्री सरदारसिंहजी साहिब बहादुर के स्वर्गवास होने के समय आपके ज्येष्ठ राजकुमार

३४—महाराजा सुमेरसिंहजी के. बी. ई.

की अवस्था केवल १४ वर्ष की थी। इनका राजतिलक चैत सुदि

१—भारतमित्र साप्ताहिक-कलकत्ता, ता. ५ अप्रेल सन् १९०[illegible] ई.

2—The Chiefs and leading Families of [illegible] 1903 page 5.

७ सं० १९६८। ता० ५ अप्रैल १९११ ई०। बुधवार को किले में शृंगार चौकी (मसनद का सिंहासन) पर प्राचीन प्रथानुसार हुआ। इनकी नाबालगी में भारत सरकार ने ईडर नरेश महाराजा सर प्रताप को फिर जोधपुर राज्य का अभिभावक (रीजेन्ट) नियुक्त किया। महाराजा सर
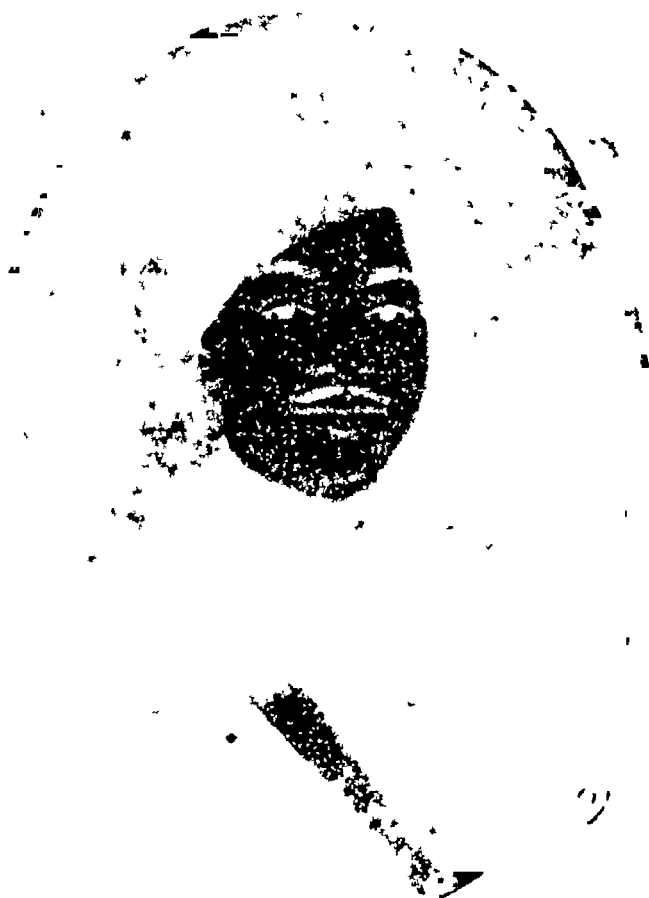
महाराजा सुमेरसिंहजी के० बी० ई०

प्रतापसिंहजी ने अपने इस कर्त्तव्य का महत्व समझ कर अपने ईडर राज्य के राज सिंहासन पर अपने दत्तक पुत्र महाराजा दौलतसिंहजी को बिठाया और स्वयं जोधपुर का राजकाज सम्हाला। इस समय जेठ वदि १० सं० १९६८ मंगलवार (ई० १९११ ता० २३ मई) को राजपूताना के एजेन्ट गवर्नर जेनरल मिस्टर कोल्विन साहब ने जोधपुर महकमा-खास के विशाल दीवानखाने मे ता० २३-५-१९११ को एक दरबार किया। जिसमें उन्होंने अंग्रेज सरकार की ओर से महाराजा सर प्रताप को रीजेन्ट व प्रेसीडेन्ट कौंसिल बनाने की आज्ञा प्रकट की और रावबहादुर पंडित सुखदेवजी को, जो राज्य के दीवान थे उनको (१५००) पन्द्रह सौ रुपये मासिक की पूरी पेन्सन देकर रिटायर किया और सर
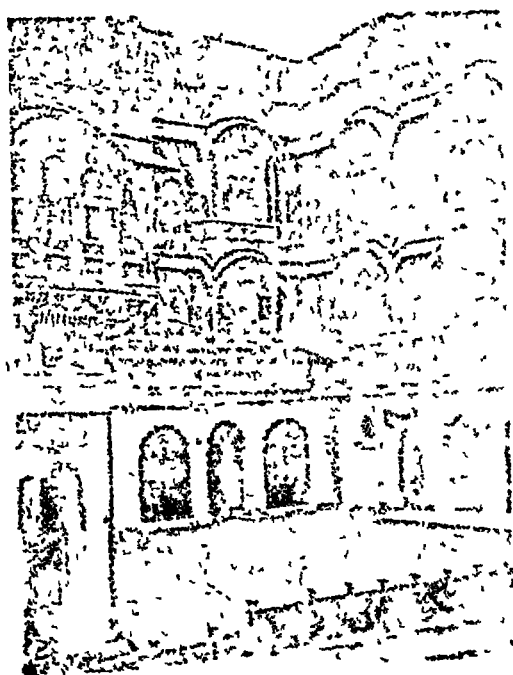
शृंगारचौकी—किला जोधपुर

उन्होंने कहा कि यह पेन्सन पडितजी को ६० वर्ष की आयु तक मिलती रहेगी।"

ज्येष्ठ वदि १२ सं० १९६८ वि० (ई० स० १९११ ता० २५ मई) को नवयुवक महाराजा विलायत विद्या प्राप्ति के लिये भेजे गये जहां वे दो वर्ष तक वेलिंगटन कॉलेज में पढ़ते रहे। इसके दूसरे दिन ही ता० २६-५-१९११ को रीजेन्ट सर प्रताप भी भारत सम्राट् के राजतिलकोत्सव में शरीक होने को लन्दन चले गये।

सं० १९६८ की पौष वदि ७ (ई० स० १९११ ता० १२ दिसम्बर) मंगलवार को सम्राट् पंञ्चम जार्ज ने दिल्ली में पधार कर राजतिलकोत्सव किया। उस समय जोधपुर महाराजा भी इस दरबार में सम्मिलित होने को लन्दन से यहां आये और इसके कुछ दिन बाद फिर विद्याभ्यास के लिये वहीं वापस चले गये। सं० १९६९ की पौष सुदि ४ (ता० ११ जनवरी १९१२ ई०) को महाराजा शिक्षा समाप्त कर जोधपुर लौट आये।

सं० १९७० में आप सैनिक शिक्षा प्राप्त करने को केडिट कोर-देहरादुन (जहां राजाओं को सैनिक शिक्षा दी जाती है) जानेवाले थे। परन्तु स० १९७१ की सावन वदि ६ (ई० स० १९१४ ता० २८ जौलाई) को यकायक बोसनिया के सराजीवो नगर में आस्ट्रीयन युवराज की हत्या हो जाने के कारण को लेकर जर्मनी ने रूस और फ्रांस से युद्ध की घोषणा कर दी तब ग्रेटब्रिटन (अंग्रेज) को भी युद्ध में फंसना पड़ा। इस लिये महाराजा ने देहरादून जाना मुलतवी रक्खा और योरपीय महायुद्ध में अपने दादा महाराजा सर प्रताप और सरदार रिसाले के साथ जाने का विचार प्रकट किया। परन्तु उस समय आपकी अवस्था केवल १६ वर्ष की थी। अतः भारत सरकार ने ऐसे भयंकर युद्ध में आपको (समरांगण में) भेजना उचित न समझा। इस पर आपने प्रजाप्रिय वाईसराय लार्ड हार्डिज को फिर यों लिखा कि:—

Will your Excellency allow me to go and do my duty by the King-Emperor? All my people are going, and what sort of figure should I

1- Marwar Gazette Vol 45 No 25 page 271 Dated 28 may 1911 A. D

out when I come to reign over them hereafter if they are able to say. "what were you doing when we went and fought for the king—Emperor "It is true I am only 16, but an Indian of 16 is a man

अर्थात् क्या श्रीमान् मुझे अपना कर्त्तव्य पालन तथा सम्राट् की सेवा करने का अवसर देंगे? क्यों कि मेरी अधिकांश प्रजा रणभूमि में जा रही है। मैं उनको क्या उत्तर दूंगा जब कि मैं उन पर शासन करूंगा और उस समय कदाचित् वे यह ताना मारें कि-" आप उस समय क्या कर रहे थे जब हम गये और सम्राट् के लिये लड़े।' निःसन्देह मेरी आयु सोलह वर्ष की है, परन्तु भारतवर्ष में १६ वर्ष का युवा पूर्ण आयु का पुरुष समझा जाता है।"

इस पत्र को पढ़ कर वाईसराय ने नवयुवक महाराजा का रोकना उचित न समझा और उन्हें अपने रिसाले के साथ युद्ध में जाने की आज्ञा दे दी। आज्ञा पाने पर जोधपुर महाराजा को बहुत कुछ खुशी हुई और उन्होंने फरमाया कि-" राजपूत के वास्ते इससे बढ़ कर और क्या खुशी का दिन होगा जब कि वह लड़ाई पर चढ़ कर जावे। किसी मारवाड़ी कवि ने भी कहा है कि-"

कंकण बंधन रण चढ़न पुत्र बधाई चाव।
तीन दिहाडा त्याग रा क्या रंक क्या राव॥

अर्थात् विवाह का कंगन बांधना, रण पर चढ़ना और पुत्र जन्मना, यह तीन दिन राव और रंक के लिये प्रसन्नता और उदारता के हैं।

महाराजा साहब ने अपने रवाने होने के पहिले सन १९१४ ई० को ता० २८, २९ और ३० आगस्ट को सरदार रिसाले के ५३६ सैनिकों को मय ६१० घोड़ों के आगे फ्रांस के रणक्षेत्र में भेज दिये थे और स्वयं महाराजा सर प्रताप के साथ स० १९७१ की आसोज वदि द्वितीय मम्मी (१० स० १९१४ ता० ११ सितम्बर) को जोधपुर से स्पेशल ट्रेन में रवाने हो कर ११ अक्टोबर को बम्बई से जहाज में बैठे और ३ नवम्बर १९१४ ई० को फ्रांस के रणक्षेत्र में पहूंचे।

जिस समय महाराजा साहब जोधपुर से रणक्षेत्र के लिये रवाने हुवे उस समय वीरभूमि चित्तोड के गहलोत वीर बालकों की याद आती थी जो अपनी माताओं से विदा हो कर " जो हट राखे धर्म को

[illegible] " की उच्च स्वर से घोषणा करते हुये अपने देश व धर्म के लिये युद्ध में जाते थे। इसी समय राजमाता महारानी हाडीजी ने गौरव सूचक और आशिष पूर्ण शिक्षादायक एक पत्र राजेन्द्र महाराजा सर प्रताप के नाम रेल्वे स्टेशन पर भेजा। जो इस प्रकार है:—

श्रीमान् वीर और साहसी बहादुर हैं। मैं आप का इष्ट सिद्ध चाहती हूं। आपने इस महा तेजस्वी और पराक्रमी राठौड़ वंश की कीर्ति बढ़ाने का—जो सात समुन्दर पार अपने किशोर निडर श्री सुमेर सिंह द्वारा में—स्वामीधर्म दिखावेंगे वह उच्च स्वामी धर्म आपकी सदा जय करेगा।

"हे वीर! हे बाहुबल! आप दोनों ने अपनी जननी जन्मभूमि को उज्ज्वल की है सो मेरी दिली आशिस है कि—'सर्व शक्तिमान ईश्वर आप को खुश रखे।' यह मेरी आशिस है कि आप दोनों चिरंजीव रहें—विजयी होवें।"

नवयुवक महाराजा लगभग ९ मास रणक्षेत्र में रहे और इसके बाद सं० १९७२ की सावण वदि २ बुधवार (ई० १९१५ ता० २८ जौलाई) को वापिस जोधपुर आये। सं० १९७२ की मिगसर सुदि ३ (ता० ९-१२-१९१५) को आप का विवाह बड़ी ही सादगी से जामनगर नरेश महाराजा जाम सर रणजीतसिंहजी की बहिन श्रीमती प्रताप कुंवर बाई जाडेची के साथ जामनगर में हुवा। इस बरात में केवल १०-१२ बराती थे। इन महारानी साहिबा से आप के एक कन्या वि० सं० १९७३ की आसोज सुदि ६ (ई० स० १९१६ ता० २० सितम्बर) को हुई।

सं० १९७२ की माघ सुदि १ शुक्रवार (ई० १९१६ ता० ४ फरवरी) को जब हिन्दू विश्वविद्यालय की नींव काशी (बनारस) में रक्खी गई तब महाराजा साहब भी मय महाराजा सर प्रताप के उस उत्सव में सम्मिलित हुवे। विश्वविद्यालय को जोधपुर राज्य की तरफ से २ लाख रुपये नकद दिये गये और २४ हजार रु० वार्षिक चन्दे के देना स्वीकार किया। इसके सिवा जब महामना श्रद्धेय पंडित मदनमोहन मालवीयजी की अध्यक्षता में एक डेपुटेशन जोधपुर में आया तब यहां की प्रजा ने भी विश्वविद्यालय को अच्छी आर्थिक सहायता दी। विशेष

उल्लेखनीय यहां के दानवीर सेठ शाह मोहनराज अमृतराज सांड हैं जिन्होंने एक बडी रकम भेंट की।

१९ वर्ष की आयु हो जाने पर महाराजा साहब को वि० सं० १९७२ की फाल्गुण वदि ८ (ई० सं० १९१६ ता० २६ फरवरी) को लार्ड हार्डिंज ने जोधपुर में आकर राज्यशासन के पूर्ण अधिकार सौंप दिये[1]। इस पर आपने रीजेन्सी कौंसिल को तोड़ कर "स्टेट कौन्सिल" बना दिया। और सं० १९७३ की जेठ वदि ६ (ई० १९१६ ता० २५ मई) को जामनगर राज्य के दीवान खानबहादुर महेरवानजी पेस्तनजी बी. ए; एल. एल. बी. को २०००) रु० मासिक वेतन पर अपना "मुसाहिबआला" नियत किया। सन १९१७ की २८ मई को पुलिस व म्युनिसिपालिटी के अत्याचारों से तग आकर प्रजा ने राजधानी में बड़ी हड़ताल कर दी। घण्टाघर के विशाल स्थलमें ब्राह्मण से महतर तक जातियों के मुखिया लोग इकट्ठे हुवे। मारवाड हितकारिणी सभा के लेक्चरों की धूम मची। महाराजा साहब आबू पर थे[2]। बडी कठिनता से २ जून को दीवान के निम्नघोषणा प्रकाशित करने पर हड़ताल खुली:—

नोटिस

आम रिआया को इत्तला दी जाती है कि म्युनिसिपल कमेटी और पुलिस की जो तकलीफें हैं, वे मिटा दी गई हैं।

जोधपुर एम० पेस्तनजी.

ता० १ जून १९१७

महाराजा साहब की युद्ध में की हुई सेवाओं के उपलक्ष में सं० १९७४ की पोष वदि ४ (ई० १९१८ ता० १ जनवरी) को उन्हें के० बी० ई० की उपाधि सरकार ने दी। दीवान महेरवानजीकी सेवाओंकी प्रशंसा

१—इस राज्याधिकारोत्सव के वृत्तात के लिये देखो "मारवाड़ का [illegible] वृत्तात" पृष्ठ ७१ सन १९१६.

२—इस मास में महाराजा साहब अपने ननिहाल जामनगर में [illegible] श्री० हाडीजी साहबा, दोना भ्राताओ व बहिनो के गये हुवे थे। ता० १३ मई १९१७ ई० को राजमाता हाडीजी का यकायक स्वर्गवास हो गया।

पूर्ण होने पर वे सन १९१८ ई० की ३ मार्च को वापिस जामनगर चले गये। बाद में ता० ३-३-१९१८ ई० को दतिया (मालवा) के दीवान बहादुर हुक्मूराम तिवारी (गौड़) को मुसाहिबआला नियुक्त किया। इस वर्ष के फरवरी मास में प्लेग ने गड़बड़ मचा दी। राजधानी में पहल पहल ही यह प्लेग चेता था। इसने कुछ ही दिनों में भयंकर रूप धारण कर लिया। राज्य ने ऐसे विपद के समय प्रजा की रक्षा कर अच्छा प्रबन्ध किया। आर्य स्वयंसेवकों ने भी प्रजा की अच्छी सेवा की। हेल्थ आफिसर डाक्टर निरंजननाथ गुर्टू एल. एम. एस. ने भी स्वयंसेवकों की तरह प्लेग पीड़ितों की हर प्रकार से सहायता करने में कमी न रक्खी। ३-४ मास तक इसका दौरदौरा राज्य भर में रहा जिससे १८,६५३ रोगियों में से १७,१२४ प्राणियों ने यमलोक की यात्रा की। पश्चात् सितम्बर मास के अन्तिम सप्ताह में जंगीबुखार (इन्फ्लुएंजा) ने जोधपुर शहर में पदार्पण किया। राजधानी में २०० मनुष्य प्रति दिन मरने लगे। अन्त में नवम्बर मास के दूसरे सप्ताह में यह रोग सर्वथा शान्त हो गया। इस वर्ष महँगाई भी थी परन्तु मुसाहिबआला दीवान बहादुर टी० हुक्मूरामजी ने सस्ते अनाज की दूकानें राज्य की ओर से खुलवा दी।

महाराजा का दूसरा विवाह सं० १९७४ की वैशाख सुदि १३ (ई० स० १९१८ की ता० २३ मई) को मोहिनेर (पचपदरा परगना) के जागीरदार स्वर्गीय ठा० पीरदानजी चौहान के स्वर्गीय छोटे भाई ठा० सूरजमलजी की कन्या श्रीमती उमराव कुंवरिजी साहिबा से जोधपुर में हुआ। इन महारानी से आप के कोई सन्तान नहीं हुई।

इन महाराजा का सं० १९७५ की आसोज बदि १४ (ई० स० १९१८ ता० ३ अक्टोबर) को २१ वर्ष की भरी जवानी में ही इन्फ्लुएंजा की बीमारी से जोधपुर में स्वर्गवास हो गया। शोक है:—

खिल के गुल दो दिन बाग़े जहां दिखला गये।
हसरत उन गुंचों पै है जो बे खिले कुम्हला गये॥

इनके समय में जोधपुर नगर में बिजली आदि लोकहितकारी कार्यों का प्रचार हुआ और सर्व साधारण के हितार्थ राज्य की तरफ से एक

सार्वजनिक पुस्तकालय (सुमेर पब्लिक लाइब्रेरी) खोला गया। न्याय-विभाग में चीफ कोर्ट स्थापित हुई और वृटिश इंडिया पेनलकोड के आधार पर "मारवाड दंड संग्रह" जावता फौजदारी, कोर्ट फी एक्ट, पुलिस एक्ट, वकीलों की परीक्षा (वर्नाकुलर) तथा जागीरदार और उनके कोर्ट के अख्तियारात भी उसी समय में जारी हुये। इन्हीं महाराजा ने पहले पहल मारवाड में शिक्षा और समाज सुधार सम्बन्धी समाचारपत्रों को प्रकाशित करने और छापाखाना खोलने की आज्ञा प्रदान की। आपने सिरोही राज्य की सीमा पर ऊंदरी नामक गांव के स्थान पर अपने नाम से ता० १५ मार्च सन १९१२ ई० को "सुमेरपुर" बसाया था। महायुद्ध के तुर्की कैदी यहीं रखे गये थे। युद्ध समय में आपने ३५ लाख रुपये की सहायता राज्य के खजाने से दी थी और अपनी प्रजा से भी बहुत कुछ सहायता महायुद्ध मे भिजवाई थी। आप को पोलो और संगीत का बडा शौक था। मादिरा मे भी रुचि रखते थे। बिना किसी छोटे बडे का विचार किये आप समयानुसार सभी का समान आदर किया करते थे।

कहा जाता है कि आपने एक बार बम्बई से हजामत बनवाने के लिये अंग्रेज नाई को बुलवाया। उसको पहले दर्जे का रेल किराया तथा मार्ग व्यय स्वरूप १८०) रु० प्रदान किये। ४०० मील की यात्रा करके जब यह नाई जोधपुर पहूंचा तो उसने तुरंत अपने पहुंचने की सूचना महाराजा को दी। महाराजाने उसे बुलवाया और कहा कि-' इस समय मैं राज्य के कार्य मे संलग्न हूं। अतः कल आना।" दूसरे दिन महाराजा शिकार खेलने चले गये। नाई को आज्ञा मिली कि फिर आना। तीसरे दिन महाराजा बीमार हो गये। अतः हुक्म हुवा कि-"तन्दुरुस्त होने पर हजामत बनवावेंगे।" एक सप्ताह यो ही बीत गया। महाराजा ने स्वास्थ्य लाभ कर लिया पर कुछ विदेशी मित्रों की खातिर तवजह मे लग जाने के कारण आज्ञा दी गई कि-" इनके चले जाने पर हजामत बनवायी जायगी।" इस तरह वादे होते रहे। भाग्यवान नाई तीन मास तक जोधपुर में महमान रहा और उसे ६०) रुपये रोज जोधपुर में रुके रहने के मिलते रहे। यह हजामत की फीस के सिवा थे। तीन महीने पीछे हजामत

की। इस पर महाराजा ने खुश हो कर उसे ६ हजार रुपये का पुरस्कार देकर विदा किया था।

छोटी अवस्था होने पर भी ये महाराजा बड़े वीर, साहसी, निर्भीक, उदार और होशियार थे। प्रजा पर आपकी अच्छी कृपा थी। बाल्यकाल से विलायत में शिक्षा पाने से आप योरोपियन ढंग को अधिक पसन्द करते थे। आप का जन्म वि० सं० १९५४ की माघ बदि ६ (ई० स० १८९८ ता० १४ जनवरी) को तड़के ही ४ बज कर ३४ मिनट पर जोधपुर में दरबार के बंगले (पैलेस) में हुआ था। जन्मपत्री इस प्रकार है.— शाके १८१९ इष्ट ५३।२
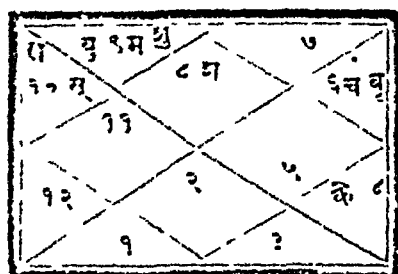
आप के कोई राजकुमार नहीं था इस कारण आप के छोटे भाई

हिज हाइनेस श्रीमान् राजराजेश्वर महाराजाधिराज
३५—महाराजा मेजर सर उम्मेदसिंहजी साहब बहादुर

राजसिंहासन पर विराजे। आपका शुभ जन्म आषाढ़ सुदि १४ (ई० स० १९०३ ता० ८ जूलाई) बुधवार को तीसरे पहर मूला नक्षत्र में जोधपुर में हुआ था। जन्मपत्री नीचे दी जाती है:—

३८।२६ मूल ४६।३८ इष्ट २७।३४ चरण २
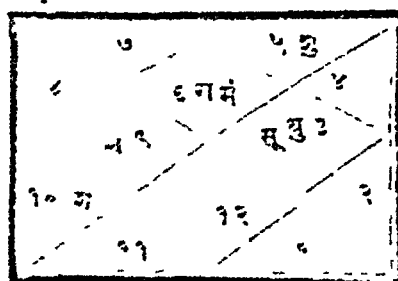
सन १९११ ई में महाराजा साहब (बाल्यावस्था)

आपका लालन पालन महाराजा सर सुमेरसिंहजी की तरह अंग्रेज नरसों (धाश्रों) के हाथों मे ही हुवा । सन १९०५ ई० में ज्योतिषियों की सम्मति से आप के जन्म नाम मूलसिंहजी के स्थान मे उम्मेदसिंहजी रखा गया और सन १९१० मे आप अपने ज्येष्ठ भ्राता सुमेरसिंहजी के साथ मेयो कालेज अजमेर में पढने को बैठाये गये । किन्तु २० मार्च सन १९११ ई० को महाराजा सर सरदारसिंहजी का स्वर्गवास हो जाने से सुमेरसिंहजी तो विलायत पढने को भेजे गये और आप रोगग्रस्त होने से जोधपुर रेजीडेन्सी के डाक्टर मेजर ग्रान्ट व मिसेज ग्रान्ट के साथ मिश्र (ईजिप्ट) को हवा बदलने के लिये गये । जहां आपने ५ मास (अक्टो-बर १९११ ई० से फरवरी १९१२ तक) मे केरो, नाइल [illegible], एस-

नाग, गार्डी हन्सा, गिरमेंड आदि स्थान देखे। इङ्गलैण्ड से लौटने पर आप और आप के छोटे भाई महाराज अजीतसिंहजी रेजीडेन्ट कर्नल विन्डम की निगरानी में शिक्षा पाते रहे। और सन १९१३ ई० में आप ने कश्मीर की सैर की। वहां आपने गंधर्वबल, मानुसबल, इच्छाबल, नसीमबाग, गुलमर्ग और इस्लामाबाद आदि स्थान देखे। रेजीडेन्सी में पहले ए.ज. के मास्टरों द्वारा शिक्षा पाते रहने के बाद आप चोपासनी (जोधपुर) की राजपूत हाईस्कूल में भरती किये गये। बाद में सन १९१५ में राजकोट (काठियावाड़) के राजकुमार कालेज में पढ़ने लगे। जहां सन १९१७ ई० तक रहे। सन १९१८ में आप के ज्येष्ठ भ्राता महाराजा सर सुमेरसिंहजी की अकाल मृत्यु होने पर आप राज्य के अधिकारी हुवे। उस समय आपकी आयु करीब १५ वर्ष की थी इस लिये भारत सरकार की तरफ से ईडर नरेश क्षात्रिय भीष्म वयोवृद्ध हिज हाईनेस लेफ्टीनेन्ट जेनरल महाराजाधिराज महाराजा सर प्रताप के प्रधानत्व में तीसरी बार 'रीजेन्सी कौंसिल' ता. ४ दिसम्बर को स्थापित हुई। इस कौंसिल में रीजेन्ट महाराजा सर प्रतापने रावबहादुर पंडित सुखदेवप्रसादजी को भी मेम्बर कौंसिल बनाया। इस प्रकार राजकाज कौंसिल के द्वारा होता रहा और नवयुवक महाराजा अजमेर के मेयो कालेज में शिक्षा पाते रहे। सन १९१९ ई० के गर्मी के मौसम में आप फिर कश्मीर पधारे। परन्तु आषाढ़ बदि १२ स० १९७६ (ता० २५ जून १९१९ ई०) को आप की द्वितीय बहन श्रीमती सूरज कुंवर बाई साहिबा का शुभ विवाह हिज हाईनेस रीवां नरेश महाराजा श्री गुलाबसिंहजी साहब से होने वाला था इस लिये आप शीघ्र ही वापस जोधपुर लौट आये। आपकी प्रथम बहन श्रीमती मरुधर कुंवर बाई साहिबा का शुभ विवाह श्रीमान् हिज हाईनेस जयपुर नरेश महाराजा सवाई मानसिंहजी के साथ माघ बदि ६ सं० १९८० वि० (ता० ३०-१-१९२४ ई०) को बड़े समारोह से हुआ था। ११ नवम्बर सन १९२१ ई० को आप का शुभ विवाह मारवाड़ के ओसियां ग्रामनिवासी कप्तान ठाकुर जयसिंहजी भाटी की सुयोग्य कन्या सौभाग्यवती श्रीमती बदन कुंवरीजी से जोधपुर में हुआ था। आप के युवराज प्रिन्स हनुमन्तसिंहजी द्वितीय ज्येष्ठ सुदि २ सं०

महाराजा साहब

राज्याभिषेकोत्सव और मार्शल गोरिंग

गई है और अब इसकी उन्नति करना आप के हाथ में है। जोधपुर में इन वर्षों में आप को शासन प्रबन्ध की अच्छी शिक्षा दी जा रही है। यह बात सुन कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है कि आप अपनी जिम्मेदारी को समझ कर राज्य कार्य की ओर खूब ध्यान देने लगे हैं। शासन की नींव मजबूत रूप से रखी गई है। अब अपनी वंशपरम्परागत सुकीर्ति की रक्षा करते हुये सुशासन रूपी अच्छी इमारत बनाना आप का काम है। शासन कार्य अब जैसा कठिन और जटिल हो गया है वैसा कभी नहीं हुआ है। पुराने विचार जाते रहे हैं। पुरानी प्रथाओं की कड़ी आलोचना हुई है। इस तरह की अशांति शुभ का ही लक्षण है। पर परिवर्त्तन का समय शासकों के लिये बड़ा कठिन होता है। जितने में लोगों के पूर्व पुरुष सन्तुष्ट थे उतने में अब लोग सन्तुष्ट नहीं होते। आप के सरदार और प्रजाजन भी वर्त्तमानयुग की उन्नति की दौड़ में पीछे रहना पसन्द नहीं करेंगे समय की गति में न तो आप ही पीछे रह सकेंगे और न अपनी प्रजा को ही रख सकेंगे। उनकी उच्च आशाओं पर ध्यान देना ही उचित होगा। तरह तरह की कठिनाईयां उपस्थित होंगी जरूर; पर दूरदर्शिता, साहस और बुद्धिमता से उनका सामना करने से वे आप से आप दूर हो जायंगी। यदि आप लोगों के हित पर ही सदा दृष्टि रखेंगे और न्याय और सहानुभूति से राज करेंगे तो भविष्य में आपको कोई भय नहीं रहेगा।”

इस अनमोल उपदेश के उत्तर में हमारे होनहार महाराजा साहब ने भी वाइसराय को विश्वास दिलाते हुवे कहा कि:—

“जीवन भर मैं यही प्रयत्न करूंगा कि-जिससे भावी आशाएं पूर्ण हों। इस नवयुगमें जो राजा अपनी प्रजा का भला चाहता है उसे स्वार्थ त्याग कर बड़ा कठिन कार्य करना पड़ता है। यह मैं भलीभांति समझता हूं।”

आप के यह अनमोल वचन मारवाड़ के इतिहास में सुनहरी अक्षरों में लिखे जावेंगे। वास्तव में आप हैं भी प्रजाप्रिय नरेश। आशा है आप अपने परमहितैषी श्रीमान् लार्ड रीडिंग महोदय के उपदेशानुसार काम कर अपना कर्त्तव्य पालन करते रहेंगे। जिसकी इस समय परम

महाराजा साहब और उनके भाई

अजीतसिंहजी महाराजा साहब

आवश्यकता है। सब से पहले सुशासन का प्रबन्ध करना है जिसमें राज्यकर्मचारी ईमानदारी से राज और प्रजा की सेवा करें और कोई भी प्रजाजन किसी तरह का कष्ट न होने पावे। साथ ही दुःखी प्रजाजनों को स्वयं महाराजा की सेवा में प्रार्थना करने का अवसर मिला करे। हमारी यह आन्तरिक अभिलाषा है कि—आप खुशामदी-धूर्त-कर्मचारियों के बंधनों में न बंधें। कुरीतियों को हटावें और किसी भी दुर्व्यसन को अपने पास न फटकने दें। प्रजा की हित चिन्तना में सदैव रत रहें। एक आदर्शशासक की तरह प्रजा की उन्नति को अपनी उन्नति समझें और प्रजा के लिये सर्व प्रकार की स्वतंत्रता लिखने, पढ़ने और बोलने की देवें। और बड़ोदा व मैसूर जैसे आदर्श राज्यों का अनुकरण करते हुए सब सुविधाएं प्रजा को प्राप्त करा कर विद्या में पिछड़े हुवे मारवाड़ को अग्रसर करने का यश अर्जित करें। "राजा प्रकृति रञ्जनात्" के मर्म को हृदय में धारण कर अपने कर्त्तव्य पालन में आप सदैव तत्पर रहें।

राज्य अधिकार मिलने के उपलक्ष में इस समय महाराजा साहब ने अपने जागीरदारों के बकाया खिराज की रकम में से ३ लाख रुपये माफ कर दिये और ५० हजार रुपये स्कूलों व दातव्य औषधालयों—अस्पतालों—को प्रदान किये। तथा रीजेन्सी कौन्सिल के मेम्बरों को पूर्ववत् ही उनके पदों पर रखते हुवे रिजेंसी कौंसिल के बजाय "स्टेट कौंसिल" स्थापित की। उसके मेम्बर इस प्रकार हैं:—

१—रायबहादुर पंडित सर सुखदेवप्रसादजी काक बी० ए०; सी० आई० ई०-पोलिटिकल, जुडीशल एन्ड फाईनेन्स मेम्बर।

२—मिस्टर डी० एल० ड्रेक ब्रोकमेन; आई० सी० एस०-रेवेन्यु मेम्बर।

३—महाराज फतहसिंहजी सी० एस० आई०—होम मेम्बर

४—रायबहादुर डा० मंगलसिंहजी सी० आई० ई०—पब्लिक वर्क्स-मेम्बर

महाराजा साहब बड़े दयालु प्रजापालक हैं। जिसके दो एक उदाहरण हम यहां लिखते हैं:—

जब सं० १९७९ के दशहरा के दिन राठोड़ों की कुलदेवी चामुंडा माता के मंदिर में व रावण के चबूतरे पर बलिदान देने के लिये दो भैंसे उपस्थित किये गये तो आपने दया करके दोनों को अमर कर दिया और बलिदान की प्रथा को किसी अंश में कम कर दी। आपने इस हिंसा को रोक कर बहुत ही उत्तम व प्रशंसनीय कार्य कर बताया।
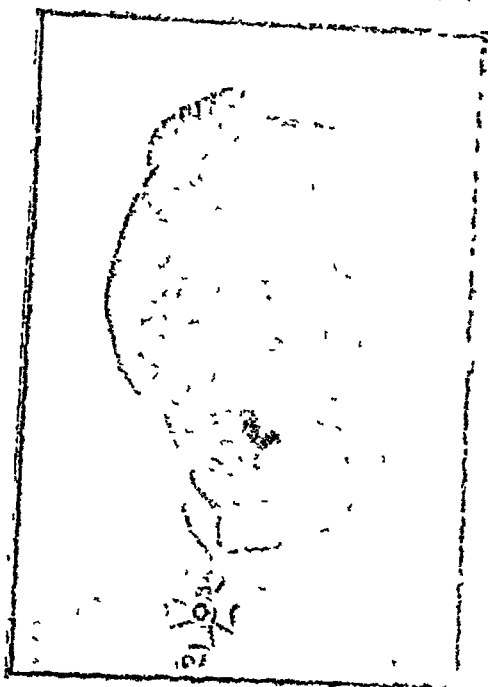
महाराजा साहब

आप के पूर्वजों में भारत प्रसिद्ध भक्त शिरोमणि विदुषी देवी मीरांबाई ने भी ऐसा ही किया था जब कि-वह मारवाड़ राज्य के परगना जैतारण के गांव रायपुर मे जानेवाली थी। वहां के ठाकुर जो कि उनके रिश्ते में भतीजे थे, उन्होंने उनको कुछ दिन वहां विराजने व उपदेश देने की प्रार्थना की तो देवी मीरांबाई ने स्पष्ट कर दिया कि-'तुम्हारे यहां नवरात्रि में बकरे व भैंसे मारे जावेंगे। अतः मैं जीवहिंसा देखने
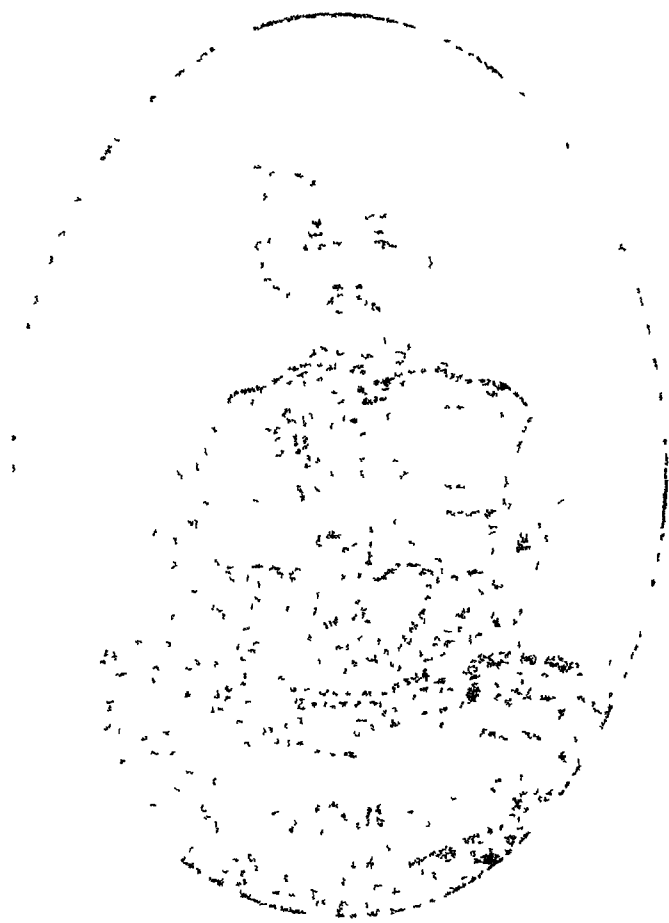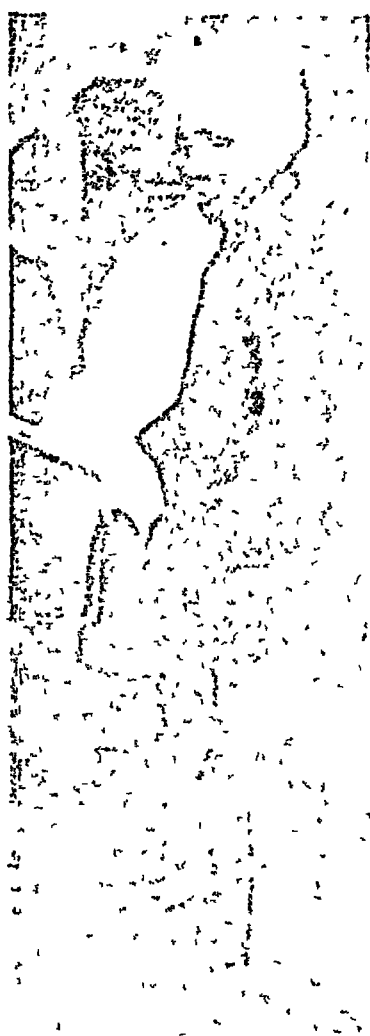
महाराजा साहब सादी पुशाकमें

वे विजयसिंह के पश्चात बाहर से आये हुवे हैं। उनको भी बकरी मारने की राज्य मे मनाई है और महीने भर में कई अगते करने पड़ते हैं। अगते के दिनों में उनकी दुकानें व कसाईवाड़े बंद रहते हैं। ऐसे दयालु घराने के मुकुट हमारे प्रजाप्रिय होनहार नवयुवक महाराजा सर उमेदसिंहजी मूक प्राणियों पर दया करें तो स्वाभाविक ही है।

सन १९२१ मे जब स्टेट कौंसिल ने गाय और भैंस आदि मादीन जानवरों का मारवाड़ से बाहर जाने की रोक उठा दी और प्रजा ने उस-का खूब विरोध कर डेप्युटेशनों का आन्दोलन खड़ा कर दिया तो आपने बड़े धैर्य से दुःखी प्रजा की पुकार सुन कौंसिल के आर्डर को वापस ले लेने की आज्ञा दे दी। ऐसे ही जब म्युनिसीपल नया कानून बना और उस में प्रजा को भी कुछ अधिकार सभासद चुनने व राज्य को टैक्स देने का बना और जनता ने मारवाड़ हितकारिणी सभा द्वारा विरोध प्रकट किया तो आपने उस नये कानून को पुनः विचारार्थ एकदम मुल्तवी कर दिया। प्रजा से आप को बड़ा प्रेम है और उसकी भलाई के लिये

महाराजा साहब—घुड़-स्वार

जगह २ पर कल-कारखाने, बिजली की रोशनी और अच्छी २ सड़कें आप बनवाते रहते हैं। राज्य की वार्षिक आय (सवा करोड़ रुपया) को देखते हुवे विद्याप्रचार पर यद्यपि बहुत ही कम खर्च होता है पर आपकी कृपा से शीघ्रही अधिक खर्च होने की आशा है। क्यों कि-श्रीमान् अभी न्हूर विद्यासम्पन्न स्वतंत्र देश की यात्रा कर लौटे ही हैं। योरप के स्वतंत्र विद्यासम्पन्न जलवायु का आप के विचारों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़े बिना नहीं रह होगा।

आप अभी नौजवान हैं। पर शराब तमाखू आदि दुर्व्यसनों से मुक्त हैं। आप को धर्म से भी खासा भला प्रेम है। अभी आपने महाराजकुमार प्रिन्स हनुमन्तसिंहजी का सनातन वेदोक्त-रीति से अन्न प्राशन संस्कार करा के प्राचीन प्रथा का राजवंश में पुनर्जीवन किया है।

आप के राज्यकाल में पुलिस के सुप्रबंध से डाकू मगलखान नाथ, मीरखां जैसे नामी डाकूओं का दमन हुआ और प्रजा की परेशानी मिटाई गई। इस प्रशंसनीय कार्य में आपकी पुलिस के इन्सपेक्टर जेनरल मिस्टर मालकम रतनजी कोठावाला एम० बी० ई० को भारत सरकार ने सन १९२४ की ३ जून को "खानबहादुर" की उपाधि प्रदान की और डाकूओं को मारनेवाले इन्सपेक्टर कुं० कानसिंह खीची और ठा० बख्तावरसिंह के महाराजा साहब ने पद बढ़ाये और पुरस्कार दिये।

देशाटन भी शिक्षा का एक अंग है। इस उद्देश्य को लक्ष में रख आपने २१ मार्च सन १९२५ की रात के ८ बजे स्पेशल ट्रेन द्वारा श्री महारानी साहिबां, महाराज श्री अजीतसिंहजी साहब, श्री महाराज-कुमार साहब और स्टाफ तथा पोलो पार्टी सहित विलायत यात्रा के लिये जोधपुर से प्रस्थान किया। बम्बई से 'नारकुण्डा' नामक जहाज द्वारा आप २८ मार्च को लण्डन को रवाने हो ११ अप्रेल की शाम को लण्डन के विम्बलडेन कस्बे में पहूंचे। जहां के पार्क साईट पर बनी हुई "बेलमान्ट हाउस" नामक कोठी में आप के रहने के लिये प्रबन्ध था। कुल १७५ मनुष्य आप के साथ यहां से विलायत को

गये और ४० [illegible] लन्दन में काम करने के लिये रखे गये जो वहाँ का सब कार्य करते थे।

यहाँ [illegible] दोनों पार्टी ने बहुत से मैच जीते। जिनमें मानरेबल

बड़े महाराजकुमार हनुमन्तसिंहजी

का वेस्टसोमरसेट कप, हर्लीग्राम का चेम्पीयन कप, नार्थम्पटन फाइनल, रगबी फाइनल और अमेरिका आर्मी से जीत करके बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त की। यह पहला ही अवसर था कि-एक भारतीय नरेश की पोलो-टीम ने इंग्लॅड मे ऐसी प्रसिद्ध २ पोलो पार्टियों को जीत कर इस प्रकार अच्छा नाम हांसिल किया हो। ६ अगस्त को लण्डन से आप स्काटलैंड की सैर को गये और २० सितम्बर को वापिस लण्डन पधार गये। लण्डन में पहले ही पहल आप २१ मई रात के ६ बजे श्रीमान् सम्राट् के दरबार (कोर्ट) में पधारे जहां सम्राट् महोदय आप से बड़े ही प्रेम भाव से मिले। ३ जून को सम्राट् की सालगिरह के मौके पर आप को के०
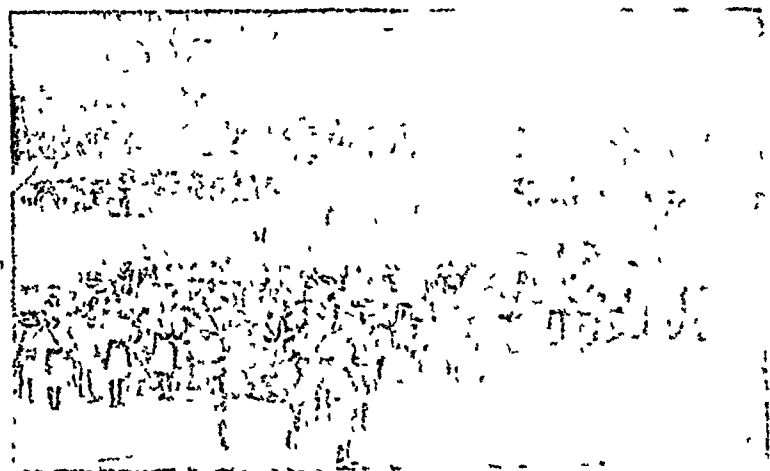
सरदार-रिसाला

सी० एस० आई० की उपाधि मिली। इस तमगे को लेने के लिये २५ जून को आप सम्राट् के दरबार में फिर पधारे जहां सम्राट् ने निज कर कमलों से तमगा आप को प्रदान किया। लण्डन में ही २६ जून (आषाढ़ बदि-३० स० १६०२) को रात के २ बज कर १० मिनिट पर आप के द्वितीय महाराज कुमार प्रिन्स हिम्मतसिंहजी का शुभजन्म विन्डलसेन पार्क साईड के बेलमाउन्ट हाउस में हुवा।

ता० ८ अक्टूबर १९२४ को लन्दन से रवाना होकर ता० २३ अक्टूबर को दुपहर ४ बजे निर्विघ्न यात्रा समाप्त करके जहाज से आप बम्बई उतरे। जनता ने आपका बड़ा स्वागत किया। इस अवसर पर इस इतिहास के लेखक
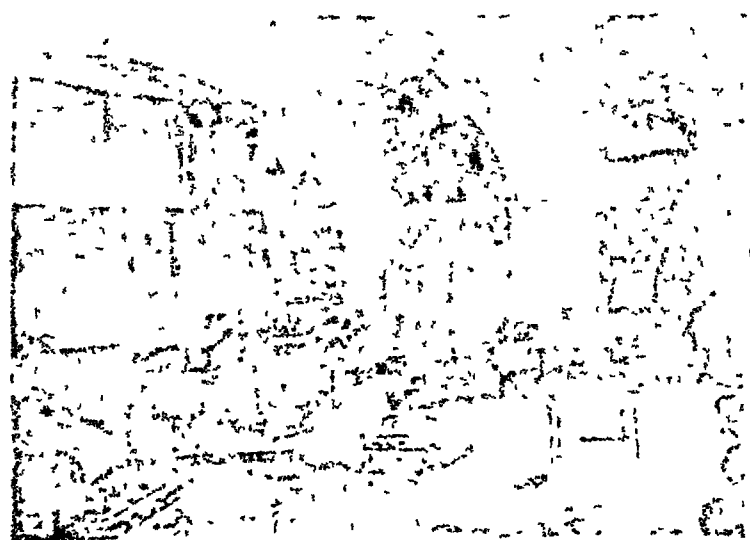
महाराजा साहब के महल का एक दिवानखाना

ने व पंडित उदयचन्द वैद्य ने अपने "मारवाड़ी मित्र" मासिक का ६० चित्रों का सर्वांगसुन्दर विशेषांक प्रकाशित कर महाराजा साहब की सेवा में बंबई के बेलार्ड पीयर बन्दरगाह पर भेंट किया। इस "जोधाणनाथ विशेषांक" में श्रीमान् के राठौड़ राजवंश की उज्वल कीर्ति का बखान और स्वदेश सकुशल लौटने का हर्ष एवं द्वितीय राजकुमार जन्मने की बधाई दी गई थी। बम्बई में कुछ घण्टे ठहर कर आप स्पेशल ट्रेन से २४ अक्टूबर को शाम को जोधपुर पधार गये। वहां जनता ने बड़ी धूमधाम से आप श्रीमान का स्वागत किया और कई हर्षोत्सव मनाये।

यद्यपि महाराजा साहब की इस यात्रा में १८-२० लाख रुपये खर्च हुये हैं किन्तु आप के योरपीय यात्रा से शिक्षा और अनुभव की वृद्धि हुई है। उसका परिणाम मारवाड़ पर पड़े बिना नहीं रह सकता। क्यों

कि-वहां के जैसे राजशासन और शिक्षा, सामाजिक सुधारों की
यहां अवश्य पड़ेगी और झालावाड़, देवास, लिम्बड़ी जैसी छोटी
रियासतों ने जिस प्रकार प्रजा को राजकाज में सम्मिलित किया
बीकानेर में लेजिसलेटिव कौंसिल (प्रजा प्रतिनिधि राजसभा) स्था
हो चुकी है: उसी प्रकार महाराजा साहब की उदारता से हम
को भी म्युनिसिपल आदि राजप्रबन्ध में कुछ अधिकार प्राप्त हों
और यहां भी लेजिसलेटीव कौंसिल शीघ्र स्थापित होगी।

वीरभवन उर्फ ३३ कोटी देवी-देवताओं का मंदिर

हमारे महाराजा साहब के छोटे भाई महाराज श्री अजीतसिं
भी बड़े बुद्धिमान और होनहार नवयुवक हैं और मारवाड़ को आप
बहुत कुछ आशा है। आप का शुभ विवाह ईसरदा के ठाकुर स

सवाईसिंहजी की सुयोग्य कन्या और श्रीमान् जयपुर नरेश हिज हाईनेस महाराजा सवाई श्री मानसिंहजी बहादुर की प्रिय भगिनी सौभाग्यवती श्रीमती सज्जन कुमारी के साथ सं० १९८२ की बसंतपंचमी को ईसरदा (जयपुर) में हुआ है।

सर्वाधार जगन्नियन्ता जगदीश्वर हमारे होनहार उत्साही नवयुवक महाराजा साहब बहादुर को प्रजाप्रिय न्यायशासन के लिये सकुटुम्ब चिरायु करें और जिस प्रकार सूर्य कुल कमल दिवाकर प्रातःस्मरणीय राजर्षि भगवान रामचन्द्र महाराज के चक्रवर्ती राज में प्रजा की सुखशांति की दिन दूनी-रात चौगुनी उन्नति हुई थी उसी प्रकार उन्हीं के वंशधर श्रीमान् महामना धीर वीर चिर प्रतापी महाराजा सर उम्मेद सिं. कल्याण विजय राज्य में हो।

जोधपुर का जसवन्त-स्मृतिभवन उर्फ जसवन्त थड़ा।
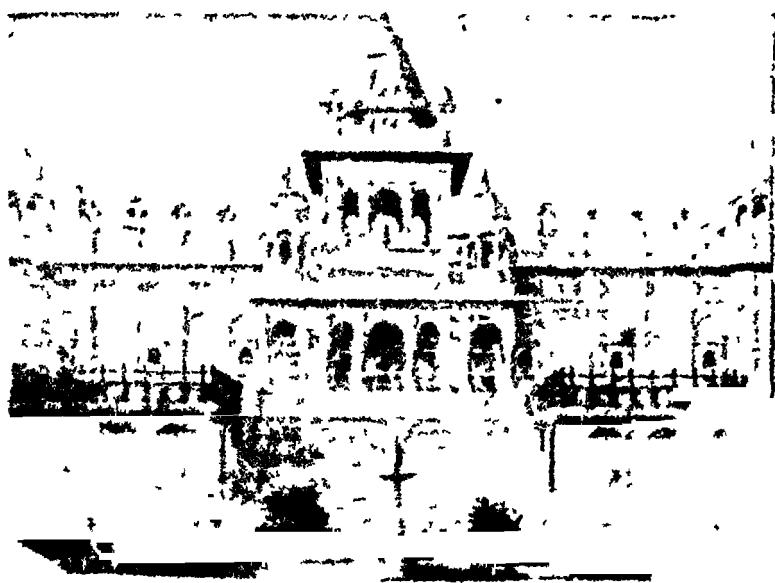
मारवाड़ की राठोड़ राजवंशावली

कन्नोजपति महाराजाधिराज जयचन्द्र (सं० १२५० वि० में काम आये)

हरिश्चन्द्र (वरदाईसेन) कन्नोज के राजा.

|

सेतराम

|

—१ राव सीहाजी (पहले पहल मारवाड़ मे आये)

|

- २—राव आसथानजी
  - ३—राव धूहड़जी
  - ४—राव रायपालजी
  - ५—राव कनपालजी
  - ६—राव जालणसीजी
- राव सोनगजी (ईडर के राजा)
- अज (उखामंडल नरेश)

७—राव छाडाजी
८—राव तीडाजी
१०—राव सलखाजी
त्रिभूवनसी
९—राव कानड़दे
राव मल्लिनाथजी
११—राव वीरमदेजी
राव जगमालजी
१२—राव चूंडाजी
मंडलीकजी
लूंकाजी
राव कान्हाजी
राव सताजी
१३—राव रणमलजी.
अखेराज
मेहराज
कांधलजी
चांपाजी
१४—राव जोधाजी

- १५–राव सातलजी
- १६–राव सूजाजी
  - कुँवर वाघाजी
    - १७—राव गांगाजी
      - १८—राव मालदेव
        - राव रामसिंहजी
        - १९—राव चन्द्रसेनजी
          - राव रायसिंहजी
          - उग्रसेनजी
            - २१—राजा सूरसिंहजी
          - राव आसकरणजी
        - २०—राजा उदयसिंह
          - दलपतसिंहजी
            - महेशदासजी
          - राजा किशनसिंहजी (किशनगढ़ राज्य)
- राव दूदाजी (मेड़ता)
- बरसिंह
- बीकाजी (बीकानेर)

२२—राजा गजसिंहजी

राजा रतनसिंहजी (रतलाम राज्य)

अमरसिंह (...गौर नरेश)

२३ महाराजा जसवन्तसिंहजी (प्रथम)

२४ महाराजा अजीतसिंहजी

२५ महाराजा अभयसिंहजी

२६ महाराजा रामसिंहजी

२७ बखतसिंहजी

२८ महाराजा विजयसिंहजी

राजा आनंदसिंहजी (ईडर राज्य)

रायसिंहजी

...भीमसिंह

—महाराजा भीमसिंहजी

कुं० गुमानसिंह.

३०—महाराजा मानसिंहजी

युवराज छत्रसिंहजी

३१-महाराजा तख्तसिंहजी

जी, सी. एस. आई.
(ईडर के–अहमदनगरसे गोद आये)
३२–महाराजा सर जसवंतसिंहजी (द्वितीय)
जी. सी. एस. आई.
महाराज सर प्रतापसिंहजी
(ईडर गोद गये)
३३-महाराजा सर सरदारसिंहजी
जी. सी. एस. आई.
महाराजा दौलतसिंहजी
महाराज कुमार हिम्मतसिंहजी
३४ महाराजा सर सुमेरसिंहजी के बी ई.
३५–महाराजा सर उम्मेद-
सिंहजी के सी. एस. आई
महाराज अजीतसिंहजी
महाराज कुमार हनुवंतसिंहजी
म० कु० हिम्मतसिंहजी

परगनों का विशेष वृत्तान्त

राज्यप्रबन्ध के लिये राज्य के २१ विभाग किये गये हैं जिसको

लाता है। जिसका काम दीवानी व फौजदारी इन्साफ करना, माल-गुजारी वसूल करना, इमारती पट्टे देना, रजिस्ट्री करना, लावारीस जायदाद की कार्यवाही करना और परगने का आम बंदोबस्त व जमाखर्च करना है। कुछ परगनों में उसके सहायक "नायब हाकिम" भी रखे गये हैं। हरेक परगने के मुख्य कस्बे में हाकिम रहता है और वहां एक स्कूल, अस्पताल और पुलिस व चुंगी (सायर) के थाने भी होते हैं। परगने की भूमि कभी २ शासन के सुभिते के लिहाज से घटाई बढ़ाई भी जाती है। जागीर के गांव राज्य की सरहद पर अधिक पाये जाते हैं। और खालसा के गांव बीच में। क्यों कि राज्य की सरहद पर शासन पहले अधिक कठिन था। प्रत्येक परगने का क्षेत्रफल, आबादी, गांव, आदि पृष्ठ २२ में दिया जा चुका है। विशेष वृत्तांत नीचे दिया जाता है:—

जसवंतपुरा हकूमत—यह परगना जोधपुर शहर के दक्षिण में है। इसका क्षेत्रफल आबादी आदि पृष्ठ २२ में दे चुके हैं। खालसा कुल क्षेत्र-फल (रकवा) में १६८ वर्गमील (मील मूरब्बा) है। जिसकी मालगुजारी २७ हजार रुपये सालाना है। परगने में ७७ फीसदी हिन्दु आबाद हैं। भील, गरासिया, मेघवाल (बलाई-भांबी-ढेड) बनिये, ब्राह्मण, राजपूत, पटेल (कलवी), रेबारी आदि मुख्य जातियां हैं। इसका उत्तरी भाग मैदान व रेतीला है और दक्षिणी भाग पर्वतीयसघन है। जिनमें चीते और रीछ पाये जाते हैं। मुख्य पैदावार बाजरा, जवार मूंग, मोठ तिल और गेहूं हैं।

मुख्य कस्बा जसवंतपुरा है जहां हाकिम रहता है। यह जोधपुर शहर से १२० मील दक्षिण में बसा हुआ है। बम्बे बड़ोदा एन्ड सेन्ट्रल इंडिया (बी० बी० एन्ड सी० आई०) रेल्वे के आबू रोड स्टेशन से यह ३० मील दूर है। इसका नाम पहले लोहियाना था और यह एक अर्से से पड़िहारिया राजपूतों की देवल शाखा के कब्जे में चला आया था। पहि

समय में बड़ा बहादुर और प्रतापवान था। लोहियाना के ठाकुर को "राना" का खिताब मेवाड़ के प्रातःस्मरणीय महाराना प्रताप ने दिया था। क्योंकि अपने विपत्ति कालमें महारानाने यहां के पहाड़ोंका आश्रय लिया था। उस विकट समय में परिहारिया राजपूतों ने "आर्यकुलकमल दिवाकर" की सेवा की थी। सं० १६४० में इसी लोहियाना का ठाकुर राना सालमसिंह देवल (उर्फ सालजी) लुटेरों का सरदार बन बागी हो गया था। इस लिये उसकी जागीर जब्त की गई और गांव लोहियाना पहाड़ के नीचे से हटा कर मैदान में तत्कालीन महाराजा साहब के नाम पर दिसम्बर १८८३ ई० में जसवन्तपुरा बसाया गया और राजविद्रोही सरदार के पुत्र को दूसरी जागीर दी गई।

जसवन्तपुरा परगने में कोई बड़ा जागीरी ठिकाना नहीं है। भौमि- चारा की छोटी २ जागीरें हैं। ताजीमी ठिकाना सिर्फ एकही दासपां है। हकूमत कस्बा के सिवाय भीनमाल और रतनपुर बड़े गांव हैं। भीन- माल ४ हजार आबादी का पुराना शहर है। जो जोधपुर शहर के दक्षि- ण पश्चिम में १२० मील पर और आबू पहाड़ के उत्तर पश्चिम में ४० मील दूर है। पहले यह बड़ा शहर था। मुसलमानी हमलों से यह उजड़ गया। उसी समय पुष्करणे और श्रीमाली ब्राह्मण यहां से ही उठ कर मारवाड़, जैसलमेर, बीकानेर और गुजरात की तरफ चले गये[1]। वि० सं० ६८६ से ७०२ (ई० स० ६२९-६४५) तक जब चीनी यात्री हूए- नसंग (Hiuen Tsiang) ने भारतवर्ष में भ्रमण किया तब उसने गुज- रात की राजधानी का नाम "भीनमाल" लिखा था। यहां बड़े २ प्रतापी राजा हुवे हैं। उस वक्त इसका नाम "श्रीमाल" था। ईसाकी ६ वीं शताब्दी तक यह गुजर जाति के राजाओं की राजधानी थी। भीनमाल नाम हो जाने की बात लोग यों कहते हैं कि-राजा भोज का विश्ववि- ख्यात नामी कवि श्रीमाली माघ-जो यहीं का रहनेवाला था-अन्तिमकाल

१—मारवाड़ स्टेट रिपोर्ट सं० १९४० वि० पृष्ठ १३४.

२—Hutchins Hi[illegible] of the World Vol II. P 270.

में दीन-दुःखी-दरिद्री होकर मर गया। जब राजा भोज ने यह सुना तो उदास होकर कहा कि-'श्रीमाल नहीं भीडमाल है[1]।' किन्तु यह बात मानने योग्य नहीं है। क्यों कि मालवे के सुप्रसिद्ध विद्यारसिक विद्वान राजा भोज का वि० सं० १०७८ से वि० सं० १०९९ तक विद्यमान होना उसके दानपत्रों आदि से पाया जाता है[2]। और आबू पर्वत के पास के वसंतपुर नामक प्राचीन नगर से मिले राजा वर्मलात के वि० सं० ६८२ के शिलालेख से निश्चय होता है कि कवि माघ का दादा सुप्रभदेव इसी राजा वर्मलात का मंत्री था जिसका वर्णन कवि ने स्वयं अपने ग्रंथ "शिशुपालवधकाव्य" के अन्त मे किया है[3]। अतएव माघ उससे अनुमान ५० वर्ष पीछे अर्थात् वि० सं० ७३२ के लगभग हुआ है[4]। जब यह कस्बा "भीनमाल" ही कहलाता था। इससे कवि माघ और भोज का समकालिन होना प्रमाणित नहीं होता है। कईयों का मत है कि-यहां के पहाडों में भीलों की अधिक वस्ती होने से इसका

१—मारवाड मर्दुमशुमारी रिपोर्ट भाग ३ सन १८९१ ई० (जातियों की उत्पत्ति-इतिहास) पृष्ठ १४५.

२-Epiagrapia Indica Vol. VI P 53 & Vol XI P, 182.

३-E. I. Vol. IX P. 191-92.

४—जब से वेदपाठी ब्राह्मणोने इस देश को त्याग दिया तब से माघ जैसे [illegible] अभाव ही रहा। फिर भी स्वामी नित्यानन्द सरस्वती (रामदत्त) [illegible] वेदपाठी [illegible] जन्म यहाके जालोर कस्बेकी श्रीमाली ब्रा० जाति मे वि० सं० १९१७ में हुआ था। [illegible] पिताका नाम पुरुषोत्तम था। जिनका देहान्त सं० १९२९ वि० मे [illegible] हुवा। ये स० १९३४ मे घरसे निकल पड़े और सं० १९३७ मे [illegible] महोपदेशक स्वामी विश्वेश्वरानन्द सरस्वती ने की ओर सं० १९४१ मे [illegible] नित्यानन्द के नाम से वैदिकधर्म का प्रचार किया। [illegible] स० १९७० वि० (ता० ८-१-१९१४ ई०) को हो गया। [illegible] अपने आचार्य दयानन्द ऋषि के आदेशों को राजा महाराजाओ मे फैलाना [illegible] समाज की जो सेवाएं की उसके उदाहरण बडोदा, शाहपुरा आदि [illegible] हैं।

नाम भिन्नमाल पड़ा जिसका अपभ्रंश ही भीनमाल है । श्रीमाली ब्राह्मण, श्रीमाली बनिये और श्रीमाली सुनार लोग इसी नगर से अपनी उत्पत्ति मानते हैं । किन्तु इस समय " श्री माली " शब्द श्रीमाली ब्राह्मणों का ही

श्रीमाली ब्राह्मण

द्योतक हो गया है। यहां पर कुछ पुराने मंदिर हैं जिनमें पँवार (परमार) और चौहान राजाओं के संस्कृत शिलालेख पाये गये हैं। रत्नपुर में भी दो एक पुराने मंदिर हैं जहां १२ वीं शताब्दी के शिलालेख मिले हैं। भीनमाल से मिले इन लेखों में भीनमाल का नाम "श्रीमाल" लिखा है:—

१—...सम्वत १३४० आश्विन वदी १० रवावद्येह श्री श्रीमाले महाराज कुल श्री सामन्तसिंह देव कल्याण विजय राज्ये तन्नियुक्त महापान्त्य प्रभृति पंचकुल प्रतिपत्तौ ..

२— सम्वत १३४५ वर्ष माघ वदी २ सोमेऽद्येह श्री श्रीमाले महाराजकुल श्री सामन्तसिंह देव कल्याण विजय राज्ये तन्नियुक्त महा शाम्हा प्रभृति पंचकुल प्रतिपत्तौ एवं काले प्रवर्त्तमाने श्री जावालिपुर वास्तव्य पुष्करनुम्थानीय यजुर्वेद पाठकाय..

परन्तु इससे यह सिद्ध नहीं हो सकता कि—सं० १३४५ विक्रमी (ई० स० १२८८) तक भीनमाल का नाम श्रीमाल ही था। क्यों कि—संस्कृत शिलालेखों में आज तक भी देशी नामों का संस्कृत रूप बना कर प्रयोग करने की रीति चली आती है। जैसे बीकानेर (विक्रमपुर), नागोर (नागपुर), रतलाम (रत्नपुर), अजमेर (अजयमेरु), करेड़ा (करटकूप), सांचोर (सत्यपुर), सोजत (शोणितपुर)।

वि० सं० ६८५ (=शक सं० ५५०=ई० स० ६२८) में चावड़ा राजा व्याघ्रमुख के समय ब्रह्मगुप्त ज्योतिषीने "ब्रह्मस्फुट सिद्धांत" नामक पुस्तक की रचना की थी। यह ब्रह्मगुप्त "भिल्लमालकाचार्य" भी कहलाता था। इससे भी उक्त नगर का नाम उस समय श्रीमाल न होकर "भिल्लमाल" या "भिन्नमाल" होना ही सिद्ध होता है। श्रीमाली ब्राह्मण अपनी उत्पत्ति का हाल श्रीमाल पुराण में लिखा मानते हैं, परन्तु कई विद्वान इस ग्रन्थ को मुसलमानी काल में ही बना बताते हैं। कुछ विद्वान इनका शकों (क्षत्रप) हूणों या गूजरों के साथ भारतवर्ष के बाहर से आना मानते हैं और कुछ इन ब्राह्मणों में "तिवाड़ी-मेरों" के होने से इनको राजपूताने के असभ्य मेरों आदि से मिलाते हैं[१]। परन्तु हूण आदि बहुसंख्यक विदेशी जातियों के साथ इन उन्नतिशील (वैदिक कर्मकांडी) ब्राह्मणों का

१—"मारवाड़ मर्दुमशुमारी रिपोर्ट १८९१ ई० पृ० १४ [illegible] 'अभ्युदय' जाति पत्र भाग१९अंक ९ पृष्ठ २८२.

संसर्ग होना असम्भवसा प्रतीत होता है । क्योंकि वास्तव में ये भारत के ही आर्य-कारिस्तान हैं ।

जसवन्तपुरा कस्बा के पश्चिम में सूंढा माता की पहाड़ी है जो ३ हजार फुट से ऊंची है । चामुण्डा देवी का पहाड़ में खुदा हुआ मंदिर है और यहां भी १२ वीं शताब्दी के कई लेख पाये गये हैं । जसवन्तपुरा में एक मजबूत किला है ।

यह परगना पहले गुर्जरों के अधिकार में था पश्चात् गुजरातके राष्ट्र-कूट, चावड़ा, सोलंकी, बघेल, परमार, सोनगरा चौहान और पठान मुसलमानों के कब्जे में क्रमशः से रहा । बिहारी पठानो से दो एक बार सिरोही के देवड़ों ने भी छीन लिया था । अन्त मे महाराजा अजीतसिंहजी राठौड़ ने अपने कब्जे मे लिया । तब से इस पर राठौड़ राज्य का अधिकार है । भीनमाल के जयकूप (यज्ञकूप) तालाब पर के वराही मूर्ति के परनाव से इस परगने पर कुशन व क्षत्रप राजाओंका राज्य होने का भी पता चलता है । और शायद हुन श्वेतहूण और मेर लोगों का भी राज्य यहां रहा है ।

मुख्य दस्तकारी यहां की कांसी की कटोरियां भीनमाल मे और तलवार की मूठ बड़गांव में अच्छी बनती है ।

जालोर हकूमत—यह परगना भी जोधपुर [illegible] दक्षिण में है । यहां ८० फी सैकड़ा हिन्दू बसते हैं । जिनमें राजपूत [illegible], महाजन, कलाल, मीना, पटेल, रेबारी, क्रमशः मुख्य जातियां हैं । खालसा रकबा १,५८८ मील मुरब्बा है । जिसकी मालगुजारी (लैण्ड-रेवेन्यु) २७ हजार रुपये सालाना है । भूमि समतल, उपजाऊ व रेतीली है । कूएं भी बहुत हैं । गेंहू, तिल, बाजरी, जवार, कपास, मर्ची और तमाखू यहां पैदा होते हैं । कुछ भाग में एक फसल और कुछ में दो फसलें होती हैं । सूकड़ी, खारी और जवाई नामक बरसाती नदियां इस परगने में बहती हैं । मुख्य जागीरी ठिकाना भाद्राजून है । जिसका पुराना नाम " भद्र-अर्जुन स्थान " है । यह जोधपुर रेल्वे के दूनाड़ा स्टेशन से २२ मील है । यहां एक छोटासा किला, दो मंदिर और एक कुण्ड भी है । इस जागीर

की अनुमानिक आमदनी ३१,८५० रुपये सालाना है और गांवों से ४१२९।) खिराज देते हैं।

जालोर कस्बा सूकड़ी नदी के दाहिने किनारे पर जोधपुर शहर से ७५ मील दक्षिण में ७ हजार वस्ती का नगर है। जाल यानी पीलू (Salvidora Persica) के दरख्तों की यहां अधिकता होने से इस कस्बे का नाम जालोर हो जाना कहा जाता है। कई इसका नाम "जालंधर" बताते हैं। यहां का किला ८०० गज लम्बा व ४०० गज चौड़ा और आसपास की भूमि से १२०० फुट ऊंचा है। यह किला जिस पहाड पर बना है उसको सोनगिरी कहते हैं और उसी के नाम से किले का नाम भी सोनगढ प्रसिद्ध है। यह किला ईस्वी सन के प्रारम्भकाल में पँवारों ने बनाया था जो उस समय पश्चिमी भारत में शक्तिशाली राजा थे। चौहान वंश की सोनगरा शाखा इस पहाड के नाम से ही कहलायी है। यह किला बहुत मजबूत बना है। कई बार मुगल और अन्य आक्रमणकारियों ने इसके बड़े घेरे डाले थे। इसका पुराना नाम जालंधर था। इसे एक बार भोज पवार ने करीब सं० ११०० के और दूसरी बार राव कीर्तिपाल चौहान ने लगभग सं० १२०० के और तीसरी दफै उसके पोते चाचगदेव ने स० १३१२ में फिर बसाया था। भोजराज पंवार के वंशज राव कुन्तपाल परमार से छीन कर राव कीर्तिपाल (कीतू) चौहान ने इसे अपनी राजधानी बनाया था। इस कस्बे को अलाउद्दीन खिलजी ने ८ वर्ष के घेरे के बाद राव कीतू की छठी पीढी में उत्पन्न देशगौरव वीरशिरोमणि राव कानड़दे चौहान से लड कर नष्ट कर दिया। इस युद्ध में कानड़दे ने वैशाख सुदि ५ सं० १३६८ वि० को वीरगति प्राप्त की थी। किन्तु यह घटना "तारीख फरिश्ता" के लेखानुसार हिजरी सन ७०९ (ई० सन १३०९= विक्रमी स० १३६६) में और "मुहणोत नैणसी की ख्यात" के अनुसार स० १३६८ वि० को हुई। अकबर और मुगलसम्राटों का भी जालोर पर अधिकार रहा। बाद में पालनपुर को औरंगजेब ने कायम हुवा। जिससे सम्राट् औरंगजेब की मृत्यु पर जोधपुर के कब्जे में

नगर । यहां दर्शनीय स्थान किला और उसके महल, जालंधरनाथ का मंदिर व कई जैनमंदिर हैं । यहां की कलाकौशल में गाढा कपड़ा (दुकड़ी-रेजा), ऊट के पिलान (काठी Saddle) और कांसी पीतल के बरतन हैं ।

जैतारण हकूमत—यह परगना जोधपुर से पूर्व दिशा में है । खास जातियां महाजन, कलाई, सीरवी, ब्राह्मण, रेबारी, व राजपूतमाली और

आदि गौड ब्राह्मण

गूजर हैं । लूनी, लीलड़ी और रायपुर-लूनी नदियें वर्षा के समय बहती हैं । जमीन यहां की मटियाली और उपजाऊ है । जिसमें गेहूं, कपास, बाजरा, तिल, मक्की और कोराना खास कर पैदा होते हैं । कुएं यहां बहुत हैं । इसमें सियालू (खरीफ) और उनालु (रबी) दो फसलें होती हैं । कुल रकबा भूमि १७० वर्गमील है । जिससे राज्य को मालगुजारी में ५५ हजार रुपये सालाना की आय है । मुख्य जागीरी ठिकाने नीमाज व बगड़ी और रास हैं ।

नीमाज १० गांव का जागीरी ठिकाना है। इसकी वार्षिक अनुमानिक आय ३५,१०० रुपया है। यहां के ठाकुर अव्वल दर्जे के सरदार हैं। नीमाज कस्बा बी० बी० एन्ड सी० आई० रेल्वे के हरीपुर स्टेशन से १० मील है। यह ठिकाना राज्य को ६११३४) रुपये वार्षिक खिराज (रेख-चाकरी) का देता है।

रायपुर में ३७½ गांव हैं। यहां के सरदार भी अव्वलदर्जे के हैं जिनकी आमदनी ४४१४० रुपये सालाना है। राज्य को खिराज ८८०७७॥ देते हैं। रायपुर कस्बा बी. बी. एन्ड सी. आई. रेल्वे के हरीपुर स्टेशनसे २ मील है। इसकी आबादी ३ हजार है।

रास ठिकाना की आमदनी ३९७५० रुपये सालाना है और राज्य को ८३२८) रु० खिराज देते हैं। रास कस्बा, ब्यावर और मगरा स्टेशन से १६ मील दूर है।

इस परगने का मुख्य हकूमत कस्बा जैतारण है जो जोधपुर शहर से ५६ मील पूर्व में है और बर रेल्वे स्टेशन से १४ मील उत्तर पश्चिम में है। कहा जाता है कि-पहले यह शहर सं० १३५६ में बसा था। इस के चिन्ह अब तक हैं। बाद में यह उजड़ गया। इस समय जहां जैतारण बसता है वहां जैता नामक एक गूजर अपनी ढाणी (झोंपड़े) में रहता था। इससे यह जैतारन (जयतारण) कहलाया। इस स्थान को पसन्द कर सिंधल राठोडों ने शहर बसाया था और उनसे राव सूजाजी के हाथ में यह आया। राव सूजा के बाद सम्राट् अकबर ने इस पर अधिकार किया। जिसने राजा उदयसिंह को सं० १६१४ वि० में इनायत किया। यहां एक पुराना किला भी है। कस्बे में ४ पुराने मंदिर और दो बड़े तालाब हैं। इस परगने में मुख्य गांव बर, कालू, बांगिया, नींबोल, बाबरा और बलूंदा हैं। दस्तकारी में जैतारण कस्बे में देशी लकड़ी का सामान, सतरंज, खाट (चारपाई) और देशी गाढ़े कपड़े की छपाई अच्छी होती है।

जोधपुर हकूमत—यह परगना राज्य के ठीक बीच में है। इस

जातियां ब्राह्मण, महाजन, राजपूतमाली, जाट, बलाई, कुम्हार और दरोगा (रावणा) हैं। भूमि यहां की भूरी और रेतीली है। बाजरी,

ओसवाल वैश्य

ज्वार, गेहूं तिल, कपास, चना और कुछ तमाखू यहां पैदा होते हैं।

लूनी, जोजरी, मीठडी और नागादरी नदियां वर्षा में बहती हैं। इस परगने का अधिकांश भाग एक फसला है। खालसा भूमि ७५६ वर्गमील है जिसमें ११५ गांव हैं। इससे राज्य को मालगुजारी रु० १ लाख ४० हजार सालाना है। यहां जोधपुर शहर और गांव तांवरी के आसपास इमारती पत्थरों की खानें हैं। जोधपुर में मकानों के छतों का पत्थर जो १२-१३ फुट लम्बी और २-३ फुट चौडी पट्टियां (छांग) और अनार के फल बडे प्रसिद्ध हैं। जो दूर २ तक बाहर जाते हैं। कपडे की रंगाई छपाई और बांधनु यानी चूंदडियां, पगडियां, पचरंगा लहरये साफे, गोटे के नारे, तथा चांदी के छाप के ओढने, पेचे, लकडी और कांच के हिंडोले, कागज
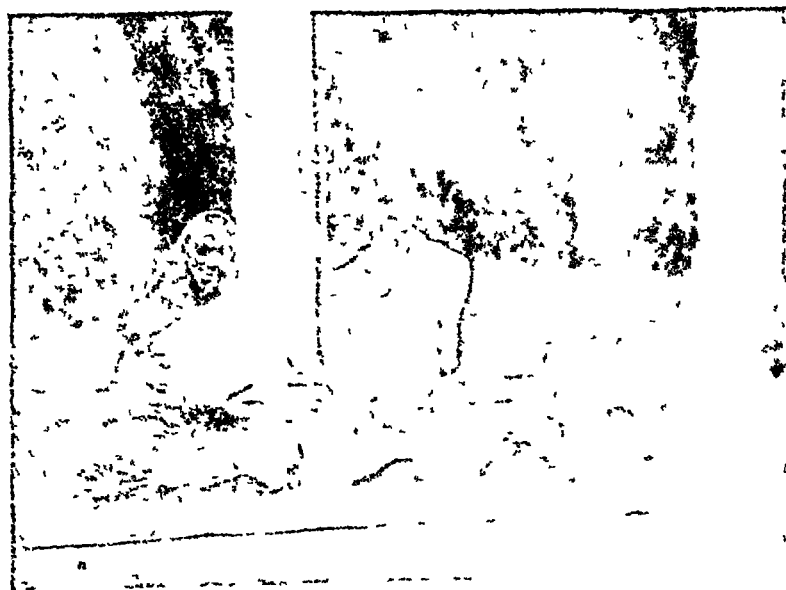
खेडापे के रामस्नेही साधु (रामावत सम्प्रदाय)

की कुट्टी की गेंदें पारी, हटडी, फलफूल व जंट अर्थात ऊंट और घरों के वालो के बोरे और गंदे (चटाई) बहुत अच्छे होते हैं। गंधने की खुशबूदार तमाखू बाहर बहुत जाती है। पहले तान्बा जोधपुर शहर में

फ़ुलेलाव के पास और किले में चाकेलाव के पास और शीशा कायलाने के पहाड़ में से निकलता था किन्तु अब ६०–७० वर्ष से यह खानें बन्द हैं। जोधपुर परगने का सदर मुकाम जोधपुर शहर है जो मारवाड़ राज्य की वर्त्तमान राजधानी है। यह नगर २६ अंश १८ कला उत्तरांश तथा ७३ अंश १ कला पूर्व देशान्तर में स्थित है। इसका क्षेत्रफल पौने तीन वर्गमील है किन्तु शहरपनाह के भीतर लगभग दो वर्गमील ही है। रेल के मार्ग से यह दिल्ली से ३८०, बम्बई से ५६०, कराची (सिन्ध) से ४४०, कलकत्ते से १,३३०, अजमेर से १५१ और आगरा से ३४२ मील के फासले पर है। आबादी शहरपनाह (परकोटा) के भीतर ५२ हजार है। किन्तु नगर से ५ मील तक की आसपास की बस्ती को मिला कर ७३,४८० है। जिसमें ५५ हजार हिन्दु और १८ हज़ार मुसलमान हैं। इस नगर को राठौड़ राव जोधाजी ने जेठ सुदि ११ सं० १५१६ वि० (ता. १२ मई सन १४५९ ई० शनिवार) को मैदान से ४०० फीट ऊंची एक पृथक् पहाड़ी की तराई में बसाया है। इसी पहाड़ी पर उन्होंने अपने रहने के लिये एक किला भी बनाया था। पहले राजधानी मंडोर में थी जो जोधपुर शहर से ६ मील दूर उत्तर में है।

जोधपुर शहर में मकान लाल पत्थर के बने हुए हैं। इनमें से बहुतों में खुदाई का बढ़िया काम भी किया हुआ है। मंदिरों में सब से सुन्दर और बड़ा "कुंजबिहारी" का मंदिर है जो शहर के बीच में कटला बाजार में है। इस मंदिर को सुप्रसिद्ध वैष्णव महाराजा विजयसिंहजी की पासवान (उपपत्नि) गुलाबराय ने बनवाया था, जो जाट जाति की महिला थी। यह मंदिर फाल्गुन सुदि ८ सं० १८३५ वि० को बन कर तयार हुआ था। घनश्याम और बालकृष्ण के मंदिर भी बड़े और प्राचीन मंदिर हैं। ईसाईयों का एक साधारण गिर्जाघर है। और मुसलमानों की सब से बड़ी मसजिद "एक मीनार की मस्जिद" है। कहते हैं कि यह मस्जिद सम्राट् औरंगजेब के समय बनी थी जब उसका दखल यहां पर हो गया था। इनके सिवाय देखने योग्य स्थान घण्टाघर, गुलाबसागर व पब्लिक पुस्तकालय, जसवन्तस्मृति भवन (बड़ा), उम्मेदबाग
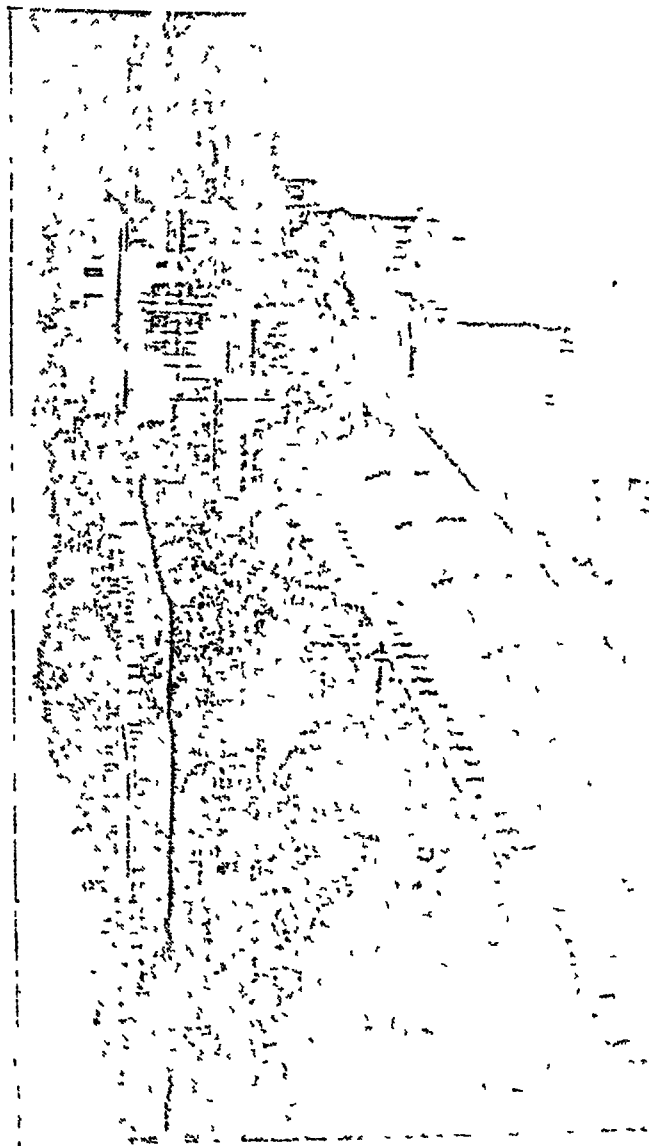
बालसमंद झील

म्यूज़ियम (लाइब्रेरी), किला, जसवन्त कालेज, अजायबघर, मंडोर, बालसमंद झील, जसवन्त सराय और महामंदिर हैं।

यह परगना पहले पंवारों के अधिकार में था। बाद में पड़िहारों के हाथ आया। पड़िहारों से मुसलमानों ने छीना, किन्तु ईन्दा शाखा के पड़िहारों ने फिर उनसे मंडोर राजधानी छीन ली और उसे राव चूंडाजी राठोड़ को दहेज में दे दी। तब से आज तक राठोड़ों का कब्जा है। कहते हैं कि-पंवारों से पहले यहां नागवंशी राजाओं का राज्य था जिनके झण्डे और सिक्कों पर सांप के चिन्ह होते थे। कईयों का यह अनुमान भी है कि-मौर्य, क्षत्रप, गुप्त, हूण, गूजर और सोलंकी राजाओं का भी यहां राज्य रहा है।

इस परगने में मुख्य जागीरी ठिकाने आसोप, पालासनी और आल्हामद हैं। ऐतिहासिक स्थानों में जोधपुर और मंडोवर (मंडोर) के सिवाय अरणा, घटियाला, ओसियां, तिंवरी, पाल, झंवर, चौपाई, बिसलपुर, चामां और दईजर हैं। मंडोवर का किला ईस्वी की छठी सदी से पहले का बना हुआ है जो अब केवल खंडहर रूप है। कहते हैं कि इसकी दीवारें छठी शताब्दी में पड़िहार राजा रज्जिला ने बड़े २ पत्थरों से बनवाई थीं। ओसियां गांव जोधपुर शहर से उत्तर में ४० मील पर रेल्वे का स्टेशन है। जैनियों की पुस्तकों में इसका पुराना नाम "उपकेश-पट्टन" लिखा है। यहां २४ वें जैन तीर्थंकर श्रीमहावीर का एक प्राचीन मंदिर है। किन्तु सच्चियाय माता का मंदिर बहुत पुराना है। कहा जाता है कि जैन आचार्य महात्मा रत्नप्रभु सूरि ने इसी नगरी के १८ जाति के राजपूतों को सावन सुदि ८ सं० २२२ वि० को जैनी बना गांव के नाम पर "ओसवाल" जाति की स्थापना की। इसके पीछे भी जैन साधुओं के उपदेश से लोग जैनी होते गये जो सब के सब ओसवालों में मिला लिये गये। इस तरह ओसवाल बनने का सिलसिला "जैन प्रश्नोत्तर" ग्रन्थ के अनुसार सं० १५७५ तक जारी रहा और खांपें बढ़ते बढ़ते १४४३ हो गई। कई विद्वानों का मत है कि-ओसवाल जाति ईस्वी की ८ वीं शताब्दि में बनी। खेड़ापा नाम का ४०० आबादी का गांव भी इस परगने में प्रसिद्ध है।

कहते होंगे? कहीं यों सब हिन्दु और जैनियों को ही वाममार्गी और कूड़ापंथी न समझ बैठें। क्यों कि उन्हीं के कानूनों से मिलते [illegible] नमूने भी दोनों के पुराने मन्दिरों में हैं। नेताओं को इधर ध्यान देना अति आवश्यक है।

नागौर हकूमत—यह परगना जोधपुर के उत्तर पूर्व में है। खाल-सा भूमि ८४५ वर्गमील है। जिससे मालगुजारी लगभग २ लाख रुपये सालाना है। हिन्दुओं की बस्ती ८४ फी सैकड़ा है। जमीन रेतीली है और कुएं कम हैं। इस लिये फसल भी एक ही होती है। मुख्य पैदावार बाजरा, जवार और तिल है। जागीरी ठिकाने खींवसर, भादू, अलनो-लाव और डूगोली मुख्य हैं। चारणों का खास ठिकाना मूंडियाड़ भी इसी परगने में है। हकूमत कस्बा नागौर जोधपुर से ८० मील दूर रेल्वे स्टेशन है। शहर का परकोटा कई जगहों से गिर पड़ा है। आबादी [illegible] हजार है और आबादघर ३ हजार हैं। यद्यपि यहां की बस्ती इससे भी अधिक है परन्तु बहुत से घर गैर-आबाद पड़े हैं। क्यों कि यहां के बहुत से मनुष्य हैदराबाद, दक्षिण बराड़ और बम्बई आदि में रोजगारार्थ रहते हैं।

नागौर का पुराना नाम जैनियों की हस्तलिखित पुस्तकों में "नाग उर" लिखा मिलता है और प्राकृत व्याकरण के नियम से संस्कृत शब्द 'पुर' का 'उर' हो जाता है। इससे पुराना नाम नागपुर मालूम होता है और नागौर के ब्राह्मणों के हस्तलिखित पुस्तकों में भी नागपुर लिखा जाता है। परन्तु यह नाम पुस्तकों में पंडितों के लिखने का है जैसे बीकानेर का नाम विक्रमपुर। पंडित लोग देशी नाम का संस्कृत रूपान्तर कर ही नहीं लिखते हैं वरन अर्थ बदल कर भी और का और बना लेते हैं। जैसे जोधपुर का नाम 'सुभटनगर'। क्यों कि जोधा और सुभट का अर्थ एक ही है अर्थात् वीरपुरुष और निवास नगर का रूपान्तर पुर के अर्थ में है। हिन्दी कवि भी भाषा कविता में संस्कृत की देखादेखी कभी २ नागौर का नागपुर कर देते हैं।

कर्नल टाड ने नागौर का पुराना नाम नागदुर्ग और नागदेरा

राजाओं का बसाया हुआ अपने इतिहास में लिखा है। शायद ऐसा भी हो। क्यों कि मारवाड़ आदि प्रांतों में नागवंशियों का राज प्रायः २००० वर्ष पहले रहा है। जिनको परमारों ने निकाल दिया जैसा कि-इस दोहे में भी पाया जाता है:—

परमारां रुंधाविया नाग गया पाताल।
रह्या बापड़ा आसिया किणरी ओमें चाल॥

दाहिमा ब्राह्मण

नागदुर्ग से मिलता हुआ नागौर का एक और नाम "नागाणा" भी है जो डिंगल भाषा अर्थात् चारणों की कविता में आता है जैसा कि इस दोहे में है:—

खाटू तो स्याले भलो ऊंधाले अजमेर।
नागाणों नितही भलो सावण बीकानेर॥

अर्थात खाटू शहर शीतकाल में मनोहर है और अजमेर गर्मियों में, किन्तु नागोर वर्षभरही मनोहर है और बीकानेर केवल श्रावण मास में ही है।

परन्तु रात दिन की बोलचाल व सरकारी दफ्तरों, कानूनगोयों की बहियों और फारसी तवारीखों में ६०० वर्ष पहिले तक नागोर ही बोला और लिखा जाता रहा है।

नागोर किसने बसाया और नागोर नाम क्यों पड़ा? इसके सम्बन्ध में देशी ख्यातो में तो ऐसा लिखा मिलता है कि-महाराजा पृथ्वीराज चौहान (तृतीय) के पिता महाराजा सोमेश्वर के सामन्त (सरदार) मन-केवास दाहिमा[1](क्षत्रिय)ने जो यहां अच्छी घास देख कर करके खाटू से घोड़े चराने आया करता था,एक दिन एक भेड़ को भेड़िये से लड़ती देख कर और इसको एक वीरभूमि जान कर वैशाख सुदि ३ सं० ११११ (सही संवत १२११) को नागोर का किला बनाया उसका नाप इस प्रकार था:—

लम्बाई ४९९ गज। चौड़ाई ४०४ गज।
ऊंचाई २५ गज। बुर्ज ८१८ गज॥
कंगूरा ८१८ गज। कुल घेरा २१०० गज।

१—कई एक दाहिमा ब्राह्मण जो अपनी उत्पत्ति के [illegible] से [illegible] हैं अपने को दधीच ऋषिकी सन्तान बतलाते हैं परन्तु [illegible] के [illegible] के आसपासका प्रदेश दधिमती मंडल कहलाता था, वहां के समस्त निवासी ([illegible], राजपूत आदि) उस स्थान के नाम से दाहिमे कहलाये। देखो, [illegible] विलास प्रेस पृष्ठ ४९२.

में से बहरामशाह ने सन ५१२ हिजरी (सं० ११७५ वि०) में भारत पर चढ़ाई की और २७ रमजान (माघ वदि ३० सं० ११७५) को मोहम्मद-बाहलीम को पकड़ा और कैद किया। बाद में उसे छोड़ दिया और भारत की सारी वलायत उसको दे दी। वह फिर बागी हुआ और नागोर का किला सवालक की विलायत में बेर की हद पर बनाया। बादशाह फिर आया और वह मुलतान के पास जाकर लड़ा और एक नदी में डूब गया।' इस तरह महाराजा पृथ्वीराज चौहान से ७० वर्ष पहिले तक नागोर के मौजूद होने का पता लगता है।

नागोर में पृथ्वीराज चौहान के बाद तुर्कों की अमलदारी सं० १२४९ वि० से सं० १५९६ तक रही। इसके बाद सं० १८६२ तक कई दफे मुगलों की और कई दफे मारवाड़ जयपुर बीकानेर और मेवाड़ के राजाओं की अमलदारी रही। अकबर ने बीकानेर के राजा रायसिंह को दिया। बाद में राव अमरसिंह राठोड़ ने सम्राट् शाहजहां से पाया। अमरसिंह के पोते से महाराजा अभयसिंह ने ले लिया।

बादशाह अकबर से पहले तुर्कों के जमाने में नागोर राजपूताने में सदर मुकाम था जैसा कि पीछे अजमेर हुआ। सिन्ध और दिल्ली का रास्ता नागोर हो कर चलता था। यहां बड़े २ सूबेदार दिल्ली के बादशाहों के रहते थे। गयासुद्दीन बलबन जो सुलतान नासिरुद्दीन के पीछे दिल्ली का बादशाह हो गया था, बहुत वर्षों तक राजपूताना और सिन्ध के बंदोबस्त के लिये नागोर में रहा था।

यह एक अच्छा शहर था पर अब इतनी बस्ती नहीं है जितनी पहिले थी और न पहले के जैसी कारीगरियां हैं, जिनकी तारीफ पुरानी किताबों में लिखी मिलती है। अब से करीब १५० वर्ष पहिले बनी हुई तवारीख 'तोहफतुलकराम' में लिखा है कि– 'नागोर एक नामी शहर है जहां के रहनेवाले सकरलात (बनात) हिन्दुस्थान के दूसरे शहरों से अच्छी बनाते हैं।' महाराजा बख्तसिंहजी ने देश २ से प्रत्येक कला-कौशल के चतुर कारीगरों को बुला कर इस शहर को बसाया था। इस समय भी यहां लोहार, ठठेरा, सुनार और जुलाहा आदि अपने २

ग्राम के उस्ताद मौजूद हैं· किन्तु अंग्रेजी भडकिले माल के प्रचार से उन

जैनमतानुयायि यति

का रोजगार प्रायः अब घट गया है। इससे बहुत से देशी कारीगरों ने अपना काम छोड़ कर मेहनत मजदूरी करने लगे हैं और जिन्होंने नहीं छोड़ा है, वे देशी माल की खपत न होने से भूखों मर रहे हैं। काल की विपरीत गति है कि-एक समय नागौर और पाली के जैसे मालदार शहर जो अपनी दस्तकारी (कलाकौशल) से दिल्ली के बच्चे कहलाते थे-आज ऐसी गिरी दशा में है। इस समय नागौर में कलाकौशल में हाथीदांत के खिलौने, पीतल के बरतन, ऊन के कम्बल, लोहे के कलाय ताले व औजार आदि सामान, जाटनियों के पहिनने के कपड़े-जिनको डाणी और धावला कहते हैं—अच्छे होते हैं। जाटनियां ऊन और सूत के कपड़े पर ऐसा उमदा कसीदा करती हैं कि-यूरोपियन लोग मेजपोश और दरवाजों के परदों के वास्ते पसन्द करके बहुत खरीदा करते हैं। यहां के बैल सूरत शक्ल में अच्छे और चलने में तेज होते हैं जो उत्तर भारतवर्ष में बड प्रसिद्ध हैं।

खनिज पदार्थों में खड़ी (Gypsum) अधिक पायी जाती है। यह एक प्रकार पुख्ता चुना है जो इमारतों पत्थरों को जोडने में सिमेंट का काम देती है। यहां तक कि सेर भर खड़ी पचास मन से भी भारी पत्थर को ऐसा चिपका देती है कि-वह फिर हिल नहीं सकेगा। नागौर में लाल पत्थर और खाटू में पीला पत्थर निकलता है। दर्शनीय स्थान किला और उसके महलात मय शहरपनाह, गीटाणी और झडा तालाब और कुछ मसजीदे हैं। यहां का किला समतल भूमि पर शहर के बीच में है। यह दो दीवारों से लगभग १ मील तक घेरा हुआ है। बाहर की दीवार २५ और भीतर की ५० फुट ऊंची है। चौड़ी नीचे की तरफ ३० फुट और ऊपर १२ फुट है। किले में बादशाही व राठौड़ों समय के कई महल व मकानात हैं। महाराजा बखतसिंह के समय किले की बहुत कुछ उन्नति हुई थी। मांगलोद खाटू, कठोती मुंडवा रोल, गगा और फिड़ोद, ये ऐतिहासिक स्थान हैं। कसबा मुंडवा में मिगसर मास में "गिरधारीजी का मेला" भरता है। जिसमें ३०-४० हजार मनुष्य सम्मिलित होते हैं। इसमे बैल आदि पशुओं का बड़ा व्योपार होता है।

आरम्भ किया था। इस परगने में कुचेरा प्रसिद्ध कसबा है जिसकी आबादी ४ हजार है। और यहां गहलोतों का राज्य रहने से गहलोतों की एक शाखा का नाम 'कुचेरा गहलोत' मशहूर हुआ है। यह कसबा रेल्वे स्टेशन खजवाना से ८ मील दूर है। खाटू रेल्वे स्टेशन से १० मील दूर जायल नामक ३ हजार बस्ती का कसबा भी इसी परगने में है जहां पहले खीची चत्रियों का राज्य था।

पचपदरा हकूमत—यह परगना जोधपुर शहर के पश्चिम में है। खालसा भूमि १४६ वर्गमील है। जिसमें १७ गांव हैं। मालगुजारी से राज्य की आमदनी १ हजार सालाना है। जमीन यहां की बहुत रेतीली है और बाजरी, गेहूं, जवार, मूंग, मोठ, जौ, रुई और तिल पैदा होते हैं। कूओं का पानी खारा है। फसल एक होती है। जोजरी और लूनी इस परगने में बहती हैं। हाकड़ा नदी पहले यहां हो कर बहती थी। जागीरी ठिकाने आसोतरा, कानाणा, कोरणा, बाघावास, पाटोदी और कल्याणपुर मुख्य हैं।

हकूमत कसबा जोधपुर शहर से ६० मील दूर जोधपुर रेल्वे की पचपदरा ब्रांच का रेल्वे स्टेशन है। कलाकौशल में हाथीदांत के चूड़े चुड़ियां, शृंगेदानी, पंखे की डंडी, ढले हुवे बरतन व खिलौने अच्छे होते हैं। बालोतरा में ब्रह्मखत्री लोग ओढने की रंगाई व छपाई पीपाड़ गांव के जैसी उमदा करते हैं। खनिज पदार्थों में पचपदरा में नमक की झील और गांव खुडाला में खड़ी मिट्टी की खान है।

यह परगना पहले पवारों के अधिकार में था। बाद में सोलंकियों के हाथ लगा। फिर गोहिलों (गहलोतों) ने कब्जा किया। जिनसे राव आसथानजी राठौड़ ने छीना। तब से राठोड़ी राज्य में है। ऐतिहासिक स्थान बालोतरा, खेड़ और पाटोदी है। बालोतरा एक अच्छा व्यापारिक शहर है। गांव नागाणां में राष्ट्रकूटों की कुलदेवी 'नागणेची माता' का प्राचीन मंदिर है।

परबतसर हकूमत—यह परगना जोधपुर शहर के पूर्व में है। इस

लसा भूमि ११६ वर्गमील है। जिसकी मालगुजारी ४५ हजार रु० सालाना है। जमीन रेतीली उपजाऊ और कहीं २ पहाड़ी है। इससे इस का नाम परवतसर रखा। पैदावार बाजरी और जौ है। कुछ गेहूं, तिल और चना भी होते हैं। यहां तीन बरसाती नदियां बहती हैं। बंवाल के पहाड़ में एक झरना बारहों मास झरा करता है। जागीरी ठिकानों में बोरावड़, बूडसू, बड़, मनाना, बाग्रोट, गूलर, पीह, नोसीना और मकराना मुख्य हैं।

सदर कसबा परवतसर—किशनगढ़ राज्य की सरहद पर—जोधपुर शहर से १२० मील पूर्व में है। आबादी ३ हजार है। यह जोधपुर रेल्वे के स्टेशन बोरावड़ और मकराना से (हरेक से) १२ मील दूर है। कहते हैं कि—इस कसबे को किसी परवतशाह माहेश्वरी बनिये ने बसाया था। यह चौहानों और दहिया राजपूतों के कब्जे में रहा और बंवाल में मेर लोग राज करते थे। परवतसर को फिर मेड़तिया राठोड़ जगन्नाथ ने अपने कब्जे किया और बंवाल का इलाका चांदावत तथा ऊदावत राठोड़ों ने मेरों को मार कर छीन लिया। पश्चात् जब इनमें फूट हुई तो महाराजा अजीतसिंहजी ने सं० १७७० में अपने हाथ में लिया। यहां किसी जाट तेजा के यादगार में तेजाजी का मेला हर वर्ष भादों सुदि १० (तेजादशमी) से १० दिन तक लगता है। जिसमें पशुओं की बड़ी बिक्री होती है। खनिज पदार्थों में संगमरमर का पत्थर जो मकराना रेल्वे स्टेशन से निकलता है, बड़ा प्रसिद्ध है। यहां के संगमरमर का पत्थर भी "ताजबीबी का रोजा" (ताजमहल) आगरा के बनाने में काम में लाया गया था। ऐतिहासिक स्थानों में बंवाल, खीनसरिया और नोसीना मुख्य हैं। परवतसर में जमीन पर एक छोटा किला भी है। और सांवला आदि स्थानों में २३ छोटी बड़ी गढ़िया (Fortresses) जागीरदारों की हैं। उनमें से १० तो पुख्ता पहाड़ियों के ऊपर हैं और १३ मिट्टी की हैं।

पाली हकूमत— यह परगना जोधपुर के दक्षिण में है। कुल क्षेत्रफल में खालसा भूमि २०३ वर्गमील है। जिसकी मालगुजारी ७४ हजार रु०

सालाना है। परगने भर में आबाद घर १३ २२६ हैं। यहां पर कुएं बहुत हैं। जमीन रेतीली व मटियाली है और फसलें दो होती हैं। खास पैदावार गेहूं, कपास, बाजरी, तिल और ज्वार हैं। जागीरी ठिकानें रोहट और खेरवा मुख्य हैं। रोहट जोधपुर रेल्वे का स्टेशन है और खेरवा गांव बी. बी एन्ड सी आई जो रेल्वे के स्टेशन फालना से ६ मील दूर है।

ढोली-नक्कारची

हकूमत कसवा पाली पहले बड़ी व्योपारिक मंडी थी। आबादी १८ हजार और आबाद घर ३ हजार है। यह पाली पंवारों के राज में थी जिन्होंने पल्लीवाल ब्राह्मणों को दान में दिया। पश्चात् मुसलमानों के कब्जे में रहा। फिर उनसे मंडोर के परिहारों ने छीन लिया और पल्ली-वालों को फिर दान में दे दिया। पल्लीवालों से राव सीहाजी ने सं० १३०५ के लगभग ही इसे लिया। यह नगर बहुत समय तक जागीरी ठिकाना रहा। महाराजा विजयसिंहजी ने इसको व्योपारिक उन्नति दे कर

हुवे है। यह नगर जिस समय "विजयपुर पाटन" कहलाता था, उस समय आंचल राजपूतों के अधिकार में था। राव मालदेव राठोड़ ने इसे जीता। बाद में सम्राट अकबर के हाथ लगा जिसने जेसलमेर के रावल हरराज को दिया। बाद में बीकानेर ने इस पर कब्जा किया। अन्त में यह महाराजा अजीतसिंहजी के हाथ लगा तब से जोधपुर राज्य में है। यहां एक अच्छा किला भी है जिसकी दीवारें ४० फुट ऊंची है। यह किला राठोड राव हम्मीर नरावत (राव सूजा के पोता) ने पोकरन में
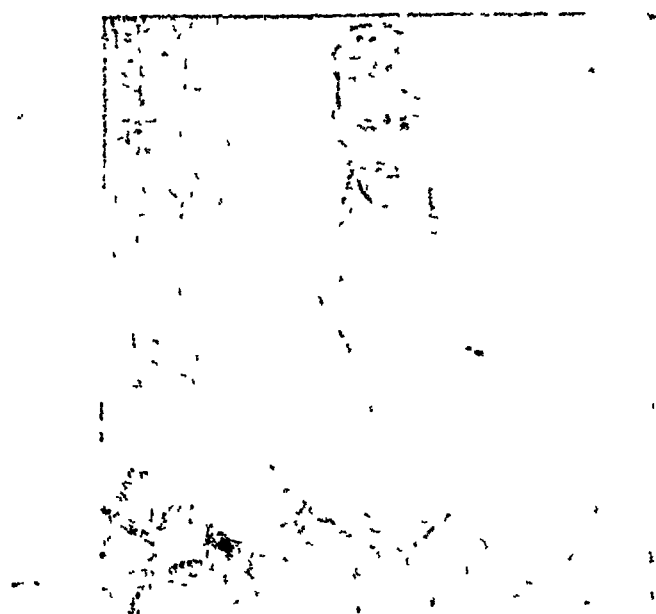
गूजर गौड़ ब्राह्मण

आकर सं० १५४५ में बनवाया था। कहते हैं कि इस किले के बनने में पुष्करणा ब्राह्मण फला की विधवा पुत्री का धन काम आया था इस कारण कल्लावंशीय फला ने राव हम्मीर से कह कर इसका नाम रखा.

... अर्थात् फलां गांव कस्या। कस्याबाघा जो कालन्तर में फलोधी हो गया। दर्शनीय स्थानों में लटियाल माता का और कल्याणजी का मंदिर है। लटियाल माता की मूर्ति सं० १५१५ में एक पोकरना ब्राह्मण कल्ला-... फल्ला नामक ने सिन्ध से लाकर यहां एक ढाणी (झोंपड़ा) आबाद ... यहां रहने लगा। दस्तकारी में यहां ऊंट के बालों के और सूत ... (गदहे) अच्छी होती है। खनिज पदार्थों में गांवखोडाई में मट्टी पाई जाती है। हकूमत कस्बे के सिवाय लोहावट नाम का कस्बा व्योपार की मन्डी है।

बाली हकूमत—यह परगना जोधपुर शहर के दक्षिण पूर्व में है। खालसा भूमि २७४ वर्गमील है। जिसकी मालगुजारी ६० हजार रु० सालाना है। जमीन मटियाली है। पैदावार गेहूं, कपास, बाजरी, चने, तिल और मगी है। गेहूं, जौ और कपास बहुत होते हैं। कुएं बहुत हैं। इससे दो फसलें होती हैं। सूकड़ी मगाई, जवाई, सोमसर आदि ७ नदियां वर्षा में इस परगने में बहती हैं। यह परगना पुराने गोडवाड़ प्रांत का एक भाग है। जागीरी ठिकाने चानोद, बेड़ा, सान्डेराव, बिसलपुर, खुडाला, फालना और बूसी मुख्य हैं।

हकूमत कस्बा बाली जोधपुर से ८८ मील दक्षिण में है और बी. बी. एन्ड सी. आई. रेल्वे के स्टेशन फालना से ५ मील है। दस्तकारी में बांस की टोकरियां और रजाई, जाजम (दरी) की रंगत अच्छी होती है। सफेद पत्थर की खान गांव नाणा और साड़ड़ी में है। और कई स्थानों में गोडल यानी अभ्रक भी निकलता है।

बाली में पहले चौहानों का राज्य था। उस समय नाडोल राज-धानी थी। यहां राव लाखन (लक्ष्मण) बहुत प्रसिद्ध राजा हुआ है जो गुजरात से भी लगान लेता था और मेवाड़ पर हुक्म चलाता था। सुलतान महमूद गजनवी ने वि० सं० १०८२ में सोमनाथ पट्टन पर चढ़ाई की थी तब यह उससे लड़ा था। इसके वंशज इसके बाद जालोर, सां-चोर और आसपास में राज करते रहे थे। बाद में गोडवाड़ प्रांत (बाली

... [illegible] ... कहते हैं।

और देसूरी का इलाका) जालोर के मातहत हो गया। जब जालोर का राज्य अलाउद्दीन खिलजी के हाथ से नष्ट भ्रष्ट हुआ तो मेवाड़ के राणा ने इस परगने पर कब्जा कर लिया। सं० १८२६ में यह परगना मारवाड़ के अधिकार में आया। यहां एक छोटासा अच्छा किला भी है जिसे राज्य ने सं० १८२६ से १८३३ वि० तक में बनाया था। वरकाना, नाडोल, नाड-लाई और नाणा में पुराने जैनमंदिर हैं। जहां मेलाना मेले लगते हैं और वहां पुराने शिलालेख भी मिले हैं। सांडेराव, बीजापुर और खुडाला गांव में ऐतिहासिक सामग्री मिली है।

बाली परगने में एरनपुरा रोड रेल्वे स्टेशन से एक मील पर एक छोटासा गांव गलथनी नामक है। जहां के जागीरदार ने सं० १९६२ वि० में राजपूतों की नैसर्गिक निर्भिकता का परिचय दिया और जिस जागीर को ब्रिटीश सरकार अपनी छावनी के लिये लेना चाहती थी और राज्य ने हर्ष पूर्वक दे भी दी थी। परन्तु जागीरदार के मातृभूमि प्रेम और पुरातन कब्जे के कारण अंग्रेज सरकार को अपना स्कीम छोडना पडा। यद्यपि भारतसरकार ने ४०-५० हजार रुपया कूए आदि खुदवाने व भूमि ठीक करने में खर्च कर दिये थे। यह आदर्श उदाहरण मारवाड के जागीरदारोंका है। हमारा यह इशारा कप्तान ठा० किशनसिंह देवड़ाः रिटायर्ड स्क्वाडर्न कमान्डरः सरदार रिसाला-राज मारवाड़ की तरफ है जो कि गलथनी के सुयोग्य व प्रजाप्रिय जागीरदार हैं और जिनके पूर्वजो को जागीर महाराणा प्रताप से मिली थी। ये ठाकुर साहब बीसलपुर ठिकाने की छुट भाई हैं। और राजपूत जाति की उन्नति में रात दिन भाग लेते रहते हैं। आपकी लिखी "राजपूत जाति को सन्देश" नामक पुस्तक से आप के सच्चे, उच्च व उदार भावों का परिचय मिलता है।

बीलाड़ा हकूमत—यह परगना जोधपुर शहर के पूर्व में है। [illegible] भूमि २७६ वर्गमील है। जिसकी मालगुजारी १ लाख ५० हजार रुपये

१—सरकारी गजट राज मारवाड़ ([illegible] ९२४ ता० ८ दिसम्बर १९०६ ई०

[illegible] मुख्य जातियाँ जाट, ब्राह्मण, बनिये राजपूत, माली, मीणे

स्थानकवासी जैन साधु (ढूंढिया)

और बलाई हैं। सीरवी २७२३ हैं। जाट ६ हजार हैं। जोजरी व लूनी दो नदियें इस परगने में बहती हैं। पिचीयाक नाम के स्थान के पास बांध बांध कर जसवंतसागर नामक झील बनाई गई है। यह परगना बड़ा उपजाऊ है। फसलें दो होती हैं। भूमि रेतीली और मटियाली है जिस में गेहूं और जौ बहुत पैदा होते हैं। जागीरी ठिकाने बोरुन्दा, रीयां, साथीण और बोयल हैं।

हकूमत कस्बा बीलाडा है जो जोधपुर शहर से ४८ मील पूर्व में जोधपुर रेल्वे की पीपाड भावी लाईट रेल्वे ब्रांच का स्टेशन है। बीलाड़ा में और कई गांवों में पत्थर की खानें हैं। बीलाडे में मोटा देशी कपड़ा बहुत मजबूत और सुन्दर बनाया जाता है। यहां के रेजे, टुकड़ी और धोतीजोडे प्रसिद्ध हैं। पिचीयाक और मालकोसनी में नमक निकलता है। पीपाड नामक कस्बे में छपाई, रंगाई, रेजे-टुकड़ी (गाढा कपड़ा) अच्छे होते हैं। कहते हैं कि-बीलाडा कस्बे को राजा बलि ने बसाया था। यहां "आई माता" का पुराना मंदिर है। आईजी नवदुर्गा यानी देवी का अवतार कही जाती है। जो मुलतान और सिन्ध की तरफ से आबू व गोड़वाड प्रांत में होती हुई बीलाडे में वि० सं० १५२१ की भादों सुदि १५ शनिवार को आई और चैत्र सुदि २ सं० १५६१ शनिवार को बीलाड़े में स्वर्ग सिधारीं। इसके भक्त सीरवी ही अधिक हैं। जिन का गुरू "बीलाड़े का दीवान" कहलाता है। वह पुश्तैनी चला आता है और है भी बडा मालदार। क्यों कि-सीरवियोंसे उसे बहुत भेंट मिलती है। कहते हैं कि-एक बार महाराजा मानसिंह से एक पोलिटीकल एजेन्ट ने पूछा था कि-'मारवाड़ में कितने घर हैं? तो महाराजाने कहा था कि-" ढाई घर हैं। एक घर तो रीयां के सेठों का है दूसरा बीलाड़े के दीवानों का है और आधे घर में सारा मारवाड़ है।" यह दीवान अपने को राठोड़ राजपूत कहते हैं और कुछ काल से अपना पहिला विवाह राजपूतों में करने लगे हैं और दूसरा सीरवियों में। किन्तु इन की कन्याएं सीरवी जाति में ही ब्याही जाती हैं। दीवान को राज्य से ताजीम और और अदालती अखत्यारात हैं। यद्यपि बीलाड़ा कस्बा

वहाँ का उपजाऊ गांव है और सदा से खालसा ही रहा है तब भी यह

महाजन (वैश्य)

"आईजी के पुजारी" वंशपरम्परागत से "बीलाड़े के दीवान" कहलाते हैं।

सीरवी एक कृषक जाति है जो राजपूतों से निकली कही जाती है। कहते हैं कि—१२ वीं शताब्दि में ये जालोर पर राज्य करते थे। अलाउद्दीन खिलजी के अत्याचारों से भाग कर ये लोग बीलाड़े में आकर रहे और सीर अर्थात् खेतीबाड़ी करने लग गये जिससे "सीरवी" कहलाये। बाद में आईजी नाम की राजपूत महिला ने अपने पंथ में इनको मिला लिया। प्रत्येक मास की सुदि २ को आईजी की पूजा बीलाड़े में होती है। और उस रात को पंथ के सभी स्त्रीपुरुष मिल कर जो प्रीति-भोजन करते हैं, उस कारण से बहुत से इस पंथ को भी वाममार्ग की एक शाखा समझते हैं। आई माता के पंथवाले मरने पर दफनाये जाते हैं किन्तु दफनाये जाने के बाद उस पर नाम मात्र की कुछ अग्नि अवश्य जलाते हैं। सीरवियों के सिवाय इस पथ में सुनार, दर्जी, जाट, कुम्हार नाई, लोहार, भांबी (ढेड), सरगरा, चमार, धोबी आदि भी हैं।

सीरवी लोग आईजी के मंदिर को दरगाह कहते हैं। जिसमें सदा एक चिराग जगती रहती है और चौकी पर गद्दी बिछी रहती है। इन दोनों के ही लोग दर्शन करते हैं। जोत (चिराग) के लौ से काजल की जगह पीले रंग की चीज जमती है जिसे वे केसर कहते हैं। मंदिर दीवान की हवेली में है।

अन्य दर्शनीय स्थानों में हर्ष की डूंगरी, राजलानी और पिचियाक है। बीलाड़े के पास मरमोरा (माटमोर) नाम का एक बाग है। जिसके पास "कल्पतरू" नाम का एक वृक्ष है जो राजपूताने में सब से बड़ा है और वह ६० फुट घेराई में और २७५ फुट ऊंचा है। पिचियाक में वाल्मीक ऋषि का एक छोटासा मंदिर है जहां सालभर में एक मेला भी लगता है। मंदिर का पुजारी सरगरा जाति का है। सरगरा जाति चमारों की टहल चाकरी करा करती है। अछूत जाति के लोग इस मंदिर की पूजा करने को इधर उधर से आते रहते हैं।

१—मारवाड़ मर्दुमशुमारी रिपोर्ट सन् १८९१ ई० भाग ३ पृ० १०६

बीलाड़ा कस्बे के उत्तर में १ मील पर "बाणगंगा" है जो दो कुंडों में ज़मीन से उबकती है। चैत्र बदि ३० को सोमवती का मेला बाणगंगा पर और भैरवजी का माघ बदि ३० को गांव सावीन में अच्छे होते हैं

इस परगने में पीपाड़ एक व्यौपारिक कस्बा है। यह जोजरी नदी के दाहिने तट पर बसा हुआ एक पुराना शहर है। आबादी ७ हजार और आबाद घर १ हजार से कुछ अधिक हैं। हिन्दुओं में महाजन या राजपूतमाली अधिक हैं। मुसलमानों में छीपे अच्छे कारीगर हैं। उनकी छापी हुई जाजमें, तोशकें, रजाइयां, मेजपोश, पलंगपोश और छींटें आदि दूर २ तक बहुत जाती हैं। पीपाड़ के बसने आदि के विषय में मारवाड़ी गहलोतों के भाट अपनी पुरानी बहियों के प्रमाण से कहते हैं कि-बापा रावल का एक बेटा आभर मंडलीक नाम का था। वह मारवाड़ में आकर गुणामंड गांव का राजा हो गया था जो पीपाड़ से उत्तर में २५।३० मील पर है। उसके एक पुत्र पीपला रावल ने यह पीपाड़ बसाई थी जिससे उसकी सन्तान का नाम पीपाडा गहलोत हो गया था और उन्होंने बहुत वर्षों तक यहां राज्य किया था। पीपाड़ में पीपलाद माताका मंदिर बहुत पुराना समझा जाता है और कहते हैं कि-उसे गंधर्वसेन राजा ने बनाया था। इसकी भीतें तो बहुत पुरानी हैं जिस पर गधे के खुरों के से चिन्ह खुदे हुए हैं। दन्तकथाओं से जाना जाता है कि—गंधर्वसेन उज्जैन का पंवार राजा और विक्रमादित्य का बाप था। घोड़ों व गधों के चिन्हवाले मंदिर मारवाड़ में पचासों ही हैं। वे इतने पुराने नहीं हैं कि-इनको पहिले के माने जावें। हजार बारह सौ वर्ष के पुराने जरूर हैं। पीपाड़ भावी लाईट रेल्वे के शल्लागी स्टेशन के पास कापरडा गांव में जैनियों का एक प्रसिद्ध मंदिर है।

मालानी या बाड़मेर हकूमत—यह परगना राठौड़ वंश का पश्चिम में हिंडोला-पालना है। (अर्थात मालानी में ही राठोडों के सौभाग्य सूर्य का लालन पालन हुआ था।) यह राज्य का सब से बड़ा परगना जोधपुर शहर के पश्चिम में है और प्रायः सब ही भूमि छोटे २ जागीरदारों

के कब्जे में है। केवल एक गांव नेतरां खालसा है जिसके ४४ घरभोल भूमि है। जमीन यहां की रेतीली और पैदावार बाजरा, मोठ और तिल मुख्य हैं। पानी खारा पर कहीं २ आदमी व जानवरों के पीने
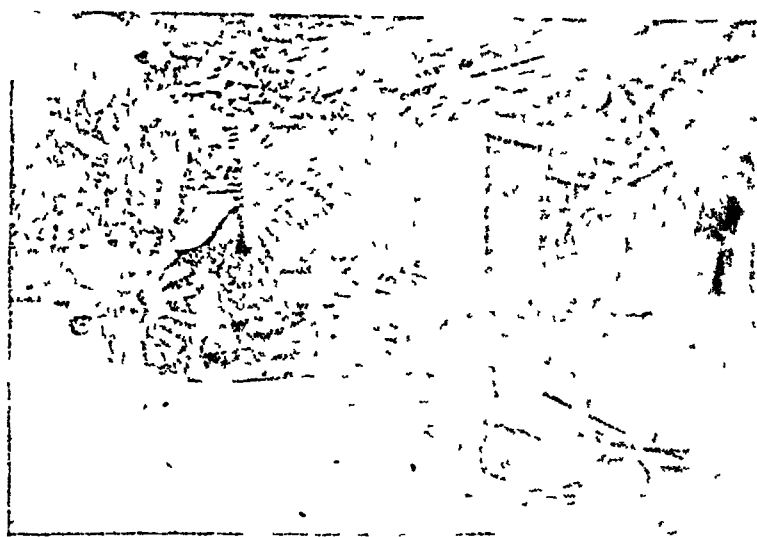
अछूत हिन्दू जुलाहा (मेघवाल-बलाई-बाम्भी)

योग्य तक नहीं है। यहां की भूमि अधिकतर ऊंट, भेड़, और बकरी चराने के लिये अच्छी है। नदी लूनी है। पहले हाकड़ा नदी यहीं होकर बहती थी जिसके चिन्ह अब तक मौजूद हैं। बाड़मेर, तरनावाड़ और सेतराऊ के पास झीलें या दलदल भूमि है। खेड़ जूना और किराडू के पुराने मंदिर देखने योग्य हैं। यह कुल परगना जागीरदारों में ही बंटा हुवा है जिसके मुख्य ठिकाने जसोल, सिन्धरी नगर गुड़ा, चोहटन, सेतराऊ, सियानी, वेसाला, सुगेरिया और बाड़मेर हैं। मालानी के घोड़े नामी होते हैं। वे एक घण्टे में १६-१८ मील जा सकते हैं।

यह परगना पहले पंवारों, चौहानों और गोहिलों के कब्जे में क्रमशः से रहा। बाद में राव आसथानजी ने खेड़ नामक गांव गोहिलों

जसोल के पास उजडा हुवा अब तक है-गोहिल क्षत्रियों से छीना
कुछ समय तक यह अलाउद्दीन खिलजी के कब्जे में रहा। राव स
खाजी के बड़े बेटे मल्लिनाथ के कब्जे में भी यह इलाका रहा। इससे
के नाम पर यह मालानी कहलाया। मारवाड़ में इस सम्बन्ध में एक क
वत प्रचलित है:—

मालेरा मढे ने वीरमरा गढे

अर्थात मल्लिनाथजी की सन्तान मालानी में साधारण कृषक
और वीरमजी की औलाद किले में रही।

कईयों का मत है कि- मल्लि, मल्लोई या मालव जाति से इस पर
का नाम मालानी पड़ा। इन लोगों में विन्सेंट स्मिथ आदि विद्वान
जिन्होंने अपनी "अर्ली हिस्टरी ऑफ इंडिया" में लिखा है कि-ई
३२५ के पूर्व जब सिकन्दर का आक्रमण भारत पर हुवा तब मल्लोई (म
माली) जाति ने उसका सामना किया था। उस समय यह जाति
(Hydraotes) नदी के दोनों तरफ अर्थात् पंजाब व सिन्ध में निव
करती थी। जहां से चल कर मारवाड़ में होती हुई मालवे पहुंच
तभी से मालव जाति से शासित अवन्ती देश का नाम "मालव
प्रसिद्ध हुवा और मारवाड़ के जिस प्रांत को इन्होंने बसाया था
मालानी नाम से कहलाने लगा। क्यों कि-यह सम्भव है कि-इसी
या माली जाति के अधिकार में जो प्रदेश था उसके वे स्वामी होने से
राव सलखाजी राठोड़ ने अपने ज्येष्ठपुत्र का नाम मल्लिनाथ रखा
बाद में कुछ इतिहासवेत्ताओं का इसी से अनुमान चल पड़ा कि-म
नाथजी के पीछे यह प्रदेश मालानी कहलाया। इन दोनों सिद्धांतों में
सत्य है, यह इतिहास के अनुसन्धान कर्त्ता ही निश्चय कर सकते
हम इसे यहां ही छोड़ते हैं।

मालानी के जागीरदार राज्य को थोड़सा खिराज-जिसको फ
जत कहते हैं-देते हैं यानी केवल १८ हजार सालाना देते हैं। इन ज
दारों ने अपने यहां पर लूट मार शुरू कर दी थी इस पर ८ हजार
सालाना राज्य को देने का वादा कर वि० सं० १८९१ (सन १८३५

में अंग्रेज सरकार ने यहांका राजप्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया। जो ता० १ आगस्ट सन १८९१ ई. (श्रावण वदि १२ सं० १९४८ वि०) को वापिस राज्य को मिला।

हकूमत का सदर मुकाम बाडमेर है जो जोधपुर रेल्वे का एक बड़ा स्टेशन है। आबादी ६ हजार और आबाद घर १ हजार हैं। कहा जाता है कि-१३ वीं सदी में राजा बाहड परमार ने इसे बसाया था। यहां एक छोटीसी पहाड़ी पर किला है।

मेड़ता हकूमत—यह परगना जोधपुर के उत्तर पूर्व में है। खालसा भूमि ४७१ वर्गमील है। जिसकी मालगुजारी से राज्य को आमदनी [illegible]

मुसलमान लखारा (चुडी पहिनानेवाला)

लाख रु० सालाना है। भूमि इस परगने में कई प्रकार की है। एक रेती-ली है जिसमें मोठ, बाजरा, गवार और तिल पैदा होते हैं। दूसरी मटि-याली है जिसमे चना होता है और तीसरी काली-जिसमें [illegible] भूरा जिसमें मूंग और जवार पेदा होती हैं। पांचवीं [illegible]

रेतो और दूटा भाखर यानी पहाड़ी, जिनमें कुछ भी पैदा नहीं होता है। फसल दो होती है। सावनू में जवार बाजरी, मोठ, मूंग और उनालु फसल में जौ, गेहूं और चने खूब ही पैदा होते हैं। इस परगने में गास अधिक पैदा होता है। बरसाती नदियें जोजरी व लूनी बहती हैं। जागीरी ठिकाने रीयां (मेड़तियों का), आलणियावास, रैंण, जसनगर (उर्फ केकींद) और भगरी हैं।

हकूमत कस्बा मेड़ता है जो जोधपुर से ८० मील पूर्व में जोधपुर रेल्वे का मेड़ता सिटी नामक स्टेशन कहलाता है। आबादी ८ हजार है। इस कस्बा को लगभग २ हजार वर्ष पहले पंवार मानधाता ने बसाया था। किन्तु वह तो उजड़ गया। अतः अब जो शहर है वह सं० १५१६ में राव दूदाजी राठोड़ ने फिर से बसाया था। सं० १६१३ में राव मालदेव राठोड़ ने इसे उनके वंशजों से छीन लिया। फिर सम्राट् अकबर के कब्जे में रहा जिसने यह महाराजा सूरसिंह को दिया।

मेड़ते में बड़ी २ लड़ाईयां हुई हैं। मेड़ते से २ मील पर गांव डांगावास मे संवत् १८४७ वि० मे मरहठा लोग फ्रेञ्च जेनरल डीबोयने की अध्यक्षता में राठोड़ों से लड़े थे। मेड़ता मजबूत शहरपनाह (परकोटा) से घेरा हुवा है। दर्शनीय स्थानों में किला "मालकोट" और जैन व चतुर्भुज (चारभुजा) का मंदिर तथा दादूपंथी साधुओं का अस्थल (स्थान) अच्छे हैं। यहां हर वर्ष फागुण सुदि ७ को बड़ा मेला लगता है। जिस में हजारों दादूपंथी दूर २ से आते हैं। यहां भगवान् चारभुजा का मंदिर बड़ा नामी है। कुल मेड़तिया राठोड़ जो मेड़ते को अपनी जन्मभूमि समझते हैं व चतुर्भुजजी का इष्ट रखते हैं। फलोदी गांव में (जो मेड़ता रोड कहलाता है) ब्रह्माणी माता और पारसनाथ का जैन मंदिर है। शिलालेखों से ज्ञात होता है कि-ब्रह्माणी माता का मंदिर संवत १०८८ में या उसके पहिले बना था। फिर मुसलमानों द्वारा तोड़े जाने पर जब २ अवसर मिला उसकी मरम्मत की गई। पहली मरम्मत सं० १४६५ में पड़िहार दूदा ने की। उस समय गहलोतों का राज्य मेड़ते में था। जिन का नाम इस परगने के और भी शिलालेखों में मिलता है। बाद में सं०

१४५५, १५३५ और १५५१, में इसकी मरम्मत हुई। यह मंदिर पुराने शिल्प और पत्थर के काम का अच्छा नमूना है। इसका बहुतसा भाग मुसलमानी राज्यों में मुसलमानों के मूर्ति तोड़नेवाले प्रबल हाथों से नष्ट हो चुका है। तो भी जितना कुछ बाकी है वह अब भी इस गिरी हुई दशा में भी अपनी झीनी और अनोखी कारीगरी की बारीकी और सुन्दरता का चमत्कार दिखानेके लिये बहुत है। ब्रह्माणी माताके मंदिर और
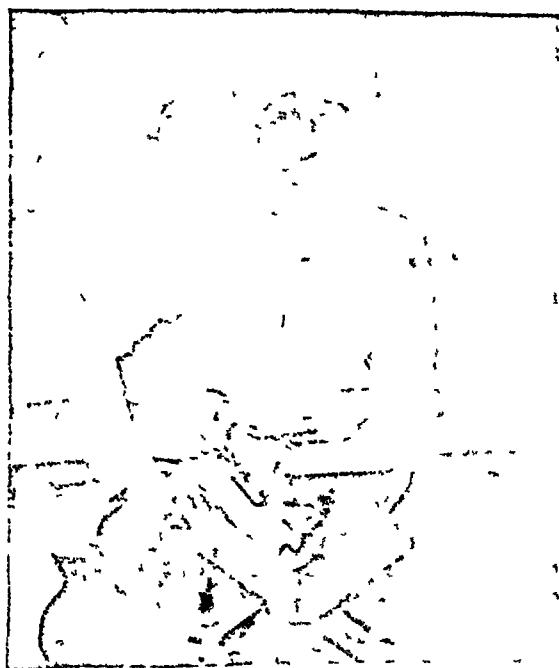
कुंभावत सम्प्रदायका साधु

रेल्वे स्टेशन (मेड़ता रोड) को बीच में पारसनाथजी का बड़ा भारी मंदिर जैनियों का है। जिसका शिखर ४ मील से दिखाई देता है। इसका काम सादा और संगीन है। शिखर भी साबित है जो पुराने समय का नहीं मालूम होता है। किसी पिछली मरम्मत में बनाया गया होगा जो

शनैः शनैः होता रहा है। इधर ५०-६० वर्षों में तो इस मंदिर की इमारत बहुत कुछ बढ़ गई है। यहां हर वर्ष आश्विन वदि १० को बड़ा मेला भरता है जो ६।७ दिन तक रहता है। इसमें जैनयात्री दूर २ से आते हैं। इस मंदिर की पूजा ब्रह्माणी माता के मंदिर के पुजारी करते हैं जो सेवग (भोजक) जाति के हैं और अपने को शाकद्वीपी ब्राह्मण होना बताते हैं। इनको कुछ मासिक वेतन और मूर्ति के आगे का चढ़ावा मिलता है। जैसा कि-जैनमंदिरों का दस्तूर है। वे हिन्दु मंदिरों के पुजारियों के समान स्याह-सफेद करने के मालिक न होकर मंदिर और माफी की जमीन की आमदनियों को अपने घरू खर्च और सुखविलास के कामों में मन चाही नहीं उड़ा सकते हैं। यही कारण हिन्दु मंदिरों से अधिक जैनमंदिरों के शोभायमान और सुन्दरदशा में होने का है।

मंदिर में जो तीन पुराने शिलालेख हैं उनसे ज्ञात होता है कि— यह मंदिर संवत् १२६० वि० से पहले बना था और इसका बनानेवाला श्रीसेल लक्ष्मण नामक कोई मनुष्य था। इसी को शायद पिछले भूल से "शुभकरणसा श्री श्रीमाल" कहने लगे हैं। इस मंदिर से मिला हुवा दक्षिण की तरफ एक छोटासा मंदिर शांतिनाथजी का है जिसको कई वर्ष पहले अजमेर के जैन जती नगजी ने बनाया था।

शिव हकूमत—यह परगना जोधपुर से पश्चिम में जैसलमेर और सिन्ध की सरहदों से मिला हुआ टेढा मेढा है। खालसा भूमि १६५ वर्गमील है जिसमें ६ गांव हैं। मालगुजारी लगभग २ हजार रुपये सालाना है। भूमि रेतीली है और बाजरी पैदावार है। पानी १२५ से ३०० हाथ की गहराई तक निकलता है। फसल एक होती है। कुंए इस परगने में बिलकुल नहीं हैं। जागीरी ठिकाना भी कोई नहीं है। सब भोमियों के गांव हैं जिनमें कोटड़े का भोमिया मुख्य है।

हकूमत कस्बा शिव है जो जोधपुर शहर से १२० मील उत्तर पश्चिम में और बाड़मेर रेल्वे स्टेशन से ३२ मील उत्तर को है। कहते हैं कि- इसे संवत् ९०० वि० में एक जोगी कामनाथने महादेव के नाम पर बसा-

या था। पहले इसका नाम शिवपुरी था फिर शिववाड़ी हुवा और अब केवल "शिव" ही कहलाता है। आबादी छ. सौ है। यह परगना पहले पंवारों और गोहिलों के कब्जे मे रहा। बाद में राठोड़ों के हाथ लगा। गाव थारवी मे मुल्तानी मट्टी (Fullers-earth) की खान है। यहा के ऊंट सवारी मे बहुत तेज और ताकतवर होते है।

शेरगढ़ हकूमत—यह परगना जोधपुर के उत्तर पश्चिम मे है। सालमा भूमि ८७ वर्गमील है और उसमे गाव केवल ३ है। इसकी माल्गुजारी ६ हजार रु० सालाना है। जमीन यहा की रेतीली है और जगह जगह रेत के टीबे है। इसमे . . . खेती के लायक है। जिसमे बाजरी और मोठ अधिक पैदा होते है। फसल . . . सावणु होती है। पानी २० से १०० हाथ की गहराई पर निकलता है। नदी . . . "बालेसर की नदी" नामक है जो बालेसर के पहाड़ से . . . (परगना पचपदरा) के पास लूनी नदी मे शामिल हो जाती है . . . और पाडू (चाक) मिट्टी की हैं।

हकूमत कस्बा शेरगढ है जो जोधपुर से पश्चिम मे . . . मील है। . . . हजार मनुष्यों की है और नजदीक रेल्वे स्टेशन बालोतरा है . . . मील दूर है। डाकखाना खास शेरगढ मे है। इस कस्बे का . . . है और यह पहले पड़िहारो के अधिकार मे था। बाद मे . . . राठोड़ राव ब्रहड़जी का भी अधिकार रहा। फिर यह तुर्कों के हाथ मे . . . अलाउद्दीन खिलजी के मरने पर राव मल्लिनाथ राठोड़ ने इस पर अधिकार कर लिया। यह कस्बा प्राय. घास फूस के झोपड़ों का ही है और . . . बेचते हैं बाजार यहा नहीं है। यहा के आदमी . . . होते हैं। आबहवा बहुत अच्छी है। शेरगढ का किला . . . मंदिर अवश्य अच्छी दशा मे है। देखने योग्य यहा कुछ नहीं है।

इस परगने मे जागीरदारों के ठिकाने . . . चामू है। ५ बड़े ठिकाने भोमियो के भी है। . . . गोपालसर, सेतरावा, बालेसर और थापनी . . . स्थान है जहा की छत्रियों मे कई शिलालेख है। . . . थापनी मे मेहाजी मागलिया (गहलोत) के मंदिर पर . . .

सांचोर हकूमत—यह परगना जोधपुर से . . . सालमा भूमि १०५ वर्गमील है। माल्गुजारी . . . हजार रु० सालाना . . . मे बलाई, राजपूत ब्राह्मण बिश्नोई, भील, . . . जिसमे गेहूं बाजरी होती है। नदी लूनी वर्षा मे . . . गेहूं होते हैं। नमक की खाने गाव . . . का पानी जम कर नमक बन जाता है। इस परगने . . .

था। चौहानों के बाद १३ वीं सदी में मुसलमानों का राज्य रहा। बाद में कई बार भिन्न २ समय में जोधपुर का कब्जा हुवा किन्तु वह स्थायी नहीं रहा। सं० १७६५ में जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह व जयपुर महाराजा सवाई जयसिंह ने मुगलों से छीन कर आपस में आधा आधा बांट लिया। यहां बहुत पुराना किला है जो खंडहर रूप है। इस सांभर परगनेका नाम सन १८२१ ई. की मर्दुमशुमारी के पहले 'मारोठ परगना' था। यह परगना अब तक गोडाटी (गोडावाटी) कहलाता है। क्यों कि-पहले यहां गौड क्षत्रियों का राज्य था। गौडों से ही इसे राठोडों ने लिया था। शायद गोडवाड का इलाका भी इन्हीं गौडों के कारण उक्त नाम से प्रसिद्ध हुआ हो।

सिवाना हकूमत—यह परगना जोधपुर से दक्षिण में है। खालसा भूमि ६३ वर्गमील है जिसकी मालगुजारी १५ हजार रु० सालाना है। भूमि रेतीली और कहीं २ पहाडी भी है। दक्षिण में पहाड़ियें हैं जिनमें गहरे जंगल हैं। बाजरी, गेहूं मुख्य पैदावार है। लनी, [illegible] और बांडी नदी वर्षा में बहती है। छप्पन के पहाडों का सिलसिला इस परगने तक आया है। जहां प्रातःस्मरणीय वीर दुर्गादास ने महाराजा

१—जैसा कि हम पहले पृष्ठ १५९ में लिख आये हैं कि [illegible] का स्वांग भर कर बालक अजीतसिंहजी को [illegible] दिल्ली से निकाला था। परंतु राजा रूपसिंहजी [illegible] ([illegible]) [illegible] से शाही पहरा के होते हुवे भी बालक अजीत को लाकर मुकुन्ददास [illegible] वाली "गोरा धाय" नामक वीरांगना थी जो [illegible] से थी। यही गोरा महतरानी का स्वांग भर कर टोकरी में [illegible] से बाहर ले आई थी। इस सेवा के बदले में बाद में उसे [illegible]। जिनकी सनदें व खास रुक्के (सं. १७४१ द्वितीय [illegible] सुदि २, सं. १९५४ सावण सुदि १० इत्यादि) [illegible] इस गोरा धाय की बनवाई विशाल 'गोरा धाय बावडी' ([illegible] शहर में पोकरन की हवेली के पास [illegible] है। [illegible] की बनवाई बावड़ी भी शहर में [illegible] दरवाजा के पास है।
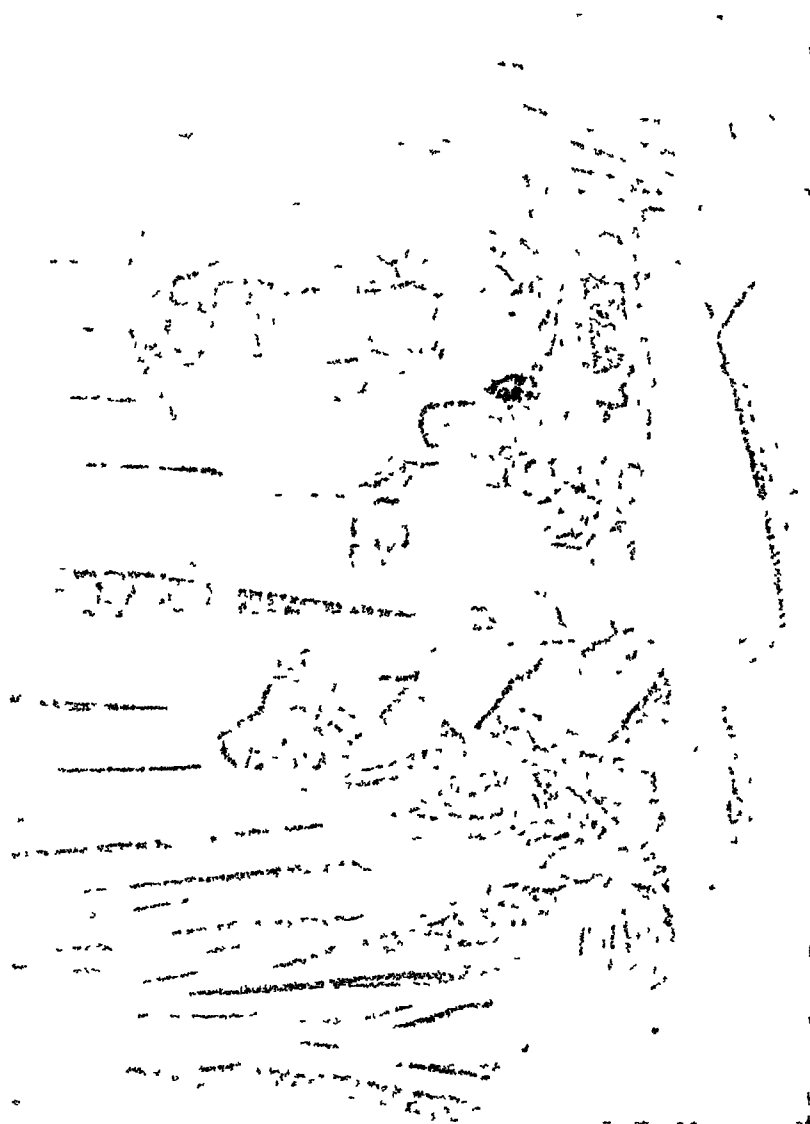
गांडा (बांसकी टोकरी बनानेवाला)

अजीत के साथ विपत्ति का समय काटा था। नमक की एक खान गांव सांवरे में है। पहले हिंगलाज के पहाड़ से तांबा और ... के पहाड़ से सीसा और लोहा निकलता था। जागीरी ठिकाने कल्याणपुर, ..., समदड़ी, कोटड़ी और पाटरू हैं।

हकूमत कस्बा सिवाना जोधपुर शहर से ५६ मील दक्षिण पश्चिम में ३ हजार बस्ती का है। जोधपुर रेलवे के समदड़ी स्टेशन से १० मील दूर है। इसको बसानेवाले पंवार क्षत्रिय थे। वीरनारायण पंवार ने यहां पर किला बनाया था जो अब तक है। यह अलाउद्दीन खिलजी के कब्जे में भी रहा है। अलाउद्दीन के पीछे राव मल्लिनाथ राठोड़ के भाई जैतमाल ने कब्जा कर लिया और कई पीढ़ी तक उनके वंशजों के हाथ में रहा। बाद में राव मालदेव का अधिकार हो गया। अकबर बादशाह ने राव चन्द्रसेन से छीन कर उसके एक भतीजे राठोड़ कल्ला रायमलोत को दे दिया। उससे मोटा राजा उदयसिंह ने लड़ कर छीन लिया। महाराजा जसवन्तसिंह (प्रथम) के देहांत के पश्चात् औरंगजेब ने राजा सूजानसिंह राठोड़ को दे दिया जिसके वंशज अजमेर जिले के ठिकाने जुनिया और पीसांगन के इस्तमुरारदार हैं। किन्तु अजीतसिंह ने उनके पुत्रों से वापस छीन लिया तब से राज्य में सामिल है। दर्शनीय स्थानों में कल्ला रायमलोत राठोड़ का थड़ा है। किले में और ... पहाड़ी पर महाराजा अजीत के बनाये बुर्ज हैं। ऐतिहासिक स्थान समदड़ी, ...ड़ा और कुंईपा है। सिवाने का किला पहाड़ पर है। नाई और ... दर्जी को रात के वक्त किले में नहीं रहने देते हैं। क्यों कि इन लोगों के भेद से ही यह किला राजा उदयसिंह ने कल्ला रायमलोत से जीता था।

सोजत हकूमत—यह जोधपुर शहर से पूर्व में है। ... भूमि ३७० वर्गमील है। जिसकी मालगुजारी १ लाख १६ हजार रुपये वार्षिक है। परगने की भूमि रेतीली व मटियाली है। पैदावार कपास, गेहूं, बाजरा, तिल, मक्की और चना है। लूनी, सूकड़ी और लीलड़ी नदियां इस परगने में बहती हैं। जागीरी ठिकाने आऊवा, चडावल, चंडालिया और ... मुख्य हैं।

सदर मुकाम सोजत रेलवे स्टेशन सोजत रोड से ७ मील और जोधपुर से ४८ मील दक्षिण पूर्व में है। आबादी १० हजार है। यह नगर सूकड़ी नदी पर बसा हुआ है। इसको पहले तांबावती नगरी कहते थे। यह कस्बा उजड़ जाने पर हूल (गहलोत) क्षत्रियों ने सं० ११११ वि० में पुनः सेजल माता के नाम पर बसाया था। इससे इसका नाम सोजत पड़ा। राव जोधाजीने सं० १५१२ में इसे जीता। बादशाह अकबर के समय कई बार यह खालसा हुआ किन्तु फिर जोधपुर को मिल गया। किसी दूसरे को नहीं मिला।

सोजत शहर का परकोटा पक्का बना हुआ है। बीच में पहाड़ी पर पुराना किला है। पुराने किले के नीचे राव मालदेव के ज्येष्ठपुत्र राम का बनवाया हुआ रामेलाव है जिसके बराबर खानबावड़ी है। दूसरा किला शहर के बाहर महाराजा विजयसिंह ने बनवाया था। इसमें नरसिंहजी का मंदिर होने से इसे प्रायः "नरसिंहगढ़" कहते हैं। महाराजा की पासवान गुलाबराय ने उस समय यहां एक नया शहर बसाने की इच्छा की और उसका परकोटा भी बना लिया था किन्तु वह संसार से चल बसी। इस कारण वह आबाद नहीं हुआ।

दस्तकारी में सोजत में घोड़े की काठियें, बंदूक, उस्तरा, कैंची, तलवार, लगाम और लोहे की चीजें तथा अजवाइन (अजवां), मेहन्दी और लालमीर्चें बड़ी प्रसिद्ध हैं। पत्थर व चूने की खानें भी हैं। गांव बगड़ी में हाथीदांत और लकड़ी के खराद का काम अच्छा बनता है।

भूमि के अधिकार

मारवाड़ की जमीन दो हिस्से में बंटी हुई है। जो खालसा और जागीर कहलाती है। राज्य के खास अधिकार में जितनी भूमि है वह "खालसा" कहलाती है। और जो जागीरदारों के अधिकारमें है वह "जागीर" कहलाती है। जागीर की मालगुजारी जागीरदार ही लेता है। वह सिर्फ राज्य को मुकर्रर खिराज देता है। जमीन चाहे खालसा हो या जागीर उसके किसानों से जिस रीति से मालगुजारी वसूल की जाती है वह या तो बटाई (लटाई) या बीगोड़ी है। बटाईका अर्थ है

पैदावार को बांट कर राज्य में हिस्सा लिया जाना । और बीगोडी से मतलब फी बीघा जमीन पर नकद लगान लेना है । यह रीत सर्वत्र समान नहीं पाई जाती है । गांवकी आर्थिक (माली) दशा देखने से कहीं पर रबी (उनालू) फसल में से आधा से चोथाई तक या पांचवें हिस्से तक लगान (मालगुजारी) ली जाती है । और खरीफ (सियाल) फसल पर तिहाई से छठा हिस्सा तक लगान ली जाती है । अब अधिक तर रीवाज बीगोडी वसुल करनेका चल पड़ा है । और जो दुबारा बंदोबस्त (सेटलमेन्ट) ४० वर्ष बाद सन १९२१ ई० में हुआ है उस में बीगोडी प्रायः ३० फी सैकडा बढा दी गई है । जिसने किसानों पर लगान का अधिक भार प्रतीत होता है ।

खालसा जमीन पर काश्तकार तीन प्रकारसे कब्जा रखते हैं । एक तो "बापी" अर्थात वह जमीन जिस पर किसान वंशपरम्परा से कब्जा रखता है और उसे वह बेचान या रहन कर सकता है । इसके एवज में उसे दरबार को लगान देना पड़ता है जो मुकर्ररा लगान से पौन हिस्सा होता है । दूसरी " गैरबापी " जमीन जिसको कोई भी मनुष्य मात्र दरसाल मुकर्रा पूरी लगान दे कर बो सकता है । तीसरी " माफी " की जमीन जिस पर या तो कुछ भी लगान नहीं देना पडता या थोड़ासा देना होता है । इस माफीकी खास किस्में ये हैं–सासण डोहली, भोम भोमिचारा, डूम्बा, इनाम और पसायता । " सासण " या शासन उस जमीनको कहते हैं जो मंदिर, मठ आदि धर्मस्थानों तथा ब्राह्मण राव भाट, चारण, साधु आदि को धर्मार्थ दी गई हो; किन्तु जब किसी गांव के किसी हिस्सेकी जमीन, खेत या बेरा (कुआ) किसीको दान दिया जाता है तब वह " डोहली " (दोहली) कहलाता है । इन में सिराज या हुक्मनामा नहीं लिया जाता है । खेत या बेरा जो दरबार से किसी को दिया जावे उसे " भोम " कहते हैं । यह दो प्रकार की होती है । एक तो मूंडकटी की भोम और दूसरी माफी की भोम । मूंडकटी के भोमियों से भोमबाब यानी कुछ भी लगान नहीं लिया जाता । क्यों कि उन के पूर्वज राज्य के लिये बलिदान हो चुके थे । और दूसरी " माफी-

दार भोम" होती है जो किसी प्रकार की सेवाओं के बदले में-जैसे गांव की रक्षा करना, जरायम पेशा लोगोंकी खोज लगाना, खजानेके रुपयोंके साथ जाना और दौरेपर आये हुये अफसरोंके पहरेका प्रबन्ध करना इत्यादि के बदले में उनको मिलती है। राठौड़ राज्य के पूर्व जिन जागीरदारोंकी जमीनें थीं उस जागीर को 'भोमिचारा' कहते हैं। मालानी परगनाके राठौड़ जागीरदारों के पास भी ऐसीही जागीर है। उन पर लागबाग (टेक्स) कुछ नहीं हैं। वे सिर्फ फौजबल अर्थात एक प्रकार का थोड़ा-सा खिराज दरबार को देते हैं। "डूम्बा" वह जमीन है जिसके लिये सदा एक मुकर्रर लगान ली जाती है और ऐसी जमीन इस लिये दी जाती है कि जमीन आबाद हो व बाई जाय। इसके कब्जेवालोंसे किसी प्रकारकी सेवा या लागबाग नहीं ली जाती। कोई भी गांव दरबार से या जागीरदार से बतौर डूम्बा के दिया जा सकता है। डूम्बाकी जमीन अधिकतर बाली और देसूरी परगनोंमें पाई जाती है। "इनाम" वह माफी की जमीन है जो राज्य की किसी सेवा के उपलक्ष में दी जाती है। कभी २ यह उस मनुष्य के जीवन काल तक ही रहती है जिसको वह मिलती है। उसको वह बेच नहीं सकता पर गिरवी रख सकता है।

इन सब माफी जमीन में एक शर्त यह है कि जिसको वह मिली है, उसके वंश में कोई पुरुष अधिकारी न रहे तो दरबार में वापस जब्त हो जाती है। और गोद भी मोरिसआला अर्थात मूल पुरुष, जिस को दरबार से जमीन मिली हो, उस के सन्तानमें से ही लिया जा सकता है। यह कानून संवत १९५२ में बना है। दूसरी शर्त यह है कि २८ वर्ष से अधिक के लिए माफी जमीन गिरवी नहीं रखी जा सकती। यदि रखी जावे तो वह खालसा कर ली जाती है। विशेष विवरण इस सम्बन्ध का "आर्जि कवायद बाबत बापीदारान व गैर बापीदारान" से जान हो सकता है।

राज्यमें जागीररूप मिली हुई किसी तरह की जमीन को ८० वर्ष से अधिक काल के लिये न बेच सकते न रहन (Mortgage) रख सकते हैं। राजाओंके द्वारे वंशजोंको जीवन निर्वाहके लिये या किसी को

किसी खास नौकरी के कारण मिली हुई भूमि "जागीर" कहलाती है। ठाकुरों (सरदारों) के छोटे कुंवरों का जो जमीन दी जाती है वह "जीवका" कहलाती है। यह जीवका जागीरदार अपने ठिकानेकी हैसियत के माफिक छुटभाई व पुत्रको देता है और शासक महाराजा अपने भाईयों व पुत्रों को जो महाराज या महाराज कुमार कहलाते हैं क्रमशः से उनको ५० हजार वार्षिक की जागीर "जीवका या ग्रासनी" (Maintaince allowance) मिलती है। बाकी दूसरे तरह की भूमि में मृत पुरुष के पुत्रों में बराबरी का बंट होता है।

तीन पीढीके बाद राजाओंके पुत्रों को 'रिखराज'[1] (रेख चाकरी) और हुकमनामा (नजराना) देना पड़ता है। उस समयसे उनकी उपाधि "महाराज" के स्थान में "ठाकुर" हो जाती है। निःसन्तान मरने की दशा में वह भूमि देनेवाले के वंशमें वापस चली जाती है। जो गांव किसी दूसरे जागीरदार को लिख दिया जावे या जब्त किया जावे तब पहले जागीरदार के पास जो जमीन रहे उसे "जुनी जागीर" कहते हैं। जिस गांव मे कुछ हिस्सा श्रीदरबार का और कुछ हिस्सा जागीरदार का शामिल हो, उसे "मुस्तरका" कहते हैं।

जागीरदार

जागीरदार मारवाड में बहुत जियादा हैं। वे करीब २८१ हैं। खालसे से ८ हिस्से अधिक भूमि उनके अधिकार में है। जिनकी सालाना आमदनी एक करोड रुपय से कम नहीं है। यह जागीरदार राज्यको लगभग ५ लाख रुपये रेख-चाकरी (रिखराज) में सालाना देते हैं। इनमें से ५९ को जो बड़े और लायक हैं—दरबार ने दीवानी और फौजदारी के अख्तियार हैसियतके मुजिब तीन दर्जों में दिये हुये हैं। जिससे उनकी जागीर की प्रजाका इन्साफ राज्यके कानून के मुता-

1—सुना जाता है कि महाराजा [illegible] महाराजाओं की [illegible] पीढीसे और रावराजाओं की तीसरी पीढीसे [illegible] किया था।

तवीन (अग्निदेव पूजक)

विक होता है। इनमें १२ तो पहले दर्जे के और ३० दूसरे दर्जे तथा बाकी तीसरे दर्जे के हैं।

बडे २ जागीरदारों को मारवाड में "ताजीमी सरदार" कहते हैं। इनको ४ प्रकार की इज्जत राजदरबारमें अपने २ मुकर्रर दर्जेके मुताबिक मिलती है। पहली ताजीम "इके वडी" है यानी ऐसे ताजीमी सरदारके राजदरबारमें आने पर महाराजा साहब सिर्फ खडे हो जाते हैं।

दूसरी "दोवडी" ताजीम अर्थात् सरदार के पहुंचने पर और लौटने पर दोनों समय महाराजा खडे होते हैं। तीसरी ताजीम "बांह पसाव" जिसमें महाराजा सरदार के कन्धे पर हाथ लगाते हैं। परन्तु उसको अपने हृदय पर नहीं लगाते हैं। चौथी "हाथ का कुर्ब" है, जिसका मतलब यह है कि महाराजा साहब खडे होते हैं और सरदार उनके सामने अपनी तलवार रख शिर झुका 'खम्मा घणी' (नमस्कार) करता है और महाराजा साहब की पोशाक को छूता है। उस समय महाराजा साहब उस सरदार के कन्धे पर हाथ रख कर उस हाथ को अपने हृदय पर रखते हैं।

इन सब ताजीमी सरदारों को महाराजा साहब की तरफ से वंश परम्परा से दाहने पांव में सोना का कडा पहनने का अधिकार है और उनकी ठकुरानियों को भी पांवो मे सोने का गहना पहनने का अधिकार है। विना राज्य की आज्ञा के कोई भी स्त्रीपुरुष पावों मे सोने का गहना नहीं पहिन सकता है।

जो ताजीमी सरदार राठोड राजवंश से निकले हुये हैं वे भाई बेटे कहलाते हैं और जो अन्य राजपूत वंशों (भाटी, गहलोत, चौहान हाडा, देवड़ा और कछवाहा आदि) के हैं वे "गनायत" अर्थात् सगे सम्बन्धी कहलाते हैं। क्यों कि-उनके साथ राठोड खांप (Clan) के जागीरदारों का विवाह सम्बन्ध हो सकता है। यह कुल ताजीमी सरदार २९० हैं। जिनका ब्योरेवार नकशा इस प्रकार हैः—

इन राजपूत सरदारों में चांपावत और कूंपावत शाखा के जागीरदारों की राजदरबार के समय दाहिना तरफ बैठक होती है और जोधा, मेड़तिया व उदावतों की बैठक महाराजा साहब बहादुर के बांए तरफ होती है। पोकरन, आउवा और आसोप के ठाकुरों में से जो सब से पहले आता है वही महाराजा के दाएं तरफ सब से ऊपर बैठ जाता है। इसी प्रकार रीयां, रायपुर, रास, नींमाज और खरवा के ठाकुरों में जो सब से पहले आता है उसको बांए तरफ पहली बैठक मिलती है। और जब ऊपर लिखे हुए सिरायतों में से कोई भी हाजिर न हो तो आलनियावास और भादराजुन के ठाकुरों में से कोई ठाकुर इनकी जगह दाएं या बाएं जैसी जरूरत हो, पहला स्थान पाता है।

दरबार में दाहिने व बाहिने बैठने की प्रथा राव जोधाजी ने कायम की। उससे पहले सरदार लोग दरबार में हर कहीं बैठ जाते थे। राव जोधा ने अपनी दाहिनी तरफ भाईयों को व बांई तरफ बेटों को जगह दी। उसी प्रकार अब भी उन भाईयों से निकले हुए वंश के सरदार दाहिनी तरफ और पुत्रों के वंशवाले जागीरदार बायें तरफ बैठते हैं। बाद में इन सरदारों के वास्ते ताजीम और पद (कुरब) के कायदे राजा सूरसिंह ने मुगल बादशाहों के ढंग पर नियत किये।

राज दरबार में जब कोई सरदार आता है तो ड्योढ़ीदार (द्वारपाल), चोबदार उनके नाम की सलामती इस प्रकार बोलते हैं—"मंगलसिंह गुमानसिंहोत खांप चांपावत हाजिर महाराज सलामत पृथ्वीनाथ सलामत।" यह एक प्रकार का परिचय होता है। जिस पर महाराजा साहब उस जागीरदार के ताजीम के अनुसार खड़े होकर इकेवड़ी, दोवड़ी, बांवपसाव व "हाथ का कुर्ब" से आदर देते हैं।

जब महाराजा साहब कोई दरबार करते हैं या कोई खास कार्य होता है तो ताजीमी सरदारों के नाम से अपने दस्तखत से जो पत्र लिखते हैं उसको "खास रुक्का" कहते हैं। बिना खास रुक्के के ताजीमी सरदार दरबार में हाजिर नहीं होते। खास रुक्के की इबारत इस प्रकार होती है कि—"ठाकुरां... जी सुम्हारा जुहार बंचिजे।" इसके आगे मजमून लिखा जाता है।

उस पर खिराज लिया जाता है। चाहे इस अनुमानित आमदनी से ठिकाने की आमदनी अधिक व कम भी हो।

पोकरन के ठाकुर प्रधान सरदार हैं और वे प्रधान (Premier Noble) कहलाते हैं। क्यों कि-तमाम जागीर और जमीन जो दरबार से दी जाती है उसकी वे तसदीक करते हैं और जब कभी महाराजा साहब की सवारी हाथी पर होती है तो उनके पीछे वे हौदे पर बैठते हैं। और मोरछल से महाराजा पर चंवर करते हैं। इस पद के एवज में उनको मांजल और दूंदाड़ा नामक दो गांव दिये हुवे हैं।

दो दूसरे सरदार जो यद्यपि पदाधिकारी (Office bearer नहीं हैं परन्तु वंशपरम्परा से निम्न रस्म अदा करते हैं:—

ठाकुर बगड़ी जो राठोड़ों की जैतावत शाखा के मुखिया हैं वे नये महाराजा के राजसिंहासन पर बैठने पर अपने अंगूठे को चीर कर उस के रक्त (आजकल कुमकुम) से महाराजा के ललाट पर तिलक करते हैं। और नये महाराजा के कमर में तलवार बांधते हैं। यह टीका और तलवार बांधने का कार्य वंशपरम्परा से बगडी ठिकाने का है जो राव सूजाजी के बाद से चला आता है। बगड़ी मारवाड़ का एक अच्छा ठिकाना है जो सं० १५१८ वि० में राव जोधाजी ने अखैराज जैतावत को इनायत किया था।

दूसरा मुंडियाड़ गांव के बारहठ जो कि-रोहड़िये चारण हैं और महाराजा के राजतिलक व विवाह के समय आशीर्वाद (Blessings) देते हैं और उसके पुरस्कार में महाराजा साहब से उन्हें सिरोपाव (सिलअत) व एक हाथी दिया जाता है।

जागीरदारों में से मुख्य उमरावों (सिरायत) व सरदारों का विशेष वर्णन इस प्रकार है:—

१—पोकरन—रावबहादुर ठाकुर मंगलसिंहजी सी. आई. ई. राठोड़ोंकी चांपावत शाखा में अत्यन्त प्रतिष्ठित हैं। और राव जोधाजी के छोटे भाई चांपाजी से १५ वीं पीढ़ी में हैं। इसी कारण से आप चांपावत राठोड़ कहलाते हैं। इनकी जागीर पहले पहल वि० सं० १७८५ की फागुन सुदि ६ को महाराजा अभयसिंहजी ने ठा० महासिंहजी को बख्शी थी[1]। यह जागीर जोधपुर शहर से ६० मील उत्तर पश्चिम में है। और इसके आधीन [illegible] गांव हैं जिनसे ९२,१३५ रु० अनुमानिक

[1] १—[illegible] पद थी। महासिंहजी से ८ वीं पीढ़ी में वर्तमान ठाकुर हैं।

आय है और राज्यको रेख चाकरीका रु. १२६९.६॥=) देने हैं। वर्त्तमान ठाकुर साहब, दासपां ठिकाने से ई०स० १८७८ के जनवरी मास मे पोकरन ठा. गुमानसिंहजी के गोद आये हैं। आपका जन्म वि० सं० १९१७ की मार्गशीर्ष वदि ७ (=१५-११-१८७० ई०) को हुवा। ई० स० १८८२ की ता. १४ मार्च को १२ वर्ष की आयु में आप विद्याध्ययन के लिये अजमेर के मेयो कॉलेज में भरती हुवे और १८८९ ई० की ता. १ अप्रेल तक आप वही पर पढते रहे। इसी वर्ष आपने कलकत्ता युनिवर्सिटी से द्वितीय श्रेणी में एन्ट्रेन्स की परीक्षा पास की। पश्चात् सं०१९४६ (ई० स० १८८९) में आप जोधपुर स्टेट कौंसिल के मेम्बर बनाये गये। करीब ५ वर्ष तक इस पद पर रहे। इसके बाद सं० १९६० मे कौंसिल टूट जाने पर आप कन्सलटेटिव कौंसिल के सभासद बना दिये गये। ता. २७ अप्रेल १९०४ ई० को आप को अंग्रेज सरकार से "रावबहादुर" का खिताब मिला। वि० सं० १९६८ में फिर कौंसिल बनी और आप फिर १९७३ तक इसके मेंबर रहे। अन्त में महाराजा सुमेरसिंहजी के स्वर्गवास हो जाने पर १९७५ वि० मे पुनः कौंसिल की रचना हुई तब से अब तक आप पी० डब्ल्यू० डी० मेंबर का कार्य करते हैं। सं० १९८१ में आप सी० आई० ई० के पद से भूषित किये गये।

आप एक शांत प्रकृति के व्यक्ति हैं। सन १८७७ ई० में आप जागीर के उत्तराधिकारी हुवे। आपने जब से अपनी जागीर का काम संभाला है तब से उसका प्रबन्ध भी दिन दिन उन्नति पर है। पोकरन के पास आपने मंगलपुरा और सूरजपुरा नामक दो छोटे मोहल्ले भी नये आबाद किये है। आप को मकान आदि बनवाने का भी बड़ा शौक है। पोकरन के किले में आपने ७५०००) रुपये की लागत का "मंगलनिवास" नामक एक भवन बनवाया है। जोधपुर में भी रेजीडेंसी के पास नया बंगला हाल ही में तयार करवाया है।

ठाकुर साहब के ४ पुत्र हैं। इनमें से बडे पुत्र रावसाहब कुँवर चैनसिंहजी एम. ए; एल.एल. बी. इस समय जोधपुर चीफकोर्ट के जज हैं। दूसरे पुत्र ठा० कुशालसिंह गीजगट (जयपुर राज्य) में गोद

गये हैं। तीसरे कुं० सुल्तानसिंह मारवाड़ के मालानी परगने के जुडीशल सुपरिन्टेन्डेन्ट हैं और चौथे कुंवर गंगासिंह जोधपुर रेल्वे में असिस्टेन्ट ट्राफिक सुपरिन्टेन्डेन्ट (ए० टी० एस०) के पद पर हैं।

२—आउवा—के ठाकुर नाहरसिंहजी चांपावत राठोड़ हैं और इन

आउवा के ठा. नाहरसिंहजी चांपावत

का जन्म वैशाख वदि ४ सं० १९६५ वि० में हुआ था। यह अपने पिता ठा० प्रतापसिंहजी के स० १९६६ वि० में स्वर्गवास हो जाने पर जागीर के उत्तराधिकारी हुवे हैं। यह जागीर ठिकाना सोजत परगने में है और इसकी सालाना आमदनी १६,००० रु. और रेख चाकरी का रु ३२४-॥) देता है व १५ गांव हैं। यह जागीर महाराजा अजीतसिंहजी ने सं० १७६२ में चांपावत तेजसिंह को बख्शी थी। तेजसिंहजी से वर्त्तमान ठाकुर ११ वीं पीढ़ी में हैं। लाम्बाया और रोहट ठिकानों के ठाकुर इस ठिकाने के नजदीकी भाई हैं। वर्त्तमान ठाकुर साहब नावालिग होने से ठिकाना "कोर्ट आफ वार्डस" के अधिकार में है। और ठाकुर साहब मेयो कालेज अजमेर में शिक्षा पा रहे हैं।

३—आसोप—के ठा० रावबहादुर चैनसिंहजी राठोड़ों की कूंपावत शाखा में सब से अधिक प्रतिष्ठित हैं और राव जोधाजी के भाई कूंपा के वंशज हैं। इनकी जागीर (ठिकाना आसोप) जोधपुर से उत्तर पूर्व में ५० मील पर है। आमदनी ३६ हजार सालाना है। यह ठिकाना सं० १७८३ वि० में राठोड़ कनीरामजी कूंपावत को महाराजा अभयसिंहजी ने इनायत किया था। पहले गांव रनकूंडीया पटे था। कनीरामजी से वर्त्तमान ठाकुर ८ वीं पीढ़ी में हैं। इनका जन्म सं० १९१८ वि० में हुआ था। आप बारनी के ठा० दौलतसिंह के पुत्र हैं और इन्हें इनके बड़े भाई ठा० शिवनाथसिंहजी ने गोद लिया है। सं० १९३० में आप जागीर

---

१ ठिकाने के मैनेजर ठा० नाथूसिंह चांपावत एक सुयोग्य [illegible] सज्जन हैं। इन्होंने "आउवा ठिकाने की ख्यात" बड़े परिश्रम [illegible]। यदि इसी प्रकार प्रत्येक ठिकाने का इतिहास तयार हो जाय तो जागीरदारों [illegible] हास की बहुत कुछ कमी पूरी हो सक्ती है। जोधपुर राजवंश और [illegible] इतिहास तयार करने के लिये राज्य की ओरसे सं० १९४४ में [illegible] स्थापित हुवा था किन्तु वह महकमा कोल्हू के बैल की तरह [illegible] पर आज दिखाई देता है। अतः जागीरदारों को आउवा ठिकाने का [illegible] करना चाहिये।

के उत्तराधिकारी हुवे। आप के पुत्र एक कुँवर फतहसिंहजी हैं जिन का जन्म सं० १९५० में हुआ है। ठाकुर साहब स्वर्गीय महाराजा सर जसवन्तसिंहजी और महाराजा कर्नल सर सरदारसिंहजी के राज्यकाल में स्टेट कौंसिल के तथा स्वर्गीय महाराजा मेजर सर सुमेरसिंहजी की नाबालगी के समय में राज्य की कन्सलटेटिव कौंसिल के मेंबर रहे हैं। अंग्रेज सरकार से रावबहादुर का खिताब आप को ता०२ जनवरी सन १९११ ई० में मिला है।

४—रीयां—रावबहादुर ठा० विजयसिंहजी मेड़तिया राठोड़ हैं। इनके अधिकार में ८ गांव की जागीर है। जिसकी आमदनी रु०३६,१०८रु० सालाना है। यह ठिकाना सब से पुराने ठिकानों में से एक है और इसे सं० १६७५ में महाराजा गजसिंहजी ने गोपालदास राठोड़ को इनायत किया था। गोपालदासजी से वर्तमान ठाकुर १३ वीं पीढ़ी में हैं। इनका जन्म सं० १९२९ वि० हुआ था। और यह अपने पिता ठा० गंभीरसिंहजी के उत्तराधिकारी सं० १९३५ में हुवे। इन्होंने मेयो कॉलेज अजमेर में शिक्षा पाई है। स्वर्गीय कर्नल महाराजा सर सरदारसिंहजी के राज्यकाल में स्टेट कौंसिल के तथा स्वर्गीय मेजर महाराजा सर सुमेरसिंहजी की नाबालगी के समय में कन्सलटेटिव कौंसिल के आप मेम्बर रहे हैं। इस समय आप चीफ कोर्ट राज मारवाड़ के ज्वाइंट जज और कन्सलटेटिव कौंसिल के अवैतनिक मेंबर हैं। भारत सरकार ने आप को 'रावबहादुर' की उपाधि ता० १ जनवरी सन १९१५ में प्रदान की है।

५—आलनीयावास—ठाकुर अमरसिंहजी मेड़तिया राव जोधाजी के पुत्र राव दूदाजी राठोड़ के वंशज हैं। आप के अधिकार में ४ गांव की जागीर है जो जोधपुर से पूर्व में ८० मील पर है। इसकी आमदनी सालाना १३,६०० रुपये है। यह जागीर महाराजा अजीतसिंह ने कुशालसिंह राठोड़ को सं० १७६५ की आसोज सुदि १५ (= ता० १८ सितम्बर १७०८ ई०) शनिवार को इनायत की थी। वर्त्तमान जागीरदार

ठा० अमरसिंहजी का जन्म सं० १६५६ में हुआ था। यह जालन्सु गांव से गोद आ कर सं० १६६५ में जागीर के उत्तराधिकारी हुये हैं। इनके निकट परिवार में इनके चाचा ठा० पीरदानजी और जालसु नना रीया के जागीरदार हैं।

६—रायपुर—ठाकुर गोविंदसिंहजी उदावत, राव सूजाजी के छोटे भाई उदाजी राठोड के वंशज हैं। इनकी जागीर में ३७ ½ गांव हैं। यह जागीर जोधपुर के पूर्व में ६४ मील पर है और आमदनी सालाना रु० ४४,१४० है। यह ठिकाणा सवाई राजा सूरसिंहजी ने सं० १६६३ में कल्याणदास राठोड को इनायत किया था। इससे पहले गांव गिरी पट्टे में थी। कल्याणदास से वर्त्तमान ठाकुर १४ वीं पीढ़ी में हैं। इनका जन्म वि० सं० १६६० में हुवा है और यह अपने चाचा दुर्गासिंहजी के गोद आ कर सं० १६६६ में उनके उत्तराधिकारी हुये हैं। इनके निकट परिवार में इनके चाचा जोरावरसिंह और सोरनसिंह तथा भतीजे शिवदानसिंह और गुमानसिंह हैं। रामपुरा, लीलम्बा और मेलावास के ठाकुर रायपुर ठिकाने के नजदीकी भाई-बन्धु हैं।

७—नीमाज—ठा० उम्मेदसिंहजी उदावत राठोड हैं और इनके अधिकार में १० गांव की जागीर है। यह जागीर जोधपुर से दक्षिण पूर्व में लगभग ६० मील के फासले पर है। आमदनी ३५,१०० रु० सालाना है। यह ठिकाना महाराजा अजीतसिंह ने सं० १७६५ की आसोज वदी १० (ई० स० १७०८ ता० २६ अगस्ट) रविवार को राठोड जगरामजी को इनायत किया था। जगराम से वर्त्तमान ठा० १३ वीं पीढ़ी में हैं। ठाकुर साहब का जन्म सं० १६६६ मे हुवा है और वे अपने पिता छत्रसिंहजी के उत्तराधिकारी मार्च सन १६१३ ई० में हुये। आप इस समय नाबालिग हैं और मेयो कॉलेज मे पढ रहे हैं। इनके नजदीकी भाई में रामगढ और मोरडा के ठिकानें हैं।

८—रास—रावबहादुर ठा० नारसिंहजी उदावत राठोर हैं। इनका जन्म सं० १६४६ वि० की आसोज सुदी १२ (ई० स० १८६२ ता० ३

नोवेम्बर) सोमवार को हुआ है और सं० १९६५ की चैत्र सुदी २ गुरुवार (२-४-०८) को राम ठिकाने में गोद आये हैं। इनकी जागीर में १७ गांव हैं और वह जोधपुर के पूर्व में ७० मील पर है। आमदनी ३१,७५० रु० सालाना है। यह जागीर महाराजा अजीतसिंह ने शुभराम राठोड़ को सं० १७६९ की आसोज सुदी २ (ई० स० १७१२ ता० २२ सितम्बर) में सत्र र को प्रदान की थी। रावबहादुर ठा० साहब ने मेयो कॉलेज अजमेर में शिक्षा पाई है और राज्य की कन्सलटेटिव (परामर्शदात्री) कौंसिल के आनरेरी मेम्बर और कोर्ट आफ वार्ड्स (महकमे नाबालगी) के सुपरिन्टेन्डेन्ट हैं। इस सुपरिन्टेन्डेन्टी का वेतन ५५०) रु० मासिक आप को मिलते हैं। भारत सरकार से आपको रावबहादुर की उपाधि ता. ३ जून सन १९२१ ई० को मिली है।

९—खेजड़ला—ठा० फतेहसिंहजी जोधा राठोड़ राजा उदयसिंह के छोटे भाई भगवानदास राठोड़ के वंशज हैं। इनकी जागीर में ११ गांव हैं। जोधपुर के दक्षिण पूर्व में ५० मील पर है और आमदनी २८,३७५ रुपये सालाना है। यह जागीर महाराजा जसवन्तसिंह प्रथम ने सं० १७१४ वि० में राठोड़ रणछोड़दास को इनायत की था। रणछोड़दासजी बड़ी वीरता से वि० सं० १७३६ की श्रावण वदी २ (ई० स० १६७९ ता० १५ जौलाई) मंगलवार को दिल्ली में काम आये थे। इनसे वर्त्तमान ठाकुर १० वीं पीढ़ी में हैं। आप का जन्म सं० १९४४ में हुआ और उसी वर्ष आप अपने पिता के स्वर्गवास पर उत्तराधिकारी हुये। स्वर्गीय ठा० लक्ष्मणसिंह को गदर के समय की सहायता के उपलक्ष में अंग्रेज सरकार ने 'रावबहादुर' का खिताब दिया था। वे अपने पूर्व अधिकारी ठा० सांवतसिंहजी की तरह स्टेट कौंसिल के मेंबर थे। फतेहसिंहजी के नजदीकी परिवार में कोई नहीं है। अतः बलाड़ा, खूटी और बावरा ही के घराने से भाई बन्ध है। सन्तान में इनके तीन पुत्रियां और शिवदानसिंह नामक एक पुत्र है जिनका जन्म सं० १९६६ में हुआ है।

१०—भादराजुन—ठा० देवीसिंहजी राव मालदेव के द्वितीय पुत्र

रतनसीजी के वंशज जोधा राठोड़ हैं। इनका जन्म सं० १९५८ वि० की मिगसर वदी १३ (ता. २७-११-१९०२ ई०) को हुवा है और स्वर्गीय ठा० शिवदानसिंहजी के उत्तराधिकारी सं० १९६५ की कार्तिक सुदी ६ को हुवे हैं। इनकी जागीर में २७ गांव हैं जो जोधपुर के दक्षिण में ५० मील पर हैं। आमदनी ३१,८५० रुपये सालाना है। यह जागीर राजा सूरसिंहजी ने सं० १६५२ में मुकुन्ददास राठोड़ को इनायत की थी। मुकुन्ददासजी से वर्तमान ठाकुर १३ वीं पीढी में हैं।

सरदार

१—घाणेराव—घाणेराव ठिकाने के ठाकुर जोधसिंहजी अव्वल दर्जे के सरदारों में से हैं। आप मेड़तिया खांप के राठोड़ राजपूत हैं। आप के आधीन ३७ गांव की जागीर है। आमदनी ५० हजार रुपये सालाना है। ठाकुर साहब का जन्म सं० १९२९ में हुवा था और जागीर के उत्तराधिकारी सं० १९३१ में हुवे हैं। इन्होंने शिक्षा अजमेर के नामी मेयो कालेज में पाई है।

पुराने समय में जब मारवाड़ का यह भाग महाराणा उदयपुर के कब्जे में था तब वर्त्तमान ठाकुर के किसी पूर्वज को यह उनसे जागीर में मिला था। इतिहासज्ञ टाड साहब लिखते हैं कि—घाणेराव ठाकुर का खास काम मेवाड़ के कुम्भलगढ नामक किले की रक्षा करना था। राणा के दरबार में १६ सरदारों में घाणेराव को ५ वीं बैठक मिलती थी जो आज तक खाली रखी रहती है। जब इस गोडवाड़ भाग पर जोधपुर का कब्जा हुवा तब घाणेराव का जागीरदार पद्मदेव था। पुनः महाराजा विजयसिंहजी ने सं० १८२९ में उसे यह जागीर इनायत की।

२—वगड़ी—ठा० भैरोसिंहजी राठोड़ों की जैतावत शाखा में पाटवी हैं और यह राव जोधाजी के भाई अखेराज के पोते जैतसिंह के वंशज हैं। राव जोधाजी ने सं० १५१८ वि० में यह जागीर अखेराज को इनायत की थी। वर्तमान ठा० अखेराज से ९ वीं पीढी में हैं। जागीर में ७ गांव हैं। आमदनी २० हजार सालाना है। ठाकुर का जन्म सं० १९५०

में हुआ है और यह ठा० जीवनसिंहजी की मृत्यु के बाद गोद आ कर सं० १९७३ में जागीर के उत्तराधिकारी हुवे हैं।

३—खींवसर—ठा० केसरीसिंहजी राठोड़ों की करमसोत शाखा में शीर्षस्थ हैं। यह राव जोधाजी के पुत्र करमसीजी के वंशज हैं। जागीर १७ गांव की है। जिसकी आमदनी २० हजार रुपये सालाना है। यह जागीर राव मालदेव ने सं० १६१८ की चैत्र सुदि २ (ई० स० १५६१ ता० १७ मार्च) सोमवार को महेशदास राठोड़ को इनायत की थी। महेशदासजी से वर्त्तमान ठाकुर १५ वीं पीढ़ी में हैं। ठाकुर का जन्म सं० १९५८ में हुआ है और सं० १९६७ की कार्तिक सुदी २ (ई० स० १९१० ता० ४ नवम्बर) को वे अपने पिता ठा० रणजीतसिंहजी की मृत्यु पर जागीर के उत्तराधिकारी हुवे हैं। इनका विवाह अलीगढ़ जिला (यू. पी.) के यादव क्षत्रियों में हुवा है।

४—कंटालिया—ठा० अर्जुनसिंहजी कूंपावत राठोड़ हैं और राव जोधाजी के भाई अखेराज के वंशज हैं। इनके कब्जे में १२ गांव की जागीर है। आमदनी १६ हजार रुपये सालाना है। यह जागीर महाराजा जसवन्तसिंह प्रथम ने सं० १७०२ में भावसिंह राठोड़ को इनायत की थी। भावसिंहजी से वर्त्तमान ठाकुर ८ वीं पीढ़ी में हैं। इनका जन्म सं० १९२८ में हुवा है और गांव दूदोर से गोद आ कर स्वर्गीय ठा० गोवर्धनसिंहजी के उत्तराधिकारी सं० १९४३ में हुवे हैं। इनके नजदीकी रिश्ते में सरदारपुर के जवाहिरसिंह हैं। और आसोप और चंडावल के ठिकानों से इस ठिकाने का भाईपा है।

५—चंडावल—रावबहादुर ठा० गिरधारीसिंहजी कूंपावत राठोड़ हैं। इनके अधिकार में ८ गांव की जागीर है। आमदनी २० हजार सालाना है। यह जागीर महाराजा सूरसिंहजी ने सं० १६५२ में राठोड़ चांदसिंह को प्रदान की थी। चांदसिंहजी से वर्त्तमान ठाकुर १३ वीं पीढ़ी में हैं। इनका जन्म सं० १९३६ में हुवा है और ठिकाने के उत्तराधिकारी सं० १९५८ में हुवे हैं। आप के एक पुत्र कुंवर भोपालसिंहजी हैं।

जिनका जन्म सं० १९५६ का है। ठाकुर साहब राज्य की कन्सलटेटिव कौंसिल के मेम्बर हैं और इन्हें अंग्रेज सरकार से रावबहादुर की उपाधि १ जनवरी १९२२ ई० को मिली है।

६—कुचामण—ठा० हरीसिंहजी मेड़तिया राठोड़ हैं और ठा० जालमसिंहजी के वंशज हैं। जिन्हें महाराजा अभयसिंहजी ने सं० १७८४ में यह कुचामण की जागीर इनायत की थी। यह जागीर १९ गांव की है और वह जोधपुर के उत्तर पूर्व में है। जागीर में आमदनी करीब १ लाख रुपये सालाना है। ठाकुर साहब का जन्म सं० १९६९ की पोष वदी २ (ई० स० १९१२ ता. २६ दिसम्बर) गुरुवार को हुवा है और यह अपने पिता की मृत्यु पर सन १९११ ई० की ता. २४ जनवरी को जागीर के उत्तराधिकारी हुवे हैं। जब रावबहादुर ठा० केसरीसिंह सी. आई. ई. का स्वर्गवास सं० १९४७ में हुवा तब उनके पुत्र शेरसिंहजी ठिकाने के स्वामी हुवे जो सं० १८९३ वि० में जन्मे थे। इन्हें गवर्नमेन्ट से रावबहादुर का खिताब मिला हुवा था और ये स्टेट कौन्सिल के मेंबर थे। इनके पुत्र कुँवर बाघसिंहजी (जन्म सं० १९१६ वि०) ने मेयो कालेज में शिक्षा पाई थी, किन्तु उनका स्वर्गवास कुँवर पद में अर्थात् पिता के जीवित काल में ही हो गया था। बाघसिंहजी और उमेदसिंह नामक दो पुत्र थे। उनमें से छोटा पुत्र उमेदसिंह तो पांचोटा गोद गया जिन्हें [illegible] अंग्रेज सरकार से "रावसाहब" का खिताब है। और ज्येष्ठ पुत्र [illegible] सिंहजी के पुत्र हरीसिंहजी हैं जो कुचामण के वर्तमान ठाकुर [illegible] आप ठिकाणे के मूल पुरुष ठा० जालिमसिंहजी से १०वीं पीढ़ी में हैं और मेयो कॉलेज में शिक्षा पा रहे हैं। इनका विवाह [illegible] ठाकुर [illegible] पृथ्वीसिंहजी की बहन के साथ हुवा है। कुचामण ठिकाने की जोधपुर शहर में विशाल कोठी "कुचामण की हवेली" नाम से [illegible] के भीतर दरवाजे से सटी हुई है।

७—बेड़ा—ठा० पृथ्वीसिंहजी, सीसोदिया [illegible] के सरदार हैं। इनके आधीन १२ गांव की जागीर है जो जोधपुर के दक्षिण पूर्व में ९० मील पर है। यह जागीर महाराजा [illegible] नरेश ने अपने पुत्र शेखाजी को सं० १६४२ में इनायत की थी। [illegible]

अपनी सनद दी। वर्त्तमान वेडा ठाकुर साहब महाराणा प्रताप से १३ वीं और वीरमदेव से छठी पीढी में हैं। आमदनी रु० २० हजार सालाना है। ठाकुर साहब सुप्रसिद्ध लेफ्टिनेन्ट जेनरल महाराजा सर प्रताप की एकलौती राजकुमारी के ज्येष्ठ पुत्र हैं। इनका जन्म सं० १९५९ में हुवा है। जोधपुर नरेश स्वर्गीय महाराजा सर सुमेरसिंहजी के ए. डी. सी. होने से आप महायुद्ध के समय फ्रांस के रणक्षेत्र में गये थे। इस समय आप वर्त्तमान जोधपुर नरेश के भी ए. डी. सी. हैं और महकमें जागीर बख्शी के सुपरिटेन्डेन्ट हैं। आपका शुभविवाह उमरकोट (सिन्ध) के राणा पीरदानसिंहजी सोढा की सुयोग्य पुत्री के साथ सं० १९७३ में हुवा है। जिनसे आप के पुत्र एक कुँवर रणजीतसिंह ५ वर्ष के हैं।

८—रोहट—रावबहादुर ठा० दलपतसिंहजी चांपावत शाखा के राठोड हैं। आपकी जागीर २१ गांव की है जिसकी आय १६ हजार रु० वार्षिक है। यह जागीर महाराजा अजीतसिंह ने सं० १७६४ की बैशाख सुदि ४ (ई० स० १७०७ ता. २४ अप्रेल) गुरुवार को रामसिंह राठोड़ को इनायत की थी। वर्त्तमान ठा० साहब उनसे ८ वीं पीढ़ी में हैं। इनका जन्म सं० १९५९ में हुवा है और शिक्षा मेयो कालेज में पाई है। और सैनिक शिक्षा देहरादून केडेटकोर में मिली है। श्रीदरबार से हाथ का कुर्ब और दोवड़ी ताजीम प्राप्त है। देहली दरबार सन १९१२ ई० में सम्राट् पञ्चम जार्ज महोदय के साथ रहने का आप को सौभाग्य प्राप्त हुवा था। सन १९१४ में आप महाराजा सर सुमेरसिंहजी के साथ यूरोपीय रणक्षेत्र में गये थे। रावबहादुर की उपाधि आप को ता० ३ जून १९२२ ई० को अंग्रेज सरकार से मिली है। महाराजा सुमेरसिंहजी के समय से आप मिलीट्री सेक्रेटरी के पद पर हैं। आपका विवाह अवध प्रांत के खजूरी गांव के उच्च क्षत्रिय कुल में हुवा है। सन्तान में आप के एक पुत्र है।

९—गोराउ—रावबहादुर ठा० धौंकलसिंहजी ओ. बी. ई. जोधा राठोड हैं। इनके आधीन में तीन गांव की जागीर है। जिसकी आमदनी १२ हजार रुपये सालाना है[1]। ठिकाना गोराउ रेल्वे स्टेशन से ...

1 The Ruling Princes Chiefs & leading Pers[illegible] & Ajmer, page 24 (5 th Edn 1924)

से २० मील पर नागौर परगने में है। ठाकुर को रावबहादुर की उपाधि ब्रिटिश सरकार से ता १० जनवरी १९१४ ई० को मिली थी। आप स्वर्गीय महाराजा सरदारसिंहजी के ए. डी. सी. थे। और जब स्वर्गीय महाराजा सुमेरसिंहजी फ्रांस के रणक्षेत्र में थे तब यह उनकी सेवा में थे। ता. ३ जून १९१९ ई० को इन्हें "आर्डर आफ दी बृटिश अम्पायर" (ओ. बी. ई.) का तमगा मिला था। इस समय आप जयपुर नरेश महाराजा मानसिंहजी के भारतीय गार्डियन हैं।

रेख-चाकरी

यह एक प्रकार का कर है जो राज्य जागीरदारों से वसूल करता है। जागीरदार से उस सरदार का अर्थ है जो दरबार से दी हुई या मानी हुई भूमि पर अधिकार रखता है: परन्तु इसमें डोहलीव सासन सामिल नहीं है। ये जागीरदार चाहे जिस जाति के हों, उस गांव या जागीर के ठाकुर कहलाते हैं। जागीरदार के जागीरी सनद (पट्टे) में जितने गांव होते हैं उनकी अनुमानिक आमदनी मुकर्रर है। जिस पर राज्य की कई प्रकार की लगान जागीरदारों से ली जाती है। यह रेख का रिवाज फौजी सहायता का सूचक है जब कि-पहले राजपूताने के राजपूत राजा मुगल सम्राट् की सेवा में सम्राज्य की रक्षा के लिये धन-जन व बल से सहायता देते थे। वही सहायता राजपूत नरेश अपने अधिकार के जागीरदारों से लिया करते थे। मारवाड़ राज्य में रेख का रिवाज स्पष्ट रूप से महाराजा शूरसिंहजी के समय से पाया जाता है जब कि-उनके बुद्धिमान दीवान गोविंददास भाटी ने दिल्ली के बादशाही प्रबन्ध का अनुकरण किया। परन्तु रेख जागीरदारों से नियम पूर्वक नहीं ली जाती थी। उस समय जागीरें भी चाकरी के एवज में दी जाती थीं। अर्थात् इस उद्देश्य से कि-जागीरदार राज्यकी सैनिक सेवा युद्ध के समय करें। चाहे वह युद्ध सम्राज्य की रक्षा के लिये हो चाहे मुगलों के सहायता के लिये हो या आपस में शांति रक्षा के लिये। किन्तु महाराजा [illegible] के समय में जब मुगलों का बल शिथिल पड़ गया तो चाकरी की आवश्यकता नहीं रही इधर मुगलों का बल घटा उधर मरहठों का [illegible] समका, जिन्होंने राजपूताना के राजाओं से चौथ अर्थात्

खिराज लेना शुरू किया। इस लिये संवत १८१२ में महाराजा विजयसिंहजी ने "बाब" नाम का टेक्स-कर प्रजा पर लगाया और जागीरदारों से जो चाकरी (सेवा) मुगलों के समय में ली जाती थी उसके स्थान में नकद रुपये रेख रूप में लिये जाने लगे। सं० १८४७ में मरहटों को देने के लिये ५ लाख रुपये इस रूप में जागीरदारों से वसूल किये गये थे।

सं० १८६४ से यह रेख हर पांचवें वर्ष ली जाने लगी जब कि-असाधारण खर्चा होता या कर्ज अधिक बढ़ जाता था। रेख की तादाद महाराजा की इच्छा पर निर्भर रहती थी। जैसा कि-महाराजा मानसिंह ने सब से अधिक रेख वसुल की। इस विषय में कहावत भी प्रसिद्ध है कि:—

मान लगाई महपति रेखां ऊपर रेख

इस मनमानी रेख वसुली से मारवाड के जागीरदार तंग आ गये और सं० १८८६ में बिगड़ बैठे। उस समय सरकार अंग्रेजी ने अपने राजदूत (पोलिटीकल एजन्ट) को राजधानी जोधपुर में नियत किया और रेख के विषय में रकम तादाद मुकर्रर की जो कि-१ हजार रुपये पीछे ८० रुपये वार्षिक थे। फिर भी जागीरदार लोग बराबर रेख नहीं देते थे। महाराजा तख्तसिंहजी ने सालाना रेख का हिसाब तयार करवाया और सं० १९०६ वि० में जागीरदारों से कबुलीयत लिखवाये कि-वे लोग राज्य को मुकर्रर ८०) रुपये फी हजार पीछे बराबर देते रहेंगे। वह लिखत इस प्रकार है:—

"श्री श्री १०८ श्री श्री हजूर में समस्त उमरावांरी अर्ज मालम हुई तथा थिति रेख री मामूल बंध जावणरी खानांजादां अर्ज करी सो रेख १०००) रु० री लार ८०) अखेर असी रु० भादवा सुद १५ रै हदा हर वर्ष भरोयां जावसां ने विहात्र तुरत तथा परचकसुदे फुरमाया जावैसो जुदी ठहरावण में आवसी। इण मुजब राजोंमुखी हू हरावें ए मैं तफावत पाड़ा नहीं। संमत १९०६ रा मीगसर हदी १२ (=ता०१० नवम्बर सन १८४९ ई० शनिवार)।"

दस्तखत—बभूतसिंह सालमसिंहोत	(पोकरण)
खुसालसिंह बख्तावरसिंहोत	(आऊवा)
शिवनाथसिंह बख्तावरसिंहोत	(आसोप)
सवाईसिंह सांवतसिंहोत	(नीवाज)
देवीसिंह शिवनाथसिंहोत	(रींया)
रणजीतसिंह शिवनाथसिंहोत	(कुचामण)
भैंरूसिंह भीमसिंहोत	(रास)
सांवतसिंह दौलतसिंहोत	(खेरवा)
इन्द्रभाण बख्तावरसिंहोत	(भादराजण)
माधोसिंह रूपसिंहोत	(रायपुर)

इस लिखत अनुसार वही रेख जागीरदार लोग अब तक राज्य को सालाना देते हैं। यह रेख ३ प्रकार की है। १—तो पट्टा रेख अर्थात् दरबार से दिये हुवे पट्टे में जो अंक यानी गांव की अनुमानिक आमदनी मुकर्रर की जाती है। २—भरतु रेख अर्थात् वह आमदनी जिस पर वास्तव में जागीरदार राज्य को लगान देता है। उदाहरण के लिये जैसे कि किसी जागीरदार को जागीर का पट्टा ३० हजार वार्षिक का मिला। कालान्तर में राज्य ने १० हजार का अंक माफ कर दिया और भरतु रेख केवल २० हजार ही रखी। इसी २० हजार की रकम पर ८ आठ रुपये सैकड़ा के हिसाब से राज्य को रेख दी जायगी। यहां याद रहे कि—पट्टे की रेख या भरतु रेख या जो हिस्सा फी सैकड़ा राज्य को दिया जाता है और वह भी रेख ही कहलाता है। इन सब का सम्बन्ध जागीर की असली आमदनी से कुछ नहीं है। क्यों कि वास्तविक आमदनी उपरोक्त उदाहरण में ३० हजार के स्थान में ५० हजार रुपये भी हो सकती है।

तीसरे प्रकार की रेख तानकार रेख कहलाती है। इससे तात्पर्य उन गांवों की आमदनी से है जिनका किसी प्रकार का कर नहीं लगता।

यद्यपि साधारणतया एक हजार रुपये की अनुमानिक आमदनी पर ८०) रुपये रेख राज्य में ली जाती है पर सोजत परगने के जागीर-

दार ६७) रुपये की हजार देते हैं। इसका कारण यह है कि-पुराने समय में ८०) रुपये तो राज्य की लगान के देते थे और ६७ रुपये हाकिम (परगना अफसर) को देते थे जो कि यह लाग कहलाती थी। और वह सं० १९५९ तक राज्य के खजाने में जमा नहीं होती थी। वह हाकिम स्वयं लेता था।

रेख के सिवाय जागीरदारों को राज्य में सैनिक सहायता भी देनी पड़ती है जो इस प्रकार है। १०००) एक हजार रुपये की रेख के पीछे १ घुड़सवार, ७५० रुपये पीछे १ सुतर सवार और ६०० रुपये की आय पीछे १ पैदल सिपाही। कुछ स्थानों में यह सैनिक सहायता नकद रुपयों में बदल दी गई है। अर्थात् घुड़सवार के १४४ रुपये, सुतरसवार के १०८ रुपये तथा पैदल सिपाही के ८४ रुपये रखे गये हैं। अधिकांश नकद रुपया ही १४४ रुपये की हजार रुपये के हिसाब से वार्षिक लिया जाता है। और इस में १० की सैकड़ा की छुट यानी माफी दी जाती है यानी १२९ रुपये की हजार पीछे राज्य में चाकरी के आते हैं।

इन सालाना रेख और चाकरी के लगानों के सिवाय 'हुक्मनामा' नाम की फीस भी ली जाती है। जब कि-किसी जागीरदार का देहांत हो जाता है और उसका उत्तराधिकारी राज्य से अपनी नयी सनद प्राप्त करता है। यदि हुक्मनामा फीस यानी कर नकद दिया जावे तो जागीर की रेख का ७५ की सैकड़ा रुपया होता है। नहीं तो एक वर्ष की लट्टाई (फसल) की आमदनी राज्य में ले ली जाती है। हुक्मनामा और दूसरी नीचे लिखी छोटी मोटी लागें वसूल होने पर राज्य से नया पट्टा उत्तराधिकारी के नाम लिख दिया जाता है। वे लागें यह हैं:— सुकराना, नजराना, चेचक की टीका फीस सं० १९४७ से आध आना प्रति घर के हिसाब से, न्योता, पट्टा दस्तुर [मुसाहबी, दीवान, नौकीनवीस, टीका आंक, कबुलियत, दफतरी, हजूरी दफ्तर, अगा.न, जागीर बख्शी (महकमा चाकरी) और धायभाई] यह प्रत्येक लाग १ रुपये से २ रुपये तक होती है।

लाग—बाग (पब्लिक-टेक्स)

जागीरदारों से तो खिराज लिया ही जाता है किन्तु इसके अलावा

सर्वसाधारण (खास कर ग्रामीण) प्रजा से भी दरबार की तरफ से खालसा भूमि में निम्नलिखित लागें (टैक्स) ली जाती हैं। जागीरों में जो ला[illegible] लाग ली जाती है वह अलहदा हैः—

संख्या	नाम लाग (टेक्स)	किन २ परगनों में ली जाती हैं।
१—	घोड़ा कामल	सब परगनों में।
२—	फीस इमारती पट्टा	,, ,,
३—	बाजे जमा (मुतफरक्कात)	,, ,,
४—	सावणु भाव	,, ,,
५—	माल हासल व मुकाता	,, ,,
६—	बर्ती	,, ,,
७—	अमलरी चिट्ठी	,, ,,
८—	घर गिनती	,, ,,
९—	हाकमों की घरू लाग	,, ,,
१०—	मोराणा	,, ,,
११—	फरोई	,, ,,
१२—	मलबा	,, ,,
१३—	तलबाना	,, ,,
१४—	खरोटा	शिव परगना
१५—	माटी	,, ,,
१६—	चौथाई	सांभर, शेरगढ
१७—	पयड़	मेड़ता
१८—	फौजबल	जालोर, सांचोर, शिव
१९—	उनालू साख	शिव
२०—	नील	,,
२१—	बागात	बीलाड़ा, सांभर, सोजत
२२—	झौंपी	मारोठ, शिव
२३—	पड़ाव	सांभर
२४—	खाड़न	सिर्फ सांभर में

२५—	खड़खाटी	जालोर
२६—	भूमबाव	आधे परगनों में
२७—	पसायत बाच	जालोर
२८—	कसरायत	नावां, मारोठ
२९—	खरगडा	सिर्फ मारोठ में
३०—	बाव तढल	सांचोर
३१—	खोंचड़ी...	सिर्फ शेरगढ़ और सांचोर में
३२—	खडचराई ..	०
३३—	जोड भाल	०
३४—	करजे री रस्म	सिर्फ टोडवाणा और वीलाडा में
३५—	पान चराई	सिर्फ सोजत और जालोर में
३६—	फुरमास	सिर्फ जसवंतगढ़ नागोर और मेड़ता
३७—	सेरणा	सोजत, शेरगढ़, मेड़ता
३८—	फरोई	सब परगनों में
३९—	जोड	जसवंतगढ़, वीलाड़ा, सोजत
४०—	घासमारी	नागोर जसवन्तगढ़
४१—	श्रीहजूर	जालोर, नावां, मेड़ता, नागोर
४२—	वेतलवी	जालोर, नागोर
४३—	सुकराणा	सब परगनों में
४४—	गढ किला	सिर्फ जालोर में
४५—	ऊन अधोदी	"
४६—	भावली बाव	"
४७—	तोडोतरा	"
४८—	परखाई	जालोर, सोजत, बाली मेड़ता
४९—	दावोतरा	जालोर, सोजत
५०—	खेड़ा	मेहता
५१—	सुकनभेट	०

५२— पींजरा बाब ०
५३— पट्टलरा मालड़ा जोधपुर, डीडवाना, फलोधी
५४— नाजर आधे परगनों में
५५— नाता ,,
५६— खफरा बाब सोजत
५७— दस्तूर ०
५८— काजियांरी कजा ०
५९— माग ०
६०— पट्टादारी सिर्फ नागोर
६१— नील फुरमास ०
६२— डीवा पाणत सिर्फ सोजत
६३— सग्गर ,, नागोर
६४— ठेका गाडी ,, ,,
६५— मदाणा के सौदकी रसम ,, ,,
६६— नीलाम नावां, फलोधी
६७— जांवा नागोर
६८— आघकार सांभर
६९— मीनाबाव मेड़ता
७०— रमत जोधपुर शेरगढ़
७१— गूटा डाग चराई ,, ,,
७२— रेख हुक्मनामा सांभर
७३— फजूलायत जालोर
७४— चौंतरा जालोर, डीडवाणा, पाली इत्यादि
७५— फौज देसरी जालोर
७६— बाणा आधे परगनों में
७७— रस्ते जमा जसवंतगढ़
७८— खाणियांका हासल पचपदरा
७९— ब्याह टका सांचोर
८०— नसांयां नावां, मारोट

८१—	ऊंटगाडी दलाली	नावां, फलोधी
८२—	चीलरी कुंड	नावां
८३—	चंवरी	नावां. परबतसर, मारोठ
८४—	नेता (न्योता)	नावां. सांभर
८५—	मुकद्दमा	नावां
८६—	नमकसार	नावां, पचपदरा, जालोर, नांवोर सांभर
८७—	तोला छपाई	नागोर, जोधपुर
८८—	लाव बाव	०
८९—	टकसाल	जोधपुर
९०—	डाणबल रोजगार	शेरगढ
९१—	सालबाव	मेडता, नागोर
९२—	आऊंखान (चमडा)	मारोठ
९३—	खालसा जमीन भाडा	नागोर, नावां
९४—	वलरोजगार	शेरगढ
९५—	कसबा	शेरगढ
९६—	दारू की भट्टी	पचपदरा
९७—	मेला	नांवा, नागोर, परबतसर, पचप- दरा, शेरगढ
९८—	चोकी बाजार	नागोर
९९—	डोढी दस्तुर	परबतसर, फलोधी
१००—	चादर सलामी	परबतसर
१०१—	आबकार	नावां

बन्दोबस्त (सेटलमेंट)

मारवाड में पहले पहल सं० १९५१ से १९५३ तक नये ढंग से बंदोबस्त हुवा था। अर्थात् जमीन की पैमाईश करके लगान लगाया था। अब दूसरी बार फिर यह सं० १९७१ वि० में शुरू हुआ है। [illegible] लगान इस बंदोबस्त में ३० सैंकडा बढाया गया है। यहां बंदोबस्त का तरीका रैयतवारी प्रथा के अनुसार है यानी दरबार स्वयं किसान से

मोट—गाड़ी

साथ लगान तै करते हैं, या यों कहो कि—दरबार· खालसा भूमि के गांवों में रहनेवाली कृषक प्रजा को दो प्रकार के पट्टे देते हैं। एक बापी और दूसरा गैरवापी पट्टा। लगान दो प्रकार से ली जाती है। एक अनाज में और दूसरी नकद में। अनाज में लगान बटाई, लाटा, लाग, कूता, गूगरी, मुकाता, डोरी, डुम्बा आदि तरीकों से लिया जाता है। इनके सिवाय मलवा, चौधरवाव, सेवाई, भूंपी आदि कई छोटी मोटी लागें (टेक्स) भी प्रजा से ली जाती है। बहुधा यह कानूनगो के द्वारा वसूल की जाती हैं जो प्रायः पंचोली (कायस्थ) जाति के होते हैं। लगान वसूल करने को राज का अफसर अलग होता है, जिसे 'अमीन' कहते हैं। परन्तु हर एक गांव में या २-४ गांवों के गिरोह पर एक "हवालदार" होता है जो जमीन की लगान आदि का हिसाब रखता है।

मारवाड के करसे (कृषक) बहुत सीधे, सादे व गरीब हैं और वे वोहरों पर निर्भर रहते हैं। चाहे राज्य से सं० १९६३ की भादों सुदि ६ (ई० स० १९०६ ता० २५ अगस्त) से सरकारी कृषि बैंक खुला हुआ है व तकावी भी हवाला महकमा से दी जाती है। नागरिकों की दशा अलवता इनसे अच्छी है। जो उपरी आडम्बरों में फिजूलखर्ची में लिप्त हैं। जिस प्रकार कि—कृषक पैसा न होते हुये भी कर्ज लेकर औसर-मौसर (नुकता-कारज) करना अपनी शान समझते हैं। किसी ने ठीक ही कहा है कि:—

जेवर बेचे घर को बेचे नुकता करना होता है।
नहीं करे तो जाति भाई का ताना सहना होता है॥
जातिवाले तो इकदिन जीमें घरवाला नित रोता है।
लड्डूबाज सब चैन उड़ावे वह सुख नींद न सोता है॥
सत्य प्रीति नहीं रही पर खाने का सब नेह किया।
कलियुग आया घर घर छाया भारत सब कंगाल भया॥

यह वोहरे (कर्ज देनेवाले) अधिक तर पैसे होते हैं इस विषय में हमारे प्रजाप्रिय स्वर्गवासी हिज हाईनेस महाराजा सर सरदारसिंहजी बहादुर जी० सी० एस० आई० ने अपनी पुस्तक "माई इण्डियन डायरी" के पृष्ठ १४१ में इस प्रकार लिखा है:—

हित में, चित में, हाथ में, खत में मनमें खोट।

दिल में दरसावे दया पाप लियां सिर पोट ॥

अर्थात् बोहरे की मित्रता में, मन में, व्यवहार में, खत (लिखावट) में और उसके उद्देश्यों में धोखेबाजी भरी रहती है। वह दयावान होने का बहाना करता है परन्तु बड़ा पापात्मा होता है। यदि वह एक बार किसी किसान को अपने जाल में फांस लेता है तो फिर उसे नहीं छोड़ता है। मारवाड़ी भाषा के कवि किशनिया ने कर्जदार की दशा को इस प्रकार बतलाया है:—

निसदिन निर्भय नींद स्वपना में आवे न सुख।

दुनियां में नर दीन करजा सूं बधे किशनिया ॥

राज्य भर में दो फसलवाले १०७० और एक फसली (इक साखी) ३०४८ गांव हैं। इनमें जागीर के ११७०, खालसा के ७७७ भोमिचारा के ७८४, सासण के ५६० और मुस्तरका (आधा खालसा और आधा जागीर) १७ गांव हैं।

पशुधन

यहां की प्रजा का अधिकांश खेतीबाड़ी और पशुपालन पर ही निर्भर करता है। १८ लाख की आबादी में ८ लाख मनुष्यों का कृषि तथा ७ लाख का पशुपालन पर निर्वाह निर्भर है। इस राज्य में घासचारा बहुत मिल जाता है इस लिये यहां पशु बहुत हैं। गाय, बैल, घोड़ा, ऊंट, भैंस, भेड़ और बकरे-बकरी यहां के अच्छे होते हैं। नागोर के बैल सूरत शक्ल में अच्छे और तेज होते हैं, जो भारत भर में विख्यात हैं। गायें थली यानी रेगिस्तान के इलाके की अच्छी हैं। परगने सांचोर की गाय लगभग १५ सेर दूध देती है। नसल यानी ओलाद के लिये नागोर और सांचोर की गायें उत्तम हैं। ऊंट भी मारवाड़ में अच्छे चलनेवाले और मजबूत होते हैं। सवारी का ऊंट जाम्बोरा कहलाता है जो १२ घण्टे में १०० कोस जा सकता है किन्तु उसका मूल्य भी ५००-६०० रुपये से कम नहीं होता है। ऊंट तो यहां का सर्वस्व है। उससे सब काम लिये जाते हैं। किसी कवि ने ऊंट की सेवाओं का यों वर्णन किया है:-

गाय
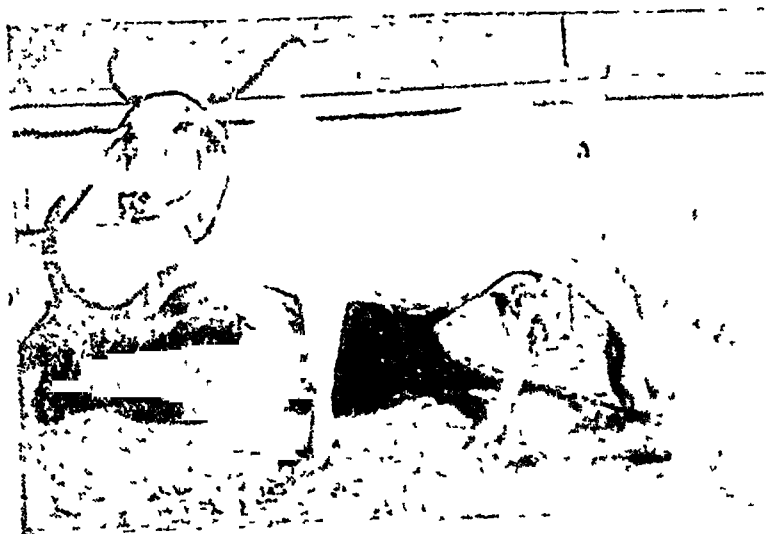
बैल

शहर व कस्बों में दूध की कमी होने लगी है तथापि गांवों में अब भी बहुत अच्छा घी और दूध मिलता है। बहुत से गांवों में आज तक लोग दूध का पैसा लेना पाप समझते हैं। मारवाड़ राज्य भर में इस समय पशुधन की संख्या ६०.१३.१८५ है जो ब्योरेवार निम्नोक्त है:—

नाम पशु.	जागीर में	खालसा में	कुल
१—सांड (Bulls)	४७८२२	८००५	५५८२७
२—बैल	३११९८१	१०४२२५	४१६२०७
३—गाय	७४६५८१	१८०५०१	९२७०८२
४—बच्चा (बछड़ा और बाछिया)	४४२०२४	१२७३७८	५६९४०२
५—भैंसा ..	१९२५०	४०६१	२३३११
६—भैंस .	१०७२४७	२७०३९	१३४२८६
७—बच्चा पाड़ा और पाडी	७५२१३	२४८६०	१०००७३
८—भैड .	१५१०९००	४७९२३९	१९८९१३९
९—बकरा .	१२६७७८१	२८७१०४	१५५४८८५
१०—घोडा .	३५४६	१३३४	४८८०
११—घोडी	७२९७	१३९२	८६८९
१२—बच्चा (बछड़ा और बछडी)	२१७३	२११	[illegible]
१३—खच्चर	२२४	३७६	६००
१४—गदहा . ..	३८६४३	८९९४	४७६३७
१५—ऊंट	८९०८७	११२१४	१००३०१
१६—हल (Ploughs)	२५०८२१	६३२०८	[illegible]
१७—गाडियां (Carts)	६६१४३	२१७४४	[illegible]
१८—सवारी की गाड़ी रथ-तांगा-बग्घी	२३२३	१४८८	[illegible]

जिन लोगों को अकाल के समय मारवाड़ [illegible] पड़ता है उनमें मुख्य वही हैं जो पशु अधिक रखते हैं। [illegible] समय पानी और घास की कमी होने की वजह से उन्हें [illegible] कर दूसरे देशों में अपने पशुओं को ले जाना होता है। [illegible] हजारों पशु मर भी जाते हैं। गत वर्ष से प्रजा के [illegible]

के घोड़े मालानी परगने में होते हैं। और उसमें भी नगर, गूढ़ा और राड़धड़े[1] की जमीन इन घोड़ों के लिये प्रसिद्ध है। कहते हैं कि—किसी बादशाह ने अपने अरबी घोड़ों के वास्ते अरब देश की रेत जहाजों में मंगाई थी जिस को एक लक्खी बनजारा बैलों पर लाद कर दिल्ली को लिये जाता था। जब वह राड़धड़ा नामक गांव के पास पहुंचा तब उसने उस बादशाह के मरने की खबर सुनी। और इससे निराश होकर वह सब रेत वहीं डाल दी। इसके ढेर से यहां रेत का टीला बना है। इस परगने के लोग घोड़ों के बछेरों को ला कर इस रेत में लोटाते हैं। यहां के घोड़ों में अरब के घोड़ों के समान खासियत होने का कारण यही रेत समझी जाती है। और राड़धड़े के रहनेवाले अपनी जन्मभूमि का बड़ा गौरव करते हैं, जैसा कि—नीचे लिखी कथा से प्रकट होगा:—

राड़धड़े की एक राजकुमारी का विवाह सीरोही के राजा सुरतान (सं० १६२८-१६६७ वि०) से हुवा था। यह दोनों राजा-रानी कवि थे और कभी २ कविता करके भी अपना जी बहलाया करते थे। एक दिन वसन्त ऋतु में राजा ने अपने राज्य के सजल और सुरम्य आबू पहाड़ की अपूर्व छटा देख कर यह दोहा कहा:—

ट्रूंके ट्रूंके केतकी झरने झरने जाय।
अर्बुद की छवि देखतां और न आवे दाय॥

अर्थात् पहाड़ की चोटी २ में तो केतकी है और पानी के झरने झरने में जाय यानी चमेली है। आबू की यह छवी देख कर दूसरी जगह पसन्द नहीं आती है।

तब रानी ने—जो पैदल चलने से थक गई थी और जिसके देश में सीरोही से अधिक गेहूं उपजते थे-पति से सहमत न होकर उत्तर में यह कहा:—

जव खाणो भखणो जहर पाळो चढणो पंथ।
आबू ऊपर वेसणो भलो सरायो रंभ॥

१—मालानी परगने के नगर और गूढ़ा नामक गांवों [illegible] लूणी नदी के दोनों किनारों पर ६० मील के घेरे में फैला हुवा है। [illegible] बाड़मेर और दूसरी तरफ सांचोर का परगना है।

हाँ तो गाने पड़ते हैं, जहर यानी अफीम चखनी पड़ती है और हमेशा गलना होता है। वाह कंथ! आपने आबू पर बैठने को भला समझाया।

राजा ने यह सुन दिल में कुछ बुरा माना और गुस्से में रानी से पूछा कि- "क्या आबू तुम्हारे निर्जल और निर्गुण देश से भी गया बीता है?" रानी ने कहा—"हमारे देश का क्या कहना है? वह तो देवताओं को भी दुर्लभ है।" और उसकी प्रशंसा यों प्रकट की:—

> घर ढांगी आलम धणी परगल लूणी पास।
> लिखियो जिणने लाभसी राड़धड़ा रो वास॥

अर्थात जहां ढांगी नाम रेत के टीबे की जमीन है जिसमें बढ़िया घोड़े होते हैं। आलमजी नामक देवता धणी (संरक्षक-इष्टदेव) हैं और प्रबल लूणी नदी पास ही बहती है। ऐसे राड़धड़ा का निवास जिसके (भाग्य में) लिखा है उसी को मिलेगा।

मारवाड़ में पशु सम्बन्धी दो बड़े मेले लगते हैं। एक तो चैत्री का मेला जो जोधपुर से ८० मील पश्चिम में बालोतरा नगर के पास तिलवाड़ा (मालानी) गांव में हर साल चैत्र वदि १० से सुदी ११ (मार्च-अप्रेल) तक भरता है। दूसरा प्रणवीर जाट तेजाजी का मेला है जो जोधपुर से १२० मील उत्तर पूर्व में परबतसर[1] गांव में प्रत्येक वर्ष भादवा वदि १३ से भादवा सुदि १५ (आगस्ट-सितम्बर) तक लगता है। इन मेलों में राजपूताना, मालवा, सिन्ध, गुजरात, पंजाब और संयुक्त प्रांत के हजारों किसान और व्यौपारी लोग पशुओं की बेचने-खरीदने तथा अदल बदल करने को आते हैं। चैत्री के मेले से राज्य को करीब २४ हजार और परबतसर से कोई १ लाख रुपये की आमदनी (मवेशी महसूल से) होती है। पशु हजारों की संख्या में इन मेलों में इकट्ठे होते हैं।

१—[illegible] यह करीब [illegible]

यहांके धान का महत्व

यहां का अनाज (धान) दूसरे प्रांतों से अच्छा, स्वादिष्ट और पुष्टि कारक होता है । इसके गुणों की विशेषता में कहा जाता है कि-एक समय मुगल सम्राट् अकबर ने मीना—बाजार (प्रदर्शिनी[1]) में अपनी अमलदारी के सब मुल्कों के गेहूं देख कर पूछा कि—"सब से अच्छा गेहूं कहां का है ?" वजीरों ने गेहूं के गुण हकीमों, व्योपारियों और बावर्चियों से पूछे तो हकीमों ने कहा कि—"जिस गेहूं में ज्यादा मैदा निकले ।" व्योपारियों ने कहा कि—"जो तोल में भारी हो ।" बावर्चियों ने कहा—"जिसका आटा ज्यादा पानी ले और जिसमें रोटी ज्यादा हो वही गेहूं सब से अच्छा है ।"

१—ये मीनाबाजार हमेशा जशन नौरोज के दिनों में बड़ी धूमधाम से [illegible] करते थे । इनका प्रबंध मरदाने दरबारों में बड़े २ अमीर [illegible] और [illegible] बेगमें करतीं थीं । मगर वहां दुकानदार हरेक देसी और [illegible] स्त्रियां होतीं थी । नौरोज के जशन मुगलशाही में [illegible] वे बादशाह उत्तरखंड के ठंडे और बर्फीले मुल्कों—[illegible] निवासी थे जहां सूरज के मेष राशि में आने पर बहुत [illegible] ने नौरोज (नया दिन) के जशनों (उत्सवों) को १९ दिन [illegible] क्यों कि उस वक्त मेष भानु से मेष संक्राति तक १९ दिन [illegible] २३ दिन हो गये हैं । अब मेष भानु २१ मार्च को और [illegible] होती है । इन नौरोजों के शानदार दरबारों में [illegible] शाहों की कीमती बख्शिशों के हालात जो तवारीखों तथा [illegible] वे आज किस्से कहानीसे मालूम होते हैं । इन नौरोजों [illegible] न जाननेसे चारण लोगों ने इसके गलत अर्थ लगा कर [illegible] व भोलेभाले राजपूतों को सुनाया करते हैं । [illegible] से रानियों को पकड़कर ले जाते थे और चारणिया [illegible] इज्जत (सतीत्व) बचाने को आत्मदान के बारे [illegible] मनगढंत किस्सों से मीनाबाजार के [illegible] जो खास २ लोग राज दरबार की बातों, पोलिटिकल [illegible] को जानते थे, उनके ऐसे गलत ख्याल नहीं थे ।

सौदागरों ने बादशाह के सामने सब जगह के गेहूँओं को उन कसौटियों पर कसा तो मारवाड़ का गेहूँ सब से अच्छा निकला। बादशाह ने खुश होकर मीनाबाजार के सारे मारवाड़ी गेहूँ की खरीदारी शुरू करदी। उस दिन मारवाड़ का जितना गेहूँ आगरे के बाजारों में था वह सब महँगे मोल पर बिक गया और व्योपारियों को मनचाहा फायदा हो गया।

एक दिन बादशाह अहमदशाह की बेगम ने जनाने मीनाबाजार में जगह २ की बाजरी के नमूने देख कर पूछा कि—"इसमें गांव मोलासर (परगना नागोर-सूबे अजमेर) की बाजरी कौनसी है?" एक दुकानदार औरत ने कहा—"यह है।" बेगम उसमें से मुट्ठी भर बाजरी ले गई। जब बादशाह महल में आये तो बेगम ने पूछा कि—"आपने मीनाबाजार में मोलासर की बाजरी देखी?"

बादशाह ने चौंकते होकर कहा कि-"मैं मोलासर की बाजरी क्यों देखता और तुम भी उसके बाबत क्या जानो?"

बेगम—"जहांपनाह! आप भूल गये। आपने ही तो मुझसे एक रोज फरमाया था कि-आज हमने जोधपुर के राजा बख्तसिंह राठोड़ से पूछा कि- 'तुम ऐसी क्या चीज खाते हो जो तुम्हारे बदन की रंगत, मेदा और शाब (कसुम) जैसी है?" तो उसने कहा कि-"मैं मोलासर की बाजरी खाता हूं।" यह बात मैंने याद रक्खी और आज वह मोलासर (परगना नागोर) की दोहामी बाजरी मीनाबाजार से ले आई।"

बादशाह—"कहां है?"

बेगम—"साहब आलम! यह हाजिर है। आप राजा बख्तसिंह को दिखा कर तसदीक कर लीजिये।" बादशाह ने महाराजा को ड्योढ़ी पर बुला कर यह बाजरी दिखाई और पूछा कि—"यह कहां की है?" बाजरी को देखते ही महाराजा को अपने वतन (जन्मभूमि) की याद आ गई। खुशी के आंसू आंखों में भर आये। बाजरी को सिर पर चढ़ा कर अर्ज किया कि- जहांपनाह! यह मोलासर की बाजरी है। परन्तु हुजूर के पास कहां से आ गई?"

बादशाह—"क्या तुम इसी को खाते हो?"

राजा—"हां हुजूर।"

बादशाह—"हम भी इसको खाना चाहते हैं ता कि हमारी रंगत भी तुमारे जैसी हो जाय।"

राजा—मैं अर्ज करूं उसी तरीके से हुजूर तनावुल फरमावें (खावें)।"

बादशाह—"वह तरीका क्या है?"

राजा—"जहांपनाह, इसके ताजे २ आटे की रोटी (सोगरा) मोलासर की गाय या भैंस के ताजे दूध दही और मक्खन के साथ जितनी रुचे, खाई जाय।"

बादशाह—"और?"

राजा—"आटा भी वहां की सुघड जाटनियों के हाथ का पिसा हो।"

बादशाह—"और पकानेवालियां?"

राजा—"हुजूर, वे ही जाटनियां हों।"

बादशाह—"तो फिर यह सब कहां मिले?

राजा—"हुजूर! सब मेरे लश्कर में हाजिर हैं।"

बादशाह—"तो जल्दी हाजिर करो।"

राजा—"जो हुक्म। क्या बाजरी भी हाजिर करूं?"

बादशाह—'बाजरी तो मीनाबाजार से खरीद लेंगे। इससे बाजरी वालों को भी फायदा हो जावेगा। तुम तो मोलासर की गायें, भैंस और जाटनियों को खासे बावर्चीखाने में भेज दो।"

यह कह कर बादशाह ने हुक्म दिया कि-"भीतर और बाहर के मीनाबाजारों में जितनी मोलासर (नागोर में) की बाजरी हो, सरकार में खरीद ली जावे।"

यह मोलासर की बाजरी दिल्ली में राजा बख्तसिंह के लश्कर के लिये बाजार में आया करती थी। बादशाही सरकारी में मोलासर की बाजरी की इतनी पूछ हुई कि-मारवाड की बहुतसी बाजरी मोलासर के नाम से बिक गई। मोलासर के दो होशियार जाट अपनी औरतों व गाय-भैंसों समेत बादशाही नौकर हो गये, जो राजा को खुफिया पुलिस का काम देते थे।

वायु-विज्ञान

दुकाल और सुकाल का होना सर्वथा बारिश पर निर्भर होने के कारण यहां के लोग हवा और दूसरे प्राकृतिक चिन्हों पर से पहले से ही अन्दाजा लगाने का बहुत कुछ प्रयत्न करते रहते हैं और इसी कारण उन्होंने अपना एक " वायुविज्ञान " (मिटयोरोलोजीकल साइन्स) भी निर्माण कर लिया है। जो कई कहावतों और तुकबंदियों में बहुत से ग्रामीण लोगों के मुंह से सुना जाता है। उनमें से कुछ यहां लिखते हैं[१]:-

तीतर पंखी बादली विधवा काजल रेख।
वा बरसे आ घर करे तामें मीन न मेख॥

यदि आकाश में तीतर पंखी बादली और विधवा स्त्री की आंख में काजल की रेखा दिखाई दे तो समझना चाहिये कि-पहिली तो अवश्य वर्षा करेगी और दूसरी अवश्य ही घर करेगी (नया पति करेगी)। इसमें कुछ भी सन्देह नहीं।

ऊगन्तेरो माछलो आथमतेरो मोग।
डंक कहै है भड्डली नदियां चढसी गाग॥

यदि प्रातःकाल को इन्द्रधनुष, सायंकाल को सूर्य की लाल किरणें दिखाई दें तो समझना चाहिये कि-नदियों में बाढ आवेगी। ऐसा डंक भड्डली से कहता है।

चेत चिड़पड़ो सावन निरमलो

यदि चैत्र में छोटी २ मेह की बूंदें गिरें तो सावण में वर्षा बिलकुल न होवे।

परभातां गह डंबरां दोफारां तपंत।
रातूं तारा निरमला चेला करो गछंत॥

यदि प्रातःकाल में बादल छाये हों, दोपहर को गर्मी मालूम हो और रात्रि को निर्मल आकाश में तारे दिखाई दें तो हे शिष्य! उस देश से अपना रास्ता लेना चाहिये। (अर्थात् वहां अकाल पड़ेगा)।

१—अगर इस सम्बन्धी कहावतें अधिक जानना हो तो इस इतिहास के [illegible] "[illegible] की कहावतें" नामक पुस्तक पढ़िये।

परभातां गहडम्बरा सांजे सीला वाव।
डंक कहे हे भड्डली कालां तणा सुभाव॥

डंक भड्डली से कहता है कि-यदि प्रातःकाल में वादल छाये हों और सायंकाल में ठंडी हवा चले तो अकाल समझना।

सावण तो सूतो भलो ऊभो भलो असाढ़।

श्रावण मास में द्वितीया का चन्द्र सोया हुवा अच्छा है और आषाढ में खड़ा हुवा अच्छा है।

जेठ वीतां पहली पड़वा जो अंवर गरहड़े।
असाड सावन काढे कोरो भादरवे विरखा करे॥

आषाढ की एकम को यदि वादल गर्जे या वर्षा हो तो आषाढ़ और सावण सूखे जाय और भाद्रपद में वर्षा हो।

आभो रातो मेह मातो, आभो पीलो मेह सीलो।

यदि आकाश में ललाई दिखाई दे तो भारी वर्षा हो और पीलापन दिखाई दे तो वर्षा की कमी हो।

सौ सांड्या सौ करहलां पूत निपूतां होय।
मेहड़ला वूठा भला जे दुखियारण होय॥

जिस वूढी औरत के सौ ऊंट और ऊंटनियां तथा सारी सन्तान भी वर्षा से नष्ट हो चूकी हो तो भी वह सब प्रकार के कष्ट उठाती हुई भी मेह का स्वागत ही करती है।

नाडां टांकण वलद विकावण।
मत वाजे तू आधे सावण॥

हे दक्षिण पूर्वी (नाड़ाटांकण) वायु! सावण के वीच में मत चल वर्ना (अकाल के भय से) मुझे वैल वेचने पड़ेंगे।

घण जाया कुल हांण घण वूठा कण हांण॥

सन्तान की अधिकता कुटम्ब का नाश करती है और वर्षा की अधिकता अन्न का नाश करती है।

सावण में सुरियो भलो, भादरवे परवाई।
आसोजां में पिच्छम वाजे जूं जूं साख सवाई॥

यदि श्रावण में वायव्य (उत्तर-पश्चिम) कोण की हवा चले और आसोज में पश्चिम की चले तो फसल खूब होती है।

मेह ने पावणा किणरे घरे ॥

मेह और पाहुने सदा स्वागत योग्य हैं। (अतिथी-सत्कार हिन्दु धर्म व भारतीय सभ्यता का एक खास अंग है। इस कारण पाहुनों का घर पर आना अहोभाग्य होता है)।

किरती एक भबूकड़ो ओगण सहगालिया ॥

कृतिका नक्षत्र में बिजली की एक चमक भी पहिले के सारे अपशगुनों को मिटा देती है।

सावण पेहली पंचमी मेह न मांडे आल।
पीव पधारो मालवे म्हे जासां मोसाल ॥

एक गुजराती स्त्री अपने राजस्थान निवासी पति से कहती है कि यदि मेह सावण वदी ५ तक बरसना शुरू न हो तो आप मालवे जाना और मैं अपने पीहर को जाऊंगी (अकाल से घर छोड़ना ही पड़ेगा)।

रोहण तपे मिरगला बाजे।
आदरा अण पूछिया गाजे ॥

यदि रोहिणी नक्षत्रमें कड़ाके की गर्मी पड़े, मृगशिरामें आंधी चले तो आर्द्रा में मेघ खूब बरसेगा।

आसाढ़ारी सुद नम घण बादल घण बीज।
नाखो कोठा खोल दो राखो हळने बीज ॥

यदि आषाढ़ सुदि नवमी को खूब बादल हों तो एकत्रित पुराना धान बेच डालो, केवल बीज और बैल रखो। अर्थात जमाना अच्छा होगा और बीज के सिवाय अनाज की ज्यादा जरूरत न पड़ेगी।

अकाल

मारवाड़ मे अकाल हमेशा सिर पर खड़ा रहता है। हर तीन साल में एक अच्छा जमाना मुश्किल से होता है और १० वर्ष में एक भयंकर अकाल आ सताता है। किसी स्थानिक कवि ने अकाल के निवास स्थान पर यह उक्ति कही है:—

पग पूंगल सिर मेड़ते उदरज बीकानेर।
भूलो चूको जोधपुर ठावो जैसलमेर॥

अकाल कहता है कि-मेरे पैर पूंगल[1] देश में, शिर मेड़ते में और उदर बीकानेर में स्थायी रूप से हैं। कभी २ भूला भटका जोधपुर भी पहुंच जाता हूं; परन्तु जैसलमेर में तो स्थायी रूप से निवास करता हूं।

यद्यपि पिछले २०-२५ वर्षों से रेल आदि की सुविधा हो जाने से अकाल की उतनी भयंकरता नहीं रही है। जिस वर्ष अकाल पड़ता है, उस वर्ष लोग अपने बालबच्चों सहित मवेशी-ढोर डंगरों को लेकर नदी नालेवाले मालवा, सिन्ध, गुजरात, आगरा, संयुक्त प्रांत और बराड़ प्रांत की ओर चले जाते हैं। तथा अगले वर्ष बारिश होने के समाचार पाकर वापिस लौट आते हैं। जब रेल की सुविधा न थी तब मारवाड़ को इस तरह छोड़ के जाना बहुत ही निराशाजनक होता था और घर को वापिस लौटने की आशा छूट जाती थी। जैसा कि-किसी ने कहा है:-

" आडावालो उलांगियो छांड घररी आस "

दुर्भिक्ष के भोजन

अकाल के समय गावों के गरीब लोग अकसर पेड़ों की छाल और फलों को सुखा व पीस कर आटे में मिला के खाते हैं। उन वृक्षों में से कुछ का वृत्तांत यह है:—

खेजड़ा—की कच्ची फलियां उबाली जाती हैं और नमक लगा कर खाई जाती हैं। पकने पर फलियां फलकी तरह खाई जाती हैं। बीजों को भून कर आटे के साथ मिलाया जाता है जिसकी रोटी बना कर खाई जाती है। वृक्ष की पुरानी और सूखी छाल [illegible] कर पीसी जाती है जिसको आटे में मिला कर रोटी बनाई जाती है। फलियां [illegible] से वैशाख तक लगती हैं। छाल हाजमे को सुधारती है व छाल [illegible] चारा है। यह वृक्ष मरवाड़ के प्रत्येक स्थानमें [illegible]

1—पूंगल और मेड़ता पुराने समय के [illegible] और जोधपुर राज्यमें क्रमश: हैं।

२—इस विषय को हमारी एक लेखमाला [illegible] पत्र के भाग ५ अंक ४८ ता० ३ नवम्बर सन १९२८ ई० से प्रकाशित [illegible]

मारवाड़ में अकाल और महँगाई

विक्रमी संवत १७१७ से जो अकाल मारवाड़ राज्य में पड़े हैं उनकी सूची यह है:—

वि० सं०	काल का ज़ोर	स्थानिक नाम
१७१७	भयंकर	भेरल काल
१८०३	"	" "
१८४५	"	" "
१८६९	"	" "
१८९०	भयंकर घास अकाल	तिन काल
* १८९४—९५	" अनाज "	अन्न काल
१८९७	महँगाई (आधा काल)	कुरी काल
१९०५	बहुत भयंकर	गौमार काल
१९०७	सख्त	अन्न काल
१९१०	सख्त	अन्न काल
१९२५	बहुत भयंकर	गौमार काल
१९३४	सख्त	अन्न और तिन काल
१९४४	महँगाई	कुरी काल
१९४८	सख्त	अन्न और तिन काल
१९५३	कुछ भागों में महँगाई	कुरी काल
१९५६	महा भयंकर	गौमार काल
१९६१—६२	आधा काल	कुरी काल
१९६४	घास अकाल और महँगाई	तिन काल
१९७२	सख्त	अन्न और तिन काल
१९७४	महँगाई	कुरी काल
१९७५	सख्त	अन्न और तिन काल
१९८२	अकाल	अनाज और घास

बोरड़ी (बेरी)—यह मारवाड़ के प्रत्येक स्थान में पाया जाता है। इसके फल पकने पर यों ही खाये जाते हैं। गुठलों की मींजी भी खाई

* इस वर्ष भी—घास और नाज का [illegible] था।

जाती है। बेरों को सुखा कर कई दिनों तक रख छोड़ते हैं और जरूरत पड़ने पर खाते हैं।

कैर—यह भी सब स्थानों में मिलता है। इसके फल वैशाख से सावण तक मिलते हैं। फल (कैर) यों भी खाये या चूसे जाते हैं। पके फल भी यों ही खाये जाते हैं। कच्चे फल उबाले जाने पर तरकारी के काम में आते हैं या सुखा कर आयन्दा काम में लाने के लिए रख लिये जाते हैं। इसके कच्चे फल गुणकारी बताये जाते हैं।

कूमट—इसके बीज भून पीस आटे में मिला रोटी बनाने के काम में आते हैं या करीब १० घण्टे पानी में भिगो या उबाल कर खाये जाते हैं। यह वृक्ष भी प्रायः सब जगह मिलता है। इसके बीज भी इकट्ठे करके रख लिये जाते हैं और गरीब अमीर सब उन्हें तरकारी के काम में लाते हैं।

जाल या पीलू—इसका फल पीलू ताजा खाया जाता है। सूखने पर इकठ्ठे करके आदमी या (दूध देनेवाली गाय-भैंस आदि) जानवरों के लिये जमा किया जाता है। यह वृक्ष जालोर, सांचोर, मालानी और जसवन्तपुरा के जिलों में, लूनी और उसकी सहायक नदियों के नीचे के भाग की खारी जमीन में, अधिकता से पाया जाता है। जहां किसान मामूली दिनों में भी इसके फल जमा करते हैं।

टीबरू—पके फल खाये जाते हैं जो वैशाख जेठ में होते हैं। इस वृक्ष की मोटी छाल कुल्हाड़े से उतार कर टुकड़े २ कर ली जाती है और छाया में सुखाई जा कर आटे के साथ मिलाई जाती है और रोटियां बना कर खाई जाती है।

गूलर—इसकी छाल भी टीबरू की तरह काम आती है। पके फल खाये जाते हैं तथा सूखने पर पीस कर रोटी बनाने के वास्ते आटे के साथ मिलाये जाते हैं। कच्चा फल उबाला जा कर तरकारी के काम आता है। बारहों महीना मिलता है। इसके फल बड़े लाभदायक समझे जाते हैं।

इमली—इसकी खेती भी होती है और जंगलमें भी पाई जाती है। पके फल खाये जाते हैं और बीजोंको भून कर खाते हैं। छाल पीस कर आटे में मिला कर खाई जाती है। इससे पेट फूल जाने का भय रहता है।

फोग—मारवाड़ में सर्वत्र मिलता है। फल और फूल तरकारी के काम में आते हैं। इनको पीस कर रोटी भी बनाई जाती है।

कैरोंदा—फल भादवा में पकते हैं और वह खाये जाते हैं। यह झाड़ी गोड़वाड़ परगने के जंगल में यों ही मिलती है।

छोटी कांटी—फलों को कूट कर तिनके निकाल दिये जाते हैं। पीछे पीस कर आटे में मिला कर रोटी बनाते हैं। कच्चे फल व डालियां उबाल कर तरकारी (साग) के काम में लाते हैं। वर्षाद में यह बेल पैदा होती है।

तसतूम्बा—फल भादों में पकते हैं और वे बड़े कड़वे होते हैं। यह औषधियों में भी काम आते हैं। बीज मीठे होते हैं और भोजन के काम आते हैं। विशेष कर रेगिस्तान में पीस कर रोटी बनाई जाती है। वर्षाद के बाद पौधा जल जाता है और जड़ रह जाती है।

कैंवच—इसके बीज भूने जाते हैं और छिलका उतार कर गूदा खाया जाता है। यह पुष्टिकारक है। आडावला की तर झाड़ियों में यह बारहों मास रहती है। वर्षा के सिवाय और वक्त में फल नहीं लगते।

मुसली सफेद—यह जंगल में प्याज के जैसे पत्तों की होती है। जड़ को पीस कर आटे की तरह खाई जाती है। दवा के काम में भी आती है।

गवारफली—यह बोई भी जाती है और वैसे ही जंगलों में भी उगती है। कच्ची फलियें उबालने पर साग (तरकारी) के काम में आती हैं। बीज पीसे जा कर आटे में मिलाये जाते हैं। फलियें कार्तिक में पकती हैं।

भूरट—यह रेतीले परगनों का खास घास है। खरीफ की फसल के साथ अनाज की तरह इसको भी इकट्ठा किया जाता है। [illegible]

पौधों का यह हिस्सा है। बीज मनुष्यों का भोजन है और भूसा पशुओं का। मामूली धान की तरह पीस कर काम में लाया जाता है।

धोराभाटा—यह एक प्रकार का खनिज पदार्थ है यानी मिट्टी। बागरा और अन्य स्थानों में यह पाया जाता है। इसे भी अकाल के समय गरीब लोग खाते हैं।

मुल्तानी मिट्टी (मेट)—मालानी के रेतीले भाग में जमीन के नीचे पाई जाती है। गरीब लोग इसे भी अकाल के समय खाते हैं।

मारवाड़ी कौन हैं?
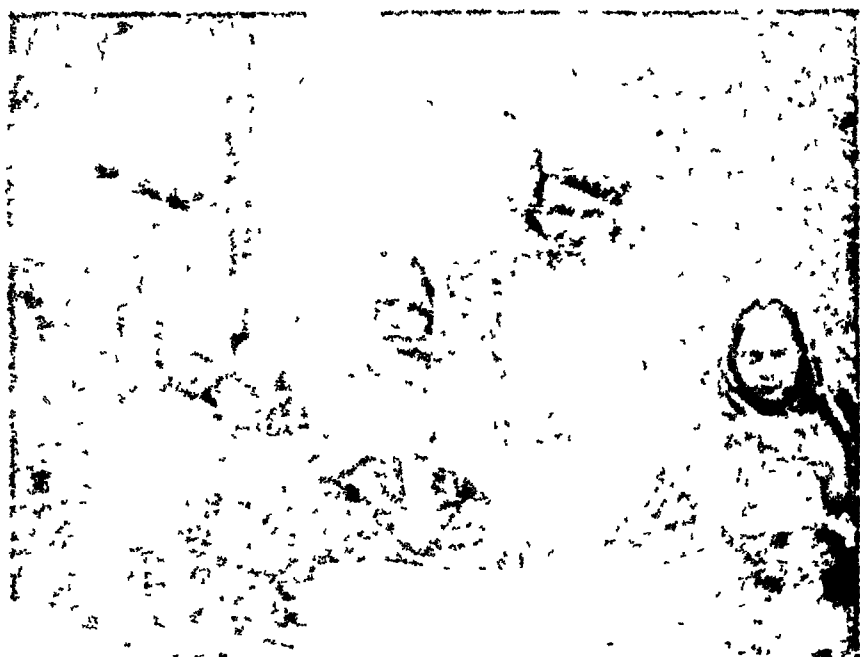
एक मारवाड़ी परिवार।

पढ़े लिखे (ग्रेजुएट) मारवाड़ी लोग हाकिम (न्यायाधीश) बनने के लिये बहुत कोशिश करते हैं। कुछ समय पहिले जब कानून कायदे–

कोर्ट नहीं बने थे तब कई हाकिम लोग मनमानी करते थे। उनके नीचे के चपरासी जो अधिकांश में मुसलमान सिन्धी सिपाही होते-वह भी कम नहीं होते थे। इनके लिये राज्य की रिपोर्ट सन १९११ के पृष्ठ ३८ में लिखा हैः—

मुड़दो हाकिम होय, कानूगो साथ में।
परवाना अणपार मोहर मित हाथ में॥
थल सांसण में जाय रेतने चूंथणा।
इतरा दे किरतार फेर कांई बूजणा॥

अर्थात "हाकिम मुरदार हो, साथ में कानूगा भी वैसा ही हो, समन बहुत हो और समनों पर लगाने की मोहर मेरे हाथ में हो और मैं रेतीले परगनों और सांसण (धर्मादे) के गांवों में जा कर खूब रयत को लूटूं। अगर ईश्वर इतना दे तो फिर क्या कहना है।"

मारवाड़ राज्य मे शिक्षा के अभाव के कारण पहले पहल बहुत से पढे लिखे पंजाब और संयुक्त प्रांत के लोग बुलाये गये। इन लोगों के हाथ में बड़े २ ओहदे रहने से यह अपने रिस्तेदारों को बाहर से बुला कर अच्छी २ नौकरियां देने लगे और मारवाड़ में जन्मे हुवे गौर पुरुषों के हक मारने लगे। इस पर श्रीदरबार साहब ने अपनी प्रजा के अधिकारों को बचाने के लिये मारवाड़ी शब्द की व्याख्या स्पष्ट कर दी कि-जो पुरुष ३० वर्ष मारवाड में रह चुका है या जिसके पास जायदाद मारवाड में है वह "मारवाड़ी" कहलायगा और खाली नौकरी वगैरे के वक्त उसका पहले ख्याल किया जायगा। किन्तु जब मालूम हुवा कि तीस वर्ष नौकरी करके भी बाहर से आये लोग मारवाड़ के हित साधन मे अपना मन नहीं लगाते और अपने आप को मारवाड़ी नहीं समझते हुवे मारवाड़ियों पर मनमानी बरजोरी करते हैं तो प्रजा ने मारवाड़ी शब्द की व्याख्या इस प्रकार करनी चाही कि 'तीन पीढ़ियों से मारवाड राज्य मे रहनेवाला, नौकरी के कारणों को छोड़ कर अपनी मर्ज़ी से मारवाड को जन्मभूमि बनानेवाला, मारवाड़ में स्थावर सम्पत्ति रखनेवाला तथा मारवाड में पैदा हुवा मारवाड़ी समझा जाना चाहिये।'

पहिनाव

मारवाड़ के हिन्दु पुरुषों के पहिनाव (पोशाक) में तीन चीजें मुख्य हैं। १—धोती, २—बांडिया, अंगरखा या कुरता, ३—पाग। कोई कोई कन्धे पर अंगोछा भी डाल लेते हैं जिससे शरीर के उपरी भागों का बचाव होता है। देहाती लोग घुटनों तक खद्दर (रेजे-मोटे कपड़े) की धोती व कमरी अंगरखी पहिनते हैं और सिर पर गाढ़ा कपड़ा जिसको "पोतिआ" कहते हैं-बांधते हैं तथा रेजे का पिछेवड़ा अकसर पास रखते हैं। शहरी लोग पांच गज लम्बी और १॥ गज

देहाती स्त्रियां व लड़का लड़की

चौड़ी रंगीन किनारीदार मिल की बनी धोती पहिनते हैं। और राज-कर्मचारी लोग चूड़ीदार पायजामा के बजाय अब "जोधपुर ब्रीचीज" प्रायः पहिनते हैं।

कुछ वर्षों से लोग बांडिया अंगरखा को छोड़ने और बिना कफों का कुरता पहिनने लगे हैं। महाजन (वैश्य) लोग पचा-पाग या पगड़ी (जो १८ गज लम्बी और ८ इंच चौड़ी बारीक सूत का कपड़ा होता

है जिसके किनारों पर जरी का काम किया होता है) बांधने हैं जिन को भिन्न २ उपजातियां भिन्न २ तरह से अपने सिर पर बांधती हैं।
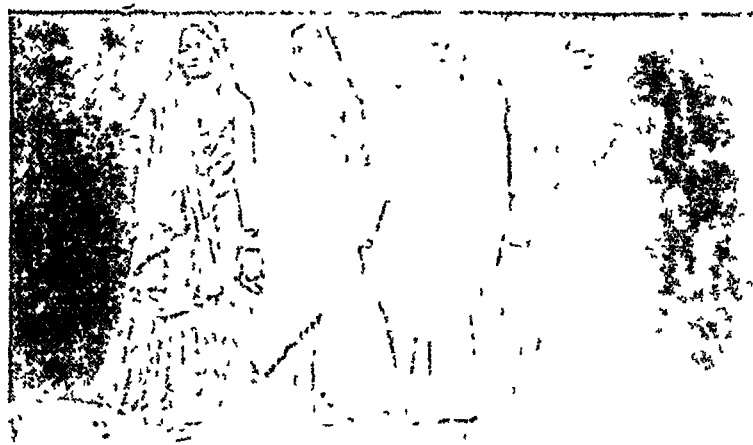
शहरी स्त्रियों की पुशाक

सिर पर बांधने की पोशाक में से चोन्चदार पाग राजपूताने भर में विख्यात है। जिसकी विशेषता यह है कि-इसके चारों तरफ एक प्रकार फीता बांधा जाता है जिसको सादा होने पर उपरनी और सोने चांदी के काम से खचित यानी जरीदार होने पर ' बाल्दार्बंदी " कहते हैं इस समय लोग पोतिश्रा के बजाय साफा (फेंटा) सिर पर बांधने लग गये हैं। जो मामूली मलमल का आधा हिस्सा होता है। कोई कोई अंग्रेजी ढंग के कोट, पतलून या ब्रीचीज और अंग्रेजी टोप भी धारण करते हैं। इस टोप धारण और दाढी मूंडाने का प्रचार राजपूतों में महाराजा सर प्रताप ने आज से ३५-४० वर्ष पूर्व यहां किया था।

स्त्रियों की पोशाक प्रायः घाघरा (लहंगा) कांचली (जो सिर्फ छाती को ढकती और पीठ को नहीं और तनियों से बंधी जाती है) या अंगरखी और ओढनी है। यह ओढनी (ओढनी-दुपट्टा) ढाई गज

[illegible] और [illegible] गज लम्बी होती है जो मस्तक और शरीर को ढकती है। इसको दो प्रकार से ओढ़ते हैं। लुगाइ(स्त्री)यां जो मजदूरी कर अपना पेट पालन करती हैं। इसके (ओढ़नी) दोनों पल्ले घाघरे में टांग लेती हैं और कभी २ दहिना पल्ला कमर से चारों तरफ लपेट लेती हैं, जो कमरबंद का काम देता है जिससे हाथों को काम करने में स्वतंत्रता मिलती है और सिर के ऊपर का हिस्सा, जिसको घूंघट कहते हैं, अन-जान और बड़े बूढ़ों के सामने मुंह पर आसानी से उतार लिया जाता है। लुगाइयां जो मजदूरी (कामधन्धा) नहीं करतीं वे ओढ़नी (या ओढ़ना) के बांये पल्ले को पटली (चुन्नत) करके घाघरे में अटका लेती हैं और दायें पल्ले को या तो काम करते समय कन्धे पर डाल लेती हैं या नीचे लटका रहता है, ताकि आसानी से घूंघट निकाल लिया जाय। घूंघट के समय सिवाय दाहनी आंख के सारा मुंह ढक जाता है। शहर में आजकल साड़ी का प्रचार भी बढ़ता जाता है। कोई २ कमीज और वास्कट भी पहनती हैं।

मुसलमान पुरुषों का भी उपर्युक्त पहराव ही है। केवल स्त्रियां पायजामा, आधी बाहों का लम्बा कुरता और ओढनी पहनती हैं। मारवाड़ की प्रायः सब जातियों का पहराव एकसा है जो भारत में आदर की दृष्टि से देखा जाता है। राजपूताने के अन्य भागों की तरह यहां भी पर्दे का रिवाज नहीं है। राजपूत जागीरदार जिनके यहां बांदियां (दावड़िया-दरोगानियां) काम करने को होती हैं उनके यहां अलबत्ता पर्दा होता है मगर गरीब और हलधड़-कृषक राजपूतों की औरतें कुएं या तालाब से पानी भर के भी लाती हैं और अपने मर्दों को रोटी देने को खेतों में भी जाती हैं। यदि वे ऐसा न करें तो उनका काम कैसे चले। आजकल लोगों में धन के साथ २ पर्दा प्रथा भी बढ़ती जाती है। देखने में आता है कि-ज्यों ही एक आदमी ने चार पैसे कमाये या अच्छा ओहदा पाया कि-फौरन पर्दे का रोग उसकी जान पर सवार हुआ। उसमें भी खास कर मुसलमान इसमें शीघ्र और अधि-कता से फसते हैं।

यहां पर यदि "जोधपुर ब्रीचीज" का जिक्र खास तौर से न किया जाय तो मारवाड के पहनाव का वर्णन अधूरा ही रह जायगा। यह जोधपुर ब्रीचीज एक बडी उपयोगी वस्तु है। इसका आविष्कार जगद्विख्यात पोलो खिलाडी वीर योद्धा महाराजा सर प्रताप ने स० १९४८ में किया था। यह राईडिंग ब्रीचीज और फाजी ओवरआल्स को काट छांट कर बनाई गई है व गुठनों के नीचे मिलीटरी ओवरआल्स से तंग होती और इसमें पैरों के पास तस्मा नहीं लगता है। राजपूताने के राजा महाराजा सरदार और बडे २ बाबू लोग तथा बृटिश सरकार के बडे २ अंग्रेज अफसर इसको बडे शोक से पहिनते हैं। योरप में भी "जोधपुर ब्रीचीज" के नाम से इसका खासा भला प्रचार है।

साधारण भोजन

मारवाड में विशेष कर कृषक प्रजा में भोजन के लिये इन पदार्थों का उपयोग किया जाता है:—

सोगरा—बाजरी के आटे की मोटी सेंकी हुई सख्त रोटी जो कम से कम ७-८ तोले वजन में होती है।

राव—छाछ में बाजरी का आटा घोल कर प्रायः सन्ध्या को उबाला जाता है और दूसरे दिन खाया जाता है।

खीच—बाजरे को ओखली में कूट और उसका छिलका उतार कर चोथाई हिस्सा मोठ मिला पानी में पका के गाढा बनाया जाता है और कभी २ घी या तिल्ली के तेल से खाते समय चुपड़ कर स्वादिष्ट बनाया जाता है।

घाट—मक्की का मोटा दला हुवा आटा पानी में पका कर गाढा बना लिया जाता है।

दलिया—यह बाजरी के आटे की घाट ही है परन्तु यह पतला होता है। गरीब लोगों को यह भी पूरी तौर से नसीब नहीं होता।

कैर, कूमट, फोग, सांगरी, पीलू और दूसरे पेड़ों की फलियां यहां की मुख्य तरकारी हैं। इनको प्रायः लोग साल भर के लिये इकट्ठा कर

[illegible] और शर्दी हालत में भी पकाते हैं। अधिकतर लोक दिन में [illegible] बार भोजन करते हैं परन्तु उनका यह भोजन नाम मात्र का ही होता है। [illegible]

गेठी—[illegible] बजे सुबह का भोजन।

[illegible]—२ बजे दिन का भोजन।

बीयालु—संध्या के बाद का भोजन।

सर्वसाधारण जनता का मुख्य भोजन बाजरी है। किन्तु कुछ पर[illegible]नों में [illegible] धान काम में लाया जाता है। जैसे कि-जैतारण, [illegible], पाली और बीलाड़ा परगनों में गेहूं ही अधिकतर खाते हैं। [illegible] व बाली में मकी और कूरा बहुत खाते हैं। जैसा कि-इस कहा[illegible] से प्रकट होता है:—

कूरा करसा खाय गेहूं जीमें बाणियां॥

किसान खुद कूरा अनाज (Coarse grain) खा कर अपने कर्ज़ के पेटे गेहूं बोहरों (महाजनों) को देते हैं। यह काश्तकार बड़े ही [illegible], अपने व्यवहार में सच्चे, सादा जीवन रखनेवाले, किफायतसार और स्वभाव से मेहनती होते हैं। यह केवल यह चाहता है:—

नई मूंजरी खाट के नव्वु टापरी।
भैसड़ल्यां दो चार के दूजे बापड़ी॥
बाजर ढेंढा बाट दही में ओलणा।
इतरा दे किरतार फेर नहीं बोलणा॥

अर्थात नये बाणों (मूंज की रस्सी) से बुनी हुई खाट हो, वर्षा में न टपकनेवाली [illegible] की झोंपड़ी हो और दो चार दूध देनेवाली भैंसे हों [illegible] बाजरे के सोगरे (रोटी), दही के साथ खाने के लिये हो। यदि परमात्मा हम को इतनी बातें दे तो फिर गिड़गिड़ाने की कोई आवश्यकता नहीं।

[illegible]—[illegible] का [illegible] अनाज है जो कि-[illegible] (नागलु) [illegible] बोया जाता है और [illegible] में बरसात के मौसम में पैदा होता है। [illegible] यह [illegible] किसानों का साधारण भोजन है।

देहाती कन्या की इच्छा भी अधिक ऊंची नहीं होती जैसा कि इस दोहे में कहा है:—

ऊंठ ही पीरो होय ऊंठ ही सासरो।
आधुंणों होय खेत चवे नहीं आसरों॥
नाडा खेत नजीक जठे हल खोलना।
इतरा दे किरतार फेर नहिं बोलना॥

मारोठ, सांभर, परवतसर और मेड़ता के उत्तर पूर्व परगनों में जौ, और जालोर, जसवन्तपुरा, सांचोर व सिवाना में गेहूं ही आम तौर पर खाते हैं। नागोर की प्रजा अधिकतर जवार, बाजरी और [illegible] चाना, मालानी, शिव, शेरगढ़ तथा फलोदी परगनों के लोग बाजरी और मोठ पसन्द करते हैं। प्रजा का साधारण रहन सहन और खाने पीने का फोटो इस कविता मे देखिये:—

आकडे की झोपड़ी फोगन की वाड़।
वाजरी का सोगरा मोठन की दाल।
देखी राजा मानसिंघ थारी मारवाड़॥

अर्थात वहां पर आक के झोपड़े और फोग की बाड़ें और बाजरी के सोगरे और मोठ की दाल है। राजा मानसिंह! तेरी मारवाड़ देख ली।

गांवों में लोग चार प्रकार के मकानों में रहते हैं जो झूंपा, पक्का घर और हवेली कहलाती है।

मनुष्यगणना

मारवाड़ में अब तक पांच बार मर्दुमशुमारी हुई है। पहले पहल फागुण वदी २ सं० १९३७ गुरुवार (ता० १७ फरवरी १८८१ ई०) को हुई जिसमें १७,५७६९८ स्त्रीपुरुष गिने गये थे। यह संख्या वास्तविक संख्या से बहुत कम थी। क्यों कि-कुछ तो नवीन काम होने पर विशेषत: पहाडी जंगली जातियों ने भ्रमवश इनका घोर विरोध किया और दूसरे निमित्त कर्मचारी इस काम को भलीभांति न समझ सके। दूसरी

गणना फागुन वदी ३ सं० १९४७ गुरुवार (ता० २६ फरवरी १८९१ ई०) को हुई जिसमें पाया जाता है कि-यहां की आबादी २५,२८,१७८ थी। ऐसे ही फागुन सुदी ११ सं० १९५७ शुक्रवार (ता० १ मार्च १९०१ ई०) को १९,३५,५६५ तथा फागुन सुदी १० सं० १९६७ शुक्रवार (ता० १० मार्च १९११ ई०) को २०,५७,५५३ और माघ सुदी १४ सं० १९७७ (ता० २१ फरवरी १९२१ ई०) की रात को १८,४१,६४२ मनुष्यों की थी।

संवत् १९५७ में आबादी कम होने का कारण सं० १९५६ का भयंकर अकाल और दूसरा सं० १९५७ में बुखार की बीमारी का फैलना है। ऐसे ही सं० १९७७ का कारण सं० १९७५ में जोधपुर परगने में पहले पहल प्लेग का बड़े जोर से होना और सं० १९७६ का जंगी बुखार (इन्फ्लुआ) है।

धर्म

राज्य में मुख्य धर्म तीन हैं—वैदिक-हिन्दु, जैन और मुहम्मदी। ईसाई और पारसियों के धर्म को माननेवाले यहां कम हैं जो नौकरी के कारण इधर रहते हैं। गत पांचवीं मनुष्यगणना में विशेष धर्म के माननेवाले इस प्रकार हैं:—

	कुल	पुरुष	स्त्री
हिन्दू	१६,८६,५१९	८,८८,७३२	७,९७,७८७
ब्राह्मणधर्मी (पौराणिक)		८३,८०,२६	७,३८,३०३
जैनी		४६,८३७	५६,२४२
		मंदिरमार्गी (मूर्तिपूजक)	कुल ७१,६६८
		स्थानकवासी (ढूंढियापंथी) मूर्ति न पूजनेवाले)	,, २१,४४९
		तेरहपंथी	,, ५,८४८

		दिगम्बरी	„ ४,२५६
आर्यसमाजी[1]		२५७	२३१
भैरव आदि देवता पूजक[2]		३५७२	२००५
सिक्ख		१०	६
मुसलमान	१,५४,४०६	८२०१४	७२३१५
सुन्नी		८१६५२	७२,०७८
सीया		१७६	१५९
अहलेहदीस		१८६	१६६
पारसी	१२	४६	४६
ईसाई	६२२	२२३	२६६
भारतीय ईसाई		२४८	२३५
विदेशी „		७५	६४
कुल जोड़	१८४१६४२	६७१,११५	८७०५२७

उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि-हिन्दुओं की गिनती सब से अधिक है। इससे हमारा मतलब उस सार्वभौमिक सनातन धर्म-

---

१—यह संख्या संतोषजनक नहीं है क्यों कि [illegible] हुवे भी कई कारणों से अपने आपको [illegible] नहीं [illegible]। [illegible] आर्य्यसमाजी हिंदुओं में गिने जाते हैं पर जैन और सिक्खों [illegible] जाता है। हमने तो इन सबको हिंदुओंमे ही गिना है।

२—यह लोग धाणका, भील मेणा-माना, [illegible] बावरी, गिरासिया और गवारिया नामक जंगली [illegible] ([illegible] खानेबदोश) जातिया हैं। जिनमें अभी [illegible] उन्हें प्राय अछूत (अस्पृश्य) ही गिनते हैं। [illegible] मिस्ट) यानी किसी धर्म को नहीं मानने वाले [illegible] यह लोग अपने को हिन्दुही मानते हैं।

धर्म में है जो सृष्टि के आदि काल से वैदिकधर्म कहलाता है। और जिसकी शाखाएं जैन, बौद्ध, सिक्ख आदि हैं। चाहे उनका देशकाल के अनुसार भेदभाव चल पड़ा हो फिर भी इन सब के सिद्धान्त एक तरह की ओर में जानेवाले हैं अर्थात मुक्ति। कई लोग मूर्तिपूजा और अन्य-उपासना से भी मुक्ति मानते हैं। इन (हिन्दुओं) में वे लोग भी हैं जो निर्गुण उपासना ही जीवन का लक्ष्य समझते हैं। यहां तक कि-जैनमत के स्थानकवासी (ढूंढिये) फिर्केवाले मूर्तिपूजा का निषेध करते हैं। सारांश यह है कि-हिन्दुधर्म इतना विस्तृत व महत्वपूर्ण है कि—जिसमें आत्मा और परमात्मा की हस्ती तक को न माननेवालों से लेकर सर्वजगत को ब्रह्मरूप माननेवाले तक लोग मौजूद हैं। और जो हर वस्तु में ईश्वर की सत्ता समझ कर उसकी पूजा करते हैं। इसी धार्मिक मतभेद के कारण

"आठ पुरबिया नव चूल्हा"

की सी शोचनीय दशा हमारी हो रही है। हिन्दुधर्म आजकल केवल चूल्हे में रह गया है। छूआछूत के पिंजरे में, बंधे हुवे पक्षी की तरह वह छटा-पटा रहा है। गूढ तत्व का तो समझना दूर रहा अपने धर्म की मोटी २ बातें भी बहुत कम इस धर्म के अवलम्बी समझते हैं। इसी से महान हिन्दु जाति का संगठन नहीं होता। इस विषय में मुसलमानों की चाल अनुकरणीय है। वह धार्मिक मामलों में अपने आपसी राग-द्वेष को भूल कर एकता के सूत्र में बंध जाते हैं। और हम लोग उससे विपरीत अपने २ सम्प्रदायों की अलहदा २ खींचतान में लगे रहने से हमारे देव मंदिरों की भी रक्षा नहीं कर सकते। यहां तक कि-मंदिरों के सामने अन्य लोग अपने २ धार्मिक जुलूस निकालते हैं परन्तु हिन्दुओं को मुसलमानों की मसजिदों के सामने बाजा बजाने से अब रोक दिया जाता है। यह हिन्दुओं की निर्बलता और मुसलमानों की एकता का नमूना है। जिसके कारण ऐसा रीति उनके मजहबी किताबों के विरुद्ध होने पर भी हम पर जबरदस्ती नई तौर से अब लगाई जाती हैं। अंग्रेजी राज्य में शताब्दियों पहले भी इस भारतवर्ष देश में यह बाजे

का सवाल कभी नहीं उठा था। किसी मुसलमानी देश में भी इस सवाल से कोई गोलमाल नहीं मचता। यह वाजे का सवाल अभी हाल ही वृटिश भारत में चला है और उसकी देखादेखी राजपूताने के देशी राज्यों में भी लकीर पीटी जाने शुरू हो गई है। यद्यपि बुखारी शरीफ में लिखा है कि—"पैगम्बर और उनकी स्त्री हजरत आयशा [illegible] मसजिद में वाजा वजवा के धार्मिक संगीतयुक्त वायजें सुनते थे। फिर वाजा वजाने से रोकना कहां रहा? अब मुसलमान भाई पहले से [illegible] अधिक ईश्वरभक्त नहीं वन गये हैं। पहले कभी यह वाजे का झगड़ा नहीं उठता था। पहले वाजा वजने से इवादत में खलल नहीं पड़ता था। बड़े २ शहरों में जितनी मसजिदें हैं, वे प्रायः घनी आवादी के बीच बड़े २ रास्तों पर ही पड़ती हैं। जहां दिन रात-सुबह से बड़ी रात तक-आदमियों की चहल पहल और (खास कर शाम की नमाज के वक्त) गाड़ियों की धड़धड़ाहट और मोटर के भोंपू से हो हल्ला मचा ही रहता है। पर इस शोरगुल से नमाज में खलल नहीं पहुंचता। केवल हिन्दुओं के वाजेगाजे की आवाज ही नाकिस है। मुहर्रम में स्वयं मुसलमान भी ढोल ढक्का बुलन्द आवाज से पीटते चलते हैं-ताजिया का जुलूस भी और मसजिद के सामने से वाजा वजाता हुआ गुजरता है तब क्यों नहीं अन्याय समझा जाता? हमारी बुद्धि विवेचना से यह बात युक्ति-हीन मालूम होती है कि-वाजे से नमाज में खलल होता है। कुरान शरीफ में पैगम्बर साहब ने नमाज ऐसी आहिस्ते २ पढ़ने का आदेश नहीं दिया है जिससे इवादत में खलल हो (देखो सूरे बनी इसराइल १५ आयत १०६)। मौलाना अबुल कलाम आजाद और डाक्टर अन्सारी आदि विद्वान् मुसलमान भी घोषित करते हैं कि-'यह कोई मजहबी रुकावट नहीं है-शरीयतन मनाही नहीं है।' मुसलमानों का [illegible] प्रसिद्धपत्र "बम्बे क्रानिकल" स्पष्ट बता रहा है कि-यह [illegible] दावा गैर-इस्लामी है। फिर भी बात ज्यों की त्यों बनी हुई है।

असल में बात यह है कि-मसजिद धार्मिक पुरुषों के [illegible] का स्थान मात्र है। जो केवल मसजिद की पूजा करते हैं [illegible]

लियाकत हुसैन साहब के शब्दों में इस्लाम के अनुयायी नहीं हैं। मस-जिद के सामने बाजा बजने से उसकी पवित्रता तथा मर्यादा में कोई हानि नहीं होती। मिश्र (ईजिप्ट) के हाजी अनादि काल से बाजे व कीर्तन के साथ हज करने सदा जाते हैं। इस तरह बाजा काबा में भी मना नहीं है तो अन्य स्थानों का कहना ही क्या? मक्का-काबा से सब स्थान नीचे हैं। इसका सारांश यही निकलता है कि-मुसलमान संगठित होने से हिन्दुओं की बिखरी शक्तियों पर असत्य बात भी सत्य-शाली बना कर अपना रोआब गांठना चाहते हैं। इस लिये हिन्दु धर्मावलम्बी सब मिल कर अपने परमहितैषी और पथ प्रदर्शक भारत-सपूत महामना श्रद्धेय पंडित मदनमोहन मालवीय के बताये हुवे संगठन कार्य को ग्रहण करें जिससे उनका शीघ्र ही उद्धार हो।

राज्य भर में आबाद शहर २५ (साढे पचीस) व ग्राम ४११८ और घर ६२४७७१ हैं। इसमें १६ लाख ९ हजार १ सौ ८६ तो गांवों में और २ लाख ३२ हजार ४ सौ ५६ शहरों में बसते हैं। पागल कुल २०५, गूंगे बहरे ६५०, कोढ़ी १२४ और अन्धे ५२५५ हैं। जितने अन्धे इस राज्य में हैं उतने राजपूताने के अन्य राज्यों में नहीं हैं। यहां पुरुष कुंवारे ५,२६,१०५, विवाहित ३,५३,२५२ और रंडुवे ६१,६५८ हैं। स्त्रियें कुंवारी ३,१८,१८०, विवाहित ३,७२,१८८ और विधवाएं १,८०,१५६ हैं। पत्नियों से पत्नियों का अधिक होने का मुख्य कारण हिन्दु और मुस-लमान जातियों के धनवान लोगों का एक से अधिक पत्नि (स्त्री) रखने की कुप्रथा है। विधवाओं का कारण यहां की जातियों में बाल-विवाह की प्रथा और कुछ आप की अभिमानी कौमों में स्त्रियों का अनिवार्य विधवा रखना है। देश में इस समय हिन्दु जाति के सामने जातीय रक्षा का विकट प्रश्न उपस्थित हो रहा है और इन अनतयोनि बालविधवाओं को विधर्मियों के चंगुल से बचाने के लिये पूर्ण चेष्टा की जा रही है क्यों कि ये स्वयं तो जाती ही हैं, इसके साथ ही विधर्मी सन्तान भी उत्पन्न करती हैं। इस भयानक भूल का यदि हिन्दु-ओं ने पहले पहल ही समझ लिया होता तो आज उनकी दशा में महान

अन्तर दिखाई देता। कोई हर्ज नहीं, सुबह का भूला शाम को घर आ गया। इस समय चारों ओर बालविधवाओं के उद्धार के साथ विमर्श।

दुल्हा-दुल्हन (वर-वधु)

किन्तु कुछ सहानुभूति दिखा रहे हैं। बहुतसे युवक अदूरदर्शियों के उपालम्भ की ज़रा भी परवा न कर बालविधवाओं के साथ विवाह कर रहे हैं। वृद्धि के समान बालविधवाओं का विवाह भारतवर्ष में सर्व-मान्य होनेवाला है। बालविवाह की कुरीति धूमधाम से प्रचलित है। १५ वर्ष की उम्र के सारे लड़कों का छठवां भाग विवाहित मिलेगा या रंडुवा। साधारणतया उन जातियों में, जिनकी कन्यायें लोगों को घर में, खेत में या दूकान में मदद देती हैं उनमें वे भार रूप समझी नहीं जाती हैं, और उनका बालविवाह नहीं होता है। यह अकसर अपने को उच्च कहानेवाली जातियों में ही प्रचलित है जहां कि-रिवाज के अनुसार किसी काम में ये सहायक नहीं समझी जाती हैं। वे लोग इनको एक प्रकार की आपत्ति समझते हैं और उनसे शीघ्र छुटकारा पाना चाहते हैं। जैसा कि-नीचे की कहावत से चरितार्थ है:—

पैंडो भलो न कोस को बेटी भली न एक।
लेणों भलो न बाप को साहिब राखे टेक॥

अर्थात पैदल चलना तो एक कोस का भी अच्छा नहीं, एक कन्या का होना भी ठीक नहीं। कर्ज़ अपने बाप का किया भी भला नहीं। ईश्वर इन बातों से बचा कर हमारी इज्ज़त रखे।

खेतीबाड़ी, पशुपालन (चराई) और व्यवसाय करनेवाले और उन पर निर्भर रहनेवाले लोगों की संख्या मारवाड़ में इस प्रकार है:—

काम धन्दा	काम करने वाले पुरुष	काम करने वाले स्त्री	इनपर निर्भर रहनेवाले स्त्री-पुरुष	कुल प्राणी
खेतीबाड़ी (लगान लेनेवाले)	५१,११३	३५,३००	७२,९०५	१,३८,०१२
किसान (लगान देनेवाले)	२,३३,३००	६०,९२४	२,७७,५००	६,१२,०१४
किसानों के घर के नौकर और खेतों में काम करने वाले	११,५२९	१,८२,३३५	३२,०१८	२,३३,९१८
बाग़, तरकारी, फल आदि पैदा करनेवाले	३,२४४	०	२,३८२	८,६२३

राजपूत लोग सुडौल, कद्दावर और मजबूत होते हैं। इनमें दाढ़ी रखने का आम रिवाज है। यह बहुत सीधे-सादे व मिलनसार होते हैं। राजपूत अपनी स्त्रियों का बड़ा मान सन्मान करते हैं। ये लोग मान मर्यादा और खानदान के लिये अपनी जान हथेली पर रखते हैं। अपने देश जाति और मान मर्यादा को बचाने के लिये केसरिया करना और असंख्यों सहित शत्रु के साथ लड़ कर मर जाने के कई उदाहरण प्रसिद्ध हैं। इस वीरोचित भाव को किसी राजस्थानी कवि ने क्या ही अच्छा कहा है:—

> हूं बलिहारी राणियां जाया वंश छतीस।
> सेर सलूणों चून ले शीश करे बखीस॥

भाव यह है कि-वे राजपूत क्षत्राणियां धन्य हैं जिनकी कोख से यह ३६ राजकुल उत्पन्न हुवे हैं, जो वीर सपूत सेर भर आटा लेकर अर्थात उदर पालनार्थ बहुतसा कम-अति तुच्छ-पचजाना लेकर आत्म समर्पण करने को सदा तैयार रहते हैं। और रणभूमि में अपना सिर हथेली पर लिये रहते हैं।

राजपूतों की ख्याति के बखान करते हुवे इतिहासज्ञ कर्नल टॉड नहीं अघाते हैं। वे लिखते हैं:—

There is not a petty State in Rajasthan that has n[ot] had its Thermopylae and scarcely a city that has not pr[o]duced its Leonidas

अर्थात् राजस्थान में कोई छोटासा राज्य भी ऐसा नहीं है कि जिसमें थर्मापिली (यूरोप) जैसी रणभूमि न हो और शायद ही ऐसा नगर मिले जहां लियोनिडास सा वीरपुरुष उत्पन्न न हुआ हो।

और भी देखिये टाड साहब अपने राजस्थान इतिहास की भूमिका में लिखते हैं:—

[illegible] struggle [illegible] have people for independence [illegible] of ages, sacrificing whatever was dear [illegible] for the maintenance of the religion of their fo[illegible]

गहलोत (सिसोदिया) कुलके राजपूत

फिरंगी यात्री बरनियर अपनी "भारतयात्रा" पुस्तक में लिखता है कि—"राजपूत लोग जब युद्धक्षेत्र में जाते हैं, तब आपस में गले मिलते हैं। गोया उन्होंने मरने का पूरा निश्चय कर लिया है। स्पार्टा देश (योरप) के वीर लोग भी ऐसे अवसरों पर अपने बाल सुलझाते थे। इसी प्रकार राजपूत लोग केसरिया कसूमल बाना पहिनते हैं। ऐसी वीरता के उदाहरण संसार की अन्य जातियों में कहां पाये जाते हैं? किस देश और जाति में इस प्रकार की सभ्यता मान्य और अपने पूर्वजों के रिवाजों को इतनी शताब्दियों तक अनेक संकट सहते हुये कायम रखा है।"

राजपूतों में विद्या का अच्छा प्रचार हो तो सोने में सुगन्ध हो जाय। इसके साथ यदि राजपूतों में अफ़ीम शराब और तम्बाकू का शौख कम हो जाय तो और भी अच्छा है।

यद्यपि राजपूत लोग सब एक ही हैं परन्तु इनमें भी एक दूसरे के धन और हैसियत के लिहाज से और कुछ रस्म के भेदभावों के कारण एक दूसरे में खानपान और व्यवहार का सम्बन्ध नहीं पाया जाता है। जैसे कि-राजपूतों का एक थोक ऐसा है जिसमें विधवा स्त्री का नाता (करेवा=पुनर्विवाह) होता है। यद्यपि मनुष्यगणना आदि दफ्तरों पर इन नातरायत राजपूतों की गणना शुद्ध राजपूतों में ही होती है और उसमें नातरायत आदि कुछ नहीं लिखा जाता है परन्तु आपस में धन-सम्पत्ति-जमीन-जायदादवाले इनको अपने ठीक बराबर नहीं समझते। क्यों कि-यह थोक साधारणतया गरीब होता है। दूसरे ये राजपूतों की भूमि बोते हैं। फिर भी इनकी लड़कियां धीरे २ बड़े २ ठाकुरों के यहां व्याह दी जाती है। कहावत भी है कि—"नातरायत की तीजी पीढ़ी गढ़ चढ़े[1]"।

राजपूतों में विवाह सम्बन्धी यह आम रिवाज है कि-एक ही वंश में विवाह नहीं हो सकता। जैसे राठोड़ वंश का पुरुष राठोड़ वंश और

१—सरकारी छपा "मारवाड़ की कौमों का इतिहास" पृ० ४४ (सन् १८९१ ई० मर्दुमशुमारी).

बाबू श्याम कुमार राजपूत

उसकी शाखा या उपशाखा की कन्या से विवाह नहीं कर सकता। परन्तु राजपूत जाति के अन्य वंशों में कर सकता है। उत्तराधिकारी केवल पुरुष ही होता है। विवाहिता स्त्री के घरानेवालों को वारिसी अधिकार प्राप्त नहीं होता। और राजपूत अपनी माता के घराने में विवाह नहीं कर सकता। पहले समय में राजपूतों के विवाह के अवसर पर बहुत खर्च होता था। इस कुरीति को मिटाने के वास्ते कर्नल वाल्टर साहब ने "राजपुत्र हितकारिणी सभा" नामक संस्था स्थापित की जिससे १८ वर्ष से कम आयु के राजपूतों का विवाह नहीं हो सकता। और जागीर या नौकरी की आमदनी का कुछ मुकर्रर सैकड़ा रकम ही खर्च करनी पड़ती है। सगाई के मौके पर दोनों तरफ के लोग अपनी बिरादरी के सामने अफीम गालते हैं। उसके बाद जबानी सगाई पूरी समझी जाती है। परन्तु अब फरवरी सन् १९०२ ई० से राज्य में नियम हो गया है कि-एक आना के स्टाम्प पर 'सगाई-नामा' लिखा जावे और वह ही अदालत में पक्का गिना जायगा। विशेष इन राजपूतों के रीत रस्म, व नियम जो राज्य की ओर से नियत एवं हैं वे "वाल्टर कृत राजपुत्र हितकारिणी सभा" की संरचना में हैं।

विवाह के समय दुल्हा अपनी बरात के साथ दुल्हन के घर जाता है। राजा महाराजाओं की शादी जब कभी उनके आश्रित जागीरदारों या कम हैसियत के सरदारों की कन्या के साथ होती है तब जागीरदार की तरफ से डोला पेश होता है अर्थात् उस कन्या को वर के निवास स्थान पर पहूंचा कर वहीं विवाह की रीति पूरी की जाती है। वर आम तौर पर जब सुसराल में जाता है, तब विवाह के समय ब्राह्मण वेद पाठ करते हैं। वर वधू का हाथ पकड़ता है। वे दोनों हवन (अग्नि) के चारों तरफ चार बार फिरते हैं। जिनमें ३ बार तो कन्या पति के आगे चलती है और ४ थी बार उसके पीछे। जैसा कि-निम्नों के निम्नलिखित गीत से ज्ञात होगा जो उस समय वे मण्डप में गाती हैं —

१—मारवाड़ के रीतरस्म पृष्ट १४.

पहले फेरे दादा की बेटी, दूजे फेरे भुआरी भतीजी।
तीजे फेरे मामा की भानजी, चौथे फेरे थी हुई पराई॥

राठौड़ जागीरदारों व सरदारों की कन्याओं के विवाहों पर बहुत-सा दहेज दिये जाते हैं और नौकर-चाकर (क्या स्त्री क्या पुरुष) भी दहेज में दिये जाते हैं जो पुश्तैनी होते हैं। यह दरोगा जाति के लोग अपने स्वामी के बिना आज्ञा के कहीं जा नहीं सकते और यदि जावें तो आवश्यकतानुसार वापिस बुला कर दहेज में दिये जा सकते हैं। इस विषय में ता० ११ जुलाई सन् १९१६ ई० को स्टेट कौंसिल में रेजुलेशन नं० ११ के रूप में राज नियम भी बन गया है कि-(१) दरोगों (गोलों) से उनके स्वामी राजपूत सरदार चाहे जो काम ले सकते हैं। (२) जब चाहें तब निकाल सकते हैं और जरूरत पड़ने पर फिर बुला सकते हैं। (३) दरोगों की बेटियाँ या उनके कुलपरिवार को राजपूत जागीरदार अपनी बहन बेटियों या उनके कुलपरिवार को राजपूत जागीरदार अपनी बहन बेटियों के दहेज में दे सकते हैं चाहे उस समय वे कहीं स्वतन्त्र नौकरी करते हों'।"

इस दास प्रथा का अब जनता की ओर से विरोध होने लगा है और राठौड़-राजपूत महासभा भी कार्यक्षेत्र में आई है। यदि नेपाल की तरह यह नियम भी महाराजा साहब की कृपा और जागीरदारों की उदारता से हटा दिया जावे तो अति उत्तम है।

राजपूत जाति में मृत्यु समय की रस्म इस प्रकार होती है कि—जब किसी मनुष्य का देहांत हो जाता है तो उसको पलंग से जमीन पर ले लेते हैं। और उसके ललाट, बाहु और कंठ पर चन्दन का तिलक किया जाता है। पश्चात् यदि रईस, धनी-मानी होता है तो उस की मृत्यु समय उसे पद्मासन बैठा देते हैं और नहला कर चादर ओढ़ा देते हैं। आम लोगों में मृतक पुरुष को सुला दिया जाता है। धनी मानी लोगों में सिर्फ पुरुषों का बैठे हुये विमान (बैकुण्ठी) निकालते हैं।

१—Marwar Gazette Vol 51 No. 1. Page 70 Line 7 Dated 16-12-1916 A. D. इसकी संख्या ६०,६०० है।

[illegible] आम लोगों की लाशें (सब अंग मय मुंह के ढका हुआ) को अर्थी की [illegible] (बांस-सीढ़ी) में ले कर शमशान में ले जाते हैं। दाह-क्रिया के बाद राख (भस्मी) और हड्डियों को (यानी फूल) ले कर गंगाजी में डाल देते हैं। मृत्यु सूचक शोक में भाई, लड़के व नौकर-चाकर अपनी दाढ़ी मूंछ व सिर मुंडवाते हैं। तथा सफेद पगड़ी पहिनते हैं। यह शोक १२ दिन तक साधारणतया मनाया जाता है। जिसमें [illegible] के रिश्तेदार लोग शोक प्रकट करने के लिये अर्थात् बैठने के लिये जाते हैं। १२ वें दिन यथाशक्ति दान-पुण्य और जातिवालों को (भोजन) जीमाया जाता है। नजदीकी रिश्तेदार करीब एक वर्ष तक कोई त्यौहार नहीं मनाते हैं और शोकसूचक पक्के रंग की काली या आसमानी पगड़ी पहिनते हैं और इसी तरह स्त्रियें भी।

जन्म के समय ब्राह्मण-पुरोहित को बुलाया जाता है जो कि-लड़के लड़की के जन्म का समय देख कर ज्योतिष से जन्मपत्री बनाता है। और सन्तान का नाम निश्चित करता है। राजपूत अक्सर अपने नाम के साथ "सिंह" शब्द लगाते हैं जो प्रथा गत शताब्दि से आम तौर से प्रचलित हो गई है। परन्तु ब्राह्मण, पुरोहित (राजगुरु), ओसवाल, चारण, पञ्चोली आदि भी "सिंह" शब्द अपने नाम के साथ लगाते

१—प्राचीन इतिहास से पाया जाता है कि "सिंह" शब्द क्षत्रियों के नाम के [illegible] श्रेणी में लगाया जाता था जैसा कि पहले पहल गुजरात, [illegible], काठियावाड़, कच्छ आदि प्रान्तोंपर राज्य करनेवाले क्षत्रपवंशी [illegible] "रुद्रदामा" के द्वितीय पुत्र महाक्षत्रप राजा रुद्रसिंह के समय के शक सं० १०३ से ११८ (वि० सं० २३८ से २५३=ई० सं० १८१ से १९६) तक के सिक्के [illegible] शक सं० १०३ (वि० सं० २३८=ई० सं० १८१) वैशाख सुदि ५ के [illegible] (भावनगर इन्स्क्रिप्शन्स पृ० २२) में उसके नाम के साथ लिखा मिलता है। इससे [illegible] है कि "सिंह" शब्द पुराने समयसे ही क्षत्रियों के नाम के साथ [illegible] आता है। [illegible] इसके बाद राजाओं के नाम के अन्त में "सिंह" लगाने [illegible] १० वीं शताब्दीमें, मेवाड़ के गहलोत वंशियों में १२ वीं [illegible] १३ वीं शताब्दी के चतुर्थ भाग में, चौहानों में [illegible] और मारवाड़ के राठोड़ोंमें १७ वीं शताब्दीमें होना पाया जाता है।

हैं। अलबत्ता पुराने ढर्रे के पक्षपाती लोगों के विचार से इन ब्राह्मण व ओसवाल आदि को राज्य के रेकार्ड में सिंह शब्द से नहीं लिखा जाता। भारतवर्ष में बालकों के नाम सार्थक होते हैं। यूरोप की तरह से नहीं जहां कि–शब्द के मतलब की तरफ कोई ध्यान नहीं रखा जाता।

इस राजपूत जाति के यश को कविता रूप में प्रकाशित करनेवाली जाति "चारण" के नाम से प्रसिद्ध है। यह जाति केवल राजपूताना, मालवा और कच्छ–काठियावाड़ में ही पाई जाती है। यह राजपूतों की ख्यात (इतिहास) पीढीयां भी बताती है। ब्राह्मणों के पीछे राजपूतों की कीर्ति बखाननेवाले भाट और चारण ही हुवे हैं। जैसा कि–एक प्राचीन छंद में कहा है:—

"ब्राह्मण के मुख की कविता, कछु भाट लई कछु चारण लीन्ही॥"

चारणों के एक सौ बीस गोत हैं। इससे कुलचारणों की बिरादरी बीसोतर या बीसोत्रा कहलाती है। चारण शाक्त होते हैं। भगवती इनकी कुलदेवी है। आपस में यह राजपूतों की तरह "जैमाताजी की!" कह कर नमस्कार करते हैं। यह अभिवादन "वन्देमातरम" का ही रूपान्तर है। हन्टर साहब ने इम्पीरियल गजेटियर नामक ग्रंथ में चारणों को ब्राह्मणों से दूसरे पद पर रखा है। और ऐसे ही प्रिन्सिपल भट्टाचार्य एम० ए० ने अपने ग्रंथ "हिन्दु कास्टस एन्ड सेक्टस" में इन्हें Semi Brahamical Caste अर्द्ध ब्राह्मण वर्णस्थ लिखा है। किन्तु इनका खान पान सब राजपूतोंकासा होने से इनके अखिल भारतीय चारण महा-सम्मेलन, पुष्कर (प्रथमाधिवेशन वि० सं० १९७८) ने इस जाति को क्षत्रिय वर्णस्थ ही माना है और इस जाति के विद्वान आदि अपने नाम के अन्त में प्रायः राजपूती (क्षत्रियत्व) सूचक 'वर्मा' शब्द ही लगाते हैं।

राजपूत चारणों को बड़ा दान देते हैं और सन्मान से देखते हैं। धर्मार्थ सैंकड़ों गांव इन्हें दिये हुवे हैं जो "सासन (शासन)" कहलाते हैं। विवाह के अवसर पर राजपूत जो [illegible] चारण भाट और ढोलियों को देते हैं उसे "त्याग" कहते हैं। [illegible]

मीराँ कृष्णा राजपूत

बहुत लड़ झगड़ कर मांगते हैं। वाल्टर कृत राजपुत्र हितकारि[illegible] सभा जोधपुर(ता० १ जुलाई १८८६ ई०) ने इनकी परमावधि और बांटने के नियम बांध दिये हैं। भांडियावास(पचपदरा परगना)के आशिया चारण [illegible] न त्याग कम करने या बंद करनेवालों के विरुद्ध यह कविता कही है:—

जासी त्याग जकांरे घरसूं जातां खाग न लागै जेज।
धरती तोल न बांधो धणियां त्याग किंह बांधो तोल?
जासी त्याग जकांरा घरसूं जासी धरती करै जुहार।
दीजै दोस किसूं सिरदारां जमी जागण अंक जरूर॥

अर्थात जिनके घर से त्याग जावेगा उनके यहां से तलवार (खाग= खग=खड्ग) जाते देर न लगेगी। स्वामियों! त्याग का हिसाब तो बांधते हो, जमीन का हिसाब नहीं बांधते? जिनके घर से त्याग जावेगा उन्हें जाती हुई पृथ्वी भी नमस्कार करती है। सरदारों! दोष किसे दें? यह लक्षण तो अवश्य भूमि छिन जाने के हैं।

मारवाड़ में चारण जाति की जनसंख्या [illegible] है जिनमें से पढ़े लिखे ६६५ हैं। इन पढ़े लिखों की गणना में ५२ स्त्रियां भी सम्मिलित हैं। इस जाति में विद्याप्रचार करने के लिये गत [illegible] वर्ष से एक बोर्डिंग हाउस (प्राइवेट तौर से) जोधपुर में है। यह बोर्डिंग हाउस ता० १ फरवरी सन १९२३ ई० से नियमबद्ध सञ्चालित होता है और तब से उसका नाम "श्री उम्मेद चारण बोर्डिंग हाउस (छात्रालय)" है। सन १९२४ के दिसम्बर मास से इस संस्था को राज्य की ओर से ५०) पचास रु० मासिक सहायता रूप मिलते हैं।

३६ राजवंश—राजपूत जाति में चार वंश (विभाग-)[1], [illegible] और अनेक राजकुल (राजवंश) मिलते हैं। परन्तु ये मुख्य [illegible] (clan) ३६ हैं जो राजपूताने में प्रायः पाये जाते हैं। वि० सं० की १२ वीं शताब्दी में काश्मीरी पं० कल्हण ने 'राजतरंगिणी' नामक [illegible] का इतिहास' लिखा था। उसके ७ वें तरंग के एक श्लोक में [illegible] है कि—उस समय भी क्षत्रियों के ३६ कुल समझे जाते थे[1]। इन [illegible]

१ प्रत्यापयन्त. संभूति षट्त्रिं[illegible]।
तेजस्विनो भास्वतोऽपि [illegible]

गुहलोत, ६-नरवान, ७-खागर, ८-परिहार ९-पमार, १०-राठौर ११-भदौरी।

२६ तुंवर राजवंशके राजपूत

शी), गुप्तवंश, मौर्यवंशी, कछवाहा, दलवाड़ अग्निवंशी, परमार, चौहान, सोलंकी और पडिहार।

ऋषिवंश—पडिहारिया (देवल आदि), [illegible], [illegible], [illegible], उद्‌मतिया, [illegible], पल्लव, गर्ग, [illegible], भृगुवंशी, जेठवा और [illegible]।

शिक्षा की गति

१८ वीं शताब्दि के पहले मारवाड़ में शिक्षा का बड़ा अभाव था। अलबत्ता गांवों में साधारण पढ़ना लिखना पोसालों (पाठशालाओं) द्वारा होता था किन्तु उम्र व पढ़ाई के लिहाज से उन पोसालों में न कोई कक्षाएं (दर्जे) थीं न कोई किताबें थीं। महाजन लोग अक्षरों का बोध होने और अपने मामूली हिसाब तथा ब्याजबट्टा सीख जाने को ही काफी समझते थे। संयुक्त अक्षरों तथा स्वरों की मात्राओं का उन्हें कुछ भी ज्ञान नहीं होता था। वे या तो व्यंजनों को स्वरों की मात्राओं के बिना ही लिखते या बिना आवश्यकता के कोई भी मात्रा लगा [illegible]

से लेकर ईसवी सन की दूसरी सदी के माने जाते [illegible] लिखनेवाले प्राचीन यूनानी लेखकोंने [illegible] में पंजाब प्रान्त में अरट नाम [illegible] भी अराष्ट्रों का उल्लेख है। स्कन्दपुराण [illegible] से ज्ञात होता है कि रट्टों (राष्ट्रकूटों) [illegible] मत है कि ये शब्द (महारट्ठ, महारट्ठाना, [illegible] प्रयोग किये गये हैं और ये पर्यायवाची शब्द हैं।

१—कई विद्वान अनुमान करते हैं [illegible] सोलंकी (चालुक्य-बघेला) और चौहान [illegible] यह है कि ये लोग बौद्धधर्मी होने [illegible] ने लिया और उनपर सत्कार होने से ये अग्निवंशी [illegible] सूर्यवंशी होना लिखा मिलता है।

३—एंग्लो वर्नाकुलर मिडल स्कूल (सांभर, सोजत, पाली और नागोर में) — ४
४—एंग्लो वर्नाकुलर अपर प्राइमरी स्कूल — १४
५— „ „ लवर „ — २
६—वर्नाकुलर प्राईमरी स्कूल — ५४
७—गर्ल स्कूल (कन्या पाठशाला) जोधपुर — १
८—संस्कृत पाठशाला जोधपुर — १
९—टीचर ट्रेनिंग स्कूल (मास्टरों के लिये) — १
१०—बीजीनेस क्लास जिसमें टाईप राइटिंग और शार्ट हेन्ड सिखाया जाता है। — १

कुल संस्थाएं ८१

इन सरकारी विद्यालयों में विद्यार्थि कुल ४७०० हैं। और इन स्कूलो के सिवाय राज्य में ११ गैर सरकारी स्कूल हैं जो जनता द्वारा चलाये जाते हैं। पर उनको राज्य से भी बहुत कुछ आर्थिक सहायता मिलती है। वे इस प्रकार हैं —

नाम	स्थान	राज्य की सहायता जो मासिक रूप मिलती है।
१—सर प्रताप हाईस्कूल (कायस्थों का-स्थापना आसोज सुदी १० वि. १९४४)	जोधपुर	६७०
२—श्री सुमेर पुष्टिकर हाईस्कूल (पुष्करणा ब्राह्मणों का-स्थापना फागुण वदी ६ सं० १९६८)		५१०
३—सरदार स्कूल (ओसवाल महाजन-स्था० भादों वदि ५ सं० १९५३ मिडल तक)		२५०
४—श्री सुमेर सैनी स्कूल (क्षत्रिय माली-स्था० भादों सुदी १२ सं० १९५५ मिडल)		२८
५—श्री उमेद स्कूल (रावणा रजपुत स्था० वैशाख वदी १ सं० १९६९ मिडल)		२८

मारवाड़ राज्य में आरम्भ से ही सब प्रकार की शिक्षा मुफ्त है। किन्तु खेद है कि गत वर्ष से स्टेट कौंसिल ने जसवन्त कालेज में (केवल एफ० ए० क्लास में) ६) रु० मासिक फीस लगाने का सिलसिला जारी कर दिया है। कालेज में विद्यार्थी अब लगभग एक सौ [illegible] हैं।
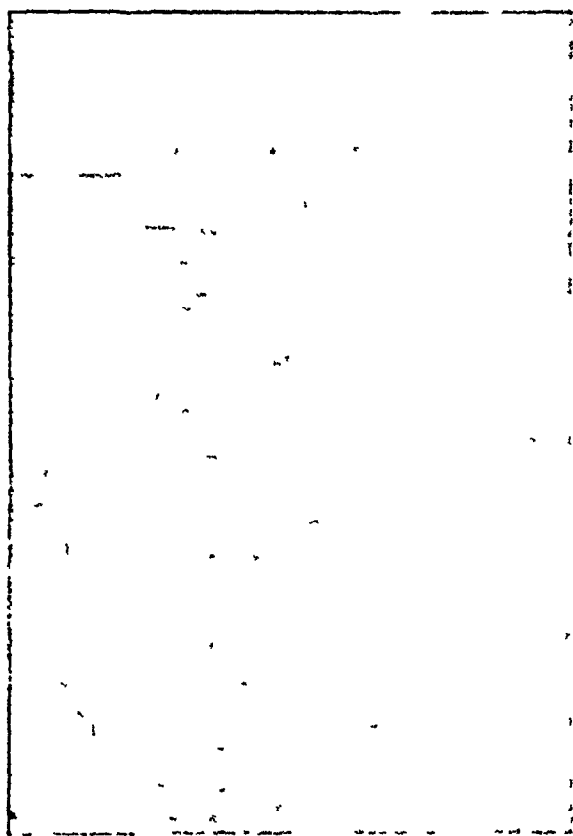
जागीरदारों की जागीरी भूमि में प्रजा की शिक्षा के लिये कोई प्रबन्ध नहीं है। वहां जागीरी आमदनी में से प्रजाहित में नाम मात्र का

[illegible] होता है। इस कारण जागीर भूमि की प्रजा [illegible] भी अधिकतर बहुत पिछड़ी हुई है। यहीं मारवाड़ में शिक्षा की [illegible] के लिये खास गुंजाइश हो नहीं थी। कारण कि—रियासत का [illegible] में से पांच हिस्से जमीन जागीरदारों को दरबार की तरफ से इनायत की हुई है। खालसा में दो हजार की आबादी के करीब २ सब गांवों में से करीब आधे गांवों में और ७०० घरों से अधिक बस्तीवाले गांवों में से करीब आधे गांवों में दरबार की तरफ से स्कूल मौजूद हैं। किन्तु जो गांव जागीर में हैं उनकी दशा शोचनीय है। बहुत से जागीरदार एकभाग में स्वयं अनपढ़ होने के कारण अपनी प्रजा की शिक्षा में कुछ विशेष दिलचस्पी नहीं ले सकते। सचमुच उनमें से कुछ ऐसे भी संशय करते हैं कि-शिक्षा से प्रजा अपने कर्त्तव्य की अपेक्षा अपने जन्मसिद्ध हक हकूकों का अधिक ध्यान देगी[1]। यद्यपि भी दरबार साहब जागीर में शिक्षा प्रचार के लिये हर प्रकार से सुभीता व सहायता करने को तय्यार रहते आये हैं किन्तु कुछ कारणों से जागीर में शिक्षा का प्रबन्ध जागीरदारों के हाथ में छोड़ देना मुनासिब समझा जाता था। इस नीति से जागीरदारों की उपेक्षा के कारण कुछ अच्छा फल नहीं होते हुवे देख कर इसमें कुछ परिवर्तन करना उचित समझा गया। और तदनुसार जनवरी १९२४ ई० के प्रथम सप्ताह में यह निश्चय किया गया कि:—

१— हर अपने ठीलगांव में अर्थात अपने जागीर के मुख्य कसबे में जिसकी आबादी २ हजार से अधिक हो—प्रारंभिक स्कूल [illegible] अपने ही खर्च से खोलें।

1— [illegible] some of them had a lurking suspicion that [illegible] would make the ryots think more of their rights [illegible] duties. Under the circumstances education [illegible] has not made any headway and unless [illegible] of the difficulty, the backward- [illegible] in the matter of education [illegible] —Marwar Administration Report 1923–24. [illegible]

२—जिन जिन डौलगांवों में दो हजार से कम आबादी है उनमें और जागीर के दूसरे गांवों में दरबार खुद प्रारम्भिक स्कूल खोलेंगे। किन्तु स्कूल और मास्टरों के लिये मकान देना, उनकी मरम्मत कराना और फर्रास चौकीदार का खर्च बरदाश्त करने का जिम्मा जागीरदार का होगा।

३—यदि जागीरदार अपर प्राइमरी कक्षा खोलना चाहेंगे तो दरबार उसका खर्चा देंगे। जहां आवश्यकता होगी वहां दरबार मिडल क्लास भी खोलेंगे। यदि जागीरदार इसका विश्वास दिलावें कि-इन कक्षाओं (५ वीं ६ वीं ७ वीं और ८ वीं क्लासों) का खर्चा मकान आदि वह देंगे। ऐसी दशा में जागीरदार इन क्लासों का खर्चा अपनी प्रजा से नये कर रूप में वसूल कर सकता है।

इस स्कीम को शुरू करने के लिये श्रीदरबार ने एक लाख रुपये की मंजूरी दी है। और यह अनुमान किया जाता है कि-प्रारम्भिक दो कक्षाओं की ४०० स्कूलें या प्रारंभिक ४ कक्षाओं की १०० स्कूलें खोलने को यह रकम काफी होगी। यह योजना बहुत ही अच्छी है। किन्तु हमें भय है कि-यदि मामला जागीरदारों की इच्छा पर ही छोड़ा गया तो कुछ अधिक सफलता की आशा नहीं की जा सकती।

इसके अलावा स्कीम में यह भी लिखा है कि-खालसे के गावों में भी वहां के निवासियों की इच्छा होने पर मिडल क्लास खोली जा सकती है किन्तु ऐसी दशा में इन क्लासों का खर्चा प्रजा से नये कर द्वारा वसूल किया जायेगा।

राज्य की तरफ से छात्रवृत्ति (स्कालरशीप) गरीबवृत्ति (फ्री शिप) और विद्यार्थीवृत्ति (स्टुडेन्टशीप) हर साल इस प्रकार [illegible]

संख्या	क्लास	रकम मासिक [illegible]
छात्रवृत्ति		
१५	मिडल	८०।२०
२	. कन्याएं	५०।
२०	एन्ट्रेन्स	६०।
१०	कालेज	६०।
२	एल.एल. बी: एम ए	१२०।

सिर्फ ४,११३ और ईसाई २५३ हैं । इस संख्या में सरकारी व [illegible] सरकारी स्कूलों में जानेवाले बालक भी शामिल हैं । मगर इन पढ़े लिखों की पढाई नाम मात्र की होती है । पढ़े लिखों में अधिक संख्या [illegible] लोगों की है मगर यह लोग काना मात (मात्राओं) का ध्यान नहीं रखते और इनका लिखा हुवा कभी इनसे भी नहीं पढा जाता और कभी कुछ का कुछ मतलब हो जाता है । कहा भी है:—

वनक पुत्र कागद लिखे काना मात न देत ।
हींग मिरच जीरा भगे. [illegible] ॥

इसका एक रोचक दृष्टांत है कि-किसी ने लिखा --

कक अजमर गया है न कक कंट है ॥

यानी काका अजमेर गये हैं और काकी (चाची) कोटा में हैं । मगर पढनेवाले ने इस तरह पढ लिया कि-काका (चाचा) आज मर गया है, और काकी कटे हैं । अकसर जागीरदार लोग [illegible] पढ होते हैं । और बहुधा अपना दस्तखत करना सीख लेना ही [illegible] लिखने की अन्तिम सीमा समझते हैं । किसी ठाकुर ने इस [illegible] दशा का अच्छा खाका खींचा है । जब उससे पूछा गया कि- [illegible] किता पढीया? " (ठाकुर साहब, आप कितने पढे लिखे [illegible]) तो उसने उत्तर दिया कि—"हाथसु करम फोड़ां जित्ता!" अर्थात [illegible] वादी करें उतना । तात्पर्य यह है कि-सिर्फ [illegible] खत वे कर सकते हैं । विद्या न होने के कारण इन लोगों के [illegible] समयानुकूल नहीं होते हैं । जैसा कि-किसी पुराने [illegible] राजपूतों के आदर्श को इस प्रकार बताया है:--

---

पहले इस देश (हिन्दुस्तान) [illegible] निवासी आर्य्य (श्रेष्ठ-उत्तम) [illegible] के उपलक्ष में इस देशका नाम 'आर्य्यावर्त' [illegible]

१—हिन्दुओं में अंग्रेजी पढा [illegible] अंग्रेजी ऐन्ट्रेन्स (युनिवर्सिटी परीक्षा) [illegible] (Agriculturist) [illegible] शिक्षाकी यह दशा बड़ीही खटकती है ।

चाकर गोली होय जमी घर बारणें ।
दारू भरमां मांय, अगारे कारणें ॥
[illegible] नियां करे काम डोली निन गावणां ।
इतरा दे किरतार, फेर काई चावणां ॥

अर्थात् खिदमत-चाकरी करने को दास और दासियां हों, भूमि [illegible] अधिकार में हो, महल में प्रिया के विलास के लिये खूब शराब हो, [illegible] सम्भालने को कामदार हो और हर समय गाना सुनाने को [illegible] हो तो फिर किसी चीज की इच्छा नहीं ।

इन जागीरदारों के (कई) चाकरों के विचार भी नीचे लिखे पद्य में प्रकट होते हैं:—

ठाकर बालक होय, हुकम ठकराणियां ।
गांव कुम्हारी होय, के धमनी बाणियां ॥
[illegible] हाथ पताव, तराजू तोलणा ।
इतरा दे किरतार फेर नहीं बोलणा ॥

अर्थात् ठाकुर छोटा हो और जनाने की स्त्रियों (ठकुराणियों) का हुकम चलता हो, गांव में हो शाखें (फसलें) पैदा होती हों और महाजनों की धमनी हो अपने घर से ही तोल कर सामान दिया जाता हो और उस पर ही हिसाब किताब का फैसला करने का अधिकार हो । यदि इतनी चीज हमको ईश्वर दे देवे तो फिर किसी की चाह बाकी नहीं ।

प्रायः यही महाजन लोग जागीरदारों के कामदार होते हैं ।

खेल कूद

मारवाड़ के लोग और खास कर राठोड़ राजपूत घोड़े की सवारी के बहुत ही शौकीन होते हैं । बालकों में प्रायः नीचे लिखे देशी खेल खेले जाते हैं:—

गुल्ली डंडा, मारदड़ी (गेंद दड़ी), कबड्डी, डीयादड़ी, भेरों डोटो, [illegible], [illegible] (अंग्रेजी हाकी), चूसा, आंख मींचानी, लट्टू का खेल, [illegible] और [illegible] (अगड बादशाह) है ।

इनके अलावा नगर और बड़े २ कस्बों में आधुनिक पश्चिमी (विलायती) खेलों का भी खास रिवाज हो चला है।

हिन्दी प्रचार

मुगल समय में यहां उर्दू का बड़ा जोर था। और शाही जबान होने से राज्य के काम में आने के अलावा बड़ी ऊंची नजर से देखी जाती थी। जैसा कि–किसी कवि ने कहा है:—

अगर मगर के सोल्हे आने इकदम निकदम चार।
अट्टे कट्टेके अठ छीज आने मुंसा पैसा चार॥

अर्थात् उर्दू का मूल्य १६ आने है। मराठी का बारह आने मारवाड़ी का आठ आने और गुजराती के ४ पैसा है।

इस प्रकार संवत १९८० वि० के पूर्व अदालतों के सब कार्य उर्दू में ही होते थे किन्तु उसके बाद जब राज्य के निमंत्रण से स्वामी दयानन्द सरस्वती यहां पधारें और उनके उपदेशों व सत्संग से राज्य के प्रधान मंत्री महाराज सर प्रताप को वेदोक्त सत्य सनातनधर्म और आर्य भाषा तथा देवनागरी लिपि से प्रेम हो गया तब महाराज सर प्रतापसिंहजी ने अदालतों में हिन्दी का प्रचार कर दिया। उस समय से हिन्दी को उचित स्थान मिल गया है और हर्ष का विषय है कि—उसकी दिन बदिन उन्नति हो रही है। हिन्दी को कोई राष्ट्रभाषा नहीं बनाता है। वह अपने गुणों से स्वयं बन गयी और बनती चली जा रही है। कोई उसे राष्ट्रभाषा चाहे न माने पर वह राष्ट्रभाषा का काम कर रही है। न हिन्दी भाषाभाषी हूं इस लिये यह कह रहा हूं ऐसा मत समझिये। जिनका हिन्दी से कोई सम्बन्ध नहीं है वे भी यही बात कहते हैं। स्वात समुद्र पार रहनेवाली परम विदुषी श्रीमती ऐनीबिसेंट अपने "[illegible] बिलडिंग" नामक पुस्तक में कहती हैं:—"Among the V[illegible] Vernaculars that are spoken in the different [illegible] India, there is one that stands out strongly [illegible] as that which is most widely known. It is Hi[illegible] who knows Hindi can travel over India and [illegible] where Hindi speaking people. In the [illegible]

महात्मा का प्रणाम

लाला भगवंतराय माथुर

जैसे पिंगल कहा जाता है वैसे ही मरुभाषा की कविता को डिंगल कहते हैं। यह डिगी नाम और गल शब्द मिल कर बना है। इसका अर्थ ऊंची बोली का है। क्यों कि-इस भाषा के कवि चारण भाट सेवग[1] (भोजक), ढोली और मोतीसर चिल्ला २ कर अपनी कविता पढ़ते हैं। जिससे यह नाम हुवा है। व्रजभाषा के कवि अपनी कविता को उतने जोर से न पढ़ कर धीरे २ पढ़ते हैं। इस लिये व्रजभाषा को मारवाड़ (राजस्थान) में पिंगल अर्थात् पांगलो (लंगड़ी-[illegible]) कविता कहते हैं। पिंगु का अर्थ लंगड़ा और गल का मायना बात या बोली है। डिंगल कविता यद्यपि मारवाड़ी बोली में होती है परन्तु जैसे उर्दू भाषा में अनेक भाषाओं के शब्द मिले हुवे हैं वैसे ही इस में भी है और इसमें अधिकतर मारवाड़ी भाषा के कठिन शब्द ही होते हैं। बोलचाल के तो बहुत ही कम रहते हैं।

मारवाड़ी भाषा तो उस उर्दू जबान के समान है जिसमें फारसी के अधिक शब्द न हो। जैसे यह शेर है:—

हम तो दो बोल कर के हारे हैं। तुम हमारे हो हम तुम्हारे हैं॥

और डिंगल भाषा में गुजराती, मागधी, सिन्धी, दक्खिनी, फारसी

१—इस जाति के ओसवाल [illegible] ([illegible]) [illegible] मंदिरो मे पूजापाठ व भगवद्भजन करना [illegible] इसका आचारविचार ब्राह्मणोंसा है पर [illegible] ई० (वि० सं० १९६८) की मारवाड़ मनुष्यगणना रिपोर्ट [illegible] निकृष्ट ब्राह्मण लिख दिया [illegible] की तरफ से ईसामसीह के ५९० वर्ष पहले [illegible] जाता है। इनको वहां "मग" (मुग) [illegible] द्वीपी ब्राह्मण" प्रसिद्ध हुवे। राजपूताने में इनको [illegible] है। मारवाड़ मर्दुमशुमारी रिपोर्ट सन १८९१ [illegible] लिखा है कि "सं० ६०० के लगभग मुसल्मानों ने [illegible] फारसियोंको भारतकी ओर भगा दिया। [illegible] कर मंदिरोंकी सेवा करने लगे [illegible] हुई। गत मनुष्यगणनानुसार मारवाड़ [illegible] दौड़धूप करने परभी ये ब्राह्मण नहीं [illegible] नाम से एक मासिकपत्र सं० १९७७ में [illegible]

आई ई. को लिखाई थी उसमें उन्होंने डिंगल भाषा का अर्थ [illegible]
पत्थर या मिट्टी का डगल (ढेला) बनाया है । आजकल भारत गवर्नमेंट
का ध्यान "बार्डिक क्रानिकल" की ओर बहुत झुका हुआ है जो वि-
शेष करके डिंगल भाषा में है ।

इस डिंगल कविता में अच्छे २ प्रसिद्ध कवि हो गये हैं । जैसे
करनीदान कविया, भाट मनोहर दुर्सा आढा गोकुलचन्द भट्ट किसना आ-
सिया, नरहरदास बारहट और बहादुर ढाढी (डूम) । इस समय महाकवि
बांकीदास आसिया, स्वामी गणेशपुरी (चारण), कवि [illegible] [illegible],
महामहोपाध्याय कविराजा मुरारदान महाकवि उमरदान लालस
हुवे हैं । सौ बातों की एक बात यह है कि-जिस प्रकार मारवाड़ प्रांत
"नरासमद" अर्थात वीर पुरुषों का समुन्द्र (स्थान) है वैसे ही उन
के चरित्रों को अमर करनेवाले प्रसिद्ध कवियों का भी घर है । इन
कवियों को भी राजाओं और जागीरदारों ने समय २ पर भूमि आदि
से सम्मानित किया है और इस प्रोत्साहन के कारण इन लोगों ने
मारवाड़ी भाषा के साहित्य को बहुत बढ़ा दिया है । जिसकी खोज की
की जाय तो हिन्दी साहित्य में सहज ही १-२ हजार कवियों की वृद्धि
हो जाय । क्यों कि-यहां उनके सैकड़ों घराने हैं, सैकड़ों ही गांव हैं,
हजारों घर हैं और उनके बनाये सैकड़ों ग्रंथ और [illegible] फुटकर
कविता के संग्रह हैं । मारवाड़ में केवल चारण जाति के कवियों के ही
करीब ५०० गांव हैं जो राज्य से उनको किसी न किसी प्रसिद्ध [illegible]
कविता के उपलक्ष में ही प्रदान किये गये हैं । यदि इन गांवों में से अ-
धिक नहीं तो एक २ गांव में कम से कम एक कवि की कविता और
जीवनी भी मिल जाय तो ५०० कवियों का साहित्य प्राप्त हो सकता है।

उन्नीसवीं सदी के निर्भिक महाकवि 'उमरदानजी' [illegible]
डिंगल भाषा में देशभक्ति, सामाजिक सुधार व [illegible]
में बड़ा प्रसिद्ध है । मारवाड़ में गाड़िये के [illegible]

१-यह गांव मनाणा (परगना [illegible]) [illegible]
[illegible]

मारग

यह कविता सरल, रोचक व उपदेश पूर्ण है और राजस्थान में विरला ही कोई ऐसा होगा जिसको यह चार पांच सोरठे याद न हों। यही नहीं राजाओं और सरदारों की सभाओं तक में भी प्रमाणित रीति से ये पद्य पढे जाते हैं और लोग इनसे संसार व्यवहार में उत्तम लाभ लेते हैं। जोधपुर के भूतपूर्व लोकप्रिय रेज़ीडेन्ट कर्नल पाउलेट साहब ने राजिया के इन चमत्कारी सोरठों का संग्रह कर अंग्रेजी में अनुवाद किया था। वह इनको बहुत पसन्द करते थे और कहते थे कि-मारवाड़ी भाषा के साहित्य में "राजिये के सोरठे" भी अनमोल रत्न हैं। कहते हैं कि-यह सोरठे करीब ५०० थे किन्तु अब तो उतने नहीं मिलते हैं।

यह कविता लगभग सौ वर्ष पहले की है। इसमें अंग्रेजी भाषा का कोई शब्द इन सोरठों में नहीं आया है। क्यों कि-उस समय अंग्रेजी भाषा का प्रचार इधर नहीं हुआ था। जैसा कि—आजकल हो रहा है। जिससे अंग्रेजी के शब्द भी आम बोल चाल में मिलते जाते हैं और इस समय की कविता में बहुत नहीं तो दो चार अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हो ही जाता है। जैसेः—

नहीं ट्रेम[1] नहीं तार है, नहीं बत्ती में तेल।
आ चाले मनरे मते मारवाड़री रेल॥

× × ×

पेलां तो पग टेकतां, थाक लगै सिरदार।
पाईंट देखे पाधरा, स्वारथ रमें विचार॥

"राजिया" कविता के रचयिता के विषय में कुछ [illegible]। चारण लोग कहते हैं कि-शेखावाटी (जयपुर) के नामी [illegible] विद्वान कवि कृपाराम बारहट के पास राजिया नामक [illegible] नौकर था और उसकी अच्छी टहल चाकरी से [illegible] करने के लिये यह सोरठे बारहटजी ने स्वयं उसका [illegible]

उनको वे जानते नहीं। ऐसे लाननियों (धिक्कार के पात्रों) के पीछे, हे राजिया! धूल उड़ाओ।

मुख ऊपर मिठियास, घटमांही खोटा घड़े।
इसड़ासू इकलास[1], राखीजे न हे राजिया॥

जो मुंह पर तो मिठास रखते हैं और मन में बुरा चिन्तते हैं। ऐसों से हे राजिया! स्नेह नहीं रखना चाहिये।

गुण अवगुण जिण गांव, सुणै न कोई सांभले।
उण नगरी विच नांव, रोही भली[2] ही राजिया॥

जिस गांव में गुण और अवगुण न तो कोई सुनता हो और न समझता हो तो हे राजिया! उस बस्ती से उजड़ जंगल ही भला है।

मिले सिंह वन मांहि, किण मिरगां मृगपत कियो।
• जोरावर[3] अति जाह रहै उरधगत[4] राजिया॥

सिंह को वन में किन मृगों ने मिल कर मृगपति बनाया था। जो अति बलवान् होता है वह हे राजिया! हर एक [illegible] गति को प्राप्त कर लेता है।

खल धूंकल कर खाय, हाथल बल मोताहलां।
जे नाहर मर जाय, रजतृण भखै न राजिया।

सिंह मर जाय तो भी धूल और घास हे राजिया! नहीं [illegible]। वह तो पराक्रम करके पंजों के बल से मोतियों वाले हाथियों को खाता है।

असलीरा[5] ओलाद, खून [illegible] न [illegible],
वाहे वद वद [illegible] गोढ [illegible] राजिया।

असली की औलाद के साथ यदि कोई [illegible]

१—यह अरबी शब्द [illegible]
२—भली।
३—फारसी शब्द जोरावर।
४—संस्कृत शब्द [illegible]
५—अरबी शब्द [illegible]
६—फारसी शब्द [illegible]

साचो मित्र सचेत, कहो काम न करै किसो ।
हरि अरजनरै हेत, रथ कर हाक्यों राजिया ॥

सच्चा सचेत मित्र कहो क्या काम नहीं करता ? देखो भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन के लिये हे राजिया ! अपने हाथ से रथ हांका था ।

रोटी चरखो राम, अतरो मुतलब आपरो ।
की डोकरियां काम, राज कथा सूं राजिया ॥

रोटी, चरखा और ईश्वर से ही अपना मतलब रखना चाहिये बूढियों का राजकथा से हे राजिया ! क्या काम है ।

कहणो जाय निकाम, आछोडी आंणी उकत ।
दांमा लोभी दाम, रजे न बातां राजिया ॥

अच्छी २ उक्तियां कहना भी अकारथ जाता है । जो [illegible] के लोभी हे राजिया ! बातों से कुछ भी राजी नहीं होते हैं ।

पिंड कुलच्छण जांण प्रित हेत कीजे पछै ।
जगत कहे सो जांण, रेखा पाहण राजिया ॥

वंश और कुलक्षण को पहिचान कर पीछे प्रीति और हेत करना चाहिये । संसार में जो यह बात कहते हैं उसको हे राजिया ! पत्थर की लकीर जानो ।

हर कोई जोडे हाथ, कामण सूं कतरो किसो ।
नमे त्रिलोकी नाथ, राधा आगल राजिया ॥

स्त्री से हर कोई हाथ जोडता है-कहां तक कहना [illegible] कृष्ण भी हे राजिया ! राधा के आगे तो झुकते थे ।

प्रभुता मेरु प्रमाण आप रहे रजकण इसो ।
जिके पुरस धन जांण, रवि मण्डल बिच राजिया ॥

प्रभुता तो मेरु के समान हो, और आप रजकण [illegible] पुरुषों को हे राजिया ! रविमण्डल (सूर्य) में धन्य जानो ।

मूसा ने मंजार हित कर बैठा हेकठा ।
सब जाणे संसार रस नह रहसी राजिया ॥

चूहा और बिलाव जो हित करके इकट्ठे बैठे [illegible] जानता है कि-उनमें हे राजिया ! मेल नहीं रहेगा ।

[illegible] जग मांय, दुःख अपणों कहजे नहीं ।
[illegible] धन खोय, नी गयां सू राजिया ॥

जिस तिसको आगे इस तरह अपना दुःख नहीं कहना चाहिये । [illegible] कोई धन निकाल कर हे राजिया ! नहीं दे देता ।

[illegible] बात्यां उणरी मानजे नहीं ।
[illegible], रीति नाड्यां राजिया ॥

जो चोर, चुगलखोर और बातूनी हों, उनकी बात नहीं मानना चाहिये क्योंकि यह गर्वी लोग, हे राजिया ! सूखी हुई तलाईयों में ही [illegible] हैं ।

चारणों का राजपूत जाति के साथ कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है, इसके [illegible] में किसी कवि ने चारण की इच्छा इस प्रकार प्रकट की है:—

सीरोही तरवार मारूं बकरां ।
ठाकर हो बडू जांण, समझे अकरां ॥
पातां सामी पांत, प्याला दे गोलणां ।
इतरा दे किरतार, फेर नहीं बोलणां ॥

अर्थात् सिरोही राज्य की बनी हुई नामी तलवार से बकरे का बलिदान मांस भोजनार्थ किया जाय, ठाकुर (सरदार) समझदार और पढ़ा लिखा हो और भोजन करते समय ठाकुर की पंक्ति के सामने ही मेरी पंक्ति रहे अर्थात् ठाकुर और मैं दोनों एक दूसरे के सामने [illegible] बैठ कर भोजन करें, और दासियां शराब के प्यालों की खूब हमारी मनुहार करें । यदि परमात्मा इतनी इच्छा मेरी पूरी करे तो विशेष कुछ नहीं चाहिये । और वास्तव में राजपूत सरदार चारणों का आदर उनके स्वामिभक्ति आदि गुणों के कारण करते आये हैं । इस विषय की एक प्रसिद्ध घटना आसोप ठिकाने के जाहनसीनी के समय की है ।

जब महाराजा विजयसिंहजी के समय में सं० [illegible] में मरहटों के साथ युद्ध हुआ और आसोप के ठाकुर महेशदास वीरतापूर्वक महा-

---

[illegible] "राजस्थानरा राजिया"

राजा की ओर से काम आया—तब महाराजा ने महेशदास के छोटे भाई जगरामसिंह (जगा) को-जो रणक्षेत्र से भाग आया था-ठिकाना देना चाहा। परन्तु ऐसे समय में यह अन्याय होता देख निर्भिक स्पष्ट वादी एक चारण देवता ने महाराजा मारवाड़ के साथ आये हुवे सरदारों को सम्बोधन करते हुवे भरे दरबार में यह पद्य कहाः—

मरज्यो मती महेश ज्यों, राठ [illegible] पगरोर।
भगड़ा में भागो जगो, ओ पावे आसोप॥

अर्थात महेशदासजी कुंपावत की तरह रणक्षेत्र में [illegible] से मत मरना। क्यों कि इससे कोई लाभ नहीं। [illegible] से भगे हुवे जगराम को आसोप दी जा रही है और महेशदास का कोई आदर नहीं।

इसका फल यह हुवा कि-महाराजा को चेत आया और [illegible] महेशदासजी के नाबालिग लड़के रतनसिंह को ही आसोप दी।

त्योंहार

यहां के हिन्दुओं में मुख्य त्योंहार होली, आखातीज ([illegible]) राखी (रक्षाबन्धन-श्रावणी) दशहरा (नवरात्रि) और [illegible] इनके सिवाय गनगौर और तीज (श्रावणी व [illegible]) [illegible] मुख्य त्योंहार है। दशहरा राजपूतों का और रक्षाबन्धन [illegible] ब्राह्मणों का त्योंहार है। किन्तु सार्वजनिक त्योंहारों में [illegible] (वैशाख सुदि ३-अक्षयतृतीया) विशेष चाव के साथ मनाई [illegible] और इसका जैसा प्रचार राजस्थान में है वैसा [illegible] यही एक ऐसा त्योंहार है जिसमें राजा और प्रजा का [illegible] बान्धवोंकासा देखा जाता है। इस दिन राजा [illegible] हाथों से प्रत्येक नौकर-चाकर, किसान और [illegible] अफीम की मनुहार करते हैं। [illegible]

१—पौने दो लाख [illegible]
और स्त्रियों ५,६८। पुरुष [illegible]

का भय लगा और फलस्वरूप "मारवाड़ प्रेस एक्ट १९२३ ई० (मारवाड़ गजट के २० अक्टूबर सन १९२३ के अंक में) पोलिटीकल एण्ड ज्युडि-शियल मेम्बर साहब (सर सुखदेवप्रसादजी) के हस्ताक्षर से जारी हुआ। इस प्रेस एक्ट में इतने कड़े नियम रखे गये कि-जिनका ब्रिटिश भारत के प्रेस एक्ट से मुकाबला नहीं हो सकता। यहां तक कि— साइक्लोस्टाइल (Cyclostyle) भी छापाखाना में शामिल कर दिया गया। और टाईपरायटर मशीन का लाईसेन्स लेना और पुलिस में रजिस्ट्री कराना पहिले ही आवश्यक बना दिया गया था। इन कड़े बंधनों से जकड़े हुये कई जातीय पत्र धीरे धीरे बन्द हो गये या होने लगे या ब्रिटिश भारत में कूच कर गये। मारवाड़ प्रेस एक्ट के ही इन कड़े नियमों का नमूना नीचे दिया जाता है:—

7—Every book, paper or newspaper printed or published in the Marwar territory shall have printed legibly on it the name of the press, printer and the number of copies printed, and in the case of a newspaper, the name of the Editor also, and if the book or paper be published the name of the Publisher and the date and place of publication also.

७—जो किताब, कागज या अखबार रियासत मारवाड़ में छापे या शाये (प्रकट) किया जावे उन पर छापाखाना या छापनेवाले का नाम और छपे हुये कागजों की तादाद साफ तौर से छापनी लाजिम होगी और अखबार होने की हालत में एडीटर का नाम भी देना लाजिम होगा। और अगर किताब या कागज शाये किये जावें तो शाये करने वाले का नाम, तारीख और छपने की जगह भी देनी लाजिम होगा।

×   ×   ×   ×

9—No printing press or publisher in Marwar shall ... its or his publication with any foreign ...

९—मारवाड़ का कोई छापाखाना या शाये करनेवाला (प्रकाशक) अपनी इशायद (प्रकाशित साहित्य) की किसी गैर मुल्क की इशायत के साथ अदल बदल नहीं कर सकेगा।'

उपरोक्त नियम से साफ पता लगता है कि-पत्रों के संचालकों के

[illegible] संस्था भी लिख देना जरूरी करार दिया गया। यह [illegible] रीति से [illegible] मान कायम रखने के विरुद्ध प्रतीत होता है। दूसरा मारवाड़ के बाहर का कोई भी समाचारपत्र यहां के पत्र के बदले लेना देना जुर्म करार दे दिया गया। चाहे वह समाचारपत्र 'पायनीयर' या 'लीडर' जैसा भी सरकारभक्त पत्र क्यों न हो। समझ में नहीं आता कि-इस दफा को रख कर मारवाड़ के प्रेस व पत्रों का क्यों गला घोंटा गया। हमें हमारे न्यायपरायण प्रजापालक दयालु महाराजा-साहब से पूर्ण आशा है कि-वे ऐसे कड़े कानूनों का शीघ्र बहिष्कार करने की कृपा करेंगे। और प्रजा की ओर से सार्वजनिक पत्र जिसमें राजा व प्रजा दोनों के हित के लेख व समाचार हों-जैसा कि-ग्वालियर से 'जयाजी प्रताप' और 'बड़ौदा से 'बड़ौदा समाचार' आदि पत्र निकलते हैं। ऐसे पत्रों के होने से प्रजा की पुकार महाराजा साहब तक सुगमता से और शीघ्र पहुंच सकेगी और किसी को असन्तोष न होगा और न राजकर्मचारियों का कभी जोर जुल्म ही-प्रबल हो सकेगा। सार्वजनिक-पत्रों के अभाव से मारवाड़ बहुत कुछ पिछड़ गया है। क्यों कि-किसी देश व जाति की उन्नति प्रेस व पत्र पर ही निर्भर है। इनके सहारे राष्ट्र उत्थान के बड़े से बड़े कठिन कार्य आसान हो जाते हैं। मशीनगन, बम के गोले और हवाई जहाजों के समान ही आजकल सभ्य संसार को डराने, राज्य उलटने और सिंहासनों को पलटने की महान शक्ति छापाखाना व अखबार में ही है।

कानून व इन्साफ

१८ वीं शताब्दी के पूर्व कोई बाकायदा अदालतें मारवाड़ में नहीं थीं। निर्णय पञ्चायतों द्वारा होता था। चाहे महाराजा जसवन्तसिंहजी जैसे न्यायी नरेश भी हो चुके हैं। वि० सं० १८९६ की आश्विनबदि ५ मंगलवार (ता० २४-१०-१८३९ ई०) को यहां बृटिश राजदूत (रेजीडेन्ट) के मुकर्रर होने पर राजधानी में कुछ अदालतें स्थापित हुईं; परन्तु अदालतों की कई प्रकार की खराबियों के कारण व जागीरदारों की उद्दण्डता से इन्साफ अच्छे प्रकार से नहीं होता था। जागीरदारों की जागीर में तो न्याय की और भी गिरी हुई दशा

थी। पश्चात् सं० १६३० की वैशाख सुदी [illegible] (ता० [illegible] मई सन १८७३ ई०) मंगलवार को महाराजा जसवंतसिंहजी साहब ने "[illegible]" स्थापित किया परन्तु असल में सुधार व न्यायालयों [illegible] संवत् १६४२ में ही जमी जब कि-महाराजा जसवंतसिंहजीसे उद्योगी, [illegible] नरेश और महाराज सर प्रतापसिंहजी जैसे योग्य प्रधानमंत्री [illegible] उत्तरोत्तर न्याय और सामाजिक सुधार होने ही चले गये और [illegible] भारत के मुख्य कानून कुछ रद्दोबदल करने पर यहां भी जारी किये गये।

पहले यह अदालतें शहर में एक जगह [illegible] इमारतों में नहीं होती थीं। संवत १६४३ में भारत की राजराजेश्वरी महारानी विक्टो-रिया के ५० वर्ष सुखशांति से राज करने की खुशी में यहां पर "[illegible] ली कोर्टस्" लगभग ४ लाख रुपये से बनाई गई। इनमें [illegible] लत महकमाखास है जिसका वर्णन हम पहले लिख चुके हैं। [illegible] सब महकमे हैं और न्याय की दृष्टि से चीफकोर्ट नाम की [illegible] अदा-लत है जिसका काम केवल सेसन कोर्ट और जुडिशियल सुपरिंटेन्डेन्टों की तथा ठिकानों की अदालतों की अपीलें सुनना है। इसमें १ [illegible] और दो प्यूनी जज हैं। चीफ कोर्ट के नीचे तीन सेसन [illegible] परगनों की कुल हुकूमतों व शहर की छोटी अदालतों से [illegible] २ प्रारंभिक (इब्तदाई) व अपील के फौजदारी मुकदमों [illegible] करती है, और दीवानी २,५०० रु० से ऊपर इब्तदाई [illegible] से ऊपर की अपीलें सुनती हैं। उनको १४ साल की सजा और [illegible] जुर्माना तक का अधिकार है।

सेसन कोर्ट के नीचे जुडिशियल सुपरिंटेन्डेन्टों [illegible] फलोदी (पोकरन), सांभर, सोजत और मेड़ता में [illegible]। इनके [illegible] अख्त्यारात फर्स्ट क्लास, मेजिस्ट्रेट के हैं और दीवानी ५०० से [illegible] रु० तक के दावे सुन सकते हैं। और नीचे [illegible] से ऊपर के सुनते हैं।

जुडिशियल सुपरिंटेन्डेन्टों के नीचे परगनों (जिले) के हाकिम होते हैं जो २१ हैं। उनके फौजदारी अधिकार सेकण्ड क्लास मेजिस्ट्रेट [illegible]

आजकल एक नई विशाल इमारत सोजती गेट की तरफ [illegible] मैदान में १०-१२ लाख रुपये की लागत से तयार हो रही है [illegible] सेन्ट्रल अस्पताल बदल कर दो तीन वर्ष में चला जायगा। [illegible] अस्पताल में ४०० रोगियों के निवास का प्रबन्ध रहेगा।

गत ५ वर्ष से इस विंडम अस्पताल के आफिसर [illegible] साहब डाक्टर ओंकारसिंह पंवार एल० एम० एस० हैं। जो [illegible] शास्त्र के सिवाय शल्यकर्म (सर्जरी) में भी [illegible] हैं। [illegible] मिलनसार, हिन्दी प्रेमी और देशभक्त सज्जन हैं।

विंडम जनरल हास्पिटल के सिवाय राजधानी में [illegible] अस्पताल और हैं जिनमें से उल्लेखनीय एक तो [illegible] के लिये, दूसरा सेना का, तीसरा सेंट्रल जेल का और चौथा [illegible] के लिये "जसवंत जनाना अस्पताल" जिसका उद्घाटन [illegible] ५ सं० १९५३ वि० (ता० २४-११-१८९६ ई०) को तत्कालिन [illegible] की धर्मपत्नि काउन्टेस एलजिन द्वारा हुआ था। [illegible] में युनाईटेड फ्री चर्च आफ स्काटलेन्ड मिशन [illegible] का भी एक मिशन अस्पताल सन १८८५ ई० से है [illegible] के लिये सन १९०० ई० में बहुत कुछ सहायता दी गई थी।

विक्रमी संवत १९२२ के बाद में सरकारी अस्पतालों [illegible] त्तर बढ़ती गई और सं० १९३८ वि० में ७ हो गई तथा [illegible] और इस समय (कार्तिक स. १९८२ वि०) १८ [illegible] कुल २४ शफाखाने हैं। जिनमें कुल ५४ डाक्टर काम करते हैं [illegible] वाड़ की जनसंख्या व क्षेत्रफल से अस्पतालों और डाक्टरों [illegible] की जाय तो ७६,७३५ मनुष्यों में और १५३१ [illegible] अस्पताल होता है। महाराजा साहब की कृपा से यद्यपि [illegible] निरन्तर तरक्की की जा रही है, परन्तु बहुत ही धीमी [illegible] परम विचारणीय है। सं० १९४० वि० में इस चिकित्सा [illegible] हजार रुपये खर्च किये गये थे और इस समय [illegible] खर्च है। चेचक के टीके का प्रचार स० १९२४ वि० में [illegible] और उसी वर्ष ३९३३ मनुष्यों के टीका लगाया गया।

ने सिविल [illegible] नगर में कड़ा पहरा रखा कर अपना प्रशंसनीय कर्तव्य किया।

जंगलों का विवरण

मारवाड़ में सरकारी जंगलों का क्षेत्रफल २४६ वर्गमील है। जो [illegible] अरावली पर्वत की पश्चिमी ढालू भूमि के बाली, देसूरी, पर-बतसर, सोजत और सिवाना परगनों में हैं। अरावली पर्वत के जंगल का जो भाग जागीरदारों का था उसको ३२ रुपये फी वर्गमील मुआवजा या उसके बदले में दूसरी जमीन देकर सरकारी जंगलों में शामिल कर लिया गया था। इन जंगलों में सागवान जैसी बढ़िया लकड़ी नहीं होती है। यहां के पेड़ों में खास कर बांवल (बबूल), नीम, रोहिड़ा, शिरस और खैर हैं जो मैदान में पाये जाते हैं। इनकी मेज, कुर्सी, दर-वाजा आदि बनते हैं और उन्हें यहां "कबाड़ा" कहते हैं। जिन दर-ख्तों की लकड़ी जलाने के काम में आती है वे खेजड़ा, सन्देसड़ा, गुंदी, [illegible], बड़, गूमट, पीपल, आक, सालर, कुमट, ढाक, आंवला और कैर हैं। इनके सिवाय इमली, जाल, फोग आदि पेड़ भी पाये जाते हैं। जंगलों में शहद, मोम, आंवला और गूंद-वगैरह आदि वस्तुएं भी पाई जाती हैं। आंवल (तरवड़=Cassia Auriculata) का जंगल यहां बहुतायत में है। यह पीले फूल की झाड़ी कोई ५ फुट ऊंची होती है। इसकी फलियों में बीज होते हैं। इस छोटे पेड़ को कोई जानवर नहीं चरता है। इसकी छाल से चमड़ा रंगा जाता है और इस छाल के ठेके से जंग-लात महकमे को आजकल ३० हजार रुपये की सालाना आय है। महा-राज के समय इससे दुगुनी तिगुनी आमदनी होती थी। जलाने की लकड़ी और घास का सुरक्षित जंगल खालसा गांवों में कोई २० वर्ग-मील में है। घास यहां पर आठ प्रकार का है। अर्थात धामन, करड़, [illegible], [illegible], बरू, [illegible], लांप और डाब (कुशा) और दूसरी किस्म के घास [illegible] ([illegible]), मूर्ट, [illegible], मकड़ा और [illegible] भी पाया जाता है। पर इनके पूले (बण्डल) नहीं बंध सकते हैं।

सन् १८८[illegible] ई० में [illegible] जंगलों के अफसर मिस्टर गांधी साहब

महाराजा सर प्रताप ने राज्य के प्रधान मंत्री की हैसियत से वहां का एक सरक्यूलर निकाल कर यह इच्छा प्रकट की थी कि-राज्य के समस्त अधिकारी राज्य के अन्दर बने हुवे कपड़ों का ही इस्तेमाल करें। और स्वदेशी चीजों के प्रचार तथा विदेशी चीजों की हानि करने को पूरा बायकाट करने को एक पुस्तक सं० १९४७ वि० में "भारत रक्षा" (Protection of safety of India 1890 A. D.) नाम की छपा कर प्रकाशित कराई थी। यदि इस आज्ञा पर पूरा ध्यान दिया गया होता तो यहां के कलाकौशल की उन्नति में वह विशेष अधिक सहायक हुवा होता। अब भी समय का देख यदि उच्च कर्मचारी इस ओर ध्यान देवें तो निकट भविष्य में ही मारवाड़ पूरा स्वदेशी खादी (मोटा कपड़ा) की उत्पत्ति में भारत का एक बड़ा केन्द्र बन सकता है।

संसार पूज्य महात्मा गांधी के स्वदेशी आन्दोलन से इधर अभी ३-४ वर्ष से बोरावड़ और बीलाड़ा कस्बा में हाथ की कताई और बुनाई से बड़े अच्छे कपड़े बनने लगे हैं और वे यहां से दूर २ जाते हैं। तथा राज्य भर में कोई ७० हजार मन खालाना होती है। इससे लगभग ३४ लाख रुपये की वार्षिक आय व्योपारियों को है। यह माल अधिकांश में बाहर-बम्बई आदि की तरफ ही जाती है। यहां के ऊनी कम्बल बड़े प्रसिद्ध हैं।

पटवे का काम अर्थात गहने को सूत या रेशम के डोरों से पोना, बांधना व रक्षाबंधन बनाना और फुटकर काम मारवाड़ में बहुत अच्छा होता है। जिसकी देशदेशान्तरों में तारीफ है। पटवे का काम करने वाले प्रायः ओसवाल महाजन होते हैं।

खनिज-पदार्थ

नमक, संगमरमर और इमारती पत्थर के सिवाय और कोई खनिज पदार्थ या धातु या कोयला आदि नहीं मारवाड़ में नहीं मिलता। यद्यपि ऐसी एक दंतकथा है कि-पुराने ज़माने में यहां सोना और दूसरी धातुओं की खानें थीं। मारवाड़-पाली नगर के पास पुनागर की भाखरी (पहाड़ी) में से सोना पहिले निकाला जाता था। तांबे और लोहे की खानें

[illegible] [illegible] पाली और मेड़ता में भी। किन्तु वे कई वर्षों से बंद हैं, क्योंकि [illegible] खर्च भी आमदनी नहीं होती। इमारती [illegible] जोधपुर, सोजत और नागौर परगना के [illegible] तथा [illegible] गांवों में [illegible] परगने के [illegible] गांव में तथा दूसरे कई स्थानों में बहुत मिलता [illegible]

[illegible] रेल खुल जाने से गत ३० वर्ष से इमारती पत्थर और ज्यादातर [illegible] की पट्टियाँ (टाइल) मारवाड़ से बाहर बहुत जाती हैं। इससे आ-[illegible] राज्य को कोई १० हज़ार रु० सालाना टैक्स की आय है। संगमरमर का पत्थर [illegible] से १२ मील पश्चिम में गांव मकराना में बहुत पाया जाता है। यहां इस स्वच्छ-सुन्दर पत्थर की बीसों खानें हैं। कहा जाता है, कि-विश्वविख्यात आगरेका ताजमहल बहुत कुछ इन्हीं खानों के संगमरमर से बना था। और कलकत्ते का आलीशान विक्टोरिया मेमोरियल हाल भी इन्हीं पत्थरों से तयार हुआ है। इस राज्य का यह संगमरमर पत्थर प्रसिद्ध होने से भारत के दूर भाग में जाता है और [illegible] की इमारतों की शोभा बढ़ाता है। क्या ही अच्छा हो, यदि महाराजा साहब कम से कम अपने राजधानी के रेल्वे स्टेशन को इसी सफेद पत्थर का बनवावें जो देशदेशांतरों के लाखों मुसाफिरों के ध्यान खींचता हो और भारतवर्ष में अद्वितीय स्टेशन गिना जाय। मकराना की इन संगमरमरी खानों से राज्य को लगभग ४५ हज़ार रु० सालाना की आमदनी है और ये एक अंग्रेज ठेकेदार के ठेके में हैं।

डेगाना रेल्वे स्टेशन के पश्चिम में ढाई मील पर गांव रेवांत की पहाड़ी में "वोल्फ्राम" नाम की उपयोगिनी धातु की खानें हैं। गोला-बारूद बनाने में इस धातु की बड़ी जरूरत पड़ती है। इसका पता सर्वप्रथम जोधपुर रेल्वे के एक भारतीय कर्मचारी को सन १९१३ के नवम्बर मास में लगा था। तब से यह एक अंग्रेज कम्पनी के ठेके में है। यह धातु योरपीय महायुद्ध में बड़ी उपयोगी सिद्ध हुई।

[illegible] की खानें नागौर परगने के मांगलोद, खेरत, चंटी-[illegible] और [illegible] गांवों में बहुत हैं। यहां से बहुत बाहर भी [illegible] [illegible] और फलोदी परगने के गांव चौकी मोटाई में भी [illegible] यह एक प्रकार का पत्थर चूना है, जो इमारती पत्थरों को

सरकार के प्रोमेसरी नोटों और इम्पीरियल बेंक में दाखिल जमा कराया जाता है। इस इम्पीरियल बेंक की एक शाखा राज्य में आगामी सन् १९२७ ई० के जनवरी मास के प्रथम सप्ताह में खास ज्युबिली कोर्ट (जोधपुर कचहरी) में खुलेगी और स्टेटका खजाना महकमा उठा दिया जायगा।

अहदनामें

मारवाड राज्य और अंग्रेज सरकार (ईस्ट इंडिया कम्पनी) के बीच में जो खास अहदनामें शुरू में विक्रमी संवत १८६० और सं० १८७४ की पौष वदि ३० (ता० ६-१-१८१८ ई०=२७ सफर सन १२३३ हिजरी) को हुवे हैं और जिनके आधार पर ही राज्य के वर्त्तमान नरेश और अंग्रेज सरकार के साथ सम्बन्ध निर्भर हैं। उन अहदनामों (सन्धिपत्र) का हिन्दी अनुवाद नीचे दिया जाता है:—

(१)

(मित्रता और एकता का)

अहदनामा आनरेबल (माननीय) अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी और महाराजाधिराज राजराजेश्वर मानसिंह बहादुर के दरम्यान में मित्रता और एकता के विषय में। जिसको एक तरफ से आनरेबल के अंग्रेजी [illegible] के मुख्य सेनापति हिज एक्सेलेन्सी (महामान्यवर) जनरल [illegible] ने बमुजिब अपने इख्तियारों के-जो उनको प्रेसिडेन्ट [illegible] के माननीय प्रिवि कौन्सिलर और आनरेबल के [illegible] समस्त देशों की सेनादल के कप्तान-जनरल और प्रधान [illegible] एक्सेलेन्सी मारक्विस वेलेज़ली: गवर्नर जनरल ने फोर्ट विलियम (कलकत्ता) के द्वारा दिये हैं—और दूसरी तरफ से महाराजाधिराज राजराजेश्वर मानसिंह बहादुर ने अपने [illegible] राधिकारियों (जानशीनों) की तरफ से किया।

महाराजा मानसिंह बहादुर का अहदनामा, जिसको माननीय कम्पनी की तरफ से मिस्टर चार्ल्स थियोफिलस मेटकाफ ने-गवर्नर जनरल अर्थात प्रधान सेनापति अति माननीय मार्किस आफ हेस्टिंग के० जी० के दिये हुये अधिकारों के अनुसार-और महाराजा मानसिंह बहादुर की तरफ से व्यास बिशनराम और व्यास अभैराम ने-तय्यार किया।

पहली शर्त—मित्रता, एकता और शुभकामना सर्वदा आपस में आनरेबल ईस्ट इंडिया कम्पनी और महाराजा मानसिंह और उनकी सन्तान में पीढ़ी-दर-पीढ़ी रहेगी और एक सरकार के मित्र और शत्रु दोनों सरकारों के मित्र तथा शत्रु गिने जायंगे।

दूसरी शर्त—बृटिश गवर्नमेंट प्रतिज्ञा करती है कि-वह राज्य और देश जोधपुर की रक्षा करेगी।

तीसरी शर्त—महाराजा मानसिंह और उनके उत्तराधिकारी जो उन के स्थान पर हों, सदा बृटिश गवर्नमेंट के अधीन में रहें और उस गवर्नमेंट की प्रभुता स्वीकार करें। तथा अन्य किसी राजा या किसी राज्य के साथ सम्बन्ध नहीं रखेंगे।

चौथी शर्त—महाराजा और उनके बेटे पोते पीढ़ी-दर-पीढ़ी किसी राजा या राज्य से मेल मिलाप बृटिश गवर्नमेंट की सूचना और स्वीकृति के बिना नहीं करेंगे। परन्तु अपनी जाति तथा मित्र राजाओं के साथ प्रच-लित रीति के अनुसार पत्रव्यवहार कर सकेंगे।

पांचवीं शर्त—महाराजा और उनके वारिस व उत्तराधिकारी किसी पर [illegible] नहीं करेंगे। यदि अचानक किसी के साथ कुछ तकरार हो जाय तो उसका फैसला अंग्रेज सरकार की राय पर छोड़ देंगे।

छठी शर्त—जो खिराज अब तक सेंधिया (ग्वालियर राज्य) को जोधपुर से दिया जाता है और जिसकी तफसील अलहदा लिखी गई है, सदा के लिये सरकार अंग्रेजी को दिया जायगा। परन्तु खिराज के [illegible] से सेंधिया और जोधपुर में जो शर्तें हैं वे रद्द होंगी।

सातवीं शर्त—महाराजा कहते हैं कि सिवाय उस कर के जो जोध-पुर से सेंधिया को देते हैं और किसी को नहीं दिया जाता है, और

इन में से फैसल हुये	१,२६८	५,९२५	६,२४१
कितने निपटारा किये गये	१,१५५	३,९२०	३,२६८

इन उक्त वर्षों में ज़मीन व सम्पत्ति सम्बन्धी रुपयों पैसों की गड़बड़ से और अन्य अधिकार सम्बन्धी मुक़द्दमें के अंक यह हैं:—

	सन १९१३-१४	१९२०-२१	१९२३-२४ ई०
ज़मीन सम्बन्धी	३१४	३०६	४३१
रुपयों पैसों से	४,५४९	५,०६०	४,७५६
अन्य अधिकार सम्बन्धी	५७४	५२३	४८८
मालियत कुल की	१२,३०,४५६ रु०	२३,९३,२०८ रु०	४४,९३,८४० रु०

कितने मुकद्दमें इकतर्फा फैसल हुये, कितनों मे राजीनामें या सम-झौते हुए, कितने रद्द या फाइल (खारिज) हो गये और दूसरे तरीकों पर कितने फैसल हुए। वे निम्न प्रकार हैं:—

	१९१३-१४	१९२०-२१	१९२३-२४
इकतर्फा फैसल	७०२	१,१८०	१,१११
राजीनामें	१,४३२	१,५५३	१,२३४
खारिज	७७१	९०५	४६१
अन्य प्रकार से तय हुये	२,३६३	२,५८७	३,४३५
मालियत कुल की	७,७६,७६६ रु०	९,६६,७२८ रु०	२,९३,२१० रु०

फौजदारी मामलों के अंक निम्न प्रकार हैं:—

	१९१३-१४	१९२०-२१	१९२३-२४
पिछले वर्ष के बाकी	२३१	४८१	४२३
इस वर्ष कितने जुर्म	३,११८	३,२७६	२,५००
कुल	३,३८७	३,७५७	२,९२३
इनमें से फैसल हुये	३,१८७	३,३३४	२,५१४
कितने बाकी रहे	२०२	४२३	४०६
कितने गिरफ्तार हुये	३,२१६	६,४३२	४,६२१
कितनों को सजा हुई	१,२३५	१,१०६	१,४०४
कितने छोड़ या बरी हुये	१,७३०	३,८२२	२,५५२

कितने पागलखाने भेजे गये	१०	३२	२०
कितने मरे	०	१२	१६
कितने विचाराधीन रहे	१५६	४६०	६३१

परिशिष्ट संख्या ४

चुराये हुवे व वापिस वसूल हुवे माल का विवरण

	सन १९१३-१४	१९२०-२१	१९२३-२४
चुराये माल की रकम रु०	१,१५,८६७	४,२२,७५१	२,१३,११५
वसूल हुवे माल की रकम रु०	६६,६७९	१,५२,७८१	[illegible]

परिशिष्ट संख्या ५

दस्तावेजों की रजिस्ट्री हुई

	सन १९१३-१४	१९२०-२१	१९२३-२४
जोधपुर में	६७२	७३४	५०८
हकूमतों में	१,०६२	१,४७५	१,३१३

परिशिष्ट संख्या ६

जेलखाने

इस राज्य में पुराने समय से कैदियों को आवती अर्थात् जमीन के कुछ नीचे बने तैखानों में रखने की चाल थी। जोधपुर में यह तहखाने शहर के बीच कोटवाली में थे। इनमें पशुओं की तरह कैदी भर दिये जाते थे और उनकी तन्दुरुस्ती का कोई खयाल नहीं किया जाता था। अतः सं. १९३० में सोजती दरवाजे के बाहर कोई १ हजार गज के फासले पर नया जेलखाना तयार किया गया। यह एक बड़ी इमारत घोड़ों के रखने के लिये बनी थी उसी पर २० हजार रुपये खर्च किये गये और इस इमारत को घटा बढ़ा कर कैदियों के रखने योग्य बना दिया गया। इस मनुष्योचित जेलघर में रसोईघर, स्नानघर, पाखाने आदि भी बनाये गये। और कैदियों की निगरानी के लिये स्वतन्त्ररूप से एक सुपरिंटेंडेन्ट नियत हुवा। सं० १९४१ में इस जेलघर के पास ही नाबालगों के लिये एक

[illegible] काम सिखाया गया और इसी वर्ष से कैदियों से गलीचे बुनाने का काम आरम्भ हुआ। क्योंकि राज्य ने १० हजार रुपये वार्षिक खाने खुराक पर खजाने से खर्च करना मंजूर किया। इसी समय कैदियों को तमाकू सेवन करने की सख्त मनाई की गई। जेल में कैदियों के सदाचार को बिगाड़नेवाली चीज तमाकू या बीड़ी ही है। यह बिलकुल सही बात है कि, बीड़ी पीनेवाले कैदी किसी न किसी तरह बीड़ी और तमाकू बाहर से मंगा लेते हैं। लेकिन, अभी चोरी से, रिश्वत से, यह सब हासिल करना पड़ता है। यदि बम्बई प्रांत की जेलों की तरह उन्हें तमाकू मिलने लगे, तो कैदियों के सारे तिकड़म शांत हो जाय। क्योंकि तमाकू के कारण उन्हें झूठ बोलना तथा षड्यन्त्र रचने का स्वभाव पड़ जाता है और इस तरह सदाचार के स्थान में दुराचार की शिक्षा मिलती है।

जब यह जेलघर कैदियों के बढ़ जाने से काफी नहीं समझा गया तब सं० १९४३ में पास ही एक फरलांग के फासले पर एक लाख से अधिक रुपये की लागत से एक विशाल गोलाकार (अष्टपहलू Octagonal) "सेंट्रल जेलखाना" बनना आरम्भ हुआ। जब यह इमारत बन कर तयार हो गई तब सं० १९५० की चैत्र बदि ४ रविवार (ता. २५-३-१८९४ ई०) से इसमें कैदी रहने लगे और पुरानी जेल खाली कर दी गई। यह नया सेन्ट्रल जेल राजपूताना में अपने ढंग का सुन्दर इमारत है। इसमें ८ बैरक हैं। जो कि एकही केन्द्र से मिले हुए हैं और हरेक बैरक का चौगान अलहदा घिरा हुआ है। इन सब के बीचोंबीच एक बुर्ज बनी है। जहां से चौकसी की जाती है। इस कंगूरेदार बुर्ज के नीचे जो कमरे हैं उनमें दफ्तर बने हैं। इस जेल में प्रायः १ हजार कैदियों की जगह है। योरपीय महायुद्ध के समय युद्ध के तुर्की कैदी इसी जेल में १ साल तक रखे गये थे। पश्चात् २६ जौलाई सन १९१७ ई० को वे तुर्की सुमेरपुर (मारवाड़) में भेज दिये गये। तुर्की कैदियों के रहने के समय तक यहां के कैदी पास ही पुराने जेलघर में रखे गये थे। प्रत्येक बैरक में लगभग १५० कैदी रह सकते हैं। यही जेलखाना सं० १९५० वि० से "जयपुर सेंट्रल जेल" कहलाता है। इसमें एक अस्पताल भी है।

दोषियों (गुनहगारों) के लिये यह कैदखाने जेल हैं [illegible]
सज्जनों के लिये यह चार दिवारी भगवान " श्रीकृष्ण का जन्मस्थान " है। [illegible]
कारण प्रायः मुकदमों में ऐसी ऐसी पेचीदगियां आ जाती हैं कि [illegible]
झूठे का सच्चा और सच्चे का झूठा कानूनी चक्कर में [illegible]
इस तरह या अन्य राजनैतिक चालों से जो मातृभूमि के [illegible]
जननी के सेवक छोटी २ बातों पर दोषी बना कर जेल में [illegible]
हैं। वे शांतचित्त से इन जेलघरों को " तपोभूमि " मानते [illegible]
कि एक अंग्रेज विद्वान कवि ने कहा है :—

Stone wall do not a prison make
Nor iron bars a cage
Mind innocent and quiet take
That for hermitage

पत्थर की दिवारों से कैदखाना बनता नहीं।
लोहे के सिकंजों से पींजरा बनता नहीं।
दोष रहित शान्त व्यक्ति मानते,
बन्दीगृह को तपोभूमि जानते।

है भी यह सत्य। क्यों कि ऐसे सेवक अपने धर्म, जाति और देश के लिये कठिन से कठिन यातनाएं सहने को तयार रहते हैं। [illegible]
का मूलमन्त्र तो यह होता है:—

कौम की खातिर मेरी दुनिया में [illegible]
हाथ में हो हथकड़ी पांवों में [illegible]
सूली मिले फांसी मिले या [illegible]
मंजूर हो, मंजूर हो, मंजूर हो, मंजूर हो।

इस सदर जेलघर के सिवाय [illegible]
में छोटे जेलघर हैं जहां [illegible]
रखे जाते हैं। कई [illegible]
ढचरे के, गन्दे-मैले आदि [illegible]
आशा है।

सं० १६४० (सन १८८३ ई०) में जोधपुर [illegible]

१,१४ मनुष्य और १० स्त्रियां कैद की तादाद आज इस प्रकार है:—

सन ई०	गत वर्ष के	इस वर्ष के	कुल	वर्ष के अन्त में
१९१३-१४	५०१	८९४	१,३९५	४९९
१९२०-२१	५२०	१,३०४	१,८३२	६०३
१९२३-२४	५१६	१,०३३	१,५४९	५७३

इस संख्या में स्त्रियां भी शामिल हैं जो कठिनता से वर्षमें १५-२० हैं। इस राज्यमें स्त्रियां बहुत ही कम जुर्म करती हैं। स्त्रियां तथा १८ वर्ष से कम उम्र के लड़कों के रहने के लिये अलग २ बैरेक हैं। खेद है कि इन कैदियों में अधिकांश राजपूत हैं। सन १९२४ में राजपूत २३४, जरायम पेशा भील, सांसी, मीना आदि १९९, मुसलमान ७० और बाकी ब्राह्मण, महाजन आदि अन्य जाति के कैदी थे। ऐसे ही सन १९२५ ई० में कुल कैदी ६१७ थे जिसमें राजपूत २७८, जरायमपेशा जाति के १२३ और मुसलमान १०८ थे। बाकी अन्य हिन्दु लोग। मुसलमान कैदी जेल में भी अपने मज़हब-तबलीग का प्रचार धड़ाके से करते रहते हैं। इन कैदियों से पहले शहर की सड़कों के कंकर कुटाये जाते थे। बाद में जेलखाने में ही आटा की चक्कियें पिसाई जाती व अन्य कार्य दरी कालीन, निवार, दस्तरख़ान, तौलिया, गाढ़ा, सूती चारखाना, दर्जी, लुहार, रंगाई, प्रेस सम्बन्धी कार्य कराये जाने लगे। गत ३-४ वर्ष से हाथ से आटा पीसना बन्द हुआ क्यों कि बिजली से आटा पीसा जाता है। जेल में कैदियों के ४ दर्जे हैं। (१) C. P. साधारण कैदी (२) C. N. W. कैदी पहरेदार (३) C. O. कैदी नम्बरदार (४) C. W. कैदी जमादार जिसे यहां "गोलिया" कहते हैं और उसे काला साफा बांधने को मिलता है। हवालाती और सज़ा (सादी) कैदी अपने घरू कपड़ों में रखे जाते हैं और उनसे कोई काम नहीं कराया जाता है। १ वर्ष की सख्त कैदवाले को १ मास रेमीशन (रियायत) में मिलता है। फांसीघर जेल के भीतर ही है और जन्म कैद १४ वर्ष की है जिसमें रेमीशन मिल कर कैदी प्रायः १० वर्ष भोगता है। ता० ८ डिसेम्बर सन १९१५ से इस जेल के सुपरिन्टेन्डेन्ट मिस्टर पैटरसन नामक युरोपियन हैं। जो कैदियों की मारवाड़ी बातों की बड़ी सुनवाई करते हैं। इससे यह यथायोग्य सज्जन बड़े लोकप्रिय हो गये हैं। जेलर और उनके एसिस्टेन्ट साहित्यप्रेमी लाला लक्ष्मीनारायण कायस्थ भी कर्तव्यशील व पूरे अनुभवी भले आदमी हैं।

	३-सिरोपाव [illegible] चुपई का												
१-	दर्जा अव्वल	.	.	..	५० ।	..		२५ ।		..		..	७५ ।
२—	,, दूसरा			...	४०	..	..	२०	..	..	..	..	६० ।
३—	तीसरा दर्जा	.		.	३० ।	..	..	१५ ।	..	.	.		४५ ।
	४-सिरोपाव कचा मोती कुशाले का												
१—	दर्जा अव्वल	..	.	.	४५ ।	३० ।	३५ ।	..	११ ।	..	.	..	१२१ ।
२—	,, दूसरा	.	.	..	३५ ।	२५ ।	२५ ।	.	.	..	..	.	८५ ।
३—	तीसरा दर्जा	.		.	२५ ।	२० ।	२० ।		.		..	.	६५ ।
	५-सिरोपाव कड़ा कुशाले का												
१—	दर्जा अव्वल	..	..	..	२० ।	.	१७ ।	.	.	..	..	.	३७ ।
२—	,, दूसरा	..	..	.	..	.	.	.	.	.	..	..	...
३—	तीसरा दर्जा	.	..	..	..	..	..	.	.	..	..	..	...
	६-मोलिया वाला बंदी का												
१—	दर्जा १	..	...	:	२ ।	५ ।	..	..	..	..	..	..	७ ।
२—	,,—२	..	..	...	१॥ ।	४ ।	..	..	..	..	..	.	५॥ ।
३—	,,—३	..	..	..	...	..	.	..	.	...	..	.	...

मुत्सद्दी मर्जीदानों को रंग का पेचा ४। | आम नौकरों को रंग का कसुमल पेचा ॥=।

३१—कुंवार कुंवारी नुं ब्याह नहीं आवे जठां ? घेरी रा फल

३२—कर बनावल सूं रूप बनायनों सस्तो रोवे ।

३३—घर में रोवे नाणा तो बाँट परणीजे राता ।

३४—बिन माल रा पावणां भी चालें रा नेह ।

शीशो

परिशिष्ट संख्या १

वर्णव्यवस्था और जातियों की तालिका

प्राचीन समय में वर्णव्यवस्था प्रायः गुण कर्मानुसार होती थी। प्रत्येक वर्ण को अपने और अपने से नीचे वर्णों में भी विवाह करने का अधिकार था। आपस में खानपान में कोई रोक टोक नहीं थी। हां! शुद्धता का विचार अवश्य रखा जाता था। गुप्तवंशी राजाओं के बाद समय (चौथी शताब्दी) में जब प्राचीन वैदिकधर्म से हटकर [illegible] होकर पौराणिक मत चल पड़ा तब अनेक मत मतान्तरों के चलने से पुराने रीतरस्मों में बड़ी गड़बड़ होकर एकही धर्म और एकही [illegible] में बंधी हुई आर्य (हिन्दु) जाति के टुकड़े टुकड़े हो गये। [illegible] संवत् ८९४ चैत्र सुदि ५ और वि० सं० ९१८ चैत्र सुदि २ के शिलालेखों से पाया जाता है कि मारवाड़ के ब्राह्मण हरिश्चन्द्र की दो पत्नियों में से एक ब्राह्मण और दूसरी क्षत्रिय जाति की थी। मारवाड़ से जाकर कन्नौज में अपना राज्य स्थापन करनेवाले परिहार राजाओं में से राजा महेन्द्रपाल के गुरु राजशेखर ब्राह्मण की विदुषी पत्नि अवन्ति सुन्दरी चौहान [illegible] थी। यह राजशेखर विक्रमी संवत् ९५० के लगभग जीवित था। इस समय के बाद ब्राह्मणों का क्षत्रिय वर्ण में विवाह सम्बन्ध होने का कोई पता नहीं चलता है। पश्चात् देशभेद, धन्धे और मतभेद से एक एक वर्ण की सैकड़ों शाखाएं (जातियें) होकर परस्पर विवाह सम्बन्ध की बात तो दूर रही खाने पीने में भी बड़ा भेद हो गया। और [illegible] चार वर्ण की जगह पांच वर्ण तक हो गये हैं, और एक [illegible] (अछूत) कहला कर अस्पर्श भी माना जाता है। [illegible] अन्य भी सैकड़ों जातिभेद हो गये हैं जिनसे [illegible] हो गई है। शत्रु इससे लाभ उठा कर हमको और हमारे [illegible] बरबाद कर रहे हैं। हम पूछते हैं कि [illegible] के हजारों भेद कहां से आये? यह सब हमारी [illegible] और [illegible] का फल है। मनुजीने कहा है.—

*मुसलमान माली, भड़भूंजा×, और *मुसलमान भड़भूंजा।

व्योपार करनेवाली जातियां

माहेश्वरी, अग्रवाल, पोरवाल, ओसवाल, श्रीमाल (श्रीमाली वैश्य), श्रीश्रीमाल, खंडेलवाल, बघेरवाल, बीजावर्गी, खत्री, अरोडाखत्री, वीसाती व्योपारी (मुसलमान), *तुराकिया बोहरा।

माल ले जानेवाली जातियां

बालदिया (बनजारा) और लोहाणा।

गाने बजानेवाली जातियां

ढोली (नक्कारची-दमामी-डोम), मुसलमानढोली, *ढाढीमुसलमान (मीरासी), फदाली (कूंजडे, कसाईयों के गवैये मुसलमान), कलावत (कव्वाल मुसलमान)

गाने नाचनेवाली जातियां

पातुर[1] (पात्र), भगतन,[2] कंचनी (कंजरी=मुसलमान रंडियां) हिंजड़े (मुसलमान), और साटिया (अछूत)

तमाशा करनेवाली जातियें

नट, भांड, (बहुरूपिया), मुसलमान भांड,।

×– यह अपने को पहले भटनागर आदि वंशों के कायस्थ होना प्रकट करते हैं। बाद में भाड में नाज भूजने से भडभूंजा होना बताते हैं।

१– यह मुसलमानों से सम्बन्ध नहीं रखती। इनके बाप भाई 'जागरी' कहलाते हैं। और मास शराब खाते पीते हैं। राजपूतों से बिगड कर यह जाति बनी है।

२– यह नाचने गाने, बजानें और बनाव श्रृंगार से रहने में और रूप भेदों से पातुरों से अधिक होशियार व शउरदार होती हैं। इनके बाप भाई "भगत" कहलाते हैं। और वे अपना विवाह सम्बन्ध गृहस्थी ग्रामीण रामावत और निम्बार्क साधु जाति में करते हैं। इनका इष्ट हनूमान का है। भगतनें मुसलमानों से भी सम्बन्ध रखती हैं। वैष्णव मतावलम्वी होने से यह मास मदिरा, शलगम, गाजर, कादा (प्याज) लहसन से परहेज करती हैं। जोधपुर की चिरपरिचित "नन्हो भगतन" (नन्हीजी) इसी जात की थी जिसके षडयन्त्र से एक पामर पुरुष जोधपुर में महर्षि दयानन्द सरस्वती को उनके रसोईदार द्वारा विष देने में सफल हुआ। (विस्तृत देखो श्री रामजन्मा तेजसिंहजी का लेख आर्य्य मार्तण्ड व आर्य्यमित्र सन १९२५ ई.)

सन १९२१ ई० में मारवाड़ में मुख्य २ हिन्दु-मुसलमान जातियों की संख्या निम्न थी। यह मनुष्य गणना की चाल भारतवर्ष में बहुत पुरानी है[1]। राजकाज और प्रजाहित साधन दोनों में इससे बहुत सहायता

कन्नोजपति महाराजा जयचन्द्र,

१- महाराजा जसवंत सिंहजी प्रथम के समय में सं १७१६ वि. में मर्दुम गणना हुई थी जब मूता नैणसी दीवान था। उस गणनामें जोधपुर शहरमें ८,४१८ आबाद घर थे। जिसमें से कुछ एक जातियों के घर इस प्रकार थे - महाजन १,२०१, पंचोली ३०, सेवक (भोजक) १३५, पुष्करणा ३५०, मोची ११०, मोची मुसलमान २५, ब्राह्मण दूसरे १००, रंगरेज ५ भड़भूंजा ६, गांछा १६, राजपूत २०, माली १२५, सुनार ६०, दरजी ६५, खत्री ११ और खाती ४० घर। उस समय तिरवारी, बराह, दामीर, पांटू, माहुते माहिल, वाटिया आदि कई जातियें थीं जिनका आज राज्य भर में नामोनिशां नहीं और विरलाही शायद कोई उनका कोई हालात जानता होगा।

इस लिये उसमें भी कई त्रुटियां रह गई तो भी लाभ अधिक हुआ। सन् १८८१ की १७ फरवरी को फिर गणना हुई। इस दफे एकही समय में मनुष्यों की गणना हुई। सुदूरवर्ती कुछ छोटे २ राज्यों के सिवाय ब्रा.। सारे राज्य शामिल किये गये। नियम सब जगह एक थे। यही गणना सरकारी रिपोर्ट में भारत की पहली मर्दुमशुमारी थी। उसी क्रम से मारवाड़ की ५ वीं गणना मे उल्लेखनीय जातियों की गणना, (हस्तलिखित

माहेश्वरी वैश्य

५-माली	६०	५५	११५
६-माली मुसलमान	३१,	३७	६८
७-दरोगा(रावणा रजपूत,)	२३,४३२	२४२४५	४७,६७७
८-सीरवी	२०,११६	२१,३५६	४१,४७२
९-बिशनोई	१७,९०२	२०,८४४	३८,७४६
१०-गूजर क्षत्रिय	१४,६७७	१६,६२१	३१,२९८
११-कलबी (कुनबी,कुर्मी पिटल,)	१४,५७६	१५,६९८	३०,२७४
१२-अहीर (आभीर)	९२२	१२४५,	२,१६७

रिवाज है गनगौर के त्योंहार के दिन इन के बडेर के घर से " ईशर " (ईश्वर) और अन्य जातियों के घर से गनगौर (पार्वती) का जलुस निकलता है।

राजपूताना सेन्सस रिपोर्ट १९२१ ई० की पहली जिल्द में लिखा है कि यह " सैनी राजपूत " होने का दावा रखते हैं। " और पंजाब आदि की सैनी क्षत्रिय कौम को अपनाही कौमी भाई बताते हैं। ऐसा ही हाल आज से ३५ वर्ष पूर्व छपी मारवाड़ रिपोर्ट के पृ० ४० पंक्ति ३६ में मिलता है। पंजाब के प्रसिद्ध सरदार बहादुर सरदार सर निहालसिंह सैनी के० सी० एस० आई० K. C. S I. इसी जाति के एक रत्न थे जिन्होंने गदर के वक्त अंग्रेजों की बडी सहायता की थी। (देखो कोरोनेशन एडिशन सन १९११ ई० पृ० ९६ भाग १खंड ३)। गत योरपीय महायुद्ध में भी इस जाति की स्वतंत्र भरती होकर दो फौजें फ्रान्स, बसरा आदि के रणक्षेत्रों में जाकर अच्छी वीरता प्रकट की थी। जिसके उपलक्ष में बडी २ जागीरें, मिलीटरी मेडल तथा विक्टोरियस क्रास तक प्राप्त किये। जोधपुर के सरदार रसाले (इम्पीरियल लेंसर्स) में भी इस जाति के रसाल्दार चतुरसिंह कछवाहा आदि ने सन १९०० ई० में चीन और तिराह आदि के रणक्षेत्रों में जाकर अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की थी।

यह लोग हुसियार और मेहनती किसान तो होते ही है परन्तु राजप्रतिष्ठित भी हैं। बीकानेर और मेवाड़ आदि राजवंशों में " धायभाई " इसी जाति के हैं। धायभाई ठा० अमरसिंह तुंवर (ताजीमी जागीरदार) वर्तमान उदेपुर नरेश हिजहाईनेस हिन्दुआसूर्य्य महाराणा श्री फतहसिंहजी बहादुर के विश्वस्त ए० डी० सी० और सिंह के शिकार में बडे कुशल हैं। इस जाति का विशेष वृत्तान्त " सैनीक्षत्रिय प्रदीप " में है।

४१-पंचोली (कायस्थ)	१,९३४	२,३३२	४,२६६
४२-वेलदार (ओड)	७७७	९९४	१,७७१
४३-कलाल (कलवार)	१,३३०	१,५०८	२,८३८
४४-कीर	२८२	३५६	६३८
४५-खरोल	५९७	४३६	१,०३३
४६-खत्री (अरोड़ा)	१,८७४	१,८१७	३,६९१

राव सेतराम राठोड़ (कन्नोज प्रान्त)

४७-कुम्भहार (प्रजापत)	३४,७५७	३७,५४७	७२,३०४
४८-लखारा	९५६	९५१	१९०७
४९-लोहार	६,८९७	७,७९७	१४,६९४

७५-रावत राजपूत	४,७५१	५,७६७	१०,५१८
७६-बागड़ी	१,०२०	९७४	१,९९४
७७-बावरी	८,७८३	१०,३११	१९,०९४
७८-सांसी	८१७	८२६	१,६४३
७९-थोरी	५,९१४	६,३८६	१२,३००
८०-महत्तर[1] (भंगी)	५,८९२	६,५८८	१२,४८०

महतर (भंगी)

८१-सांसी	८१७	८२६	१,६४३
८२-कायमखानी	३,१२२	३,३६४	६,४८६
८३-मेरात कठात	६१७	७३७	१,३५४

१- पहले " महतर " राजकर्मचारियो का एक बड़ा पद था। उसी का अपभ्रंस मेहता (मुंता) है। ब्राह्मण, वैश्य, कायस्थ आदि जातियों के बहुतसे जन अपने नामो के साथ " मेहता " शब्द लिखते है वह उनके प्राचीन गौरव का सूचक चला आता है। फारसी में भी महतर प्रतिष्ठित अधिपती का सूचक है। जैसे " चित्राल का महत्तर "। महाराजा अजीतसिंहजी के सं. १७५९ की आषाढ सुदि २ के एक खास रुक्के में मंडोर के धायभाई मनोहर को महतर लिखा है इस समय तो राजस्थान में भंगी को महतर कहते हैं।

परिशिष्ट संख्या १०

विवाहसम्बन्धी अवस्था

मारवाड़ में सब धर्मों के कुवारें, विवाहित और रंडवों की संख्या इस प्रकार है:—

आयु	विवाहित		रंडवे		कुंवारें		कुल जोड़
	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	
१—१२ मास	१३	७	०	०	३१,९२८	३१,५६२	६२,५१०
१— ५ वर्ष	१३०	५७०	२३	२८	८१,७८१	८०,११३	१,६२,६८७
५—१० ,,	४,४३२	१२,५५०	३६०	५५७	१,४६,८२८	१,२३,१०८	२,८७,८३१
१०—१५ ,,	१४,९६५	३५,८१२	१,०६१	१,६४२	१,२३,४३८	७२,५५९	२,४१,५६३
१५—२० ,,	२२,०२४	४७,४४३	१,७४४	२,७५१	५५,११३	८,२५६	१,३७,३३९
२०—३० ,,	८२,०२०	११४,७३२	६,५०६	१५,००८	५३,६१२	१,६०६	२,७६,५६७
३०—४० ,,	१०३,३३८	९२,८३१	२१,३६४	३४,६०२	२०,२६८	४४२	२,७२,८४५
४०—५० ,,	६८,४११	४६,०५६	२२,२०२	४५,४८३	६,९८५	२०५	१,९०,४३२
५०—६० ,,	३६,९३६	१६,४४२	१८,११५	३९,२७६	३,५८८	१२९	१,१४,४८१
६० से अधिक	११ ९९५	५,६६५	१७.२७२	४० ८०५	२,४८०	१७१	८६.३८७
बड़ा जोड़—	३,५३,३५२	३,७२,१८८	९१,१३८	१८०,११३	५.२६.१०५	३.९८.९८०	१८ ६१ ११२

इस नकशे (पृ ५०१) से ज्ञात होता है कि ५ से १० वर्ष के नन्हे नन्हे बच्चे भी हजारों की तादाद में शादी करे हुवे हैं। और लडकियों की तो और भी तीगुनी चौगुनी संख्या है। १० और १५ वर्ष की उम्र के छोकरे छोकरियें प्राय:१५ हजार और ३६ हजार क्रमशः हैं। इस प्रकार बालविवाह मारवाड़ में भी खूब प्रचालित है। इस कुप्रथा से प्रायः आज हमारे नौजवान, दुर्बल, बलहीन और पुरुषार्थ हीन है। सच कहा जाय तो इस कुरीति ने हिन्दु

राव मालदेव राठोड़ (मंडोर)

जाति की सारी जड ही खोखली कर दी है और वह देश की जड़ काटने में तलवार का काम कर रही है। यह सत्यानाशकारी कुप्रथा भारत में " विपत्ति काले मर्यादा नास्ति " अनुसार मुसलमानो के राज्य काल से

बालविवाह के जैसे ही बेजोड़ और वृद्धविवाह से भी जाति व देश को बड़ी हानि पहुंच रही है। एक ६० वर्ष के बुढ्ढे से एक दस वर्ष की कन्या का या एक आठ वर्ष के बालक के साथ १२ वर्ष की कन्या का विवाह कर देनेसे आज कई अनाचार हो रहे हैं। स्वार्थवश अयोग्य वर को कन्या दे देना भयानक पाप है। वृद्ध विवाह तो सरासर कसाई के हाथो में गौसोंप देने के समान है। जब धनवानों को पैसों से कन्याएँ मिलने लगी तो गरीबों को कन्या मिलनी कठिन हो गई। उधर कन्या विक्रेताओं के खुदके लड़के कंवारे रहने लगे तब उन्होंने रुपयों के साथ २ लड़की लेने की भी तरकीब निकाल ली। जिनके कन्या बदले में देने को नहीं है वे रुपये की जगह तो रुपये नकद दे देते हैं और कन्या के बदले तयनामा लिख देते हैं कि उसके कन्या होगी तब उसका विवाह जिसके साथ वे करने को कहेंगे उसके साथ ही करेंगे। और कदाचित कन्या मर जायगी तो इतना द्रव्य देंगे तथा न होने पर अपने किसी सगे सोई का जैसे तैसे मन मना कर उसकी कन्या बदले मे देंगे। खुले शब्दों में यह अर्थ होता है कि अपनी खुद की भावी कन्या के बदले (एक्सचेंज) में पिता अपना विवाह करता है। कितनी लज्जा व अत्याचार का विषय है कि उस अभागी कन्या का—जिसका अभी जन्मही नहीं हुआ है बल्कि जो गर्भ ही मे नहीं आई, उसका गर्भ मे आने से पहले ही उसके माता पिता का अधिकार उस पर से उठ जाता है और उसका भावी जीवन दूसरों के हाथ में सौंप दिया जाता है। इसी अधम प्रथा का नाम "आटा साटा" (लेन-देन-Barters of girls) है। बहिन के साटे में भाई का विवाह !!! इससे बहिन उस भाई की साली हुई और भाई उस बहिन का नणदोई हुआ। कैसी अपमान जनक कुरीति है।

कन्या विक्रय जैसी कुरीति जिस प्रकार अधिकांश मे महाजनों में घुस पडी है वैसी ही लड़कों पर टीका लेने (वर विक्रय) की बुरी चाल राजपूतों मे चल पड़ी है। ये कुरीति टीका के नामसे राजपूताना व मालवा में प्रसिद्ध है और देशभेद से दूसरे प्रान्तो मे इसे तिलक. केसर. ठहरौनी व दहेज भी कहते है ? इस कुप्रथा मे प्रायः बेजोड विवाह भी

ब्याहने की तरफ रहता है और अपनी लड़कियों का विवाह बाहर नहीं करते, इससे विवाह योग्य पुरुषों की कमी रहती है. लड़कों के माता पिता इस बात को जानते हैं कि आप लोगों के साथ विवाह सम्बन्ध करने की इच्छा से राजपूताना के बाहर के राजपूत लोग टीके की एवज

हय मंखानी

पति होता है। इस सिलसिले में उदयपुर के महाराणाओं का दृष्टान्त आप को याद करना चाहिये कि जिन्होंने अपनी कन्याएं अपने सरदारों को ब्याहने में कुछ भी हलकापन नहीं समझा है, अपने से ऊंचे दर्जेवाले ठिकाने के साथ विवाहसम्बन्ध करने की रस्म से फजूल खर्च होता है।"

अतएव जातीय पंचायतों और खास कर राज्य द्वारा बालविवाह, अनमेलविवाह, कन्या विक्रय, आटा साटा, वर विक्रय (टीका) आदि कुरीतियों को रोकने के लिये कड़ाई के साथ प्रबंध होने की आवश्यकता है। हां! ऐसा प्रबंध करने में पुराने मत और खयालवालों की तरफ से कई प्रकार की बाधाओं का सामना अवश्य करना पड़ेगा जो समय की गति और आज की हमारी दशा पर कुछ ध्यान नहीं देते हैं। इस लिये

महाराजा विजयसिंह जोधपुर नरेश

परिशिष्ठ--संख्या ११

मारवाड़ में पढ़े लिखों कि जनसंख्या

आयु	पढ़े लिखें		अनपढ़े		अंग्रेजी पढ़े	
	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री
१—१० वर्ष	१,०७३	१४६	२,६४,४२४	२,४८,३८५	४४	७
१०—१५ ,,	६,१८१	३२८	१,३३,२११	१,०९,७६३	३५०	१२
१५—२० ,,	६,८१२	४३३	७२,०७१	५८,०३२	६३७	१०
२० से अधिक	४९,०३६	२,९०१	४,३८,२२७	४,५०,५३९	२,५१६	९२
बड़ी जोड़—	६३,१०२	३,८०८	९,०८,०१३	८,६६,७१९	३,५४७	१२१

परिशिष्ठ-संख्या १२

मारवाड़ के पोलिटीकल अफसरों की सूची

मारवाड़ में पहले पहल अंग्रेज सरकारका राजदूत सं० १८९६ वि० की आश्विन बदि ५ शनिवार (२८-९-१८३९ ई०) को जोधपुर में नियुक्त हुआ और इसी दिन से मारवाड़ पोलिटीकल एजेन्सी स्थापित हुई। सं०

महाराजा मानसिंह जोधपुर नरेश

१९२५ (सन १८६८ ई०) में पोलिटीकल एजेन्ट जोधपुर के निगरानी में जयसलमेर राज्य भी रखा गया जिसका सं० १८८९ (सन १८३२ ई०)

सं० १९३६ (सन १८७९ ई०) में पोलिटिकल एजेन्ट हो गया और उसी वर्ष एजेंन्सी का नाम " पश्चिमी राजस्थान एजेन्सी " (Western Rajputana States Agency) रखा गया । परंतु यह प्रबंध अधिक दिन तक न रहा क्योंकि सं० १९३८ (सन १८८१ ई०) में एरनपुरा सेना के कमान्डका कार्य्य पोलिटिकल एजेंन्ट (बृटिश राजदूत) के जिम्मे न रहा और सं० १९३९ में एजेन्ट का सदर मुकाम एरनपुरा से फिर जोधपुर में नियत करके उसी दिन से रेजिडेन्ट "पश्चिमी राजपूताना स्टेट रेजीडेन्सी " का नाम काम में लाया जाने लगा । सं० १९६८ में बीकानेर राज्य की एजेन्सी का चार्ज भी इस रेजिडेन्सी के जिम्मे रखा गया परन्तु वह प्रबंध थोडे समय तक ही रहा । रेसिडेन्सी का अबतक वही नाम है और हेड क्वाटर जोधपुर मे है । अबतक जो रेजिडेन्ट जोधपुर में नियुक्त हुए हैं उनकी सूची नीचे दी जाती हैः—

संख्या नाम समय

१—कप्तान जॉन लडलू साहब, सन १८३९ से १८४४ ई० तक
२— " आर. एस. फ्रेश्व " सन १८४४ से १८४५ ई० तक
३— " एच. एच. ग्रीयेड " सन १८४५ से १८४८ ई० तक
४— " डी. ऐ. मालकम " सन १८४८ से १८५१ ई० तक
५— " हाड कास्टल साहब, सन १८५१ ई०
६—लेफ्टिनेंट कर्नल सर आर. शेकेस्पीयरः सन १८५१-५७ ई० तक
७—केप्टेन जी० एच० मॉक मेसन साहबः सन १८५७ ई० (अस्थायी) यह सं० १९१४ वि० की आश्विन वदि ३० शुक्रवार (ता० १८-९-१८५७ ई०) को आउवा में गदरवालों द्वारा मारे गये ।
८—मेजर आर. मारीसनः सन १८५७-५८ ई० (अस्थायी)
९—ले० कर्नल डब्लू ऐन्डरसनः सन १८५८ ई० (अस्थायी)
१०—केप्टेन जे. सी. ब्रुक साहबः सन १८५८-५९ ई०
११— " जे. पी. निकसनः सन १८५९—१८६५ ई०
१२—मेजर ई. सी. इम्पीः सन १८६५—६८ ई०
ले. कर्नल जे. सी. ब्रुकः १८६८—७० ई०

२५— " " जे. एच. नेवलि २२-२-१८९१ से २६-६-१८९५
(स्थानापन्न)
२६—ए. एच. टी. मारटीन्डले सी. एस. २७-६-१८९५ से २७-१०-१८९५
(स्थानापन्न)
ले. कर्नल एवट साहब २८-१०-१८९५ से १७-१२-१८९५ ई०
२७— " " डाक्टर ए. एडमस आई. एम. एस. १८-१२-१८९५ से
१७-१-१८९६ (अस्थायी)
" " एवट साहब १८-१-१८९६ से १३-४-१८९७ ई०
मारटीन्डल साहब १४-४-१८९७ से १६-३-१८९८
२८—मेजर टी. सी. पीअरस १७-३-१८९८ से २४-४-१८९८ (अस्थायी)
२९—ले० कर्नल सी. ई. येट सी. एस. आई.
सी. एम. जी. २५-४-१८९८ से ११-१२-१८९८
(स्थानापन्न)
" " वायली सी. आई. ई. १२-१२-१८९८ से ११-४-१८९९
" " येट साहब १८९९-१९०० ई०
३०— " " ए पी थोरंटन सी. एस आई. १९००-१९०१
३१—केप्टेन के. डी. ऐरेसकनि सी. आई. ई. १९०१-०२ ई०
ले. कर्नल थोरन्टन; १९०२ ई०
३२— " " आर. एच. जैनिंग सी. एस. आई. १९०३ से
३-१२-१९०४ ई०
३३—आर. ए. लायलः ऐसिस्टेन्ट रेजिडेन्ट· ४-१२-१९०४ से
१३-२-१९०५
ले. कर्नल जैनिंग आर. ई. १४-२-१९०५ से १२-४-१९०५
३४—मेजर डब्लू. सी. आर. स्टेलटन १३-४-०५ से २-४-१९०८
३५—एच. वी. कोब्व आई. सी. एसः एम. एः
एल. एल. बी. ३-४-१९०८ से १८-९-१९०८
३६—वी. गवराइल. आई. सी. एस· सी. वी. ओ. १९-८-१९०८ से
१९-१-१९०९
ले० कर्नल के. डी. ऐरेसकाइन
आई. ई., सी आई. ई. २०-१-१९०९ से ३०-९-१९१०

परिशिष्ठ—संख्या १३
दूसरे राठोड़ राज्यों का संक्षिप्त वृत्तान्त
आलीराजपुर

आलीराजपुर राज्य मालवा प्रान्त के दक्षिणी भाग में है। इसके उतर में बम्बई प्रदेश का पंचमहाल जिला और बारिया रियासत, दक्षिण में नर्मदा नदी और बम्बई प्रान्त का खानदेश जिला, पश्चिम में छोटा उदयपुर की रिसायत और पूर्व मे ग्वालियर, इन्दौर और झाबुआ की रिसायतें है। यह २२ अंश व २२ अंश ३६ कला उत्तरांक्षांश और ७४ अंश ४ कला व ७४ अंश ३२ काल पूर्व देशान्तर मे फैला हुआ है। इस राज्य का क्षेत्रफल लगभग ८३७ वर्ग मील है जो करीब करीब सारा ही पहाडी हैं। इस मे कुछ कुछ छोटी पहाड़ियां है जो घनी झाड़ियों से ढकी हुई हैं। बीच में कुछ उपजाऊ जमीन भी है। पहाडों की खास खास श्रेणियां पूर्व से पश्चिम की तरफ फैली हुई है जिनकी ऊंचाई कही कही तो समुद्र की सतह से २,२०० फीट तक पहुंच गई है। नर्मदा, आंखड और सुकड ये इस राज्य की मुख्य नदियां हैं।

राज्य में ८९,३६४ मनुष्यो की वस्ती है और प्रति वर्गमील १०७ मनुष्यों की आवादी का औसत है। ८६ फी सैकड़ा मनुष्य यहां खेती वाडी करते हैं। झाबुआ राज्य की तरह इस रिसायत में भी ६० फी सैकड़ा भीलों की आवादी है। राज्य की वार्षिक आय ६ लाख रुपये और खर्च लगभग ५ लाख रु० है। इस खर्च मे ८,४७४ रु० भी सामिल है। जो अंग्रेज सर्कार को सालाना टांका में दिये जाते हैं। इस राज्य के झंडे में कसूमल (लाल) सफेद आदि रंग की ५ धारियां है और राज्य-चिन्ह में सूअर आदि अंकित हैं।

प्रबंध के लिये राज्य पांच विभागों [परगनों] मे विभक्त हैं। प्रत्येक परगना एक एक अफसर के सुपुर्द कर दिया गया है जिन्हें "कमासदार [तहसीलदार] कहते हैं। इन कमासदारों को अपने अपने परगनों

ई०] को खोर पर कब्जा कर उसका नाम "शमशाबाद" रख दिया। तब महाराजा जयचन्द्र के ज्येष्ठपुत्र हरिश्चन्द्र का एक वंशज तो नेपाल की तरफ चला गया और दूसरा फर्रूखाबाद जिले में काली नदी के तट पर गांव महुई में जा बसा और वहां मजबूत किला बनाया। पश्चात वहां से ही हरिश्चन्द्र का पौत्र राव सीहा सं० १३०० वि० (सन १२४३ ई०)[1] के आसपास मारवाड़ की ओर गया। जयचन्द्र के द्वितीय पुत्र राजा जजपाल (जयपाल) के पुत्र भूरसेन राठोड ने बादशाह की अधीनता स्वीकार कर ली इससे वह खोर में ही रहा।

इसी राजा भूरसेन से पांचवां उत्तराधिकारी राजा अभयपाल बडा प्रतापी व वीर था। इसके प्रजनपाल और मदनपाल नामक दो राजकुमार थे। पिता के स्वर्गवास पर सं० १३८२ में प्रजनपाल खोर राज्य का स्वामी हुआ। कनिष्ठ राजकुमार मदनपाल पिता के जीवितकाल में ही कन्नोज प्रांत से दक्षिण की ओर दलबल से जाकर सं० १३७५ के लगभग रामटेक या रामनगर में जा बसा। राजा मदनपाल के प्रपौत्र राजा देवपाल ने सं० १४०२ के करीब मालवा के निमाड (निमावर) जिले के प्राचीन नगर मान्धाता[2] (ओंकार मान्धाता) में निवास किया और मौका पाकर वहां के चौहान राजा को मार कर आसपास की भूमि पर अपना अधिकार जमाया। किन्तु चौहान राजा के भील सेनापति के निरन्तर विद्रोह से

१– राव सीहाजी राठोड़ का सं० १३३० का शिलालेख जोधपुर राज्य के पाली परगने के गाव बिठू में सं० १९६३ मे मिला है। ऐसे ही इन के पौत्र राव धूहड़ का भी एक लेख सं० १३६६ वि० का जोधपुर के परगने पचपदरा के गाव तरसींगडी में मिला है। ये दोनो लेख बहुमूल्य और मारवाड़ के राठोड़ों के इतिहास का समय जानने के लिये बडे महत्व के हैं।

२– यह एक विख्यात तीर्थ स्थान है। जो मध्यप्रदेश के खंडवा से ३७ मील और बी. बी एन्ड सी आई रेल्वे की छोटी पटरी के स्टेशन मोरटक्का (खेडाघाट) से सात मील दूर है। इसका पुराना नाम माहिष्मती है जो लेखों मे १३ वीं शताब्दी तक चालू था। नर्मदा के बीच ऊंची पहाड़िया आजाने से यह डेढ मील लम्बा द्विप बन गया है। इसीपर अनेक सुंदर मंदिर और यहा के राव का महल है। मान्धाता का राव भिलाल जाति का कहा जाता है परन्तु राव साहब अपनी उत्पत्ति शुद्ध राजपूतों से बतलाते है और कहते है कि इनके पुरषा भारतसिंहने सं १२२७ के आसपास नत्थू भील से यह स्थान छीन कर अपना कब्जा किया था। ओंकारेश्वर के मंदिर का चढावा "मान्धाता के राव (राजा)" को मिलता है और केवल वर्ष मे ८ दिन भीलों को पाने का अधिकार है।

राजा आनन्ददेव ने अपने छोटे भाई इन्द्रदेव को सं० १४९६ में फूलमाल नामक गांव जागीर में दिया और उसे अपना प्रधानमंत्री बनाया। आनन्ददेव के पश्चात उसका पुत्र राजा चंचलदेव राज्य का उत्तराधिकारी हुआ। चंचलदेव के दो राजकुमार गुगलदेव और केसरदेव थे। ज्येष्ठ राजकुमार गुगलदेव तो सं० १५२६ के फाल्गुण मास में पिता के स्वर्गवास करने पर राज्य का स्वामी हुआ। और केसरदेव ने अपने पिता के जीवितकाल में ही आसपास की उत्तरपूर्वी भूमि पर कब्जा कर सं० १५२१ की माघ सुदि १५ मंगलवार (ता० २४-१-१४६४ ई०) को अपने स्वतन्त्र जोबट राज्य की स्थापना की।

राजा गुगलदेव का पौत्र राजा कृष्णदेव निसन्तान मर गया, इससे उस (कृष्णदेव) का भतीजा बच्छराज राजसिंहासन पर बैठा। बच्छराज से ४ था उत्तराधिकारी राजा दीपदेव था। इसने अपने भाई सबलसिंह को सं० १७०२ की ज्येष्ठ बदि ६ (ई० स० १६४५ ता० ७ मई) बुधवार को सोंडवा नामक अलग जागीर दी। इसी सबलसिंह के वंशज सोंडवा ठाकुरात (ठिकाने) के जागीरदार हैं। दीपदेव से तीसरे वंशज पहाडदेव का देहान्त भी निसन्तान दशा में हो गया था। इस कारण उनके छोटे भाई उदयदेव राज्य के स्वामी बनें। उदयदेव के पहाडसिंह, प्रतापसिंह और दौलतसिंह नामक तीन पुत्र थे। ज्येष्ठपुत्र पहाड़सिंह के युद्ध में काम आ जाने से पिता के पश्चात द्वितीयपुत्र प्रतापसिंह सं० १८२२ की श्रावण सुदि २ (ई० स० १७६५ ता० २९ जौलाई) को राज्य का स्वामी बना। इस राजा का विवाह गुजरात के धर्म्मपुर राज्य की सिसोदिया राजकुमारी से हुआ था। और इसने आनन्दावली (आली) से १० मील दूर राजपुर नगर को सं० १८५५ की चैत्र बदि ८ शनिवार को अपनी राजधानी बनाया जो अब "आलीराजपुर" नाम से प्रसिद्ध है[1]। इन्हीं

१– आलीराजपुर पांच हजार से अधिक आबादी का अच्छा सुन्दर नगर है। यहा के रास्ते बाजार चौड़े, सीधे, हवादार और दोनों तरफ सुन्दर मकानात व दूकाने हैं। नगर के बीच मे विशाल राजमहल है जहा यहा के नरेश सपरिवार निवास करते हैं। इस राजमहल को वहा "राजवाडा" कहते हैं। वाड़ा का मुह सदर बाजार की तरफ है। राज्य भर में हिन्दु ८६, ५९५ हैं जिसमें से २६, ७२१ भील आदि और १३३ जैनी हैं। मुसल्मान २, १९०, पारसी १० और ईसाई ५,३९ है। अंग्रेजी पादरी लोग भी कुछ है जो भील आदि जंगली जातियो में अपने मत का प्रचार

और अंग्रेज सरकार १०,००० रु० (इन्दौर के हाली सिक्के) प्रति वर्ष धार राज्य को दिया करे। इसके सिवा अंग्रेज सरकार ११,००० रु० आलीराजपुर वालों से वसूल करे और धारवाले आलीराजपुर पर के अपने तमाम अधिकारों को उठा लें।

सं० १९१९ विक्रमी में राजा जसवन्तसिंह का स्वर्गवास हो गया। देह त्यागने के पहले ही इन्होंनें अपने राज्य के बराबर दो हिस्से करके अपने दोनों राजकुमारों में बांट दिये थे। परंतु अंग्रेज सरकार ने इस बात को मंजूर नहीं किया और उसने छोटे भाई रूपदेव को थोड़ीसी जागीर देकर बड़े कुँवर गंगदेव को गद्दी पर बिठा दिया। यह राजा गंगदेव राजकाज अच्छी तरह नहीं चला सका। इस लिये सं० १९२६ में यह राजा सिंहासन पर से उतार दिया गया और रियासत का प्रबंध एक सुपरिटेन्डेन्ट के हाथो में सौंप दिया। इसके दो ही वर्ष बाद गंगदेव इस असार संसार से चल बला। गंगदेव का राजकुमार रघुदेव पिता के जीवित काल में मर चुका था। इस से उसका भाई रूपदेव गद्दी पर बैठा। सं० १९३३ में देहली दरबार के समय अन्य राजा महाराजों की तरह महारानी विक्टोरिया की तरफसे राजा रूपदेवजी राठोड को भी एक शाही रेशमी झंडा भेट किया गया। इस झंडे पर एक तरफ तो आलीराजपुर का राज्यचिन्ह है और दुसरी ओर " विक्तोरिया कैसर-ई-हिन्द के हुजुर से " लिखा हुआ है। अंग्रेजी में सुनहरी एक पत्रड़े पर Raja Rupdeoji of Alirajpur और दुसरे पर From Victoria Empress of India 1st, January 1877 अंकित है। राजा रूपदेव के समय में कोई उल्लेखनीय घटना नहीं हुई। सं० १९३८ की कार्तिक सुदि ७ शनिवार (ता० २९-१०-१८८१ ई०) को इस राजा का देहान्त हो गया। इसके कोई पुत्र नही था और राज्य को गोद लेने के अधिकार की सनद प्राप्त नहीं थी तब भी अंग्रेज सरकार ने ठिकानें सोंडवा के जागीरदार ठाकुर चन्द्रसिंह के पुत्र विजयसिंह को राजसिंहासन पर बिठा दिया। ठिकाना फूलमाल के ठाकुर जीतसिंह और बहुतसे मकरानी मुसलमानों ने इस बात का विरोध करना शुरू किया। इधर रियासत के कुछ भील और भिलाले[1]

१—भीलों और राजपूतों के मिश्रण से संतान हुई उसे " भिलाल " कहते हैं। इस भिलाल जाति के कई छोटे २ राज्य व ठिकानें काठियावाड एन्जेन्सी आदि में हैं।

किये गये और अन्त में सन १९०४ की २७ जनवरी को आपको राज्य

आलीराजपुर नरेश हिजहाईनेस राजा प्रतापसिंहजी बहादुर

रईश भी पधारे थेः—

१—पोलिटिकल एजन्ट कर्नल हावर्थ व मिसेज हावर्थ।
२—हिज हाईनेस महारावल साहब, छोटा उदयपुरः
३— ,, ,, राजा साहब बांसदा·
४—श्रीमान राजासाहेब नीलगिरी (बिहार उड़ीसा)
५— ,, राजासाहेब बिजवा यू० पी० (श्री० राजाधिराज साहेब शाहपुरा—मेवाड़ के पौत्र)
६—श्रीमान नव्वाब साहेब कुरवाई।
७— ,, राजा साहेब डही।
८— ,, ठाकुर साहब कठीवाड़ा।

महाराज कुमार साहब को सन्तान में भंवरजीलाल प्रिन्स श्री सुरेन्द्र सिंहजी और दो राजकुमारियें हैं। सुरेन्द्रसिंहजी का शुभजन्म सन १९२३ की १७ मार्च शनिवार (चैत्र वदि ३० सं० १९७९ वि०) को हुआ था।

राजा साहेब के बड़े रानी साहेबा यादवानीजी से राजकुमारी श्री समझकुंवर बाई और स्वर्गीय छोटी रानी साहबा खीचयानीजी से राज कुमारी आनन्दकुंवरबाई यही दो पुत्रियां हैं। राजकुमारी श्री आन्दकुंवरबा का विवाह बिहार उड़ीसा के नीलगिरी नरेश राजा किशोरचन्द्र कछवाहा के साथ सन १९२२ ई० की २८ फरवरी को आलीराजपुर में हुआ था। बरात में मोरभंज के हिज हाईनेस महाराजा साहेब बहादुर आदि कई छोटे बड़े रईश थे। और कन्या पक्ष की ओर से अन्य कई छोटे बड़े राज्य व ठिकानों के डेप्युटेशनों के सिवाय निम्न रईश उस उत्सव में सम्मिलत हुवे थे·—

१—हिज हाईनेस महाराणा साहेब राजपीपला।
२— ,, ,, राणा साहेब बड़वानी।
३— ,, ,, महारावल साहेब बारिया।
४— ,, ,, महारावल साहेब छोटा उदयपुर।
५—श्रीमान महाराज कुमार साहेब मोरवी स्टेट।
६— ,, राजकुमार सरदार सिंहजी साहब शाहपुरा स्टेट।(मेवाड)
७— ,, ठाकुर साहेब कठीवाड़ा।
८— ,, ठाकुर साहेब बिडवाल।

९— „ ठाकूर साहिब रतनमाल
१०— „ महाराज श्री नाहरसिंहजी आफ धामनोद [रतलाम स्टेट के प्रतिनिधी]
११—केप्टेन हेड. ६० वी राईफल्स सेना।
१२— „ लीस्टयिर „ „ „ आदि कई युरोपीयन।

सन १९११ ई० में सम्राट ने दिल्ली में पधार कर जो दरबार किया था उसमें आलीराजपुर के राजा साहब भी सम्मिलित हुवे थे। उस समय राजा प्रतापसिंहजी बहादुर और बड़वानी नरेश सीसोदिया कुल भूषण हिजहाईनेस केप्टेन राणा सर रणजीतसिंहजी बहादुर के० सी० एस० आई० एकही स्पेशल ट्रेन द्वारा दिल्ली पधारे थे। वहां पहुँचने पर बहुत से ब्रिटिश अधिकारियों और प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने आपका अच्छी तरह स्वागत किया। इस अवसर पर १२ दिसेम्बर के दिन खुद सम्राट के हाथों आपको एक दरबारी सुवर्णपदक प्राप्त हुआ।

सन १९१५ की ता. ३ जून को श्रीमान सम्राट महोदय ने अपने जन्म दिवस की खुशी में राजा प्रतापसिंहजी बहादुर को सी० आई० ई० की उच्च उपाधि से विभूषित किया। सन १९१७ में राजासाहब ने सेन्ट जॉन्स एम्बुलेन्स एशोसियेशन की जो सहायता की थी उससे खुश होकर सम्राट ने आपको "हास्पिटल आफ सेन्ट जान्स आफ जेरुसलेम" के महत्व-पूर्ण सुनेहरी पदक से सम्मानित किया। विश्वव्यापी योरपीय महायुद्ध के समय में राजासाहब ने तन मन व धन से अंग्रेज सरकार की अच्छी सहायता की थी।

सन १९१८ के अगस्त मास में जब भारत के तत्कालीन वाईसराय लार्ड चेम्सफोर्ड इन्दौर आये थे तब राजा साहब प्रतापसिंहजी भी उन से मुलाकात करने वहां पधारे थे। सन १९२० की १ ली जनवरी को श्रीमान राजा साहब की सलामी ९ तोपों से ग्यारह कर दी गई और यह वृद्धि मय हिज हाईनेस उपाधि के सन १९२१ की पहली जनवरीको पुश्त-दर-पुश्त के लिये स्थायी कर दी गई।

श्रीमान राजा साहब श्रीप्रतापसिंहजी बहादुर सी० आई० ई० एक आदर्श नरेश [Ideal Ruler] हैं। आपने राज्य की बागडोर हाथ में लेने ही प्रजा के सुभिते के लिये सड़कें, पुलें, टेलीफोन, कुएे आदि बनवाये तथा विद्या प्रचारार्थ स्कूल; अस्पताल आदि जगह २ खुलवाये। और जो डाकू लुटेरे दिन दहाड़े अपना काम करते थे उनके छक्के छुड़ा दिये। इन

२० वर्षों में आपने ऐसे ऐसे सुधार कर डाले कि जिससे अब आलीराज-पुर मध्यभारत के उन्नत देशी राज्यों की गणना में आने लगा और जिसकी भारत सरकार ने भी अच्छी प्रशंसा की है। ऐसी सफलता प्राप्त करने का कारण यही है कि राजा साहब जिस काम को करते हैं उनमें जी जान से लग जाते हैं और बिना पूरा किये नहीं छोड़ते हैं अर्थात आपका कार्य मौखिक ही नहीं बल्कि कर दिखाने का हुआ करता है।

आप समय समय पर राज्य के तमाम गांवों में दौरा किया करते हैं और किसानों से खुले दिल से मिलते हैं, उनकी सुनते हैं और जहां तक हो सकता है न्याय देने की कोशिस करते हैं। इन्हीं कारणों से आपकी प्रजा आपसे बड़ी सन्तुष्ट रहती है। राज्य की उन्नति के लिये आप रातदिन भर सक यत्न करते हैं और जिन गरीब किसानों की कठिन कमाई से राज्य का अधिकांश कर वसूल होता है उनके हित और कल्याण के लिये आप सदा तत्पर रहते हैं। आलस्य आदि दुर्व्यसनों को आप अपने पास फटकने तक नहीं देते और सदा राज्यशासन का कार्य करते हैं। यही कारण है कि शासन के प्रत्येक विभाग बड़ी ही उत्तमता से संगठित हैं। वहां की सुव्यवस्था देखने योग्य है। प्रत्येक विभाग के कार्य का भी समय समय पर आप खुद निरीक्षण करते हैं और राज्य के उच्च पदों पर प्रजाहितैषी अफसरों को रखते हैं। राज्य में रेवन्यू (माल), जुडीशीयल (न्याय), फारेस्ट (जंगलात), पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेन्ट (मकानात-तामीर), मेडीकल (चिकित्सा), एज्युकेशन (शिक्षा), कस्टम (सायर-चूंगी) एक्साईज (आबकारी) आदि सभी महकमें नये ढंग के मुवाफिक आपके राज्यकाल में स्थापित हुवे हैं। इसी तरह प्रजा की रक्षा के लिये स्टेट फोर्सेस (फौज) के सिवाय आपने महकमा पुलिस भी कायम किया है। घुडसवारों का अल्पसंख्यक एक रिसाला भी आपके ही चिरस्मरणीय शासन काल मे खड़ा किया गया है। यही नहीं खास राजधानी के सिवाय आपने राजधानी से वृटिश हद तक २६ मील के फासले पर सेजावाड़ा स्थान तक पक्की सडक के साथ साथ टेलीफोन भी लगवा दिया है। आपका यह राज्य व प्रजाउपयोगी उन्नत शासनकाल मध्यभारत के देशी राज्यों के इतिहास में सुनहरी अक्षरों में लिखा जायगा।

राजा साहब को पोलो का बड़ा शौक है। आप की पोलो टीम की गणना भारत के प्रसिद्ध पोलो टीमों में है। इन्हें पोलो का शौक आपको सन १८९४ ई० में हुआ जब उस वर्ष इन्

भारत भर के राठोड नरेशों के मुकुटमणि स्वर्गीय गुणग्राहक हिजहाईनेस महाराजा सर जसवंत सिंहजी बहादुर जी० सी० एस० आई० जोधपुर नरेश से मुलाकात करने जोधपुर पधारे और यहां तत्कालीन प्रधानमंत्री संसार प्रसिद्ध पोलो खिलाड़ी महाराजा सर प्रताप को वीरता और बलसे भरपुर इस पोलो के खेल में सलग्न देखा। तबसे आज तक आप बड़े शौक से पोलो खेलते हैं। मालवे के राठोड वंशावतंस भारत प्रसिद्ध पोलो प्लेअर हिजहाईनेस कर्नल महाराजा सर सज्जनसिंहजी के. सी. अस. आई. A. D. C. to H. R. H. The Prince of Wales रतलाम नरेश से आपकी घनिष्ट मित्रता है। ईश्वर राजा प्रतापसिंहजी से सुयोग्य न्याय परायण प्रजाप्रिय नरेश को राजपरिवार सहित चिरायु करें।

राज्य में राजधानी (आलीराजपुर-राजपुर) के सिवाय आंबुवा आंबाडभेरी, आमखूट, बरझर, भाबरा, छकतला, चांदपुर, खटाली, मलवाई, नानपुर, फूलमाल, सीलोटा, सोरवा, उमराली, वालपुर, और भोरन बड़े कस्बे हैं। आली, बरदला कालीबेल, मालवाई, मोटीपोल, फूलमाल, रोलीगांव और सोरवा ऐतिहासिक स्थान हैं।

इस राज्य के व्यापार के मुख्य मुख्य केन्द्र आलीराजपुर, भाबरा, नानपुरा, खटाली, अम्बुआ और अमराली है। परन्तु रेल्वे स्टेशन किसी भी गांव में नहीं है। इस लिये दोहद और छोटा उदयपुर की रेल्वे स्टेशनों द्वारा ये उपरोक्त गांव बाहर से व्यापार करते हैं। ये स्टेशन, आलीराजपुर से क्रमशः ४४ और ३० मील के फासले पर हैं। दोहदसे आलीराजपुर तक पक्की सड़क बनी हुई हैं। अब राज्य में शीघ्र ही रेल जारी करने का निश्चय वर्त्तमान राजा साहब ने कर लिया है और लाइन की सर्वे भी हो चुकी है। खास राजधानी में बिजलीघर भी शीघ्र बनने वाला है। यहां के जंगलो में सागवान, शिशम आदि की बहुतसी इमारती लकड़ी उत्पन्न होती है जो दोहद और छोटा उदयपुर रेल्वे स्टेशनो पर भेजी जाती है। इसके सिवा शहद, मोम, गोंद, सफैद मुसली, चिरोंजी, टीमरू के पत्ते, आम और महुआ के फूल भी यहां काफी तादाद में पैदा होते हैं। राज्य में ताजीमी जागीरदार सोन्ढवा, ओंडवा, मोरासा, कांदी, चापरिया, पीपलियावाट और भीरी के ठाकुर हैं। भीरी के ठाकुर साहिब सोलंकी वंश के हैं और अन्य सब सरदार राठोड़ हैं।

ईडर

गुजरात प्रांत की महीकांठा एजेन्सी में यह सबसे बड़ा राज्य है। मारवाड के राठोडों के मुलपुरुष राव सीहाजी के द्वितीय पुत्र सोनंगजीने यहां के कोली राजा को मार कर ईडर पर सं० १३३६ के आसपास अपना कब्जा किया। राव सोनंग के बाद क्रमशः अहमल्ल, धवलमल्ल, लूणकरण, खनहनजी, रणमल्ल, पूंजोजी, नारायणदास (सं० १४८५), भाणजी, सुरजमल्ल, रायमल्ल, भीमजी, भारमल्ल, पूंजोजी (द्वितीय), नारायणदास (द्वितीय), वीरमदेव, कल्याणमल्ल, जगन्नाथ, पूंजोजी (तीसरे) अर्जुनदास, गोपीनाथ और कर्णसिंह गज-गद्दी पर बैठे। कर्णसिंह के उत्तराधिकारी राव चन्द्रसिंहकी लापरवाही देख सं० १७८१ के लगभग ईडर पर बच्छा पंडित ने कब्जा कर लिया। बाद में जोधपुर नरेश महाराजा अजीतसिंह के ८ वें और ९ वें पुत्र आनंदसिंह और रायसिंह ने सं० १७८३ वि० की वैसाख वदि ७ को ईडर पर अपना अधिकार कर लिया। इस दिन से ईडर का राज्य राव सोनंग की सन्तान के हाथ से निकल कर उसके बड़ेभाई राव आसथानजी की सन्तान के कब्जे में आया। राव चन्द्रसिंह की सन्तान पौल गांव में रही जहां के वे जागीरदार हैं। और आज दिन "पोल के राव" कहलाते हैं।

ईडर राज्यकी लम्बाई ६६ और चौड़ाई ५८ मील है। क्षेत्रफल १,६६९ वर्गमील है। राज्य की वार्षिक आय १० लाख रु है। इसको ३०,३३९ रु. १५ आने २ पाई खिराजरूप घासदाना के नाम से अंग्रेज सरकार के मारफत बड़ौदा राज्य को देने होते हैं। यहां के नरेशों के सलामी की तोपें १५ हैं और उन्हें गोद लेने का अधिकार है। यहां की राजधानी सन १९०२ ई. से अहमदनगर था। परंतु सन १९१२ ई० की १ अक्टोबर को इस नगर का नाम बदल कर वर्त्तमान युवराज प्रिन्स हिम्मतसिंहजी बहादुर के शुभ नाम पर "हिम्मत नगर" रख दिया गया. तब से यही नाम है। यह जोधपुरसे ३३७ और अहमदाबाद से ५५ मील दूर है। पुरानी राजधानी ईडर हिम्मतनगर से रेलपथ द्वारा २० मील पर है।

वर्त्तमान नरेश हिजहाईनेस महाराजा सर दौलतसिंहजी का जन्म जोधपुर मे सं. १९३५ की वैशाख सुदि ११ (ई. स. १८७८ ता. ३० मई) को हुआ था। यह राव सोनंगजी से ३१ वें तथा राजा आनंदसिंह से ८ वें उत्तराधिकारी हैं। जब जोधपुर राज्यके मुसाहिब आला (प्रधान मंत्री)

स्वर्गीय इडर नरेश महाराजा सर प्रताप

महाराजा प्रतापसिंहजी (बाद में सर प्रताप)* सन १९०२ की १२
वरी को ईडर की गद्दी पर बैठे तब ही वर्त्तमान महाराजा सा
उन्होंने गोद ले लिया था क्योंकि विवाहित रानियो से उनके सन्त
केवल एक राजकुमारी ही थी[1]। सन १९११ ई. में जब सर प्रताप जोध
रिजेन्ट नियत हो गये। तब सं. १९६८ की श्रावण बदि १० (सन
ई. ता. २१ जौलाई) को महाराजा दौलतसिंहजी ईडर की गद्दी पर
आपके बड़े महाराज कुमार हिम्मतसिंहजी का जन्म सं. १९५६ की
बदि १३ (ई. स. १८९९ ता. २ सितम्बर) को हुआ था। छोटे मह
कुमार मानसिंहजी (ऊर्फ लालसिंहजी) और मदनसिंहजी है।

युवराज प्रिन्स हिम्मतसिंहजी का शुभविवाह हिमालय प्रदे
पहाड़ी राज्य टेहरी (गढ़वाल) के हिजहाईनेस केप्टेन राजा नरेन्द्र
सी एस. आई की बहिन के साथ सन १९१३ ई० की ११ जूनको
रोह से हुआ है। टेहरी नरेश अपने को पंवार राजपूत कहते हैं। प्र
गढ (राजपूताना) नरेश हिज हाईनेस महारावत सर रघुनाथसि
बहादुर सीसोदिया के. सी. एस. आई. के सुयोग्य युवराज महाराजकु
मानसिंहजी का विवाह भी टेहरी राजवंश मे हुआ है।

ईडर के राजचिन्ह में सब से ऊपर चील है और बीच में सूर्य
मूर्ति है। सूर्य के आसपास दो घोडे हैं। क्यों कि स्वर्गीय महाराजा
प्रताप को घोडों का बड़ा ही शौक था और घोड़े को ही वे अ
सर्वस्व मानते थे और कहते थे कि a horse, a horse my kingd
for a horse. राजचिन्ह के नीचे "सो सुकृत एके पालणे एको
साम धरम" लिखा रहता है।

---

* महाराजा सर प्रताप का जीवन चरित्र सर्व प्रथम पुस्तक रूप इस इतिह
रचयिता द्वारा वि० सं. १९७४ के मिगसर (१९१७ ई०) मे प्रकाशित हुआ है। जि
४ था नया संस्करण दर्जनो चित्र सहित शीघ्र ही प्रकाशित होगा। दाम ?।) रु०

१– महाराजा सर प्रताप को उपपात्नियो से पुत्र चार रावराजा नरपतसिंह, हणु
(केप्टेन) शक्तसिंह और अभयसिंह नामक थे। इनमें से रावराजा शक्तसिंह का देहांत
वर्ष जोधपुर मे हो गया। शेष तीनो जोधपुर स्टेट सर्विस में नियुक्त है।

ईडर नरेश महाराजा सर दौलतसिंहजी बहादुर

ईडर राज्य के मुख्य जागीरदार सुवर, दावड़ा, नुवाका, चांदरणी, नूडेटी, वेरणा, टींटोई, उंडणी, मऊ, वृकड़िया और गाठीयाल ठिकानों के

रावसाहब रावराजा नरपतसिंहजी हाउसहोल्ड कन्ट्रोलर, पैलेस जोधपुर राज्य.

हैं। और लिखने योग्य भोमिये पौल, खेरोज, ताका, ढुंका, कुशका, सोमे नग, जालिया, देथामडा, वडियोल, वसायत, धमनोलिया, नाड़ीसाड़ा, नरवडा, गामभोई, मोरडुंगर, देरोल, पोसीना, वेरावर, वूडेली, और मोहरी (देवाली), थोडवाडा मोरी (मेघराज) और करचा स्थानों के हैं।

किशनगढ

ज्य जोधपुर के पूर्व में है। इस राज्यका क्षेत्रफल ८५८ वर्गमील, आबादी करीब ८० हजार और आमदनी सालाना करीब ६ लाख रु. हैं। नरेशों की सलामी की तोपें वंशपरम्परागत १५ हैं। किन्तु वर्त्तमान महाराजा सर मदनसिंह बहादुर की व्यक्तिगत १७ तोपें हैं। यहां के राज्य चिह्नमें बीचमें चील पक्षी और दोनों बाजु घोड़े हैं। नीचेकी तरफ 'नीति रीति' लिखा होता है।

इस राज्य के जनक राजा किशनसिंहजी थे जो जोधपुर नरेश राजा उदयसिंह (मोटा राजा) के ८ वें पुत्र थे। इनका जन्म वि. सं. १६३६ ज्येष्ठ वदि २ बुधवार (ई. स १५८२ ता. १० मई) को हुआ था। इनको बादशाह जहांगीर ने अजमेर के पास सेठोलाव का परगना सं. १६६२ (सन १६०५ ई०) मे जागीर में दिया था। सं. १६६६ वि. में इसी सेठोलाव स्थान के पासही पूर्वमें अजमेरसे १६ मील पर पहाड़ियों के बीच में इन्होंने अपने नाम पर "किशनगढ" नामक नगर वसाया था। ये सं० १६७२ की ज्येष्ठ वदि ८ को वीरगति को प्राप्त हुवे। इनके पश्चात क्रमशः सहसमल्ल (१६७२-१६७५), जगमाल (१६७५-८५) हरिसिंह (१६८५-१७००) महाराजा रूपसिंह (१७००-१७१५) मानसिंह (१७१५-१७६३) राजसिंह १७६३-१८०४) सामन्तसिंह उर्फ नागरीदास (१८०६) सरदारसिंह (१८१२-२३) बहादुरसिंह (१८२३-१८३८) बिड़दसिंह (१८३८-१८४५,) प्रतापसिंह (१८४५-१८५४) कल्याणसिंह (१८५४-१८९५)

मोहकमसिंह (१८९५-१८९७) पृथ्वीसिंह (१८९८-१९३६) शार्दूलसिंह (१९३६-१९५७) और मदनसिंहजी ने राज्य शासन किया। वर्त्तमान नरेश हिज हाइनेस लेफ्टिनेन्ट जेनरल महाराजाधिराज महाराजा सर मदनसिंहजी बहादुर के. सी. एस. आई; का जन्म वि सं. १९४१ की कार्तिक सुदि १४ (ई. स. १८८४ ता. ४ नवम्बर) को हुआ था और

हिजहाईनेस महाराजा सर मदनसिंहजी बहादुर। पोलो की पोशाक में।

ये अपने पिता महाराजा सर शार्दूलसिंहजी जी. सी. एस. आई. का सन १९०० की ता० १८ अगस्त को स्वर्गवास हो जाने पर सं. १९५७ की भादों सुदि ४ (ई. १९०० ता. २९ अगस्त) को किसनगढ की गद्दीपर बैठे। योग्य पिता के आप योग्यपुत्र हैं। आपके समय में राज्य की अच्छी उन्नति हुई। आप वल्लभकुल सम्प्रदाय के अनुयायी हैं और योरपीय महा-

युद्ध के समय में आप फ्रांस के रणक्षेत्र में ६ मास रह कर अंग्रेज सरकार की सहायता की थी। आपको पोलो का बड़ा शौक है और आप स्वयं-

महाराजा सर मदनसिंहजी बहादुर (बैठे हुवे)
ठा० अमरसिंह चांपावत ए० डी० सी० (खड़े हुवे)

पोलो के एक अच्छी खिलाड़ी हैं। आपकी पोलो टीम भी भारत उल्लेखनीय टीम है[1]।

इस राज्य के उल्लेखनीय जागीरदार करकेड़ी[2], खतोली, रघुन सीनोदिया, चोसला, कोटरी, पंडरवाडा, घसुक, फतेहगढ, रा भामवोलाश्रा और नरायण मुख्य हैं। राजधानी किसनगढ जो रेलपथद्वारा १६६ मील दूरी पर है।

झाबुआ

ह राज्य मालवा प्रांत के पहाड़ी प्रदेश जिसे "इलाका राठ" भी कहते हैं। का क्षेत्रफल १,३३६ वर्गमील, आबा लाख २३ हजार ६ सो ३२ है जिसमें कांश भील लोग हैं। और आमदनी ३ लाख ६१ हजार रुपये सालाना है। के नरेशों को ११ तोपों की सलामी "हिज हाईनेस" की वंशपरम्परागत उप है। राज्य चिह्न में चील आदि के चित्र अंकित हैं।

इस राज्य के मूलपुरुष राव भीमसिंह थे जो जोधपुर नरेश जोधाजी की छठी पीढी में थे। बादशाह अकबरने, इन भीमसिंहजी वीरता से प्रसन्न होकर वि० स० १६४१ में उन्हें बदनावर (मालवा) परगना जागीर में दिया था। जब जहांगीर तख्त पर बैठा तब उसने भी सिंहजी के पुत्र केशवदास को मालवे के दक्षिण-पश्चिमी प्रदेशों के डाकु का दमन करने के कार्य पर नियत किया। केशवदासजी ने मौका पा

१—भारत के नामी पोलो प्लेअर सरदार मोतीलाल इसी टीम मे पहले थे जो समय पटियाला राज्य की टीम में हैं। वे वहा के महाराज कुमार साहबान के ऐसिस्टे गार्डियन भी हैं।

२—इस ठिकाने (करकेडी) के स्वामी महाराज यज्ञनारायणसिंहजी हैं जो महारा साहब बहादुरके चचेरे भाई है। आपका शुभ जन्म सन १८९६ ई० की ता० २६ ज को हुआ था।

ऐसी कारगुजारी बताई कि बादशाह जहांगीरने खुश होकर सं० १६६४ वि० में केशवदास को ही राजा की पदवी देकर उक्त प्रदेशका मालिक बना दिया। किन्तु इनका देहान्त इसी वर्ष हो गया। इनके बाद कर्णजी, महासिंह, कुशलसिंह, अनूपसिंह, बहादुरसिंह, भीमसिंह, प्रतापसिंह, रतनसिंह और गोपालसिंह नामक नरेश गद्दीपर बैठे हैं। राजा गोपालसिंहजी

स्वर्गीय झाबुआनरेश हिजहाईनेस राजा गोपालसिंहजी बहादुर

सं० १९५१ वि० में स्वर्गवास हुआ था। इनके पुत्र न होने से इसी राज्य के खवासा ठिकाने के ठाकुर रघुनाथसिंह राठोड के पुत्र उदयसिंह इनके गोद आकर २० वर्ष की आयु में सं. १९५२ की वैशाख सुदि २ शुक्रवार (ता० २६-४-१८९५ ई०) को गद्दीपर बैठे। वि. सं. १९५५ में राजा उदयसिंहजीको राज्य कार्य के पूर्ण अधिकार सौंप दिये गये।

झाबुआ राज्य इन्दौर को वार्षिक ४,३५० रु० और भारतसरकार को १५०० रु० खिराज में देता है।

इस राज्य के जागीरदारों में खवासा, रायपुरा, उमरकोट, सारंगी करवर, झामली, झाकनौद और बोरी के ठाकुर उल्लेखनीय हैं।

बीकानेर

यह राज्य जोधपुर के उत्तर में है और उसका क्षेत्रफल २३,३१५

बीकानेर नरेश हिज हाइनेस महाराजा सर गंगासिंहजी बहादुर

वर्गमील, आबादी ६,५६, ६२५ और वार्षिक आय ६२ लाख के करीब है। यह सालाना आमदनी दिन बदिन बढती ही जाती है। इस राज्य में पानी की बडी तंगी है और रेता कसरत से है। ३०० या ४०० फुट तक खोदते हैं तब कहीं कुंओं में पानी निकलता है। पशुओं में ऊंट और बकरी तथा मेवा मे तर्बुज यहां के बहुत उमदा होते हैं। इस राज्य के मूलपुरुष राव बीकाजी राठोड हैं जो जोधपुर के राव जोधाजी के छोटे पुत्र थे। इन्होंने सं. १५४५ वि० की वैशाख सुदि २ रविवार (ई० स० १४८८ ता० १२

अहीर [आभीर]

परिशिष्ट संख्या १३

अप्रेल=हि० ८९३ ता० १ जमादुल अव्वल) को अपने नाम पर बी
शहर बसाया[1]। इनका स्वर्गवास सं० १५६१ की आश्विन सुदि

इतिहासप्रेमी मुहणोत नैणसी, दीवान जोधपुर [देखो पृष्ट १५८]

१— इस घटना का सूचक एक पुराना दोहा मारवाड़ी भाषा में इस प्रकार है –

पनरसै पैंतालवे, सुद बैशाख सुमेर।
थावर बीज थरप्पियो, बीके बीकानेर॥

किन्तु गणना से उस रोज थावर (शनिवार) के स्थान में रविवार आता है।

हुआ तब इनके ज्येष्ठपुत्र नराजी ३६ वर्ष की आयु में बीकानेर के राज-सिंहासन पर बैठे। परन्तु वे ४ मास ही राज करके माघ सुदि ८ को स्वर्ग सिधार गये। पश्चात क्रमशः राव लूणकरण (१५६१-८३ वि०), जैतसीजी (१५८३-१५९८), कल्याणसिंह (१५९८-१६२८), रायसिंह (१६२८-१६६८),

दादूपन्थी साधु

राजा दलपतसिंह (१६६८-१६७०), सूरसिंह (१६७०-१६८८), कर्णसिंह (१६८८-१७२६), महाराजा अनूपसिंह (१७२६-१७५५) स्वरूपसिंह (१७५५-१७५७), सुजानसिंह (१७५७-१७९२), जोरावरसिंह (१७९२-

१८०२), गजसिंह (१८०२-१८४४), राजसिंह (१८४४ वि०) प्रतापसिंह (१८४४), सूरतसिंह (१८४४-१८८५), रतनसिंह (१८८५-१९०८), सरदारसिंह (१९०८-१९२१), डूंगरसिंह (१९२१-१९३८), और गंगासिंहजी राजसिंहासन पर बैठे।

[illegible]

वर्त्तमान नरेश हिज हाईनेस महाराजाधिराज नरेन्द्रशिरोमणि मेजर जनरल महाराजा सर गंगासिंहजी जी. सी. एस. आई. जी. सी. वी. ओ: एल. एल. डी. (इत्यादि) का जन्म सं० १९३७ वि० के आसोज

वदि १४ रविवार (ता०३-१०-१८८० ई०) को हुवा था। और आप अपने ज्येष्ठ भ्राता महाराजा डूंगरसिंहजी के स्वर्गवास हो जाने पर सं० १९४४ की भादों सुदि १३ (ईस्वी सन १८८७ ता० ३१ अगस्त) को बीकानेर के राजसिंहासन पर विराजे। आप हिन्दु विश्वविद्यालय काशी के प्रो० चान्सलर और नरेन्द्रमण्डल दिल्ली के, प्रधान हैं। योरपीय महायुद्ध के समय आपने अंग्रेज सरकार की बड़ी सहायता की थी और अपने ऊंटों के रिसाले सहित रणक्षेत्र में गये थे। आप फ्रांस के रणक्षेत्र में ६ मास तक रहे। आपके दो महाराज कुमार शार्दुलसिंह और विजयसिंह नामक हैं। बड़े महाराजकुमार शार्दुलसिंहजी का जन्म वि. सं. १९५९ की भादों सुदि ५ (ई० स० १९०२ ता० ७ सितम्बर) को हुआ था। बकानेर रेलपथ द्वारा जोधपुर से १७१ मील की दूरी पर है।

महाराजा गंगासिंहजी के समय में राज्य के प्रत्येक विभाग में बड़ी उन्नति हुई है। क्यों न हों, जब आप सब राज काज स्वयं सम्भालते हैं और आलस्य आदि दुर्व्यसनों से कोसो दूर रहते हैं। राज्य को सरसब्ज करने की ओर आपका पूरा ध्यान है। इसी उद्देश्य से अब पंजाब की तरफ से सतलज नदी की एक नहर राज्य मे लाने का प्रवन्ध सन १९२१ ई० से आपने शुरू कर दिया है। इस नहरका नाम "गंगानहर" होगा और यह करीब ८० मील लम्बी होगी। इसके बनाने में राज्यका कोई १ करोड़ रुपया लगेगा और उससे ६ लाख २० हजार बीघा जमीन की सींचाई होगी। कंकर कूट कर तयार की हुई यह नहर संसार भर में एक बड़े मार्के की नहर होगी। इस नहर से राज्य के रतनगढ व हनुमान गढ जिले बड़े सरसब्ज हो जायंगे। नहर से जब पूर्ण सींचाई होने लगेगी तब राज्य को सालाना ३४ लाख के करीब और आमदनी हो जायगी। लगभग २ वर्ष मे यह नहर बन कर तयार हो जायगी। क्यों कि इस ठेके का काम जोधपुर के सुप्रसिद्ध चतुर कन्ट्राक्टर प्रतापसिंह कछवाहा आदि के हाथ में है।

यहां के नरेशों को अंग्रेज सरकार से १७ तोपों की सलामी है और सरकार को खिराज कुछ नहीं देते हैं। यहां के राजकीय झण्डे में ७ धारियें कसुमल, केसरिया, नीले और सफेद रंग की हैं। दूसरी में दो

और छठी में १ कुल तीन चीलें इसमें अंकित हैं। और सिरे पर खेजड़ा (Prosopis spicigera) का वृक्ष है और उसके नीचे "जय जंगल धर बादशाह" लिखा है।

झण्डे का रंग कसूमल है और वैसे तो राज्य से केवल दो ही रंग कसूमल और केसरिया माने हुवे हैं। कसूमल तो करनीदेवी का और केसरिया भगवान लक्ष्मीनाथ का रंग है जो इस राज्य के इष्टदेव हैं। दूसरे रंग तो बाद में सुन्दरता सूचक रख दिये गये हैं। खेजड़ा इस इलाके का असली और उपयोगी रूख-वृक्ष होने के कारण मोटो (मूलमन्त्र) के सिरे पर रखा गया है। 'जय जंगलधर बादशाह' यहां के नरेशों की उपाधि है। जो किसी बादशाह से नहीं मिली थी, किन्तु समस्त राजपूत जाति ने मिल कर राजा कर्णसिंह (सं० १६८८-१७२६ वि०) को प्रदान की थी जो अन्त में मुगल सम्राटों को भी माननी पड़ी और अंग्रेज सरकार ने भी उसको स्वीकार किया है। यह उपाधि भी कुछ यों ही खाली खुली बातों व खुसामन्द से नहीं मिली थी, जैसा कि आजकल मिल जाया करती हैं। बल्कि बड़ी बहादुरी और जान जोखोंका आदर्श कार्य जाति देश व धर्म के लिये करने पर यह प्राप्त हुई थी। कहते हैं कि एक बार बादशाह औरंगजेबने सब राजाओं को अटक पार ले जाकर मुसलमान कर डालने का विचार किया। क्यों कि उस समय राजाही आर्यधर्म की ढाल थे और बिना इन को सर किये पूरी सफलता मिलना असम्भव था। अतः हमेशा की तरह बादशाह मय राजाओं के अटक पहोंचा। वहां पार जाने के लिये इतनी नावें नहीं थीं कि ये सब एक साथ पार हो सकें। और औरंगजेब को भी इन राजाओं का अभरोसा नहीं था। इस लिये बादशाह अपनी सेना के साथ नावों में सवार हो अटक पार जाते हुवे राजाओं को कह गये कि यही नावें हम तुम्हारे वास्ते लौटाते हैं।

राजाओं को इस समय तक इस षड्यंत्र का कुछ पता नहीं था। इतने में शाही लश्कर से एक जासूस ने आकर राजाओं को सूचित किया कि अटक पार जाने पर बादशाह आप सब को मुसलमान कर डालेगा। इस पर राजा महाराजा उसका उपाय सोचने लगे। सर्वसम्मति से यह तय हुवा कि जब नावें अपने को लेने को आवें तो उन्हें नदी में डूबा कर

अपने अपने देश में चल देवें। परन्तु यह भी विचार हुवा कि जब बादशाह इसका उत्तर पूछेंगे तब कौन कहेगा कि यह मैंने किया ताकि सब लोगों पर यह भार न रहे। सब ने राजा कर्णसिंह से कहा कि आपका

जोधपुर नरेश महाराजा सरदारसिंहजी के समय की स्टेट कौंसिल के मेम्बर (सं० १९५५ वि०)

देश बड़ा उजड़ व निर्जल है। यदि बादशाही चढ़ाई भी हो जावे तो सेना भूख व प्यास से मर जायगी। इस लिये आप ये नावें तोड कर डूबा जावो।

महाराजा कर्णसिंह ने कहा कि यदि आप सब सज्जनों की ऐसी ही मर्जी है तो हम बादशाह की सब खफगी[1] अपने शिर लेने को तयार हैं। परन्तु इसके लिये आप लोगों की तरफ से हमें कुछ मान मिलना चाहिये। ताकि भविष्य में अन्यों का भी उत्साह बढ़े।

तदनुसार राजाओं ने मिट्टीका एक तख्त बना कर उस पर बीकानेर नरेश राजा कर्णसिंह को बैठाया और कहा—"जय जंगलधर बादशाह की!" जब सब ने इस प्रकार कर्णसिंहजी को जंगलधर बादशाह कहा और माना तब राजा नावों को तोड़ कर नदी में डूबा आये। उसी दिन से "जय जंगलधर बादशाह" बीकानेर के राजकीय झण्डे में लिखा जाता है।

बीकानेर राज्य के जागीरदारों में महाजन, रावतसर, भूकरका, बीदासर, पुंगल, चुरु, सेन्दवा, बाई, रेरी, सांवतसर, बगसूर, सत्तसार, खियारन, रायसर, कुंभाना, मालासर, लाखनसर, शानसू, कानवाडी, सिदमुख, जैतपुर, कुचोर, जेसाना, नींमां और बोघरा, के ठाकुर प्रसिद्ध हैं। महाजन और रेरी के वर्त्तमान ठाकुरों को राज्य की ओर से राजा की उपाधि है।

रतलाम
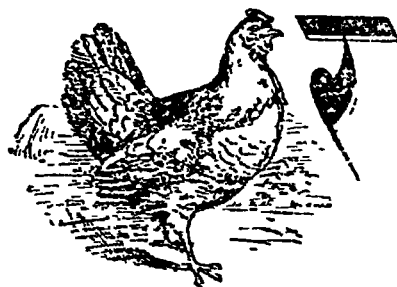
रतलाम राज्य मालवा में एक बड़ा प्रसिद्ध राज्य है। इसके उत्तर में जावरा और प्रतापगढ राज्य हैं, पूर्व में ग्वालियर, दक्षिण में धार व कुशलगढ तथा इन्दौर के कुछ भाग और पश्चिम में राजपूतानेके कुशलगढ और बांसवाडा राज्य हैं। इसका क्षेत्रफल ९०२ वर्गमील है जिसमें से ५०१ वर्गमील जागीर है। इसके सिवाय रतलाम की २२८ वर्गमील भूमि

१— मआसिरे आलमगिरी आदि फार्सी तवारीखों में राजा कर्णसिंह पर औरंगजेब की नाराजगी का कारण और ही लिख कर लीपा पोती की गई है। और असली बात को छिपाया गया है।

(६० गांव) कुशलगढ़ (राजपूताना) के राठोड़ राव के अधिकार में है जिसके एवज में रावजी रतलाम को ६०२॥) रु० वार्षिक कर रूप "टांका" में देते हैं। राजकाज के लिये रतलाम के दो विभाग किये हुवे हैं। आबादी कुल ८४ हजार है। अंग्रेज सरकार को सं० १९१७ वि. से ४६

हिजहाईनेस महाराजा सर सज्जनसिंहजी बहादुर

१– यहा के रावसाहब रामावत शाखा के राठोड़ है। यह जागीर बांसवाड़ा [राजपूताना] राज्य से प्राय स्वतंत्र है। यहां के जागीरदार को थोड़ी खिराज बांसवाड़ा राज्य को अवश्य देना पड़ता है किन्तु शासन सम्बन्धी कार्यों में यह बांसवाड़ा नरेश के अधीन नहीं है। शासन सम्बन्धी अधिकारों में यह पोलिटिकल एजेन्ट के अधीन है। कुशलगढ़ और बांसवाड़ा के नजदीकी रेल्वे स्टेशन आर. एम. रेल्वे के बजरंगगढ़ और नामली है।

हजार रु० खिराज रूप वार्षिक दिये जाते हैं। पहले यह रकम ग्वालियर राज्य को दी जाती थी।

इस राज्य के मूल पुरुष राजा रतनसिंहजी थे जो जोधपुर नरेश राजा उदयसिंह (मोटाराजा) के पौत्र महेशदास के ज्येष्ठ पुत्र थे। बादशाह शाहजहां ने रतनसिंहजी की वीरता से प्रसन्न होकर उन्हें सं० १७०६ वि० के करीब मालवा में जागीर दी। पहले तो ये धराड़ (रतलाम) में रहे और पीछे इन्होंने रतलाम[1] को राजधानी बनाया। यह वीर रतनसिंहजी सं० १७१५ की वैशाख वदि ८ शुक्रवार (हि० १०६८ शाबान ता० ७=ई० स० १६५८ ता ३० अप्रेल] को बड़ी वीरता से औरंगजेब की सेना से उज्जेन के पास धर्मतपुर [चोरनराना-फतिहाबाद] में लड़ कर काम आये। अतः इनके ज्येष्ठ पुत्र रामसिंह राज्य सिंहासन पर बैठे। इन्होंने २४ वर्ष तक राज कर दक्षिण [कोंकण] के एक युद्ध में सं० १७३६ में काम आये। पश्चात् रामसिंहजी के पुत्र शिवसिंह ने सं० १७३९ से १७२५ तक राज्य किया। इनके राजकुमार नहीं था इससे इनके मरने पर इन के छोटे भाई केशवदास राज्यसिंहासन पर विराजे। परंतु ये सं० १७४५ से सं० १७५२ तक ही रतलाम का राज कर सके। क्यों कि इनके एक कर्मचारी के हाथ से बादशाही उच्च कर्मचारी रतलाम में मार दिया गया था। इससे सम्राट औरंगजेब ने नाराज हो केशवदास से रतलाम जब्त कर लिया। इस प्रकार राज्य के जब्त हो जाने के कुछ काल पश्चात राजा केशवदास के चाचा छत्रसाल रतलाम की गद्दी पर बैठे। इनके पश्चात क्रमशः केसरीसिंह [१७६७—१७७३] मानसिंह [१७७३ —१८००] पृथ्वीसिंह [१८००—१८३०] पद्मसिंह [१८३०—१८५७] पर्वतसिंह [१८५७—१८८२] बलवन्तसिंह [१८८२—१९१४] और भैरवसिंह राज्य के स्वामी हुवे। राजा भैरवसिंह राज्य कार्य में दक्ष नहीं थे। इससे राज्य का कार्य नामली के ठाकुर के भाई सोनगरा बख्तावरसिंह ही चलाता था। सं० १९२१ में एका एक राजा भैरवसिंह का स्वर्गवास हो जाने पर विरोधियों ने सोनगरा बख्तावरसिंह और उनके

१—कहते हैं कि राजा रतनसिंह ने रतलाम नगर को सं० १७११ में बसाया था। परन्तु "आईने अकबरी" में रतलाम का नाम लिखा होने से प्रमाणित है कि यह नगर पहेले से मौजूद था। हां! यह सम्भव है कि इन्होंने इसकी विशेष उन्नति की हो।

सहायक कोठारी ज्वाहिरचन्द पर कई आरोप लगाये परंतु अन्त मे निर्दोषी प्रमाणित हुवे। भैरवसिंहके पश्चात उनके पुत्र रणजीतसिंह के सी० आई० ई० राज्य सिंहासन पर बैठे। इन्होंनें इन्दौर के डेली काले में शिक्षा पाई थी। और यह सं० १९३४ के दिल्ली दरबार मे सम्मिलि हुए और सं० १९३७ में इनको राज्य शासन के पूरे अधिकार मिल गये इनके विवाह तीन हुवे थे। सन्तान में एक पुत्र और दो कन्याएँ थीं इनका सं० १९४९ की माघ सुदि ३ को देवलोक वास हो जाने पर इन एकलौते पुत्र सज्जनसिंहजी जी० सी० एस० आई० राज्य के स्वा हुवे। इनका जन्म सं० १९३६ की पौष सुदि २ [सन १८८० ता० जनवरी] को और राजतिलक सं० १९४९ की माघ सुदि १२ [ई० स १८९३ ता० २८ जनवरी] को हुआ था। आप पोलों के अच्छे खिलाड़ी और राज्यकार्य में भी बड़े कुशल हैं। योरपीय महायुद्ध में आप भी अ दलबल सहित फ्रांस के रणक्षेत्र में पहुँचे थे। इन अमूल्य सेवाओं के उपल में अंग्रेज सरकारने सं० १९७७में आपको पीढी दर पीढी के लि "महाराजा" की उपाधि प्रदान की और सं० १९७८ में आपकी सला की तोपे बढा कर सदा के लिये १५ कर दी।

रतलाम राज्य के झंडे के बीच महावीर हनूमान की मूर्ति है औ उसके आसपास दो चील पक्षियों के चित्र हैं। सबसे ऊपर कटार सहि हाथ अंकित होता है। नीचे की तरफ "रत्नस्य साहसं तद्वंश रत्नम् लिखा रहता है। इसका अर्थ यह है कि—रतन के साहस से उस वंश भी रत्न है। यहां के मूलपुरुष राजा रतनसिंह की राज्यचिह्न प्रशंसा इस लिये की गई है कि—"वे जोधपुर नरेश महाराजा जसवं सिंह [प्रथम] के बदले उज्जेन में लड़ कर वीरगति को प्राप्त हुवे थे।" य के नरेशोंको १५ तोप की सलामी है और हिज हाइनेस की उपाधि है रतलाम राज्य के जागीरदारों मे पंचेर, सरवन, नामली, आमलेट औ शिवगढ के ठिकाने मुख्य है। राजधानी रतलाम जोधपुर से रेलपथ द्वा ३८४ मील दूर है।

रतलाम राज्य के इतिहास में जैसा कि हम लिख आये हैं जोधपुर नरेश राजा उदयसिंहजी (मोटा राजा) के चोथे पुत्र दलपतजी राठोड़ थे, उन्हें जागीर में जालोर मिला था। इन दलपतजी के महेशदास, जूझारसिंह, राजसिंह, जसवंतसिंह और कानजी नामक ५ पुत्र थे। इनमेंसे महेशदासजी के रतनसिंह, कल्याणसिंह, फतेहसिंह, रामचन्द्र, और सूर्यमल नामक ५ पुत्र हुए। इन का संक्षिप्त ब्योरा इस प्रकार है--

१—राजा रतनसिंह तो रतलाम के नरेश हुवे इनके १२ पुत्र थे†।

२—राव कल्याणसिंह ने मेरियाखेड़ी स्थान पर कब्जा किया जो इस समय सीतामऊ राज्य में उन्ही के वंशजों के अधिकार में है।

३--राव फतेहसिंह ने अपना राज्य पहले केकडी में कायम किया, बाद में वे मालवे में चले गये। इनके १२ पुत्र थे। केसरीसिंह, हरिसिंह, अखेसिंह, माधोसिंह, मोहनसिंह, छतरसिंह, अमरसिंह गजसिंह, रूपसिंह, रघुनाथसिंह, गोपालसिंह और रामदास (पासवान—उपपत्नि से)।

इन ग्यारह (रामदास को छोड़ कर) राजकुमारों में से चार के तो सन्तान नहीं हुई। शेष सात कुमारों ने अपनी तलवार की शक्ति से स्वतंत्र ठिकानों के अधिपति हुए जो आजतक उनके वंशजों के कब्जे में है। उपयुक्त सात कुमारों के मुख्य ठिकाने इस प्रकार है--

१--पाना, २-कोद‡ और ३--बिड़वाल। धार राज्य में।

---

†१—रामसिंह रतलाम नरेश २—रायसिंह (काछी बडोदा वालों के पूर्वज) ३—नाहरसिंह ४ कर्णसिंह, ५—छत्रशाल (रतलाम नरेश) ६—अखेराज (आम्बा) ७—पृथ्वीसिंह ८—जीतसिंह, ९—केसरी सिंह, १०—सुरसिंह, ११—धीरत सिंह १२—शक्तसिंह (मुलथान संस्थान के पूर्वज)।

‡राव हरिसिंह फतेहसिंहोत पहले कोद ठिकाने में रहे और बादमें बिड़वाल चले गये। इनसे इनकी सन्तान दोनो ठिकानो मे है।

४—पचलाना × और ५-रूनीजा । ग्वालियर राज्य में ।

६—अरड़ीया, ७-बोरखेड़ा और ८-सरसी । जावरा राज्य में ।

इन मुख्य ८ ठिकानों में से कई और भी ठिकानें फटे हैं जो भाई बंटे में नहीं परन्तु अपने ही जोर बल से स्थापित हुवे हैं। यह सब फतेहसिंहोत राठोड़ कहलाते हैं । इनकी नामावली निम्न प्रकार हैं:—

पीपलोदा, गाजनोद, अमरकोट, (उमरकोट,) वामन्दा, सारंगी, टोत्रिया (उर्फ भैंसोला) मोहनपुरा, गढी, धारसीखेड़ा, पाखादा, मम्बाड़िया, लावरी, साकतली, शूरखेड़ा, लूणेरा, वाखादरा, आकिया, केरवासा, शिवगढ, तरखेड़ी और मुलकी ।

४—राव रामचन्द्रसिंह ने सरवन में अपना संस्थान स्थापित किया जो आज तक उनके वंशजो के अधिकार में रतलाम राज्य में है ।

५—राव सूर्य्यमल निसन्तान स्वर्ग सिधार गये। इससे उनका कोई राजस्थान स्थापित होना पाया नहीं जाता है ।

× रतलाम राजधानी से पचलाना ठिकाना करीब १० मील की दूरी पर है । यह जागीरी ठिकाना ग्वालियर राज्य की मातहत में हैं । इस की आय २५ हजार रु० वार्षिक की तो ग्वालियर राज्य में और ५ हजार रु० की धार राज्य में है । रतलाम से पचलाना तक पक्की सड़क बनी हुई है और मोटरें तांगें आते जाते है । यहां के स्वनामधन्य ठाकुर साहब जवानसिंहजी का स्वर्गवास हो जाने पर उनके ज्येष्ठ पुत्र जागीर के स्वामी हुए । परंतु लगभग ५ वर्ष हुए वे निसन्तान दशा में देवलोक गामी हो गये । इससे उनके छोटे भाई ठाकुर सांवतसिंहजी राष्ट्रवर पचलाना की गद्दी पर विराजे । आप इस समय ग्वालियर में मैट्रिक क्लास में पढ रहे है और आप एक होनहार इतिहास प्रेमी नवयुवक रईस है ।

सीतामऊ
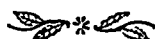
तामऊ राज्य मालवा में एक उन्नतिशील राज्य है। इसका क्षेत्रफल २०१ वर्गमील है। यह उत्तर में ग्वालियर और इन्दौर राज्यों से, दक्षिण में रियासत जावरा और देवास से, पूर्व में झालावाड राज्य और पश्चिम में ग्वालियर से घिरा हुआ है। इसकी जनसंख्या गत मनुष्यगणना मे २६ हजार पांच सौ बताई गई है और प्रति वर्गमील १३२ मनुष्यों की आबादी का औसत है। इस राज्य में मुख्य नदियां चम्बल, शिव और सांसड़ी बह कर निकलती है। यहां की आब हवा न गर्म न ठंडी है अर्थात मध्यम श्रेणी की है। ग्रीष्मकाल में ९० से १०६ डिग्री तक गर्मी रहती है और शीतकाल में ६२ से ८६ डिग्री तक शर्दी रहती है। भूमि यहां की पथरीली और पहाड़ी है। और खेतीवाडी पर निर्भर रहनेवाले ६६ फी सैकड़ा हैं। वर्षा का सालाना औसत २६ इञ्च है। यह देश पहाडी होने से तन्दुरुस्ती के लिये अच्छा है। और सिवाय वर्षाकाल के मौसमी बुखार के प्रायः कोई बीमारी की शिकायत नहीं रहती है। राज्य की वार्षिक आय लगभग ५ लाख रुपये और व्यय पौनेपांच लाख है। इस खर्च में २७,५०० रु० भी सामिल हैं जो अंग्रेज सरकार को वार्षिक कर में दिये जाते हैं। इस राज्य का झण्डा सफेद और सुर्ख रंग का है। और राजचिह्न के बीच में कुलदेवी के तीन त्रिशूल है और आसपास सूअरों के दो चित्र हैं। उसके नीचे "दैत्याः पत्तनं राज सदनं" लिखा रहता है। जिसका अर्थ यह है कि देवी का नगर (सीतामऊ) राजाओं का गृह है दाहने तरफ के सूअर के ऊपर "सत्यमेव" और बांये पर "जयति" लिखा होता है। इसका अर्थ है कि "सत्य की सदा जय होती है।" राज्य-चिह्न के ऊपर "सूर्य" का उसके नीचे तलवार का चित्र अंकित है जो यहां के राजवंश का "सूर्यवंशी" होना और "लाख तलवार राठोड़ान" की मुगल कहावत को प्रकट करता है।

राज्यशासन की व्यवस्था राजा साहब स्वयम् करते हैं। शासन के सुभीते के लिये निम्नलिखित विभाग निर्माण किये हुवे हैं—

१—न्याय विभाग, २—रेवन्यू, ३—सर्वे और सेटलमेन्ट, ४—एक्साइज, ५—अफीम, ६—कस्टम्स, ७—ट्रेजरी, ८—अकौंउण्ट्स, ९—इण्डस्ट्री, १०—म्युनिसीपॉलिटी, ११—पब्लिकवर्क्स डिपार्टमेण्ट, १२—फॉरेस्ट, १३—पुलिस, १४—हाउसहोल्ड, १५—एज्युकेशन, १६—रिसाला और घुड़शाला (अस्तबल) और मेडिकल डिपार्टमेंट। राज्यभर में ७ अदालतें हैं। हायकोर्ट, सेशन्सकोर्ट, डिस्ट्रिक्टमजिस्ट्रेट (जिसे सरन्यायाधीश कहते हैं,) सिटी मजिस्ट्रेट (जिनको दोयम दर्जे के अधिकार हैं,) सेकण्ड क्लास मजिस्ट्रेट कोर्ट व रेव्हन्यु ऑफिसर, तीसरे दर्जे के मजिस्ट्रेट कोर्ट दो। कचहरियों में हिन्दी भाषा का उपयोग होता है और देशरिवाज को मद्दे नजर रख कर ब्रिटिश भारत के कानून काम में लाये जाते हैं। राज्य में लगान वसूली के प्रबन्ध के लिये तीन विभाग किये गये हैं और प्रत्येक तहसील एक अफसर के मातहत में है जिसे तहसीलदार कहते हैं। तहसीलदार को अपनी तहसील में लगान वसूल करने और उन पर शासन करने के तीसरे दर्जे के मजिस्ट्रेट व सिविल के अधिकार मिले हुवे हैं। तहसीलदारों पर रेव्हेन्यु ऑफिसर है जिसे दूसरे दर्जे के सिव्हिल अधिकार हैं।

इस राज्य में प्रतिनिधिक संस्था का प्रबन्ध अब तक निम्न लिखित हुवा है—

मुख्य २ गांवों में प्रजा से चुने हुवे पंचों के पंचायती कोर्ट स्थापित हैं और उनको २५) रुपये तक के दावों की सरसरी तहकीकात करके फैसला करने का अधिकार है। ऐसे फैसले पर सिर्फ हायकोर्ट में रिवीजन दायर होती है। एज्युकेशन डिपार्टमेंट एज्युकेशन बोर्ड के तआलुक है जिसमें ३ ऑफिशिअल और ३ नॉन ऑफिशिअल मेम्बर हैं। म्युनिसीपालटी का प्रबन्ध प्रजा के चुने हुवे २१ मेम्बरों द्वारा होता है, एग्रीकलचरल बैंक स्थापित किया गया है जिसकी निगरानी प्रजा के चुने हुवे ३ और मुकर्रर किये हुवे ३ ऐसे ६ सज्जनों के अधीन है—

राज्य में आवाद गांव ६५ हैं जिसमें से ५६ जागीर में दिये हुवे हैं। आवाद घर कुल ६,२१४ हैं। राजधानी सीतामऊ खास है जिसे सत्ताजी नामक एक भील सरदार ने सं० १७०० के आसपास वसाया था। इसके चारों तरफ शहरपनाह है जिसमें कुल ७ दर्वाजे हैं। यह परकोटा राजा केशवदास (केशोदास) के समय में शुरू होकर राजसिंहजी के समय समाप्त हुआ। राजधानी का निकट रेल्वे स्टेशन वी. वी. एन्ड सी. आई. आर, का मन्दसौर व सुवाजरा है जहां दोनों से वह करीव १८ मील की दूरी पर है।

सीतामऊ के नरेश जोधपुर के रणवंका राठोड़ राजवंश से निकले हुवे हैं और उन्हें ११ तोप की सलामी व हिजहाईनेस की उपाधि और राज्यशासन के पूर्ण अख्त्यार वंशपरम्परा के लिये प्राप्त हैं। सम्राट अकवर के समय में जोधपुर के राजा उदयसिंहजी (मोटा राजा) वडे प्रसिद्ध हुवे हैं। उनके चौथे पुत्र दलपतसिंह वादशाही मनसवदार थे और उन्हे सम्राट की ओर से जागीर में मारवाड़ का जालोर परगना मिला था। इन दलपतसिंहजी के ज्येष्ठ पुत्र महेशदासजी थे। महेशदासकी के बड़े कुँवर रतनसिंहजी थे। राजा रतनसिंहजी ने वादशाह शहांजहां से जागीर प्राप्त कर सं० १७०१ वि० में रतलाम का राज्य स्थापित किया। रतनसिंहजी के ज्येष्ठ पुत्र रामसिंहजी ने सं० १७१५ से सं० १७३६ वि० तक राज किया। उनके वाद उनके वडे कुँवर शिवसिंहजी ने संवत १७३६ से १७४५* वि० तक रतलाम का शासन किया। राजा शिवसिंह के सन्तान न होने से उनके छोटे भाई वीर केशोदास उनके गोद वैठे। परन्तु वे सं० १७४५ से सं० १७५२ वि० तक ही रतलाम का राज्य कर सके। क्योंकि इनके कारिन्दा के हाथ से वादशाही अमीन-ई-जजिया सीतामऊ में मारा गया। इस लिये वादशाह ओरंगजेव ने नाराज होकर सं० १७५२ वि० के द्वितीय आषाढ सुदि ७ रविवार (सन १६९५ ता० ९ जून को वीर केशवदास से रतलाम राज्य जप्त कर लिया और वह

*— राजगुरु केसरजी की पोथी।

राज्य जागीर में अपने पुत्र शाहज़ादा मुहम्मद आज़मशाह को दे दिया[1]।

इतना होने पर भी राजा केशोदासजी बादशाही नौकरी से अलग नहीं किये गये[2]। तदन्तर सं० १७५६ वि० के लगभग बादशाह ने खुश

विद्वद्वर्य हिज़ हाईनेस राजा रामसिंहजी बहादुर

१– देखो सम्राट औरंगजेब के अखबारात दरबारे मुगलिया जलूसी सन ३८ ता. १७ ज़िकाद जो कि लंदन में रायल एसियाटिक सोसाइटी के पुस्तकालय में सुरक्षित है।

२– देखो औरंगजेब के अखबारात दरबारे मुगलिया जलूसी सन ४० ता. १५ सफ़र (ई. सन १६९६ ता. ३ सितम्बर)।

होकर नहारगढ परगने की जागीर इनको प्रदान की[1] जिसकी वार्षिक आय ३० लाख २० हजार ४ सौ दाम[2] थी। इसी समय जब ये नलगंडा के किलेदार और गवर्नर (फौजदार) थे[3] तब इनकी अमूल्य सेवाओं से

महाराज कुमार प्रिन्स श्रीरघुवीरसिंहजी बहादुर

१– औरंगजेब की प्रदान की हुई सनद् जलूसी सन ४५ ता. ८ जमादिलउल आखिर।

२– रुपये का ४० वा हिस्सा।

३– सम्राट औरंगजेब अखबारात दरबारे मुगलिया जलूसी सन ४३ ता. जिकाद.

बादशाह ओर भी प्रसन्न होकर इनके मनसब एकसौ जात और सौ सवार का मनसब और बढ़ा दिया[1]। इसके पश्चात सं० १७५८ वि० में सम्राट औरंगजेब ने इन्हें ७ लाख ८० हजार दाम की आमदनी का तीतरोद (सीतामऊ) परगना और सं० १७७१ में बादशाह फर्रूखशियरने २३ लाख दाम का आलोट का परगना जागीर में और दिया। बादशाही अखबारात दरबारे मुगलिया (Court Bulletins) और सनदों से ज्ञात होता है कि राजा केशवदासजी का ज्यों २ मनसब मुगल साम्राज्य में बढ़ता गया, त्यों त्यों उनकी जागीर भी बढ़ती गई। इस प्रकार राजा केशोदासजी ने रतलाम का राज्य छूटने के पश्चात अपनी अमूल्य सेवाओं के उपलक्ष में बादशाह औरंगजेब से जागीर प्राप्त करके सं० १७५२ में सीतामऊ राज्य के नाम से अपना राज्य रतलाम से बिल्कुल प्रथक स्थापित किया[2]। इन राजा केशोदासजी की बहिन श्रीमती अमर कुंवर बाई का विवाह मेवाड़ के महाराज कुमार सरदारसिंहजी के साथ सं० १७२४ के करीब हुआ था।

१—औरंजेब अखबारात दरबारे मुगलिया। जलुसी सन ४३ ता० जिकाद।

२—यह निर्विवाद बात प्रामाणित हो चूकी है कि रतलाम के संस्थापक राजा रतनसिंहजी के ज्येष्ठ पुत्र राजा रामसिंहजी थे और रामसिंहजीके छोटे राजकुमार केशोदासजी हुवे। जैसा कि जोधपुर के प्रमाणित वंश वृक्ष से पाया जाता है। (देखो महकमाखास राज मारवाड नं. १४६९ ता. ३० दिसेम्बर १९०६ ई.) इसके सिवाय जब सैलाना और सीतामऊ राज्यों मे किसका दर्जा ऊंच्चा है, इसका सवाल चला तो भारत सरकारने बड़ी जाच से और जोधपुर दरबारसे पूछ ताछ करके यह तय किया कि सीतामऊ के नरेश राजा रतनसिंहजी के कुटम्ब मे सबसे बड़ी शाखा के वंशज हैं। "....the question has been considered by the Government of India, who are of opinion that as the Chiefs of Sitamau are des cended in a direct line from the ELDER BRANCH of the family of RATAN SINGH, THE FOUNDER OF RATLAM, while the Chiefs of Sailana belong to the junior branch, precedence has been corr ectly given to the Chiefs of Sitamau in public Durbars and that they are entitled to take similiar precedence in the matter of official visits. (देखो मालवा पोलिटिकल एजेन्सी, आर्डर नं. ८२९ ता. ८ अप्रेल १९०२ ई.)

सं० १८०५ में जब राजा केशोदासजी का स्वर्गवास हुआ तब उनके द्वितीय पुत्र गजसिंह राज्यसिंहासन पर विराजे क्योंकि ज्येष्ठ पुत्र वस्त-सिंहजी का स्वर्गवास उनके (पित्ता) जीते जी हो गया था। राजा गजसिंहजी के समय में मालवे में मराठों का राज्य हो गया और मौका देख कर मराठों ने सीतामऊ पर भी धावा बोल दिया। इससे गजसिंहजी लदुने को सीतामऊ से अधिक सुरक्षित स्थान देख कर वहां चले गये। परन्तु इनके नहारगढ और आलोट के परगनें सदा के लिये ग्वालियर और देवास (बडीपांती) राज्यों के अधिकार में चले गये। और गजसिंहजी के केवल तीतरोद का परगना अर्थात् मौजूदा सीतामऊ राज्य रह गया। सं० १८०६ में ३६ वर्ष की आयु मे ये देवलोक को प्राप्त हुवे और इनके एक मात्र पुत्र फतहसिंहजी राज्य के मालिक हुवे। इनके समय में मराठों की लूट खसोट से राज्य को और भी हानि पहुँची। ये ४० वर्ष की आयु में सं० १८५९ में इस असार संसार से चल बसे। इनके पीछे इनके १६ वर्षीय राजकुमार राजसिंहजी राजसिंहासन पर विराजे। इन्होंने सं० १८७७ मे सर जान मालकम द्वारा अंग्रेज सरकार से सन्धि कर ग्वालियर राज्य के अधिकार अपने सीतामऊ राज्य पर से सदा के लिये उठा दिये। इसके बाद सं० १८७७ में इन्होंने सीतामऊ नगर को फिर अपनी राजधानी स्थापित की। सं० १९१४ की गदर में राजा राजसिंहजी ने अंग्रेज सरकार की बड़ी सहायता की थी। इनका स्वर्गवास सं० १९२४ वि० में हो गया। इनके पश्चात राजा भवानीसिंहजी (सं० १९२४-४२), राजा बहादुरसिंह (सं० १९४२-५५) और राजा शार्दुलसिंहजी क्रमशः राजासिंहासन पर विराजे। सं० १९५७ की वैशाख सुदि १२ को हैजे की बीमारी से राजा शार्दुलसिंहजी का निसन्तान दशा में यकायक स्वर्गवास हो जाने पर भारत सरकार ने राजा रतनसिंह महेशदासोत के द्वितीय राजकुमार रायसिंहजी के वंशज श्री० रामसिंहजी को निर्वाचित कर उनको राजासिंहासन पर बिठाया। अतः सं० १९५७ की मंगसिर वदि १४ को राजा रामसिंहजी साहब का विधिपूर्वक राजतिलक बडी धूमधाम से सीतामऊ मे हुआ।

वर्त्तमान नरेश राजा रामसिंहजी का शुभ जन्म सं० १९३६ की पौष वदि ४ को हुआ था। आप मालवा एजेंन्सी के काछी-बड़ोदा

नामक ग्यारंटीड ठिकाना के स्वामी ठाकुर दलेलसिंहजी साहब के द्वितीय पुत्र हैं। आरंभिक शिक्षा के पश्चात १२ वर्ष की आयु में आप इन्दौर के राजकुमार कालेज में भेजे गये। वहां की शिक्षा समाप्त कर सं० १९५६ में आप पैमाईश व जमाबंदी का काम सर मायकल ओडवायर* के पास सीखने के लिये भरतपुर गये। वहां से यह काम सीख कर आप वापिस घर लौटे ही थे कि तत्कालीन सीतामऊ नरेश का स्वर्गवास हो जाने से उनके उत्तराधिकारी रूप आप गोद आये। जैसे ही आप सीतामऊ के राजसिंहासन पर विराजमान हुवे वैसे ही वहां का बिगड़ा हुआ काम सुधरने लगा, मानों अन्धेरे में दिवाकर का प्रकाश हुआ। थोड़े ही समय में राज्य पिछले कर्ज से मुक्त हो गया और राज-प्रबंध में भी बहुत कुछ उन्नति हुई। आपके इन कार्य्यों से प्रसन्न होकर सं० १९६१ की फागुन वदि ९ को भारत सरकार ने आप को राज्य-शासन के पूरे अधिकार सौंप दिये। इसी वर्ष जब तत्कालीन "प्रिंस ऑफ वेल्स" इन्दौर में पधारे तब आपने उनसे मुलाकात की। सं० १९६८ के देहली दरबार में सम्राट पंचमजार्ज से भी आपकी मुलाकात हुई। इसी अवसर पर सम्राट महोदय ने आपको के० सी० आई० ई० के पदक से विभूपित किया। सं. १९७१ के विश्वव्यापी यूरोपीय महायुद्ध के समय आपने तन मन व धन से अंग्रेज सरकार की अच्छी सहायता की थी।

राजा साहब का पहला विवाह गुजरात के छोटा उदयपुर नरेश हिजहाईनेस स्वर्गीय महारावल श्री फतहसिंहजी साहब की राजकुमारी श्रीमती महाकुँवर बाई के साथ सं० १९५९ वि० में हुआ था परन्तु इन रानी साहबा का स्वर्गवास १ वर्ष पश्चात हो गया। इससे सं० १९६० में आपने बीकानेर राज्य के बालेरी ठाकुर साहब की कुमारी के साथ फिर व्याह किया, जिन रानी साहबा का भी सं० १९७२ में देवलोक वास हो जाने पर आपने उदयपुर मेवाड़ के मरोली ठाकुरसाहब की पौत्री अखंड सौभाग्यवती श्रीमती चन्द्रकुंवर बाई के साथ विवाह किया। सन्तान में आपके दो राजकुमारियां और तीन राजकुमार हैं। बड़े महाराजकुमार प्रिन्स श्री रघुवीरसिंहजी का शुभ जन्म संवत १९६४ की फागुन वदि ५ (ई० स० १९०८ ता० ३ फरवरी) का है। ये बी० ए० का

* ये उस समय भरतपुर और अलवर राज्यों के सेटलमेन्ट आफिसर थे।

अध्ययन कर रहे हैं। द्वितीय राजकुमार श्री गोविंदसिंहजी (जन्म १० आगस्ट १९११ ई०) और तृतीय कुमार रघुनाथसिंहजी (५ दिसेम्बर १९१३) सीतामऊ की दरबार हाईस्कूल मे एन्ट्रेन्स क्लास मे पढ रहे हैं। श्रीमान राजासाहब का इस प्रकार अपने राजकुमारों को पबलिक स्कूल मे शिक्षण देना देशी राजा महाराजाओं के लिये अनुकरणीय है। क्योंकि राजकुमार लोग जब हमारे बालकों के साथ शिक्षा पाते हुवे बडे होवेगें और उनसे सुपरिचित होगें तो उनसे सहानुभूति रखेगें और जब राज भार को अपने हाथ में लेवेगें तो सरलता से उनका योग देवेगे। और अपने साथियों की इच्छा विचार, आत्मत्याग और आवश्यक्ताओं को जानते हुवे राज्य का प्रबंध उनके लिये भार न होकर एक सरल कार्य्य होगा।

राठोड़ कुल भूषण राजा साहब संस्कृत और अंग्रेजी भाषा के अच्छे विद्वान हैं और उर्दू फारसी तथा ज्योतिष में भी गति रखते हैं। आप साहित्य प्रेमी और कवि भी हैं। आपने "रामविलास" और वायु विज्ञान नामक दो अनमोल ग्रंथो की रचना की है। आप कविता प्रायः बृजभाषा में करते हैं और उसमे अपना उपनाम "मोहन" रखते हैं। विद्या प्रेम आप मे कूट कूट कर भरा है। आपके शासन काल में प्रजा को शिक्षा का अपूर्व लाभ पहुँचा है। कुछ वर्ष हुवे आपने राजधानी में हाईस्कूल स्थापित कर दिया है। आपके धार्मिक विचार बड़े दृढ और उच्च है। स्वजाति प्रेम भी आप में खूब है और आप राजपूताना व मध्य-भारत की राजपूत जाति की उन्नति मे बडा भाग लेते हैं। राजस्थान क्षत्रिय महासभा अजमेर के आप प्राण है[1]। और इस महासभा के सभा-

१—राजपूताना प्रान्त भारत के अन्य प्रान्तों मे उन्नति में बहुत पिछड़ा हुवा है। यही दशा यहा की भिन्न २ जातियों की है। किन्तु राजपूत जाति यहा की अन्य जातियो से भी बहुत पिछडी हुई है चाहे वह इस प्रान्त की शासक जाति होने मे उसे उन्नति के सब साधन प्राप्त है। अतः राजपूतो में नव जीवन संचार करने के लिये राजस्थान प्रान्तिय क्षत्रिय महासभा सं० १९७९ वि० मे अजमेर में स्थापित है। इसने राजपूताना व मध्यभारत की राजपूत जाति में विद्या प्रचार व कुरीति निवारण आदि का अच्छा कार्य्य किया है। इस सब कार्य्य का श्रेय श्रीमान सीतामऊ नरेश तथा अजमेर के इस्तमरारदार सरदारों और सभा के उत्साही कार्य्यकर्ता सबलपुर (बुलंद-शहर) निवासी मि० सुलतानसिंह रघुवंशी को है। रघुवंशीजी ने आत्मत्याग के

पति का आसन भी आप ग्रहण कर चुके हैं। साहस और धैर्य आपके स्वभाव सिद्ध गुण है। कठिन से कठिन अवसर पर भी आपका साहस नहीं छूटता है। आप प्रजा पालन में बड़े दक्ष हैं। कई राजा महाराजा ऐसे होते हैं कि जो राजकाज का भार अपने मंत्रियों पर छोड़ कर स्वयं आप लक्ष्मी के विलास में फंस जाते हैं; परंतु राजा रामसिंहजी साहब उन राजाओं में से हैं, जो स्वयं अपने आप राज्य का प्रबंध देखते हैं। इसका फल यह हुआ कि सम्पूर्ण प्रजा सुखी है और राज्य की भी खूब उन्नति हुई है। आपके विषय में राठोड कुल तिलक जोधपुर महाराजा साहब के राज कवि व स्टेट कोंसिलके मेम्बर स्वर्गीय महामहोपाध्याय कविराजा मुरारदानजी आसिया ने यह कहा है:—

कृपण कपूत परदार पर-द्रव्य हारी,
जाए जिहि—तिहि ठां कहां लौ गुन गाऊं मैं
धर्म की न भावे गाथ चलत अनीत साथ
सीतामऊ—नाथ दुख कौन को सुनाऊँ मैं।
छत्रिन उतार दसा आई होनहार वस,
भनत मुरार देखि देखि, पछिताऊँ मैं,
जब सुधि तेरी है अलेप दोप रामराजा
तब सब कलि को कलेस भूलि जाऊं मैं।

आप बड़े दयालु और सरल स्वभाव के हैं। सत्कार्यों में दान देना आपके जीवन का व्रत है। धर्म को तो आप अपना प्राण समझते हैं और अपने कुल धर्म मर्यादा का बराबर पालन करते हैं। आपको राज्य के हर महकमे से पूर्ण परिचय है और महकमे खास हुजूर दफ्तर में जितने कागजात पेश होते हैं उन पर आप स्वयं पढ कर हुक्म लगाते हैं। ऐसे सद्गुणी और आधुनिक शासन प्रणाली से सहानुभूति रखनेवाले सुशिक्षित नृपति को परमात्मा हजारी उम्र करे और राज्यलक्ष्मी की उत्तरोत्तर वृद्धि हो यही हमारी कामना है।

मान कूट २ कर भरे हुवे हैं। और ये ही नवयुवक वीर अजमेर के राजपूत बोर्डिंग हाउस के सुपरिटेन्डेन्ट व जातिहित मासिक पत्र के सम्पादक हैं। यह सभा साधारण स्थिति से आज अच्छी दशा में पहुंच रही है और इस समय श्रीमान आर्य्यभूषण राजाधिराज सर नाहरसिंहजी के० सी० एस० आई० शाहपुरा नरेश प्रधानपद को सुशोभित करते हैं।

सैलाना

सैलाना राज्य मालवा प्रान्त में है। इसकी राजधानी सैलाना है जो पहाड की तलहटी में समुद्र की सतह से १८४७ फुट ऊंचा बसा हुवा एक अच्छा नगर है। पहाड़ की तलहटी में बसा होने से ही इसका नाम सैलाना हुवा है। इस राज्य की सरहद्दें ग्वालियर, इन्दौर, धार, झाबुआ, जावरा, बांसवाड़ा और कुशलगढ राज्यों से मिलती हैं। पिछले दो राज्य राजपूताना प्रान्त में हैं। राज्य का क्षेत्रफल ३६७ वर्गमील है। इसमेंसे आधा जागीर में दिया हुआ है। कुल गांव ८६ है और आबादी २५ हजार है जो अधिकांश कुनबी, राजपूत और भील हैं। राज्य ४ भागों में विभक्त है। यहां के नरेशों को ११ तोप की सलामी और हिज हाईनेस की वंशपरम्परागत उपाधि है।

स्वर्गीय हि० हा० राजा जसवंतसिंहजी (द्वितीय)

इस राज्य की स्थापना रतलाम नरेश राजा छत्रसालजी राठोड़ के कनिष्ठ पुत्र राजा प्रतापसिंहजी ने अपने बाहुबलसे रावटी में स्वतंत्र की थी और उनके दत्तक पुत्र राजा जयसिंहने अपनी राजधानी रावटी

वर्तमान हि० हा० राजा दिलीपसिंहजी बहादुर

से हटा कर सैलाना में वि० सं० १७७३ स्थापन की।

सं० १८५६ में ऊंत्र जनरल सर मालकम ने मालवे की मालगुजारी

का प्रबंध किया तब ग्वालियर नरेश दौलतराव सैंधिया ने २१,००० रु० (सलीम शाही ४२,००० रु०) सालाना मिलते रहने की जमानत लेकर सैलाना राज्य के प्रबन्ध से अपना हाथ हटा लिया। बाद में सं० १६१७ से यही रकम सैंधिया के एवज में अंग्रेज सरकारने लेना शुरु किया।

राजा जयसिंह के पश्चात क्रमशः जसवन्तसिंह [१८१४-१८२६] अजबसिंह [१८२६-३६], मोहकमसिंह [१८३६—५४], लक्ष्मणसिंह [१८५४—८२], रतनसिंह [१८८२—८४], नाहरसिंह [२८८४-६८], तख्तसिंह [१८६८-१६०७] और जसवन्तसिंहजी (दूसरे) राजसिंहासन पर विराजे। वर्तमान सैलाना नरेश हिज हाइनेस राजा दिलीपसिंहजी है जो राव प्रतापसिंह से ११ वें उतराधिकारी है। आपका जन्म सं० १६४७ की फागुण सुदि ८ को हुआ और यह अपने पिता राजा जसवन्तसिंहजी के. सी. आई.ई. के स्वर्गवास हो जाने पर सं. १६७६ की श्रावण वदि १ (ई. स० १६१६ ता.१४ जोलाई)को गद्दी पर बैठे। आपने मेओ कालेजमें उच्च शिक्षा पाई है और राज्य कार्य्य में आप बड़े दक्ष हैं। सं० १६७७ में आप अखिल भारतवर्षीय क्षत्रिय उपकारिणी महासभा के पुरी में होने वाले अधिवेशन के सभापति निर्वाचित हुवे थे और तबसे आप इस जातीय संस्था के स्थायी उपसभापति है। आप में स्वजाति और साहित्य प्रेम विशेष है और आप अपनी प्रजा मे विद्या प्रचार करने का भी निरंतर उद्योग करते रहते हैं।आपके बड़े राजकुमार प्रिन्स दिग्विजयसिंहजी का जन्म सं० १६७५ की असोज सुदि १० (सं० १६१८ ता० १५ अक्टोबर) को हुआ है। छोटे राजकुमार लक्ष्मणसिंहजी का जन्म सन १६२१ की २१ फरवरी को हुआ है।

यहां के राजचिन्ह के बीच में बाज और आसपास सूअर के चित्र हैं। उसके नीचे लिखा रहता है-"मदीयाश्रितं न भयं" अर्थात् मेरे आश्रित को भय नहीं है।

चील का चित्र तो इस लिये है कि यह राठोड़ राज्य है और सूअर सब पशुओं मे बलवान होता है। कहावत है कि-"दो सूअरों मे एक सिंह तो पानी नहीं पी सकता मगर एक सूअर दो सिंहों के बीच से पानी पी जाता है।" वैसे ही पक्षियों में चील भी बलवान है। इस लिये उसके साथ

सूअर का भी चित्र अंकित है। निदान इन सबका अभिप्राय यह है कि आकाश और भूमंडल में इस झंडे की रक्षा वीरों से होती है और इस लिये इसका आसरा लेनेवालों को कहीं कुछ डर नहीं है।

राज्य के मुख्य जागीरदार सेमलिया, बारा मावल और केरिया के ठाकुर हैं।

जोबट

यह राजस्थान मालवा के दक्षिणी भाग की विन्धया पहाड़ी की तरफ है। इसके उतर में झाबुआ, दक्षिण और पश्चिम में आलीराजपूर और पूर्व में ग्वालियर राज्य हैं। इसका क्षेत्रफल १३० वर्गमील, आबादी १८ हजार और सालाना आय करीब १ लाख रु० है। यह ग्यारंटीड संस्थान किसी को किसी प्रकार का खिराज (टांका) आदि नहीं देता है और अंग्रेज सरकार से सम्बन्धित है। राज्य में कुल गांव ६१ है जिसमें से ३ गांव जागीर में हैं। जागीरदार केवल दो बोरझाड़ और कन्दा के ठाकुर हैं जो राठोड वंशज हैं। राज्य कुल पांच भागों में विभक्त है और प्रत्येक भाग थाना (परगना) कहलाता है। राजधानी जोबट है जो रेल्वे स्टेशन दोहद और मेघनगर से करीब ४० मील दूर है। यहां के अधिपति को वंशपरम्परागत राणा की उपाधि हैं।

इस राज के मुलपुरुष राव केशरदेव राठोड़ थे जो आलीराजपुर नरेश राजा चंचलदेव के द्वितीय पुत्र थे। सं० १५२१ की माघ सुदि १५ मंगलवार को इन्होंने अपने जोबट राज्य की प्रथक स्थापना की थी। राव केसरदेव के पश्चात राजदेव, लालदेव, हरपालदेव, नरदेव, लखधीरदेव, आशकर्ण, केसरीसिंह, वीरमदेव, दौलतसिंह, उम्मेदसिंह, आनन्दसिंह, भीमसिंह और सबलसिंह, एक दूसरे के बाद उतराधिकारी हुवे। मालवा में जब अंग्रेजों का राज्य हुआ तब राणा सबलसिंह जोबट के स्वामी थे। इनके पश्चात इनके पुत्र रंजीतसिंह गद्दी पर बैठे। इनका सं० १९३१ वि० में स्वर्गवास हो गया इन्होंने सं० १९२० में अंग्रेज सरकार से इकरार किया था कि वे अपने राज्य में से सरकार को कभी भी रेल निकालने देंगे। राणा रंजीतसिंह के उतराधिकारी राणा स्वरूपसिंहजी का सं०

१९५४ में देहान्त हो जाने पर उनके राजकुमार इन्द्रजीतसिंह राज्य के मालिक हुवे। इनके कोई औरस सन्तान नहीं थी। सं० १९७३ मे इन्होंने स्वेच्छा पूर्वक राज गद्दी त्याग दी। इससे भारत सरकार ने ठिकाने बोरखाड़ के ठाकुर माधवसिंह के द्वितीय पुत्र भीमसिंह को सं० १९७४ की ज्येष्ठ सुदि ४ को गद्दी पर बिठाया। इन राणा भीमसिंह (द्वितीय) का शुभ जन्म सं० १९७२ की कार्तिक सुदि ३ (सन १९१५ ता० १० नवम्बर) को हुआ था। आप इस समय इन्दौर के राजकुमार कालेज में पढते हैं और राज्य प्रबंध मालवा के पोलिटिकल एजेन्ट के निरीक्षण में एक सुपरिटेन्डेन्ट द्वारा होता है।

नोटः—मध्यभारत (मालवा) के ठाकुर भैसाला (दांताडिया) ठाकुर काछी बडौदा, ठाकुर खेरवासा, ठाकुर मुलथान. ठाकुर सादाखेड़ (शिवगढ) ठाकुर सरवां और ठाकुर सीरसी भी राठोड़ वंश से हैं। यह खुदमुख्तार ग्यारंटीड ठिकाने हैं और भारत सरकार इन्हें अपने सरकारी रेकर्ड में "इण्डियन स्टेटस" श्रेणी में दर्ज करती है।

अजमेर के राठोड़ इस्तमरारदार

अजमेर मेरवाड़ा के अंग्रेजी इलाके में इस्तमरारदार बहुत हैं। इस्तमरारदार का अर्थ सदा के लिये भूमि या जागीर रखनेवाले के है। इन लोगों के पास जो गांव हैं वे दिल्ली के मुगल सम्राटों के दिये हुवे हैं, जिन की ऐवज में इनके पूर्वजों ने खून बहाया व अमूल्य सेवाएं की थी। बादशाही दफ्तरों में यह लोग जमीन्दार और तालुकेदार लिखे जाते थे परन्तु जब अजमेर में सिंधिया मरहठों का राज्य हुआ और उसके सूबेदार गुमानराव ने सं. १८६६ वि. से इन लोगों से सेवाओं के बदले नकद रुपया (खिराज) लेना शुरू किया तब से यह "इस्तमरारदार" कहलाने लगे। ता. २८-७-१८१८ ई० (सावण बदि ११ सं० १८७५) मंगलवार को इस जिले मे अंग्रेजी राज्य होने पर भी यही दस्तुर जारी रखा गया और सरकार ने सन १८७९ की ३० मार्च (सं० १८३१ की चैत्र बदि ८ मंगलवार) को आम दरबार में चीफ कमिश्नर के हाथ से अजमेर में सबको सनदें प्रदान कर दीं।

यह इस्तमरारदार, राजपूत जाति के ४ वंशो के-राठोड़. गहलोत

(सीसोदिया) गौड और चौहान मीनें हैं। चौहान मीनें नौमुस्लिम हैं, इनके साथ ही कोटडी नामक एक गांव चारण जाति का भी इस्तमरारदार गिना जाता है। जो भिनाय के राजा साहब का दान पुण्य में दिया हुवा है। यह राजा साहब इन सब इस्तमरारदार (जागीरदारों) में अव्वल नम्बर के ताजीमी राठोड़ सरदार हैं। और यहां अधिकांश राठोड़ वंश के ही इस्तमरारदार हैं जो जोधपुर नरेशों के ही छुट भाई हैं। जोधपुर के करीब होने से इनके पूर्वजों ने अजमेर जिले में ही अधिकतर जागीरें बादशाहों से प्राप्त की और कई वार अजमेर में जोधपुर नरेशों का राज हो जाने पर राठोडों को भोम आदि भी मिलती रही है। इससे भोमियें भी अधिकांश राठोड ही हैं।

इस वक्त २४० गांव ७ लाख रुपये की आमदनी के इन इस्तमरारदारों के पास हैं जिनमें से २०५ गांव राठोड़ों के हैं जिनकी सालाना आमदनी ६ लाख रु. हैं। यह इस्तमरारदार सालाना खिराज जो अजमेर के सरकारी खजाने में जमा कराते हैं, वह १,१४,७३४॥) रु. है। इसमें से १,०५,७५०) रु. राठोडोंका है। इतिहास से पता चलता है कि ये सब इस्तमरारदार बादशाह अकबर के पीछे के हैं, पहले का कोई ठिकाना नहीं है। भिनाय और पीसांगण के इस्तमरारदारों की वंश परम्परागत उपाधि "राजा" की है और ऐसा ही वे सरकारी कागजातों में लिखे जाते हैं। बाकी सब "ठाकुर" लिखे जाते हैं। राठोड़ इस्तमरारदारों के ठिकाने यह हैं:—

राठोड़ जोधा चन्द्रसेनोत

नाम ठिकाना	ताजीम
१-भिनाय	अव्वल दर्जा
२-बादणवाडा	"
३-टान्टोटी	दूसरा दर्जा
४-सुराना	तीसरा दर्जा
५-शोलयां	"
६-जोतायां	चोथा दर्जा
७-पाडलिया	ताजीम नहीं है
८-कल्यानपुरा	" नहीं है
९-बावड़ी	"
१०-जावला	"
११-अमरगढ	ताजीम नहीं है
१२-देवालिया बड़ा	अव्वल

(अखेराजोत)

नाम ठिकाना	ताजीम
१३-अरोड़	चौथा द. ताजीम नहीं.
१४-शोकली	४ था दर्जा
१५-शोकला	"

१६-रघुनाथपुरा	,,
१७-बड़ा गूढा	,,
१८-बड़ली	दूसरा
१९-कणाई छोटी	चौथा
२०-नागेलाव	,,
२१-गोयला	तीसरा
२२-देवगांव बघेरा	दूसरा
२३-रीछमालियां ४ था द.ता.नहीं	
२४-नांदसी	चौथा दर्जा
२५-सिलारी	,,
२६-केवाणिया	चौथा दर्जा
२७-केरोट	,,
२८-कुरथल	,,
२९-कणाई बड़ी	,,
३०-जैतपुरा	,,
३१-सातूलाई	,,

जोधा माधोदासोत

३२-जूनियां	अव्वल
३३-मांडा	चौथा
	(ताजीम नहीं)
३४-बोगलाकाला हेडा	,,
३५-केरोंज	,,
३६-देवालिया छोटा	,,
३७-लसाडियो	,,
३८-महरू बडा	दूसरा
३९-तसवाडियो	चौथा
४०-नीमोदा	,,
४१-सांगरियो	,,
४२-गादेडो	तीसरा
४३-पीसांगण	अव्वल
४४-खवास सरसरी	चौथा
	(ताजीम नहीं)
४५-प्राणहेडा	,,
४६-पारा	दू[illegible]
४७-मेवड छोटा	दू[illegible]
	(ताजीम न[illegible]
४८-गूढा	च[illegible]
४९-सदारा	,,
५०-गलगांव	,,

जोधा भगवानदासोत

५१-गोविन्दगढ	दूस[illegible]
५२-जसवंतपुरा	,,

जोधा शक्तसिंहोत

५३-खरवा	अव्वल
५४-भवानीखेड़ा	,,
५५-देवगढ	,,
५६ नासून	चौथा

जोधा जेतसिंहोत

५७-मेवाड़िया	चौथा

मेड़तिया जैमलोत

५८-रीछमालिया	चौथा

मेड़तिया जगमालोत

५९-खुडाम	अव्वल
६०-जैसिंहपुरा	,,
६१-फतहगढ	,,
६२-नदवाड़ा	चौथा
६३-शेरगढ	,,
६४-केल	,,
६५-केसरपुरा	,,
६६-अकरोल	,,
६७-लालावास	,,
६८-जामूला	,,
६९-सथाना	,,
७०-लांबा	,,

७१-नगर	,,	७५-बागसूरी	दूसरा
७२-खुखरानी	,,	७६-बूबानियां	चौथा
७३-शिवपुरी	,,	७७-नींमोर छोटा	,,
७४-आसन	,,	७८-शिवपुरा	,,

मेड़तिया चांदावत

७९-कैडल चौथा

संयुक्तप्रान्त के उल्लेखनीय राठोड़ रईश।

रामपुर जिला एटा

संयुक्त प्रान्त के जिला एटा में रामपुर या राजा का रामपुर राठोड़ों का एक प्रसिद्ध स्थान है। इस समय यह एक अच्छे राज्य से केवल १० गांव का एक ठिकाना (estate) रह गया है। यह बी० बी० अण्ड सी० आई० रेल्वे के स्टेशन रुदायन (जिला फर्रुखाबाद) से २ मील दूर पक्की सड़क पर है। इस ठिकाने का वार्षिक आय २० हजार रु० है और सन १९१६ से यह कोर्ट आफ वार्डस के अधीन है। रामपुर को राजा रामसहाय राठोड ने सं० १६०४ में बसाया था। यह राजा रामसहाय, कन्नोजपति महाराजा जयचन्द्र[1] राठोड़ के द्वितीय पुत्र

१-महाराजा जयचन्द्र का अपनी कन्याके स्वयंम्बर विवाह के लिये राजसूय यज्ञ करना और अन्तिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान का संयोगिता को हरण करना तथा इसके फल स्वरूप जयचन्द्रका विभीषण बन कर मुसलमानो को भारत पर चढा लाना। ये सब बातें भ्रममूलक है। इनका कोई ऐतिहासिक आधार नहीं है। यदि ये घटनाएं सत्य होतीं तो इनका उल्लेख जयचन्द्र के शिला व ताम्र लेखों मे अवश्य मिलता। जयचन्द्र के अबतक दो शिलालेख तथा १४ ताम्रपत्र मिले है। न ये घटनाएं पृथ्वीराज चौहान के समय मे बने पृथ्वीराज विजय में हैं, न विक्रम की १५ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्धमें बने हम्मीर महाकाव्य में इनका कहीं भी वर्णन है। ये सब पृथ्वीराजरासा के रचयिता [जो कोई हो] की कपोल कल्पना है। इस विषय मे हम अपने सप्रमाण विस्तृत विचार अगले संस्करण मे प्रकट करेगें।

राजा जजपाल (जयपाल) से २३ वे उतराधिकारी थे। इनके पश्चात वीरसहाय, कीर्तिसहाय, सूर्यसहाय, गुलाबसहाय, भवानीसिंह, बख्तावरसिंह, हिन्दूसिंह, नवलसिंह, छत्रसिंह और रामचन्द्रसिंह राज्य के स्वामी हुवे। राजा रामचन्द्रसिंह का विवाह मैनपुरी जिलाके एका राज्य के कुंवर हरिश्चन्द्रसिंह चौहानकी सुपुत्री श्रीमती कृष्ण कुंवरीदेवी के साथ हुआ था। इनको सन्तान में कोई राजकुमार नहीं था सो इन्होंने अपने भाई मुलायमसिंह को ही दत्तक लिया था। और राजकाज प्रायः यह कुं० मुलायमसिंह ही करते थे। किन्तु मुलायमसिंह का स्वर्गवास राजा साहब के जीवितकाल मे ही हो गया। और रामचन्द्र सिंह का स्वर्गवास निसन्तान दशा में सन १८८३ ई० की २० मई को ~~५५~~ ६० वर्ष की आयु में हो गया। इस लिये इनकी इच्छानुसार इनकी विधवा रानी श्रीकृष्ण कुंवरिदेवीजी ने अपने स्वर्गीय देवर कुंवर मुलायमसिंह राठोड के नाती लाल जगमोहनसिंह नामक वालक को गोद लिया। परंतु यह वालिग होने के पूर्व ही सन १८९७ की ८ मई को वरात में चल वसे जव इनका विवाह हुआ। बाद में राजा जग मोहनसिंह के काका गोविंदशरण सिंह सन १८९९ ई० की ८ अक्टोबर को गद्दी पर बैठे। इनसे रानी साहेब के नहीं पटी और आपस मे मुकदमे बाजी की नौवत पहोंची जिससे वे सन १९१६ ई० से राज्यकार्य्य से अलग हुवे। तबसे यह जागीरी ठिकाना फिर सरकार के कोर्ट आफ वार्डस के अधीन है। और राज माता रानी कृष्ण कुवारिजी को ६,०००) रु०सालाना खर्च के वास्ते मिलते है और तीर्थ यात्रा और मरम्मता महल मकानात या नई इमारत तामीर हो और त्योंहार इत्यादिका अलहिदा रकम मिलती है। राज माता कृष्ण.कुंवरजी के पश्चात राजा डिग्विजय सिंहजी (सरनऊ वाले) ही रामपुर के राजा होंगे ऐसी आशा है। क्यो कि यही समीप वर्ती विशुद्ध कुटम्बी और गद्दी के वास्तविक अधिकारी हैं। यह राजा नवलसिंह के वंशज हैं जो जिला मैनपुरी की अपनी जागीर सुज-राई और सरौर में जाकर वस गये हैं।

खीमसापुर

यह राजस्थान संयुक्त प्रांत के जिला फतेहगढ (फर्रुखावाद) यू० पी० में हैं। इसमें ४० गांव है। यह ताल्लुकेदारी एक जगह नहीं है, थोड़ी थोड़ी बहुत जगह है जो खीमसापुर खास के आसपास ही ४-४ या ५-५

मील चारों तरफ हैं। सालाना आमदनी करीब ३५ हजार रु० है और खर्च लगभग २० हजार रु०। यहां के तालुकेदारों को "राव" की वंश-परम्परागत उपाधि है।

इस राजस्थान के मूलपुरुष राव उदयचन्द्र राठोड थे जो कन्नौजपति महाराजा जयचन्द्र के द्वितीय पुत्र राजा जजपाल से १९ वें उत्तराधिकारी थे। जयपाल के पश्चात भूरसेन, सिन्धुपाल, वरसिंहपाल, भगवंतसिंह, अभयपाल, परजनपाल, सूरजपाल, महेन्द्रपाल, कनकसेन, लखनसेन, विजयराज, सुमेरसिंह, अर्जुनदेव, जैसिंहदेव उग्रसेन और कर्णसिंह क्रमशः उत्तराधिकारी हुवे। राजा कर्णसिंह खोर के अन्तिम राजा थे। ये देहली के बादशाह बहलोल लोदी के उमराओं में थे। जोधपुर बसानेवाले राव जोधाजी राठोड जब गया तीर्थ जा रहे थे तब इन्हीं राजा कर्ण से आगरे में मुलाकात की और इनके द्वारा बादशाह से मिल कर तीर्थों पर लगाये हुवे कर बादशाह से माफ कराये थे। दिल्ली के बादशाह बहलोल लोदी की तरफ होने से जौनपुर के नव्वाब से राजा कर्ण की खटपट रहती थी। इससे १६ वीं शताब्दी के मध्य में राजा कर्ण ने खोर के स्थान में बदायूं जिले के उसेत को अपनी राजधानी बनाई। राजा कर्ण के धर्म-अंगद और उदयचन्द्र दो राजकुमार थे। पिता के पश्चात ज्येष्ठपुत्र धर्म-अंगद[1] राज्य का उत्तराधिकारी हुआ। और कनिष्ठपुत्र राव उदयचन्द्र ने सं० १६१७ (१५६० ई०) में मिहार (भूमिहार) जाति के सरदार पर चढाई कर उसके ज्योंतआ, गुगोली, अल्लगंज आदि ५ गांवों पर अधिकार कर लिया। यही सब भूमि बाद में खमस यानी ५ गांवों का पुर (गांव) या समुह होने से खेमसापुर नाम से प्रसिद्ध हुई। यही राव उदयचन्द्र राठोड खीमसेपुर राज के मूलपुरुष हैं। इन्होंने सं० १६३० में गांव मोथा में

१-इस राजा के उत्तराधिकारी राजा प्रतापरुद्रने फर्रुखाबाद के नव्वाब बंगाश पठान को नव्वाब रुहेला रामपुर के विरुद्ध बड़ी सहायता दी थी। इससे नव्वाब बंगाश ने राजा प्रतापरुद्र को २७ गांव जागीर में दिये। इससे सं० १५६७ में राजा ने उसेत के स्थान में जिला एटा के तहसील आजमनगर के बिलसड मुकामको अपनी राजधानी बना कर रहने लगे। पश्चात राजा रामसहायने यहां से निकल कर अपने नाम से रामपुर बसा कर राज करने लगे थे।

एक छोटासा किला बनवाया था। इनके कर्मसेन, लक्ष्मणसेन, चतुरभुज, रामसिंह और शक्तिसिंह नामक ५ राजकुमार थे। इनके पश्चात राव कर्मसेन गद्दी पर बैठे। इन राजा का उत्तराधिकारी राव कृष्णराव बड़ा प्रतापी हुवा जिसने खीमसेपुर के आसपास के करीब ८० गांवों पर अपना कब्जा किया और इसने खिमसेपुर में एक किला भी बनाया। इन्हें फर्रुखाबाद के नव्वाब से एक हजारी जात का मनसब और ५ गांव जागीर में मिले हुवे थे। राव कृष्णराव के पश्चात दीपसिंह, भोपतराव, दानसिंह, लक्ष्मीचन्द्र, अछेतसिंह, रतनसिंह, वदनसिंह, इन्द्रजीत, वहादुरसिंह, दानसिंह और पृथ्वीसिंह एक के बाद दूसरा गद्दी पर बैठा। राव पृथ्वीसिंह राठोड़ ने सं० १९१४ वि० की गद्दर के समय अंग्रेज सरकार की तन मन व धन से बड़ी सहायता की थी। इससे अंग्रेज सरकार ने उन्हें उनके पूर्वजों के आद्य मुकटस्थान कन्नोज के पास दो गांव की जागीर प्रदान की। यह राव साहब तीन सहोदर भाई थे परन्तु इन तीनों के पुत्र नहीं था। राव पृथ्वीसिंह के मझेले भाई कुँवर फतहसिंह के पुत्र लाल ईश्वरीसिंह की विधवा रानी कठेरनीजी ने अपने वैधव्यकाल में पति की भूत अनुमति से कुँवर हनुमंतसिंह[1] के पोते लाल सुखेन्द्रसिंह को अपना दत्तकपुत्र बनाया था परन्तु राव पृथ्वीसिंह ने उसे उनका गोद लेना स्वीकृत नहीं किया। और खिमसेपुर के मूलपुरुष राव उदयचन्द्र के ५ वे कनिष्ठपुत्र कुँवर शक्तिसिंह के घराने में से वलदेवसिंह नामक एक व्यक्ति को अपने गोद लेकर उसको अपना उत्तराधिकारी बनाया। इस पर कुँवर हनुमन्तसिंह ने हकदारी का दावा चलाया। इस समय राव पृथ्वीसिंहका सं० १९३२ में स्वर्गवास हो गया था। उनकी चौहान रानी उपस्थित थी। राज्यप्रबन्ध कोर्ट आफ वार्ड्स के अधीन था। अन्त मे कुँ० हनुमन्तसिंह प्रयाग मे दावा हार गये और राव पृथ्वीसिंह के उत्तराधिकारी उनके दत्तकपुत्र राव बलदेवसिंह हुवे। इन्होंने अपनी पढाई आगरे में की और अभी ये वालिग ही न हुवे थे कि करीब १८ वर्ष की आयु में ~~सीतला~~ के रोग से इनका स्वर्गवास हो गया।

१–यह कुँवर हनुमन्तसिंह, राव इन्द्रजीतके पौत्र और कुंवर विष्णुसिंह के पुत्र थे। संयुक्तप्रान्त मे पिता की मृत्यु के पश्चात भी छुटभैया कुंवर ही कहलाते है। किसी २ जिले में उवर बाबू भी कहलाते है।

इस अकाल मृत्यु से राजमाता और राजमहिषी को बड़ा धक्का पहुंचा। राज्य का कुल प्रबंध राजा बलदेवसिंह की विधवा रानी राजमाता बैसनीजी (जो कि कुर्री सुदौली के आनरेबल राजा रामपालसिंह बैस एम. एल. ए. के० सी० आई० ई० की बहिन थी) के हाथ रहा। इस समय भी कुँ० हनुमन्तसिंह ने अपने गोद का दावा किया। और थोड़ी बहुत अदालती प्रपंच के बाद यह तय हुआ कि कुँवर हनुमन्तसिंह के ज्येष्ठपुत्र स्वर्गीय कुँवर गनेशसिंह के पुत्र लाल प्रतापनारायणसिंहजी नजदीकी रिस्तेदार होने से राजमाता रानी बैसनीजी के उत्तराधिकारी होंगे। इसी समय से प्रताप नारायणसिंह औरस पुत्र की भांति समस्त राज काज युवराज की हैसियत से करने लगे। और रानी बैसनीजी अपनी मृत्यु, तक गार्डियन (अभिभाविका) रूप निगरानी करती रहीं। इन मुकदमेबाजियों में खिमसेपुर के कुछ बान्धव रानीसाहब और कोर्ट आफ वार्डस के सहायक थे और कुछ कुँवर घराने के। कुँवर हनुमन्तसिंह के प्रधान सहायक कुँ० ठाकुरसिंह गनेशपुर, और धीरपुर के कुँ० रोहनसिंह व हर्याविसिंह तथा डालुपुर आदि साडा दस घर थे। रानी बैसनीजी के सहायक ज्योता के रईस कुँ० औसानसिंह बने थे। इस प्रकार यह खिमसेपुर का मामला समाप्त हुआ। (सन १९०० की १५ जनवरी) को रानी बैसनीजी का स्वर्गवास हो जाने पर राव प्रताप नारायणसिंह ने राज्य कार्य पूर्णरूप से अपने हाथ में लिया। इन्हें लखनऊ के कालवीन तालुकेदार स्कूल में शिक्षा मिली थी। ये पोलो के अच्छे खिलाड़ी थे। इनका विवाह रीवा राज्य के कुठिला ठिकाने के सरदार राव बहादुर प्रतापसिंह (दीवान रीवा राज्य) की सुपुत्री से हुआ था। पूर्ण शासन अधिकार रूप से आप ७ वर्ष ही राज्य कर सन १९०७ ई० की २ सितम्बर को २६ वर्ष की युवा अवस्था में स्वर्ग सिधार गये। आपने अपने अल्पकाल में राजभवन बागबगीचे, कूप, गजशाला, राजकोष आदिका कलेवर सुदृढ और सुन्दर बना कर उनकी अच्छी वृद्धि की थी। आप फर्रुखाबाद जिला की क्षत्रिय सभा के सभापति थे और जातिप्रेम-आपमें कूट २ कर भरा था। विद्याप्रेम भी आप में खूब था। कई राठौड़ विद्यार्थियों को अंग्रेजी शिक्षा ग्रहण करने को आप तन मन व धन से

सदा सहायता देते थे। आप के जीवित काल मे सन्तान में केवल एक राजकुमारी थी परन्तु आपकी मृत्यु के २४ घण्टे पश्चात अर्थात ३ सितम्बर को आपके उदित नारायण सिंह नामक राजकुमार उत्पन्न हुवे। यही उदित नारायणसिंहजी इस समय खीमसापुर के राव हैं। आपने अजमेर के मेयो कालेज में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। ठिकाना कोर्ट आफ वार्डस के अधीन है। परन्तु आशा है कि २-३ वर्ष के भीतर ही कोर्ट आफ वार्डस (महकमे नावालगी) का प्रवन्ध उठ कर आपको पूर्ण अख्त्यार मिल जायंगे। आप योग्य पिता के योग्य पुत्र हैं। आप बड़े विद्यारसिक व विचारवान रईश हैं। आपका शुभ विवाह शीघ्रही लीलगांव तालुके के ताल्लुकेदार श्रीमान ठाकुर लालतावक्सिंह जू परमार की सुयोग्य पुत्री से होनेवाला है। इस समय राजा जयपाल राठोड के वंश में खीमसापुर के ये राव साहब श्रीउदित नारायण सिंहजी बहादुर और आलीराजपुर नरेश हिज हाईनेस राजा प्रतापसिंहजी बहादुर सी० आई० ई० ही दो जाज्वल्यमान रत्न हैं। परमात्मा इन गुणग्राहक शिक्षाप्रेमी राजरत्नों को सपरिवार चिरायु करे।

मांडा (जिला प्रयाग)

संयुक्त प्रांत के जिला प्रयाग में मांडा एक अच्छा ताल्लुकेदारी ठिकाना है। इसमें ३०२ गांव है। और इन गांवों के सिवाय राजासाहब मांडा का प्रयाग के ४१ गांवों में हिस्सा हैं जिसमें से ३ हिस्से २० वर्ष के ठेके पर कोर्ट डिग्रियों में मिले हुवे हैं। एक गांव और एक पट्टी मिर्जापुर जिला में भी हैं। इस प्रकार इन सब गांवों व हिस्सों से मांडा राज की सालाना आमदनी १ लाख ५ हजार ५ सौ रुपये करीब हैं। यहां के तालुकेदारों को वंशपरम्परागत "राजा बहादुर" की उपाधि हैं।

यहां का राजवंश कन्नोज के सूर्य्यवंशी महाराजा जयचन्द्र के छोटे भाई माणिकचन्द्र का वंशज हैं। कन्नोज के विध्वंस हो जाने पर राजा मानिकचन्द्र गंगा के तट पर "कडे मानिकपुर[1]" में कुछ समय तक राज-

[1]—कडा माणिकपुर, प्रतापगढ जिले मे गगा के तट पर है। गंगा के इस पार जयचंद्र का और उस पार माणिकचन्द्र का किला है।

धानी बना कर रहा। पश्चात विसेनक्षत्रिय और मुसलमानों के प्रपंच से राजा मानिकचन्द्र के ५ वें उत्तराधिकारी राजा सोमदेव केरा मँगरोर[1] मे राजधानी बना कर रहे। सोमदेव के पश्चात क्रमशः चाहिरदेव, रूपदेव, मल्लदेव, धर्मरत्नदेव, मिश्रदेव, पूर्णमल, तल्लदेव, अलखदेव, जैराजदेव और भूराजदेव केरा मँगरोर में राजगद्दी पर बैठे। भूराजदेव बडा प्रभावशाली नरेश था। इसके तीन राजकुमार थे ज्येष्ठ राजकुमार राजा देवदत्त रोहताश के सूबेदार शेरशाह शूर (पश्चात दिल्ली सम्राट) के दबाव में पड़ कर इस्लाम मत को स्वीकार कर लिया। इसके हिन्दु रहते हुवे सन्तान के वंशज परगने महाईच. जिला बनारस में लगभग १०–१२ हजार के हैं। और उन्हीं के पौखार से गया, प्रतापगढ, हजारीबाग, जौनपुर, वर्धा और नागपुर में भी हैं। और इनकी संख्या १५ हजार से कम न होगी। मुसलमान होने पर जो सन्तान हुई उसके वंशज कैरा मँगरोर में अब भी हैं और वे खानेजादे कहलाते हैं।

इस प्रकार बादशाह के दमझांसों में आकर राजा देवदत्त के मुसलमान हो जाने पर दूसरे भाई गूदनदेव और भारतीचन्द्र पश्चिम की तरफ आकर चुनार के सूबेदार तत्कालीन बूंदी नरेश की सहायता से सक्तेशगढ व कंतित के किले कोलों तथा भरो से छीन कर शक्तेशगढ और कंतितको क्रमशः अपनी राजधानी बनाई। राजा गूदनसिंह ने अपने छोटे भाई ठाकुर भारतीचन्द्र को कोडहार के ४२० गांव जागीर में दिये थे।

गूदनदेव के दो रानियें और दो पुत्र थे। प्रथम रानी से छोटापुत्र उग्रसेन और द्वितीय से बड़ा राजकुमार भोजराज था। राजा गूदनदेव ने अपने इन दो राजकुमारों को राज्य के दो बराबर हिस्से करके दे दिये। इनमें उग्रसेन कांतित (विजयपुर) और भोजराज ने खेरागढ को राजधानी बनाया। खेरागढवालों के ही वंशज माडा के रईश हैं।

गूदनदेव का पुत्र राजा पूर्णमल्ल पहलवानी में और पौत्र लखनसेन तलवार चलाने में बड़े नामी थे। राजा लखनसेन के छोटे भाई चित्रदेव ने अपने बाहूबल से अपना स्वतंत्र ठिकाना "बरोखर" नामक बांधा। वीरशाह अपने पराक्रमी पिता लखनसेन का पराक्रमी पुत्र था। इसके

१—केरा मँगरोर इस समय बनारस स्टेट के अन्तर्गत है।

रुद्रशाह और अमरसिंह नामक दो पुत्र थे। बड़ा रुद्रशाह तो मांडा का राजा हुवा और अमरसिंह छुटभैया रूप "बाबू" उपाधि मे रहा। रुद्रशाह के मर्दानसिंह और देवीसिंह दो पुत्र थे। इनमें राजा मर्दानशाह बड़ा बलवान व वीर था। देवसिंह "बाबू" (छुटभैया) की हैसियत से ऐसे में रहा। मर्दानसिंह के मरने पर उसका ज्येष्ठपुत्र पृथ्वीराज मांडा राज्य की गद्दी पर बैठा और मझला पुत्र चतुरशाह चौरासी के युद्ध मे वीरगति को प्राप्त हुआ। सबसे छोटे पुत्र छत्रशाल को डईया का ठिकाना जागीर मे मिला जिसके वंशज इस समय राजा भगवती प्रसादसिंह (डईया अधिपति) हैं।

राजा पृथ्वीसिंह के १२ पुत्र थे जिनमें से बड़ा पुत्र राजा जसवंतसिंह मांडा राज्य का स्वामी बना। इसके भी १२ पुत्र थे जिसमें से १० तो रानियों से और दो उपपत्नियों से थे। जसवंतसिंह के पश्चात ज्येष्ठपुत्र अजबसिंह गद्दी पर बैठा। इसके पश्चात भारतसिंह, उदितसिंह, पृथ्वीपालसिंह, यज्ञेश्वरराजसिंह और रुद्रप्रतापसिंह क्रमशः राज्य के स्वामी हुवे। राजा रुद्रप्रतापसिंहजी हिन्दी साहित्य के बड़े प्रेमी व विद्वान थे। इन्होंने रामायण पर एक अच्छी टीका लिखा था। इनके छत्रपालसिंह और अभयपालसिंह नामक दो पुत्र थे। राजा छत्रपाल मे अपने पूर्वजों के सब गुण थे और वह अपने पिता के समान अर्बी और संस्कृत के अच्छे पंडित थे। सं० १९१४ की गदर के समय इन्होंने अंग्रेज सरकार की बड़ी सहायता कर पचासो अंग्रेजों की जानों की रक्षा की थी। इस नाजुक समय में इन्होंने बड़ी वीरता व चतुराई से हल्के प्रयाग के वार्डर (रक्षक) का कार्य सम्पादन किया था। इन्होंने अंग्रेज सरकार के खजाने को सुरक्षित रखने का जिम्मा भी अपने हाथ मे ले लिया था जब सरकार उसे रखने में असमर्थ थी[१]। खेद है कि राजा साहब की इन अमूल्य सेवाओं की बाद में सरकार ने कुछ कदर नहीं की। इनकी मृत्यु पर इनका सुयोग्य पुत्र राजा रामप्रतापसिंह उत्तराधिकारी हुवा। इनके राज्यकाल में मांडा में बड़ी सुखशांति रही। ये राजकाज मे बड़े दक्ष थे। अंग्रेज सरकार में इनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी और सन १९१३ ई० की १ जनवरी को इन्हें

१-Vide N. W. P. Gazetteer vol. VIII Part II Allahabad Page 154

वंशपरम्परा के लिये "राजा बहादुर" की उपाधि मिली थी। यह अपने पितामह राजा रुद्रप्रतापसिंह के समान हिन्दी साहित्य तथा काव्य व गान विद्या के रसिक थे। इनकी लिखी काव्य व गान विद्या की पुस्तकों से इनकी विद्वत्ता प्रकट होती है। सन १९१४ में इनका स्वर्गवास हो जाने पर इनके एकलौते राजकुमार राजा रामगोपालसिंह बहादुर मांडा राज्य के स्वामी हुये।

वर्त्तमान राजा साहब रामगोपालसिंहजी अपने पितामह की तरह बड़े वीर व पराक्रमी रईश हैं। सन १९१४ में जब योरपीय महायुद्ध शुरू हुआ तब आपकी बोटी बोटी वीरता से फड़क उठी और आपने रणक्षेत्र में जाने के लिये दो दफे सरकार से प्रार्थना की। परन्तु सरकारने आपको खुद को रणक्षेत्र में भेजना उचित नहीं समझा। तब भी आपने यहां रह कर भी तन मन व धन से सरकार की खूब सहायता की। सरकारको योद्धाओं और रुपये से सहायता दे देकर आपने अपना खजाना खाली कर दिया। इसके सिवाय आपने एक मोटर एम्बुलेन्सकार, एक मशीनगन और एक हवाई जहाज भी सरकार को युद्ध के लिये भेट किया।

इन राजा बहादुर का विवाह खैरागढ (मध्यप्रदेश) राज्य के स्वर्गीय राजा लालबहादुरसिंह की बहिन के साथ हुआ है। यहां के राजवंशक जैपुर, जोधपुर, बीकानेर, रीवां, बूंदी, कोटा, भदावर और बलरामपुर महाराजाओं से और मैनपुरी, बांसी, कालेकंकर, तीलोई और अन्य राजाओं से भाईपे व विवाह सम्बन्ध में सम्बन्धित है। यह ठिकाना पहले बहुत बड़ा था परन्तु सरकार की ओर से जब बंदोबस्त का काम हुआ तब उसमें करीब ३०० गांवों में राजासाहब के मालिकाना हक १० फी सैकड़ा ही रह गये और बहुत कुछ भूमि छुटभैयाओं को निर्वाह रूप बाबूना नाम से जागीर में दे दी जाती रही है। इस प्रकार मांडा राज के अधिकार में पूर्वजों के समय की बहुतसी बड़ी व अमूल्य भूमि अब अधिक नहीं रही है।

विजयपुर जिला मिर्जापुर

यह राजस्थान संयुक्त प्रान्त के मिर्जापुर जिले में है । जो मांडासे लगभग ५-६ कोस पर ही है । इसमें ६२६ गांव और लगभग ५ लाख रु० सालाना की आय है ।

इस राज्य के मूलपुरुष राजा उग्रसेन थे । जो कैरा मानिकपुर के राजा माणिकचन्द्र गाहड़वाल से १६ वें उत्तराधिकारी राजा मदन देव के पुत्र थे । राजा उग्रसेन से राजा विक्रमादित तक के कई राजा समय समय पर कई पुश्त तक मुगल बादशाहोंके पंज हजारी और दस्त हजारी मनसबदार रहे । राजा अनूपसिंह गंगा की धार से कंतित का किला कट जाने के कारण विजयपुर को राजधानी बनाया । उनके लड़के विक्रमादित्य के समय में महाराष्ट्र और काशी के राजा बखिंडसिंह के कई एक आक्रमण विजयपुर पर हुवे । और अन्त में सं० १८१६ वि० में काशी के राजा बखिंडसिंह ने विजयपुर पर अधिकार कर लिया । सं० १८३८ में गवर्नर जनरल वारन हेस्टिंग ने राजा गोविंदसिंह गाहड़वाल (राठोड़) को उसका विजयपुर राज्य वापस करा दिया । ये राजा केवल तीन वर्ष राज करके स्वर्ग सिधार गये । सं० १८४२ में इनके चचेरे भाई रामगुलामसिंह राजा हुवे । इनके पश्चात क्रमशः महिपालसिंह (सं० १८६२-१८९३ वि०) जगत बहादुरसिंह (सं० १८९३-१९०८) राजेन्द्र बहादुरसिंह (सं० १९०८-१९२०) और भूपेन्द्र बहादुरसिंह राज्य सिंहासन पर बैठे । सं० १९७६ (सन १९१९ ई०) में राजा भूपेन्द्रसिंह के स्वर्गवास हो जाने पर उनके चचेरे भाई वेनी माधवसिंह विजयपुर के राजा हुवे । आप बड़े मिलनसार, विद्याप्रेमी और धर्मपरायण रईश हैं ।

इस राजवंश से फटे ठिकानों की सूची इस प्रकार है:—

नाम	ठिकाना	गावों की संख्या
१—बाबू विक्रमाजीतसिंह	नौगवाँ	१२२
२— ,, विश्वासनीसिंह	खारेहट	८४
३— ,, तेज बहादुरसिंह	शाहपुर	१२

४—	,, मथुरासिंह	दुवार	१२
५—	,, ललनसिंह	देवाही	१२
६—	,, महाराजा बहादुरसिंह	शिवगढ	१५
७—	,, राज विजयेन्द्रसिंह	डाढीराज	२८
८—	,, हीरासिंह	कुशहर	१०
९—	,, मडुक भारीसिंह	भरतपुरा	१२
१०—	,, गुलाबसिंह	सोनगढ	१५
११—	,, शितलाप्रसादसिंह	दारानगर	८
१२—	,, राम आसरेसिंह	मवई	६
१३—	,, जयन्तिप्रसादसिंह	रायपुर	११

इति शुभम्

Printed by Mr. S. N. Joshi at the Chitrashala steam Press
1026 Sadashiv peth Poona city.
and
Published by Mr J. Kishorsingh Gahlot, Proprietor
Hindi Sahitya Mandir Jodhpur,
(Rajputana).

परिशिष्ट संख्या १४ शुद्धिपत्र
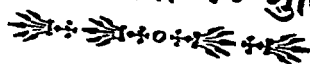
पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	३१	७	६
२	३१	१५	१४
६	१०	चीच	चांच
२०	५	१७३४	१७२६
२१	४	पंवारों ने	दहियोंने
२४	१४	कोई	×
२८	२	४ लाख	५ लाख
२८	२७	७७६	७६७
२८	२८	४३३	४३२
३१	८	Trackess	Trackers
३६	२७	मेड़तिया, सोजानिया	मेड़ती, सोजती
४१	२०	एक	तीन
४१	२२	भदन	भवन
४६	२०	४ लाख	३ लाख
५३	२७	बौद्ध	गुप्त
५८	२७	एक गोकुलिये	गोकालिये
५९	१३	फलोदी	मालानी
[illegible]९	१४	१२०१	१३४१
[illegible]९	१७	१२२३	१३८३
[illegible]२	६	सोम	शुक्र
[illegible]९	२४	में	से
[illegible]६	२१	द्वितीय	प्रथम
[illegible]२	१२	(अजंटा)	×
[illegible]३	२८	रुक्मणी की	रुक्म की
[illegible]७	११	सं. १२२६	सं. १२२७
[illegible]७	१७	सं. १२३२	सं. १२४६
[illegible]	१२	कुणपत्र	कृपापात्र